॥ ❀ ॥ श्री ॥ ❀ ॥

महोपाध्याय श्रीदेवचंदजी जश विजयजी प्रमुख बहुतसे
विद्वज्जन पाठकोंकी बनाई भई अछी अछी राग रागणी सहित

# ॥ ❀ ॥ श्री जिनपूजा संग्रह ॥ ❀ ॥

( यह पुस्तक )

॥ कलकत्ता ॥ ॥ बीकानेर ॥ ॥ बम्बई ॥

॥ ❀ ॥ श्रीजैन लक्ष्मीमोहन शाला ॥ ❀ ॥
( तरफसें )

पुज्य महोपाध्याय श्री १०८ श्री लक्ष्मीप्रधानजी गणीके
( अंतेवासी )

उपाध्याय श्री मोहनलालगणीनें
संग्रह संशोधन करके

मुम्बई

श्री 'ज्ञानसागर' मुद्रायंत्रमें छपाके
प्रकाशित कियाहै

वीर सं । २४३०    विक्रम सं । १९६०    स । १९०३

[illegible]

## ॥ ❀ ॥ अथ श्रीजिनपूजा संग्रह ॥ ❀ ॥


॥ १ ॥ सदैव जिन पूजन करनेंकी विधि। .... .... १
॥ २ ॥ श्री देवचंदजीकृत स्नात्रपूजा। .... .... ५
॥ ३ ॥ श्री देवचंदजीकृत अष्ट प्रकारी पूजा। .... .... ११
॥ ४ ॥ शक्रोयथा जिनपतेः वस्त्र पूजा। .... .... १५
॥ ५ ॥ अह पच्छिमग्गा पसरं निमक्क उत्तारण पूजा। .... .... १५
॥ ६ ॥ पुष्प, पुष्पमाला। पहरावण पूजा। .... .... १६
॥ ७ ॥ सत्तरभेदी पूजाकी विधि। .... .... .... १६
॥ ८ ॥ सत्तर भेदी पूजा, साधू श्री कीर्त्तिजीकृत।.... .... १७
॥ ९ ॥ आरती करण विधि। .... .... .... .... २८
॥ १० ॥ जैजै आरती शांतितुमारी तोराचरण०। .... .... २८
॥ ११ ॥ श्री देवचंदजी जश विजयजीकृत नवपदकी पूजा। २८
॥ १२ ॥ श्री नवपद पूजादिकमें सामग्री चाहियें सो०। .... ३८
॥ १३ ॥ नवपद पूजन (तथा) कलसढालन विधि। .... ३९
॥ १४ ॥ नवपद वासक्षेप पूजा। .... .... .... .... ४०
॥ १५ ॥ शिव चंदजी पाठककृत रिषमंडल (२४) प्रकारी पूजा। ४२
॥ १६ ॥ नवपद आरती, जय २ जगजन वंछित पूरण०। .... ५४
॥ १७ ॥ ऋषमंडल आरती, जय २ जिनराजा। .... .... ५५
॥ १८ ॥ ऋष मंडल सुननेंकी (वा) पूजनेंकी विधि। .... ५५
॥ १९ ॥ वीसथानकपूजा- श्री जिनहर्ष सूरीकृत।.... .... ५६
॥ २० ॥ वीशथानक आरती। .... .... .... .... ७५
॥ २१ ॥ नंदीश्वर द्वीप पूजा, पाठक श्रीशिवचंदजीकृत। .... ७६
॥ २२ ॥ नंदीश्वर लघु अष्ट प्रकारी पूजा। .... .... .... ८३
॥ २३ ॥ नंदीश्वर ५२ चैत्य मंडल पूजन विधि। .... .... ८४
॥ २४ ॥ नंदीश्वर द्वीप तपस्या विधि, आरती। .... .... ९१
॥ २५ ॥ इक्वीस प्रकारी पूजा, पा। शिवचंदजी कृत। .... ९२
॥ २६ ॥ सम्मेत शिखरजी पूजा, उ। श्री बालचंदजी कृत। .... १०५

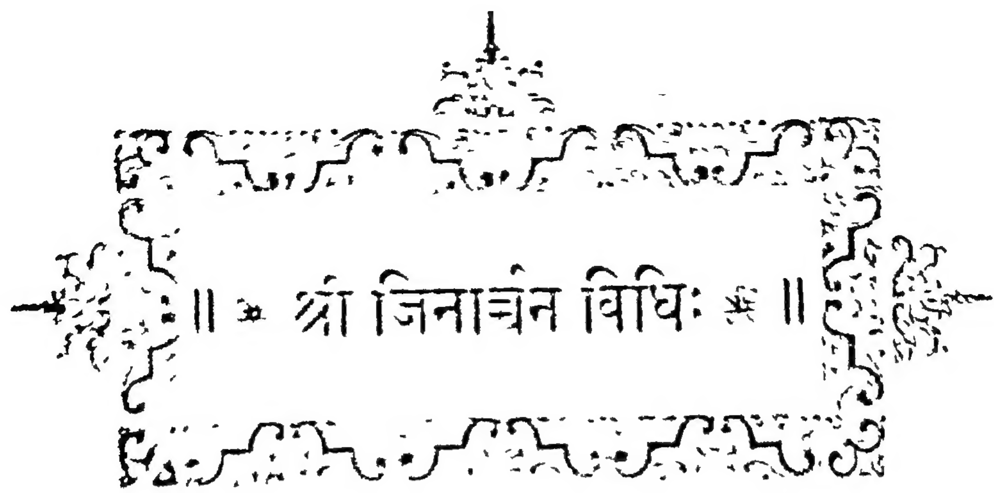
॥ २७ ॥ वीस स्थानकी पूजा॰ पं । प्र । कपूरचंदजी कृत । .... ११४
॥ २८ ॥ पंच कल्याणक पूजा॰ उ । श्री बालचंदजी कृत । .... १२८
॥ २९ ॥ शांतिक पूजा विधि । .... .... .... .... १४२
॥ ३० ॥ दशदिग्पाल नवग्रह पूजा आह्वानमंत्र । .... .... १४४
॥ ३१ ॥ नवपद मंडल पूजा विधि । .... .... .... १५२
॥ ३२ ॥ भगवंतके नवअंग पूजन दूहा, शिक्षाकारक । .... १६४
॥ ३३ ॥ लघु नवपद पूजा ग्यानविमलजी कृत । .... .... १६५
॥ ३४ ॥ नवपद आरती॰ पंच परमेष्टी पूजा । .... .... १७३
॥ ३५ ॥ सिद्धगिरी निर्वाणं प्रकारी पूजा । .... .... .... १८०
॥ ३६ ॥ श्री आबूजी पूजा॰ उ । श्री सुमतिमंडणजी कृत । .... १९०
॥ ३७ ॥ श्री आबूजी स्तवन । .... .... .... .... १९८
॥ ३८ ॥ श्री मदमक्ष्टजी पूजा॰ उ । श्री सुमति॰ । .... .... १९९
॥ ३९ ॥ श्री मदमक्ष्टजी स्तवन, तथास्वरूप विधिः । .... २०८
॥ ४० ॥ पांचज्ञान पूजा उ । श्री सुमतिमंडणजी कृत । .... २०९
॥ ४१ ॥ पांचज्ञान आरती । .... .... .... .... .... २१३
॥ ४२ ॥ मंगल आरती मंगलदीवो । .... .... .... २१४

## ॥ ७ ॥ श्री लक्ष्मी मोहन कृत स्तवन संग्रहः ॥ ❀ ॥

॥ ४३ ॥ अरिहंतनमो भगवंतनमो । जिनराय॰ । .... .... २१४
॥ ४४ ॥ जबमें चेतन पावन निजगुण॰ ( मरामाहवजिनंदा॰ ) । २१५
॥ ४५ ॥ जीया इक सुण वात. जिनपदको तुं ध्यायरे । .... २१५
॥ ४६ ॥ सुणो मेरे पतियां॰ ( निन२ नमुंरे॰ ) । .... .... २१६
॥ ४७ ॥ ऐसे पूजा करनेवाले मेनें विरले देखे भाले । .... २१६
॥ ४८ ॥ याकहुं अबचेतजीव॰ ( आदिजिनवरजी॰ ) । .... २१७
॥ ४९ ॥ अवतु अजित जिन महुगुण सुणकर॰ .... .... २१७
॥ ५० ॥ अजित वरल॰ ( मंगल जिन थारो॰ ) जिनतत्वसार॰ २१८
॥ ५१ ॥ नजनकर अबतो॰ ( तुंअवतार विमलवा॰ ) .... २१९
॥ ५२ ॥ प्रभु नमिनाथ॰ ( प्रभु धर्मनाथनुरूप्यारा॰ ) .... २१९

॥ ५९ ॥ दिलहरना जावो रे० ( तोरा कथन निम्नानारे०) .... २२०
॥ ६१ ॥ मेरे रंगीला चंगीला० (प्यारी पारशकी २०) .... २२०
॥ ६३ ॥ अरजकरुंठाढो०( सरणमें आयो० ) .... .... २२१
॥ ६५ ॥ मोहे तारो मोहेतारो० ( गुणांकोंधारले दिलदार० ) २२१
॥ ६७ ॥ नितध्यावो फलपावो० ( मोरी वातसुणोसारे० ) .... २२२
॥ ६८ ॥ निजगुण आत्म जब पावे, कुमतितिमर० .... .... २२२
॥ ६९ ॥ आज मोरी अरज शीतल जिनधारो० .... .... २२३
॥ ७० ॥ मोरी सुमता राणीजी थांनें श्री पतिजीमिले। .... २२३
॥ ७१ ॥ आवो २ सज्जन मिल सारारे, गुणगावो०। .... २२४
॥ ७२ ॥ प्रभुजी मिल्या मोहे आजरे, २४ जिनस्तवन। .... २२४
॥ ७३ ॥ श्री दादाजी अष्ट प्रकारी पूजा श्री ज्ञानसारजीकृत। २२५
॥ ७५ ॥ श्रीदादाजी लघु, वृद्ध अष्टप्रकारी पूजा।.... .... २२७
॥ ७६ ॥ श्री दादाजीकी आरती, पहली आरती०। .... २३७
॥ ७७ ॥ विलशे ऋद्धि समृद्धि मिली, वृद्ध स्तवन। .... .... २३८
॥ ७८ ॥ श्री सुयदेव पसाय० श्री जिनदत्तसूरी उत्पत्ति स्तोत्र २३९
॥ ७९ ॥ श्री जिन कुशल सूरजी उत्पत्ती स्तोत्र, रिसह जिनेसर २३९

---



## ॥ श्री जिनार्चन विधिः ॥

॥ ❀ ॥ अर्हत्कल्पानुसारें संक्षेप जिन पूजन विधि किंचित्मात्र लिखते हैं ॥ स्नानादिक करके मंदिर ( वा ) घर देरासरके विषे । चोटीकूं बांधके शुद्ध वस्त्र पहरके उत्तरासंग जिनोपवीत मुखकोशसहित । एकांतके विषे पूर्व दिशा उत्तरदिशा सन्मुख बैठके परमेश्वरकी पूजा करे ॥ प्रथम जल, चंदन, पुष्प, धूप, दीप, अक्षत, नैवेद्य, फल, आदि चीजांकूं मंत्रों से पवित्र करे ( यथा ) ॥ ॐ आपो अप्प काया एकेंद्रिय जीव निर्वद्या हर्त्पूजाया निर्व्यथाः संतु । निरपायाः संतु । सद्गतयः संतु । नमेस्तु संघट्टण हिंसापापमर्हदर्चने॥ इस मंत्रसें जल मंत्रणा ॥ ❀ ॥ ॐ वनस्पतयो वनस्पतिकाया जीवा एकेंद्रिया निरवद्यार्हत्पूजायां निर्व्यथाः संतु । निरपायाः संतु । सद्गतयः संतु । नमेस्तु संघट्टन हिंसा पापमर्हदर्चने ॥ इति पत्र पुष्प फल धूप चंदनादि अभिमंत्रण मंत्र ॥ ❀ ॥ ॐ अग्नयो अग्निकाया जीवा एकेंद्रिया निरवद्या अर्हत्पूजायां निर्व्यथाः संतु । निरपायाः संतु । सद्गतयः संतु । नमेस्तु संघट्टन हिंसा पापमर्हदर्चने ॥ इति वन्हि दीपाद्यभिमंत्रणं ॥ फेर वास चूर्ण फूल गंधादिक हाथमें लेके मंत्र पढे ॥ ॐ त्रसरूपोहं संसारिजीवः सुदानिनः सुमेधा एक चित्तो निरवद्यार्हदर्चने निर्व्यथो भूयासं । निःपापो भूयासं । मत्संस्थिता अन्येपि संसारिजीवा निरवद्यार्हदर्चने निर्व्यथा भूयासुः निरपाया भूयासुः ॥ इस मंत्रसें केशर मंत्रके अपणे तिलक करे ॥ ❀ ॥ इसके अनंतर मस्तकके पूजा करे ( फेर ) पुष्प अक्षत आदि हाथमें लेके मंत्र पढे ॥ तत्मंत्रो यथा ॥ ॐ पृथिव्यप्तेजो वायु वनस्पति त्रसकाया

एक द्वि त्रि चतुः पंचेंद्रिया स्तिर्यङ् मनुष्या नारक देवगति गता श्चतुर्दशर
ज्वात्मक लोकाकाश निवासिनः । इह जिनार्चने कृतानुमोदना संतु । निः
पापाः संतु । निरपायाः संतुः । सुखिनः संतुः । प्राप्त कामाः संतुः । मुक्ताः
संतुः । बोध माप्नुवंति ॥ इस मंत्रसें मंत्रकै दशादिशामें गंध जल अक्षतादिक
क्षेपन करे । फेर यह श्लोक कहे ॥ शिवमस्तु सर्व्व जगतः । परहित नि
ता भवंति भूतगणाः । दोषा प्रयांतु नाशं । सर्वत्र सुखी भवतु लोकः
॥ १ ॥ सर्व्वेपि संतु सुखिनः सर्व्वेसंतु निरामया । सर्व्वे भद्राणि पश्यंतु
माकश्चिदुक्ख भाग्भवेत् ॥ २ ॥ फेर मंत्र पढे ॥ ॐ भूतधात्री पवित्रास्तु
अधिवासितास्तु । इस मंत्रसें मंत्रितजलसें जमीन पवित्र करे ( फेर ) स्थि
रायशास्वताय निश्चलाय पीठायनमः ॥ फेरपखाल करवाके परमेश्वरकुं पट्ट
ऊपर स्थापन करे । थिरबिंब होय तो वेदी ऊपर पखाल करावे ॥ पीछे इस
मंत्रकूं पढे ॥ ॐ अत्रक्षेत्रे । अत्रकाले । नामार्हतो । रूपार्हतो । द्रव्यार्हतो
भावार्हतः । समागताः । सुस्थिताः । सुनिष्ठिताः । सुप्रतिष्ठाः संतु ॥ इति
अर्हत्प्रतिमा स्थापन मंत्र ॥ फेर मौनसहित अगामी पुष्पग्रहण करके मंत्र
पढे । ॐ नमो अर्हद्भ्यः सिद्धेभ्यः । स्तीर्णेभ्यः । स्तारकेभ्यः । बोधकेभ्यः ।
सर्व्वजंतुहितेभ्यः । इह कल्पना बिंबे भगवंतोर्हतः सुप्रतिष्ठिताः संतु ॥ यह
मंत्र मौन सहित पढके भगवंतके चरणऊपर पुष्पस्थापन करे । फेर पुष्प
जल हाथमें लेके कहे ॥ यथा ॥ स्वागतमस्तु । सुस्थितिरस्तु । सुप्रतिष्ठास्तु
पुष्पाभिषेकेन अर्घ्यमस्तु । पाद्यमस्तु । आचमनीयमस्तु । सर्वोपचारैः पूजास्तु
॥ इस मंत्रसें मंत्रित जिन प्रतिमाऊपर जलसहित पुष्प चढावै ॥ ( फेर ) जलग्र
हण करके मंत्र पढे ॥ ॐ अर्हंतं तर्प्पणंपद्यं । प्राणदं मलनाशनं । जलंजिनार्चने
त्रैव । जायतां सुखहेतवे ॥ १ ॥ इस मंत्रसें मंत्रित जल करके अभिषेक करावै
फेर चंदन कुंकुम कस्तुरी आदिगंध वस्तु हाथमें ग्रहण करके । यह मंत्र
पढे ॥ ॐ अर्हंतं ॥ इदं गंधं महामोदं । बृंहणं प्रीणनं सदा । जिनार्चनेच स
त्कर्म । संसिद्ध्यौ जायतांमम ॥ १ ॥ ऐसा पढके विवधगंध वस्तूका विलेपन
करे । फेर । पुष्पपत्रिका हाथमें ग्रहण करके । यह मंत्र पढे । ॐ अर्हंतं
नानावर्णमहामोदं । सर्व्वत्रिदशवल्लभं । जिनार्चनेच संसिद्ध्यौ । सुखंभवतु

प्रपदा ॥ १ ॥ इति पुष्पपूजा ॥ फेर अक्षत ग्रहण करके यह मंत्र पढे ॥ ॐ अर्हंतं । शालनं निर्म्मलं शल्यं । मांगल्यं सर्व्वसिद्धिदं । जीवनं कार्यसंसिद्धौ । दद्यान्मेजिनमंदिरं ॥ १ ॥ इस मंत्रसें मंत्रित अक्षतका तीनपुंज करे । फेर शृंगीफल जातीफलादिवस्तु ग्रहण करके यह मंत्र पढे ॥ ॐ अर्हंतं । जन्मफलं स्वर्गफलं । पुन्यमोक्षफलं फलं । दद्याज्जिनार्चने चैव । जिनपादाग्र संस्थितः ॥ इति जिन पादाग्रे फलपूजा ॥ ( फेर ) धूप ग्रहण करके यह मंत्र पढे ॥ ॐ अर्हंतं । श्रीचंदनागरु कस्तूरी । द्रुमनिर्यास संभवः । प्रीणनः सर्व्व देवानां । धूपोस्तु जिनपूजने ॥ १ ॥ इस मंत्रसें धूप क्षेपन करे । फेर पुष्प ग्रहण करके यह मंत्र पढे ॥ ॐ अर्हंतं । पंचज्ञान महाज्योति । र्म्मयायध्वांत घातने । द्योतनाय प्रतिमायाः । दीपो भूयात्सदार्हते ॥ १ ॥ इति दीपमध्ये पुष्पन्यासः ॥ फेर पुष्प ग्रहण करके यह मंत्र पढे ॥ ॐ अर्हं भगवद्भ्यो अर्हद्भ्यो जल गंध पुष्पाक्षत फल धूपदीपैः संप्रदानमस्तु । ॐ पुण्याहं २ । प्रीयंतां २ । भगवंतोर्हंत त्रिलोक्यस्थिताः । नामाकृतिः द्रव्यभावयुताः स्वाहाः । इति पुनर्जिन पूजनं ॥ पीछे वास चूर्ण ग्रहण करके यह मंत्र पढे ॥ ॐ सूर्य सोमांगारक बुध गुरु शुक्र शनैश्वर राहु केतु मुख्याग्रहाः इह जिन पादाग्रे समायांतु पूजां प्रतीछंतु । ऐसा कहके नवग्रहोंकी वासचूर्णसें पूजा करे ॥ फेर यह मंत्र पढे ॥ आचमनमस्तु गंधमस्तु पुष्पमस्तु अक्षतमस्तु फलमस्तु धूपोस्तु दीपोस्तु ॥ पीछे अनुक्रमसें जल, गंध, पुष्प, अक्षत, फल धूप, दीप, नैवेद्य करके नवग्रहोंकी पूजा करे । फेर हाथमें पुष्प ग्रहण करके यह मंत्र पढे ॥ ॐ सूर्य सोमांगारक शुक्र बुध गुरु शनैश्वर राहु केतु प्रमुखाग्रहाः सुपूजिताः संतु । सानुग्रहाः संतु । तुष्टिदाः संतु । पुष्टिदाः संतु । मांगल्यदाः संतुः । महोत्सवदाः संतु ॥ ऐसा कहके ग्रहोंकूं पुष्प चढावे ॥ इसी रीतिसें ॥ ॐ इंद्राग्नि यम नैरृति वरुण वायु कुबेर ईशान नाग ब्रह्मणो लोकपालाः सविनायकाः सक्षेत्रपालाः इह जिन पादाग्रे समागछंतु ॥ इस मंत्रसें इन्द्रादि दश लोकपालोंकी वास चूर्णसें पूजा करे । फेर यह मंत्र पढे ॥ आचमनमस्तु गंधमस्तु, अक्षतमस्तु । फलमस्तु । धूपोस्तु । दीपोस्तु । फेर । अनुक्रमसें जल, गंध, पुष्प, अक्षत, फल, धूप, दीप, नैवेद्य करके लोकपालोंकी

पूजा करे । फेर हाथमें पुष्प ग्रहण करके । यह मंत्र पढे ॥ ॐ इंद्राग्नि यमनैरृति वरुण वायु कुबेर ईशान नाग ब्रह्मणो लोकपालाः । सविनायकाः। सक्षेत्रपालाः । सुपूजिताः संतुः । सानुग्रहाः संतु । तुष्टिदाः संतु । पुष्टिदाः संतु । महोत्सवदा संतुः ॥ ऐसा कहके लोकपालोंकी फूलसें पूजा करे । फेर पुष्पांजलि ग्रहण करके यह मंत्र पढे ॥ अस्मत्पूर्व्व गोत्र संभवाः देवगति गताः सुपूजिताः संतु । सानुग्रहाः संतु । तुष्टिदाः संतु । पुष्टिदाः संतु । मांगल्यदाः संतु । महोत्सवदाः संतु । ( ऐसा कहकै ) जिन पादाग्रे पट्टोपरि पुष्पांजलि चढावै । फेर पुष्पांजलि ग्रहण करके यह मंत्र पढे ॥ ॐ अर्हं अर्हद्भक्ताष्ट नवत्युत्तरशतं देव जातयः स देवाः पूजां प्रतीछंतु । सुपूजिताः संतु । सानुग्रहाः संतु । तुष्टिदाः संतु । मांगल्यदाः संतु । महोत्सवदाः संतु । ऐसा कहके परमेश्वरके चरण कमलआगे पुष्पांजलि चढावै ॥ फेर हाथमें पुष्पांजलि ग्रहण करके । अर्हन्मंत्र स्मरणकरके तिस पुष्पोंसें जिन प्रतिमाकी पूजा करे । तन्मंत्रोयथा ॥ ॐ अर्हं णमो अरिहंताणं । ॐ अर्हं णमो सयंसंबुद्धाणं । ॐ अर्हं णमो आयरियाणं ॥ श्लोकः ॥ अयंतु त्रिपदोमंत्र । श्रीमतामर्हतांपरः । लोगमोक्ष प्रदोनित्यं । सर्वपाप निकृंतनः १॥इस अर्हत्मंत्रकों अपवित्रपणेंसें नहिंजपना । ( तथा ) नास्तिकांकूं मिथ्यात्वियोंकूं न देना । फेर१०८वार इस मंत्रका जाप करे । तिसके वाद । नैवेद्य दोय रकेवीयोंमें रखके । अंजलीमें जलग्रहण करके । यह मंत्र पढे ॥ ॐ अर्हं । नाना षड्रस संपूर्णं । नैवेद्यं सर्व्वमुत्तमं । जिनाग्रे ढोकितं सर्व्वं । संपदा ममजायते ॥ १ ॥ यह कहके नैवेद्यपासे, जलक्षेपन करे । फेर जल ग्रहण करके यह मंत्र पढे ॥ ॐ सर्व्वे गणेश क्षेत्रपालाद्याः सर्व्वग्रहाः सर्व्वेदिग्पालाद्या । सर्व्वे अस्मत्पूर्वजोद्भवादेवाः । सर्व्वे अष्टनवत्युत्तरशतं देवजातयः। सदेव्योर्हद्भक्ताः । अनेन नैवेद्येन संतर्प्पितास्संतु । तुष्टिं पुष्टिं संतुः । मांगल्यं० महो० ॥ ऐसा कहके दूसरे नैवेद्य पासे जल गाले ॥ पीछे पुष्पांजली हाथमें लेके पढे ॥ योजन्मकाले पुरुषोत्तमस्य । सुमेरुशृंगे कृतमज्जनैश्च । देवै प्रदत्त कुशमांजलि प्रीतिभक्तया । ददातु सर्वाणि समीहितानि ॥ १ ॥ राज्याभिषेक समये त्रिदशाधिपेन । छत्रध्वजांकरुलयोः पदयोर्जिनस्य । क्षिप्तोनितान्तिः कु

गृहं गतोयं । स श्रीमान् सन्त्वानुदिनं सुधीयां ॥ २ ॥ देवेंद्रोक्त केवले जिनपतौ सानंद सत्यागतेः । संदेहं व्यपरोपणं कुसमशुज व्याख्यान बुरुयात्रयैः । आमोदान्वित पारिजात कुसुमैर्यस्वामि पादार्चनो । मुक्तः सः प्रतनोतु चिन्मय हर्षां सदालि पुष्पांजलि ॥ ३ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ यह तीन वृत्त कहके तीन पुष्पांजलि क्षेपन करे ॥ फेर लवण हाथमें लेके यह वृत्त पढे ॥ लावण्य पुण्यांग भृतोर्हतोयः । स्तदृष्टि भावं गतमेव यत्ने । सविस्मनंतुं त्वणात्सतागो । गर्भावतारं सुधिया विहत्तुं ॥ १ ॥ लावण्यैक निधेर्विभोः । तन्नु स्नातस्यनिर्मितसुक्रत । लवणो त्तारणं कुर्यां । द्रवसागर तारणं ॥ २ ॥ यह दोय वृत्त कहके दोयदफे लवण उतारे ॥ फेर लवणमिश्र जल लेके यह वृत्त पढे ॥ सद्धात्मा सदा भक्तां । निहंतु कर्म सोद्यमः । फलवारि स्नवणांबुः । पिताति सेवते पदो ॥ १ ॥ ऐसा कहके लवण जल उतारणा करे ॥ फेर आरती लेके यह पढे ॥ ससमीति विघातार्हं । सप्तव्यसन नाशकृत । सप्तसप्तर्ककलान । सप्तार्गिवृत्तांगतं ॥ १ ॥ सप्तांग राज्य फलदान समर्थमोदं । सप्तम तत्वविदनंत गुणप्रबोधं । नवचक्र हस्तधृतसंगत सप्तदीप । मारात्रिकं नयतु सप्तम सङ्गुणायां ॥ ऐसा कहके आरती उतारे ॥ फेर मंगलदीप लेके यह पढे ॥ विश्वत्रय नवेज्जीवैः । सदेवा सुर मानवैः । चिन्मंगलं श्रीजिनेशान । प्रार्थनीयं दिनेदिने ॥ १ ॥ यन्मंगलं भगवतः प्रथमार्हतः श्री । संयोजनेः प्रातिवृद विवाहकाले । सर्वाःसुरासुर वधूमुख गीयमानं । सर्वेषिणिभः सुमनोपि सदोपसामा ॥ २ ॥ द्राग्वं गतेषु सकलेषु सुरासुरेषु । गार्भ्यर्हतः प्रथम वृष्टि कृतोयदासीत । तन्मंगलं मिथुन पाणिग तीर्थवारि । पाणिग्रिपक विधिनास्तुसर्वास्ममानं ॥ ३ ॥ यश्चित्र्याधिपतेः ममस्ततनु भृतसंसारनिस्तारणे । तीर्थप्रवृत्ति सृष्ट्युपस्थितदिनं श्रीडिगतं मंगलं । तन्मंप्रत्युपनीतपूजनविधौ विश्वस्य सा महतां । दुर्वान्मंगल मकर्यंच जगते स्वस्त्यस्तु संघायच ॥ ४ ॥ यह चारवृत्त कहके मंगलदीप आरती उतारे ॥ फेर सक्रस्तव पढे ॥ यह सदैव जिन पूजन करणेकी विधि कही ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ श्रीदेवचंद्रजीकृत स्नात्रपूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चौवीसे जिनवर हूआ । वचनातिशयें जुत्त ॥ सो परमेसर देख

भवि । सिंहासणसंपत्त ॥ १ ॥ ( ढाल ) सिंहासण बैठा जगभाण । देखी भविजन गुण मणिखाण ॥ जेदीठै तुझ निम्मल जाण । लहीयै परम महोदय ठाण ॥ १ ॥ ❋ ॥ कुसुमांजलि मेलो आदि जिणन्दा । तोरा चरण कमल चोवीस पूजोरे ॥ चोवीस सोभागी । चोवीस वैरागी ॥ चौवीस जिनन्दा कुसुमांजलि मेलो आदि जिणन्दा ॥ १ ॥ ❋ ॥ इतना कही । कुसुमांजली चढाई जै । चरणां टीकी दीजै । हाथमें कुसुमांजली लेई । नमोऽर्हत् सिद्धा० कही । पढै ॥ ❋ ॥ ( गाथा ) जोनिअ गुण पज्जव रम्यो । तसु अनुभव एगत्त ॥ सुह पुग्गल आरोपतां । ज्योति सुरंग निरत्त ॥१॥( ढाल ) जो निज आतमगुण आणन्दि । पुग्गलसंगे जेह अफन्दी ॥ जे परमेसर निज पदलीन । पूजो प्रणमो भव्य अदीन ॥ ❋ ॥ कुसुमांजलि मेलो शांति जिणन्दा । तोरा चरण कमल चो० ॥ कुसुमांजलि० ॥ २ ॥ ❋ ॥ कुसुमांजली चढाई जै । गोडां टीकी दीजै । फेर हाथमें, कुसुमांजली लेके नमो र्हत्सिद्धा० कही पढै ॥ ❋ ॥ ( गाथा ) निम्मल नाण पयासकर । निम्मल गुण सम्पन्न ॥ निम्मल धम्मु वएस कर । सो परमप्पा धन्न ॥ १ ॥ ( ढाल ) लोका लोक प्रकासक नाणी । भविजन तारण जेहनी वाणी ॥ परमानन्द तणी नीसाणी । तसु भगतें मुझमति ठहराणी ॥ २ ॥ कुसुमांजलि मेलो नेमि जिनन्दा तोरा च० ॥ ❋ ॥ ३ ॥ ❋ ॥ कुसु० । दोनुं हाथे टीकी दीजे । मुखे पढै । नमो र्हत्सिद्धा० ॥ ❋ ॥ ( गाथा ) जे सिझा सिझन्तिजे । सिझिस्सन्ति अणन्त ॥ जसु आलम्बन ठवियमण । सो सेवो अरिहन्त ॥ १ ॥ ( ढाल ) शिव सुख कारण जेह त्रिकाले । समपरिणामें जगति निहाले ॥ उत्तम साधुनो मार्ग देखाले । इन्द्रादिक जसु चरण पखाले ॥ कुसुमांजलि मेलो पास जिणन्दा ॥ ४ ॥ ❋ ॥ कुसु० । दोनुं खांधे टीकी । दीजै । मुखे पढै नमो० ॥ ॥ ❋ ॥ ( गाथा ) सम्म दिठी देशजय साहु साहुणी सार ॥ आचारज उवझाय मुणि । जो निम्मल आधार ॥ १ ॥ ( ढाल ) ॥ चौवीह संघें जे मन धार्‍यो । मोक्ष तणो कारण निरधार्‍यो ॥ विविह कुसुमवर जात गहेवी । तसु चरणें प्रणमंति ठवेवी ॥ २ ॥ कुसुमांजलि मेलो वीर जिणन्दा ॥ तोरा चरण कमल० ॥ ५ ॥ ❋ ॥ कुसु० मस्तक

टीकी दीजे । नमो झ्तसिद्धा० कही । चमर हाथमें लेवै ॥ ❀ ॥ ( वस्तु ) सयल जिनवर २ । नमिअ मनरङ्ग ॥ कल्लाण कविह संठविअ । करि सुधम्म सुपवित्त सुन्दर ॥ सयइक सत्तरि तित्थंकर । इक्कसमय विहरन्ति महियल । चवण समय इगवीस जिण ॥ जन्म समय इगवीस । भत्तिह भावें पूजीया । करोसंघ सुजगीस ॥ ६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ एकदिन अचिरा हुलरावती । ए चाल ॥❀॥ भव तीजय समकित गुण रम्या । जिन भक्ति प्रमुख गुण परिणम्या ॥ तजि इन्द्रियसुख आसंसना । करी थानक वीशनी सेवना ॥ १ ॥ अतिराग प्रशस्त प्रभावता । मनभावना एहवी भावता ॥ सबजीव करूं शासन रसी । ऐसी भावदया मन उल्लसी ॥ २ ॥ लही परिणाम एहवूं भलूं । निपजावी जिनपद निरमलुं ॥ आउबंधे विचइ एकभव करी । श्रद्धा संवेगते थिरधरी ॥ ३ ॥ तिहां चवीअ लहे नरभव उदार । भरते तिम ऐरवत तेजसार ॥ महाविदेह बिजयपरधान । मझखंडे अवतरे जिन निधान ॥ ४ ॥ ( ढाल ) पुन्यें सुपनाहे देखे । मनमां हरष विसेषै ॥ गजवर उज्जल सुन्दर । निरमल वृषभ मनोहर ॥ १॥ निरभय केसरी सींह । लखमी अतिहि अबीह ॥ अनुपम फूलनी माला । निरमल शशि सुकमाला ॥ २ ॥ तेज तरणि अति दीपे । इन्द्रधजा जगजीपे ॥ पूरण कलस पंडूर । पद्मसरोवर पूर ॥ ६ ॥ इग्यारमें रयणायर । देखे माताजी गुणसायर ॥ बारमें भुवन विमान । तेरमें रतन निधान ॥ ४ ॥ अगनि शिखा निरधूम । देखे माताजी अनोपम ॥ हरखी रायनें भासे । राजा अरथ प्रकासै ॥ ५ ॥ जगपति जिनवर सुखकर । होस्ये पुत्र मनोहर ॥ इंद्रादिक जसु नमसे । सकल मनोरथ फलसे ॥ ६ ॥ ❀ ॥ ( वस्तु ) ॥ ❀ ॥ पुन्य उदय २ ॥ उपना जिननाह । माता तब रयणी समें । देखि सुपन हरखंत जागीअ । सुपन कही निज कंतने । सुपन अरथ सांभले सोभागीय । त्रिभुवन तिलक महागुणी । होस्ये पुत्र निधान । इंद्रादिक जसु पायनमी ॥ करसे सिद्धि विधान ॥ ❀ ॥ १ ॥ ( ढाल ) ॥ चंद्रा उलालानी ॥ ❀ ॥ सोहमपति आसन कंपीयो । देई अवधे मन आणंदीयो ॥ मुझ आतम निरमल करण काज । भवजल ना

रण प्रगट्यो जिहाज ॥ १ ॥ भव अम्भवी पारग सत्थवाह। केवलनाण ईश्र गुण अगाह ॥ शिव साधन गुण अंकूर जेह। कारण उलट्यो आसाढ मेह ॥ २ ॥ हरखै विकसे तव रोमराय। वलयादिकमां निज तनु नमाय ॥ सिंहासणथी ऊठ्यो सुरिंद। प्रणमंतो जिन आनन्द कन्द ॥ ३ ॥ सगअम पय सम्मुहा आवितत्थ। करी अंजली प्रणमिअ मत्थ सत्थ ॥ मुख भाषे एह्वण आजसार। तियलोय पहू दीठो उदार ॥ ४ ॥ रेरे निसुणो सुरलोय देव। विषयानल तापित तनु समेव ॥ तसु शान्तिकरण जलधर समान। मिथ्याविष चूरण गरुडवान ॥ ५ ॥ ते देव जगत्तारण समत्थ। प्रगट्यो तसु प्रणमी हुवो सनत्थ ॥ इम जंपी सक्रस्तव करेवि। तव देव देवी हरखे सुणेवि ॥ ६ ॥ गावै तब रंभा गीतगान। सुरलोक हुवो मंगल निधान। नर खेत्रें आरज वंसगाम। जिनराज बधे सुर हर्ख धाम ॥ ७ ॥ पिता माता घरे उछव अलेष। जिन शासन मंगल अति विशेष ॥ सुरपति देवादिक हरखसंग। संयम अरथी जननें उमंग ॥ ८ ॥ सुभवेला जगनें तीर्थनाथ। जनम्या इंद्रादिक हर्ख साथ ॥ सुखपाम्यां त्रिभुवन सर्वजीव ॥ बधाई बधाइ थई अतीव ॥९॥ ❁ ॥ फूल अक्षतसें वधावै। ३ प्रदक्षिणा देवै। (पीछे) शक्रस्तव, ठाणं संपाविउंकामस्स। तक कहै। पीछे। रोली (तथा) केसरका हाथमें साथिया करै। धूपखेवै ॥ (ढाल) श्री शांति जिननो कलश कहिसुं० ॥ ए चाल ॥ ❁ ॥ श्री तीर्थपतिनो कलस मज्जन गाइये सुखकार। नर खेत्र मंडण दुह विहंडण। भविक मन आधार ॥ तिहां रावराणा हरख उछव। थयो जग जयकार ॥ दिशि कुमरी अवधि विशेष जाणी। लह्यो हरख अपार ॥ १ ॥ निअ अमर अमरी संग कुमरी। गावती गुणछंद ॥ जिन जननी पासे आय पहुती। गहकती आणंद ॥ हेमायतें जिनराज जायो। शचि वधायो रम्म। असजम्म निम्मल करण कारण। करिम सूई अकम्म ॥ २ ॥ तिहां भूमि सोधन दीप दरपण वायवींजणधार ॥ तिहां करिय कदली गेह जिनवर। जननी मज्जनकार ॥ वर राखडी जिनपाणि बांधी। दीये इम आसीस ॥ जुगकोड कोडी चिरंजीवो। धर्मदायक ईस ॥ ३ ॥ (ढाल) उल्लालानी ॥ ❁ ॥ जिनरयणीजी दश दिश उज्जलता

धरे ॥ सुत्रजगनेंजी ज्योतिस चक्रते संचरे। जिन जनम्याजी जिए अव सर माता घरे ॥ तिए अवसरजी इंद्रासए पए थर हरे ॥ (त्रुटक) थरहरे आसन इंद्रचिंते कौन अवसर एबन्यो। जिन जन्म उच्छव काल जाणी अतिहि आएंद ऊपनो ॥ निजसिद्ध संपति हेतु जिनवर जाणि जगतें ऊमह्यो। विकसंत वदन प्रमोद वधतै देवनायक गहगह्यो ॥ १ ॥ (ढाल) तब सुरपति जी घंटानाद करावए ॥ सुरलोके जी घोषणा एहदि रावए। नरक्षेत्रे जी जिन वर जनम हुवो अछे। तसुजगतें जी सुरपति मंदि र गिर गछे ॥ (त्रूटक) गछे मंदिर शिखर ऊपर भुवन जीवन जिनत णो। जिन जन्म उच्छव करए कारए आवज्यो सविसुर घणो। तुम सुध समकित थास्ये निरमल देव देवी निहालतां। आपणा पातिक सर्व जास्ये नाथ चरणपखालतां ॥ ३ ॥ (ढाल) इम सांभलजी सुरवर कोमि बहू मिली। जिन वंदए जी मंदर गिरि साहमी चली। सोहम पतिजी जिन जननी घर आविया। जिन माताजी वांदी स्वामि वधा विया। (त्रू टक) बधाविया जिनवर हर्ष बहुलें धन्यहुं कृतपुन्य ए। त्रैलोक्य नाय क देवदीठो मुझ समो कुए अन्यए। हे जगत जननी पुत्र तुह्मचो मेरु म ज्ञन वरकरी। उछंग तुह्मचे वलिय थापिस आतमा पुन्यें भरी ॥ ४ ॥ (ढाल) सुरनायकजी जिन निज कर कमलें ठव्या ॥ पांच रूपें जी अति सय महिमायें स्तव्या। नाटक विधिजी तब वर्त्ताम आगल वहे। सुर कोमी जी जिन दरसएनें ऊमहे (त्रूटक) सुर कोमि कोमी नाचती वलि नाथ शचि गुए गावती। अपछरा कोमी हाथ जोमी हाव भाव दिखावती जय जयो तूं जिन राज जग गुरु एमदे आसी सए। अह्मत्राए शरए आ धार जीवन एक तूं जगदीश ए ॥ ४ ॥ (ढाल) सुरगिरवर जी पांडुक व नमें चिहुं दिसे। गिरसिल परजी सिंहासए सासय वसे। तिहां आणीजी शक्रें जिन खोले ग्रह्या। चौसठ जी तिहां सुरपति आवी रह्या (त्रूटक) आविया सुरपति सर्व भगते कलश श्रेणि बणाव ए। सिद्धार्थ पमुहा ती र्थऊषधि सर्व वस्तु अणाव ए। अच्चुय पति तिहां हुकमकीनो देव कोमा कोमिनें। जिन मज्जनारथ नीर ल्यावो सवे सुर कर जोडिनें ॥ ५ ॥ ❀ ॥

सर्व स्नात्रिया जलका कलश हाथमें लेके खडा रहै । मुखसें पढै ( ढाल ) शांतिनें कारणै इंद्र कलशा भरै । ए चाल ॥ ❀ ॥ आतम साधन रसी देव कोमी हसी । उल्लसीनें धसी खीरसागर दिसी ॥ पौमदह आदि दह गंग पमुहानई । तीर्थजल अमल लेवा भणी ते गई ॥ १ ॥ जाति अड कल श करि सहस अठोत्तरा । छत्र चामर सिंहासणें सुभतरा । उपगरण पु प्फचंगेरि पमुहासवे । आगमें भासिया तेम आणीठवे ॥ २ ॥ तीर्थ जल भरिय करकलश करि देवता । गावता भावता धर्म्म उन्नतिरता । तिरिय नर अमरनें हर्ख उपजावता । धन्य अह्म सगति सुचि भगति इम भावता ॥ ३ ॥ सम कित बीज निज आत्म आरोपिता । कलश पाणीमिसें भक्तिजल सीं चता । मेरु सिहरो वरै सर्व आव्या वही । शक्रउछंग जिन देषि मन गह गही ॥ ४ ॥ ❀ ॥ ( गाथा ) ॥ ❀ ॥ हंहो देवा अणाई । कालो अदिठ पुव्वो । तिलोय तारणो । तिलोय बंधु । मिछत्तमोह विध्वंसणो । आणाइ ति न्ना विणासणो । देवाहि देवो दिठव्वो हिअय कामेहिं ॥ १ ॥ ❀ ॥ ( ढाल तेह ज ) ॥❀॥ एम पभणंति वण भुवण जोईसरा । देव वैमाणिया भत्ति धम्मायरा । केवि कप्पठिया केवि मित्ताणुगा केई वररमण बयणेण अइउछगा ॥ ५ ॥ ( व स्तु ) तत्थु अच्चुय २ इंद्र आदेश । करजोमि सर्व देवगण । लेयकलश आदेस पामीय । अदभुत रूप सरूपजुय । कवण एह पुछंत सामीय ॥ इंद्र कहे जगतारणों । पारग अह्मपरमेस । नायक दायक धम्मनिहि । करीयै तसु अभिषेस ॥ १ ॥ ( ढाल ९ मी ) तीर्थ कमल वर उदक भरीनें । पुषकर सा गर आवे ( एचाल ) ॥ पूर्ण कलश सुचि उदकनी धारा । जिनवर अंगै न्हामें । आतम निरमल भाव करंता वधतें शुभ परिणामें । अच्युता दिक सुरपति मज्जन लोकपाल लोकांत । सामानिक इंद्राणी पमुहा इम अभिषे क करंत ॥ १ ॥ पृ० ( गाहा ) ॥ तब ईशान सुरिंदो । सक्कं पभणेइ करि हु सुपमावो । तुह्म अंके मह नाहो । खिणमित्तं अह्म अप्पेह ॥ १ ॥ ता सक्किंदो पभणेई । माहमीय वछलंमि बहुलाहो । आणाइवंतेणं गिण्हह होउ कयत्थाओ ॥ २ ॥ ❀ ॥ इतना कहके । सर्व स्नात्रिया. भगवान ऊपर कलश ढाले । मुखेंपढे ॥ ❀ ॥ ( ढाल ) ॥ सोहम सुरपति वृषभ रूप करि ।

न्हवण करे प्रभु अंगे । करिय विलेपण पुष्फ मालठवि । वर आभरण अभं -ग ॥ सो० ॥ १ ॥ तव सुर वर बहु जय २ रव करै । नच्चेधर आणंद । मोक्ष मारग सारथ पति पाम्यो । भांजिसु हिव भवफंद ॥ सो० ॥ २ ॥ कोम्भि त्तीस सोवन्न भवारी । वाजंते वरनाद । सुरपति संघ अमर श्री प्रभुनें । ज नर्नानें सुप्रसाद । ३ सो० ॥ आणीथापै एम पयंपै । अह्म निसतारिया आ ज । पुत्र तुह्मारो धणीय अह्मारो । तारण तरण जिहाज ॥ ४ सो० ॥ मात जतन करि राखिज्यो एहनें । तुह्म सुत अह्म आधार । सुरपति भगति स हित नंदीसर । करे जिन भगति उदार ॥ ५ सो० ॥ निय निय कप्प गया सवि निर्जर । कहितां प्रभु गुणसार । दिक्षा केवल ज्ञान कल्याणक । इच्छा चित्त मभार ॥ सो० ॥ ६ ॥ खरतर गच्छ जिन आणा रंगी । राज सागर उ वझाय । ज्ञान धरम दीपचंद सुपाठक । सुगुरु तणें सुपसाय ॥ सो० ७ ॥ देवचंद निज भगतें गायो । जनम महोच्छव छंद । बोधबीज अंकूरो उल्ह स्यो । संघ सकल आणंद ॥ सो० ८ ॥ ( ढाल ) ॥ इम पूजा भगतें क रो । आतमहित काज । तजिय विभाव निजभावना । रमतां शिवराज ॥ १ ॥ इ० ॥ काल अनंतें जे हुवा । होस्ये जेह जिणंद । संपइ सीमंधर प्रभु । केवल नाण दिणंद ॥ इ० ॥ २ ॥ जनम महोच्छव इणि परै । श्रावक रुचि वंत । विरचै जिन प्रतिमा तणो । अनुमोदन खंत ॥ इ० ॥ ३ देवचंद जिन पूजनां । करता भवपार । जिन पडिमा जिन सारखी । कही सूत्र मभार ॥ इम० ॥ ४ ॥ इति स्नात्रपूजा विधि संपूर्णम् ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ अष्टप्रकारी पूजा लिख्यते ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ १ जल पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) गंगामागध क्षीरनिधि । उषध मिश्रितसार । कुशुमें वा सित शुचिजलें । करो जिन स्नात्र उदार ॥ १ ॥ ( ढाल ) मणि कनकादि क अभविध करि भरी कलश सफार । शुभ रुचि जे जिनवर नमें तसुनही दुरित प्रचार । मेरुशिखर जिम सुरवर जिनवर न्हवण अमान । करता वर ता निज गुण समकित बृद्धि निधान ॥ १ ॥ ( छंद ) हर्ष भरी अप्सरावृंद आवे । स्नात्र करि एम आर्सीस भावे । जिहां लगे सुरगिरि जंबुदीवो ।

अमतणा नाथ जीवातु जीवो ॥ ३ ॥ ❁ ॥ (श्लोकः) ॥ बिमल केवल भासन भास्करं । जगति जंतु महोदय कारणं । जिनवरं बहुमान जलौघतः । शुचिमनः स्नपयामि विशुद्धये ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ परमात्मने । अनंतानंत ज्ञान शक्तये । जन्मजरा मृत्यु निवारणाय । श्री मज्जिनेंद्राय । जलं यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥ इति जलपूजा ॥ ❁ ॥ जलसें न्हवण करावें ॥ ❁ ॥

## ॥ ❁ ॥ अथ २ चंदन पूजा ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ (दूहा) बावना चंदन कुमकुमा । मृगमदनें घन सार ॥ जिन तनु लेपै तसुटलै । मोह संताप विकार ॥ १ ॥ (ढाल) सकल संताप निवारण तारण सहु भवि चित्त । परम अनीहा अरिहा तनु चरचो भवि नित्त ॥ निज रूपे उपयोगी धारी जिनगुण गेह । भावचंदन सुह भाव थी टाले दुरित अछेह ॥ २ ॥ (चालि) जिन तनु चरचतां सकल नाकी कहै कुग्रह उणाता आज थाकी ॥ सफल अनिमेषता आज झाकी । भव्यता अह्म तणी आज पाकी ॥ ३ ॥ (श्लोकः) सकलमोह तिमश्र विनासनं । परम शीतल भावयुतं जिनं ॥ विनय कुंकुम चंदन दर्शनै । सहज तत्व विकाश कृतेर्चये ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ परमात्मने । अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये ॥ जन्मजरा मृत्यु निवारणाय । श्रीमज्जिनेंद्राय । चंदनं यजामहे स्वाहा ॥ २ ॥ इति चंदनपूजा ॥ ❁ ॥ केसर चंदन चढावे ॥ ❁ ॥ ॥ ❁ ॥

## ॥ ❁ ॥ अथ ३ पुष्प पूजा ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ (दुहा) शतपत्री वर मोगरा । चंपक जाइ गुलाब ॥ केतकी दमणो बोलसिरि । पूजो जिन भरि छाब ॥ १ ॥ (ढाल) अमल अखंडित विकसित सुभ सुमनी घन जाति । लाखीणो टोमरछवो अंगीरचो बहु भांति ॥ गुण कुसुमें निज आतम मंडित करवा भव्य ॥ गुणरागी जन्त्यागी पुष्प चढावो नव्य ॥ २ ॥ (चालि) जगधणी पूजतां विविध फूले । सुरवरा ते गिणें क्षण अमूले ॥ खंति धर मानवा जिनपद पूजे । तसुतणा पाप संताप धूजे ॥ ३ ॥ (श्लोकः) विकच निर्मल शुद्ध मनोरमे । विशद चेतन भाव समुद्भवेः ॥ सुपरिणाम प्रसून घनेर्नवैः । परमतत्व मयं हि यजाम्यहं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ परमात्मने॰ पुष्पं यजामहे स्वाहा ॥ ३ ॥ ॥ ❁ ॥ इति ॥ ❁ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ ४ धूप पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ( दूहा ) कृष्णागर मृगमद तगर । अंबर तुरक लोबान । मेल सुगंध घनसार घन । करो जिननें धूपदान ॥ १ ॥ ( ढाल ) धूपघटी जिम म हमहे तिम दहे पातिक वृन्द ॥ अरति अनादिनी जावे पावे मन आणंद ॥ जे जिन पूजे धूपें भव कूपें फिर तेह ॥ नावे पावे ध्रुवघर आवे सुक्ख अ छेह ॥ २ ॥ ( चालि ) जिनघरे वासतां धूपपूरे । मिछत्त दुर्गन्धता जाइ दूरे ॥ धूप जिम सहज ऊर्ध्व गत स्वभावें । कारिका उच्चगति भाव पावें ॥ ३ ॥ ( श्लोकः ) सकल कर्म्म महेंधन दाहनं । बिमल संबर भावसु धूपनं ॥ असुभ पुग्गल संग विवर्जितं । जिनपतेः पुरतोस्तु सुहर्षितः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँपरमात्मने० । धूपं यजामहे स्वाहा ॥ ४ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥
इति धूप पूजा ॥ धूप अगरबत्ती खेवें ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ ५ दीपपूजा ॥ ❋ ॥

( दूहा ) मणिमय रजत ताम्रना । पात्रकरी घृत पूर । वत्ती सूत्र कसुं बनी । करो प्रदीप सनूर ॥ १ ॥ ( ढाल ) मंगलदीप वधावो गावो जिन गुण गीत ॥ दीपथकी जिम आलिका मालिका मंगलनीत ॥ दीपतणी सुभ ज्योती द्योती जिन मुखचंद ॥ निरखी हरखो भविजन जिम लहो पूर्णा नंद ॥ २ ॥ ( चाल ) जिन गृहे दीपमाला प्रकासें । तेहथी तिमर अज्ञान नासें ॥ निजघटें ज्ञानज्योति विकासे । तेहथी जगतणा भावभासें ॥ ३ ॥ ( श्लोकः ) भविक निर्म्मल बोध विकासकं । जिनगृहे सुभ दीपक दीपनं ॥ सुगुण राग विसुद्ध समन्वितं । दधतुभाव विकास कृते जना ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ परमात्मने० । दीपं यजामहे स्वाहा ॥ ५ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥
इति दीपपूजा ॥ ❋ ॥ मंगलदीप चढावें ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ ६ अक्षत पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ( दूहा ) अक्षत २ पूरसुं । जे जिन आगे सार । स्वस्तिक रचतां विस्तरै । निजगुण भर विस्तार ॥ १ ॥ ( ढाल ) उजल अमल अखंडित मं डित अक्षतचंग । पुंजत्रय करो स्वस्तिक आस्तिक भावें रंग । निज सत्तानें

सन्मुख उनमुख भावे जेह । ज्ञानादिक गुणठावै भावे स्वस्तिक एह ॥ २ ॥ ( चाल ) स्वस्तिक पूरतां जिनप आगै । स्वस्ति श्री भद्र कल्याण जागै । जन्मजरा मरणादि असुभ भागे । नियत शिव सर्म रहै तासु आगै ॥ ३ ॥ ( श्लोकः ) सकल मंगलकेलि निकेतनं । परम मंगल भावमयं जिनं । श्र यति भव्यजना इति दर्शयन् । दधतु नाथ पुरोक्षत स्वस्तिकं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० । अक्षतं यजामहे स्वाहा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

इति अक्षतपूजा ॥ अखंड चावल चढावै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ ७ नैवेद्यपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) सरस सुची पकवान बहु । शालि दालि घृतपूर । धरो नैवेद्य जिन आगलै । क्षुधा दोष तसु दूर ॥ १ ॥ ( ढाल ) लपनश्री वर घेवर मधुतर मोतीचूर । सींहकेसरिया सेविया दालिया मोदक पूर । साकर द्राख सींवोभा भक्तिव्यंजन घृतसद्य । करो नैवेद्य जिन आगलै जिम मिलै सुख अनवद्य ॥२॥ ( चाल ) ढोवतां भोज्य पर भाव त्यागे । भविजना निज गुण भोज्यमांगे । अक्षभणी अक्षतणो सरूप भोज्य । आपज्यो तातजी जगत पूज्य ॥ ३ ॥ ( श्लोकः ) सकल पुद्गलसंग विवर्जनं । सहज चेतनभाव विलासकं । सरसभोजन नव्य निवेदनात् । परम निर्वृति भाव महं स्पृहे ॥१॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० । नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥

इति नैवेद्यपूजा ॥ ❀ ॥ नैवद्य मिठाई पकवान चढावै ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ ८ फलपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) पक्क बीजोरुं जिन करे । ठवतां सिवपद देइ । सरस मधुर रस फल गिणें । इह जिन भेट करेइ ॥ १ ॥ ( ढाल ) श्रीफल क दली सुरंग नारंगी आंबा सार ॥ अंजीर बंजीर दाडिम करणा पक्कबीज सफार ॥ मधुर सुस्वादिक उत्तम लोक आणंदित जेह । वरण गंधादिक र मणीक बहुफल ढोवै तेह ॥ २ ॥ ( चाल ) फलभर पूजतां जगत स्वा मी । मनुजगति वेलडे सफल पामी । सकल मनुष्येय गतिभेद रंगे । ध्यावतां फलसमाप्ति प्रसंगे ॥ ३ ॥ ( श्लोकः ) कटुक कर्मविपाक विनाशनं । सरस पक्कफल व्रज ढोकनं । वहति मोक्षफलस्य प्रभोपुरः । कुरुत सिद्धि

फलाय महाजना ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० । फलं यजामहे स्वाहा ॥ इति फलपूजा ॥ ८ ॥ श्रीफल सुपारी नीलाफल प्रमुख चढावै ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ अर्घ पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ( दुहा ) इम अरु विधि जिनपूजना । बिरचै जे थिरचित्त । मानवभव सफलो करै । वाधै समकित वित्त ॥ १ ॥ ( ढाल ) अगणित गुण मणि आगर नागर वांदित पाय । श्रुतधारी उपगारी श्री ज्ञान सागर उवझाय । तासु चरणकज सेवक मधुकर पय लयलीन । श्रीजिन पूजा गाई जिनवाणी रसपीन ॥ २ ॥ ( चाल ) संवत गुणयुग अचल इंदु । हर्ष भरिगाइयो श्रीजिनेंदु । तासुफल सुकृत थी सकल प्राणी । लहैज्ञान ज्योत धन शिव निसानी ॥ ३ ॥ (श्लोकः) इति जिनवरवृंदं भक्तितः पूजयंति । सकल गुणनिधानं देव चंद्र स्तुवंति । प्रति दिवस मनंतं तत्व सुद्रासयंति । परम सहज रूपं मोक्ष सौख्यं श्रयंति ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमा० अर्घं यजामहे स्वाहा ॥ च्यारे खूंणे धार दीजै ॥ इति अर्घ पूजा ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ वस्त्र पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ शक्रो यथा जिनपतेः सुरशैलचूला । सिंहासनो परिमित स्नपनावसाने । दध्यक्षतैः कुसुमचंदन गंध धूपैः । कृत्वा र्चनंतु विदधाति सुवस्त्र पूजा ॥ १ ॥ तद्वत् श्रावक वर्ग एष विधिना लंकार वस्त्रादिकं । पूजा तीर्थकृतां करोति सततं शक्त्या तिभक्त्याद्दतः । नीरागस्य निरंजनस्य बिजताराते स्त्रिलोकीपतेः । स्वस्यान्यस्य जनस्य निर्वृति कृते क्लेशक्षया कांक्षया ॥ ॐ ह्रीं ॥ वस्त्रं० ॥ वस्त्र चढावै ॥ इति वस्त्रपूजाः ॥ इति अष्टप्रकारी पूजा ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ निमक उतारण पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अह पडिभग्गा पसरं । पया हिणं मुणिवयं करि ऊणं । पडइ सलूण त्तण लज्जियंच । लूणंहू अवहरंती ॥ १ ॥ पिक्खेविणु मुह जिणवरह । दीहर नयण सलूण । न्हावइ गुरु मछह भरिय । जलण पइस्सइ लूण ॥ २ ॥ लूण उत्तारिह जिणवरह । तिन्नि पयाहिणि देव । तड तड शब्द करंतिये । विज्ञा विज्ञ जलेण ॥ ३ ॥ जंजेण बिजव थुई । जलेण तं तहइ अत्यमहस्स । जिणरूवा मच्छरेणवि । फुट्टइ लूणं तड तडस्स ॥ ४ ॥

॥ ❀ ॥ ए कही लूण अग्निशरण करै ॥ ( पीछै ) लूण पाणी लेई । मुखें गाथा कहै ॥ ❀ ॥ सव्ववि मुणवई जलविजल । तंतह नमरूइपास । अह वि कयंतस्स निम्मलत्त । निग्गुण बुद्धि पयास ॥ ५ ॥ जलण अणें विण जलणहि पास । नरवि कयजाल नावहि पास । तिन्नि पयाहिणि दिन्निय पास । जिम जिय तुट्टै नव दुहपास ॥ ६ ॥ जलनिम्मल कर कमले हि लेविणुं । सुरवइ नावहि मुणिवई सेवणुं । पन्नणइ जिणवर तुहपइ सरणं । नयतुट्टइ लब्नइ सिद्धि गमणं ॥ ८ ॥ ❀ ॥ ए कही लूण उतारी जल सरण कीजे ॥ इति निमक उतारण पूजा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ पुष्पमाला पहरावण पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ उन्नय पयय नत्तस्स । नियठाणे संठियं कुणं तस्स । जिण पासै नमिय जणस्स । पिन्नतुह हुय वहे पऊणं ॥ १ ॥ सव्वो जिण प्पनावो । सरिसा सरिसेसु जेण रक्खंती । सव्वन्नूण अपासे । जऊस्स नमणं न संकमणं ॥ २ ॥ अच्चंत दुःक्करं पिहू । हुयवह निवडेण जडेण कयं । आणा सव्वन्नूणं । न कया सुकयत्थ मूलमिणं ॥ ३ ॥ ए कही माला चढाईजै ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ छूटा फूल पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नवणेव मंगलेवो । जिणाण मुह लालि संवलिया । तित्थ पवत्तण समई । तियसे विमुक्का कुसुम बुठी ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥
ए कही फूल उगालीजै प्रनु आगै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ सतर नेद पूजाकी विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम स्नात्र करे । पीछे । अष्ट प्रकारी पूजा करै । फिर सोना रूपा प्रमुखकी रकेबीमें । कुंकुम ( तथा ) केसर प्रमुखको साथियो करे । पीछे सुंदर कलश, केसर प्रमुख मिश्रित शुद्धजल नरी । रुपियो थापनाको कलशमेंरखी । कलश रकेबीमेंधरे । पीछे । स्नात्रिया मुख कोस उत्तरासण करके । तीन नवकार गुणें । तीन नमस्कार करी । हाथे धूपदेई । रकेबी हाथ धरे । मनथिर राखे । छींक वर्जे । स्नात्रिया प्रनुजी सन्मुख खमा रहे । कलश अडिग्ग राखे । मुखे इम पढे । नावप्रन्ने नगवंतनी ( इत्यादी )।

## ॥ ❀ ॥ अथ सतर भेद पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) भावभलें भगवंतनी । पूजा सतर प्रकार । परसिध कीधी द्रोपदी । अंग छठे अधिकार ॥ १ ॥ ❀ ॥ ( राग सरपदो ) ॥ ❀ ॥ ज्योति सकल जग जागती ॥ ( हां रेअइ० ) ॥ सरसति समरिसुचिंद ॥ सतर सुविधि पूजा तणी । पभणिसु परमानन्द ॥ १ ॥ ( गाहा ) न्हवण ( १ ) विलेवण ( २ ) वत्थयुगं ( ३ ) गंधारुहणंच ( ४ ) पुप्फरोहणयं ( ५ ) । माला रोहण ( ६ ) वन्नयं ( ७ ) । चुन्न ( ८ ) पभागाय (९) आभरणे ( १० ) ॥२॥ मालकला सुयवंसुघरं ( ११ ) पुप्फंपगरंच ( १२ ) अठमंगलयं ( १३ ) धूव उखेवो ( १४ ) गीययं ( १५ ) । नट्टं ( १६ ) वज्जं ( १७ ) तहाभणियं ॥ ३ ॥ सतर सुविध पूजा पवरं । ज्ञाता अंग मझार । द्रुपदसुता द्रोपदि परे । करिये विधि विस्तार ॥ ४ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ प्रथम न्हवण पूजा ( राग देसाख ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पूर्वमुख सावनं करि दसन पावनं । अहत धोती धरी उचित मानी । ( अड्यो० ) ॥ विहत मुखकोसके खीर गंधोदके । सुकृत माणिक लश करि विवध वांनी ॥ ( अ० ) ॥ १ ॥ नमवि जिनपुंगवं लोमहस्ते नवं । मार्जनं करिअ वावारि वारी । ( अ० ) । भणिय कुशमंजली कलश विधि मनरली । नवनि जिनइंद्र जिम निम अगारी । ( अ० ) ॥ ❀ ॥ दूहा ॥ ❀ ॥ परमानंद पीयूष रस । न्हवण सुगति सोपान । धरम रूप तरु सींचवा । जलधर धारसमान ॥ १ ॥ पहली पूजा साचवे । श्रावक शुभ परिणाम । शुचि पखाल तनु जिणतणें । करइ सुकृत हित काम ॥ २ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ विधि ( राग सारंग ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पूजा सतर प्रकारी । सुण जैनकी । ( पू० ) परमानन्द तिण उल्वोरी सुधारस । तपतबुझीय मेरे तनकी ॥ ( पू० ) ॥ १ ॥ प्रभुकुं विलोकि नामि,जनन प्रभारजिन । करत पखाल सुचि धार घनकी । ( पू० ) न्हवण प्रथम निज वृजन पुलावन । पंककुंवरष जिम घनकी । । ( पू० ) ॥२॥ तरणि तारणि भवसिंधु निरणकी । मंजरी संपद फल वरधनकी । शिवपुर पंथ

दिखावण दीपी । धूमरी आपदवेल मरदनकी ( पू० ) ॥ ३ ॥ सकल कुशल रंग मिल्योरी सुमति संग । जागी सुदिशा सुन्न मेरे दिनकी । कहै साधु कीरति सारंग भरकरतां । आसफली मेरे मनकी ( पू० ) ॥ ४ ॥ ❋ ॥ इति प्रथम न्हवणपूजा ॥ १ ॥ ❋ ॥ पंचामृतसुं न्हवणकीजे ( तथा ) भावै पांवके अंगूठै जलधार दीजै ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ द्वितीय विलेपन पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ सुंदर अङ्ग लूहणें करी । बिंब प्रमार्जों । केसर चंदन मृगमद अगरादिकसें । कचोली भरी । लेकर खमारहे । मुखे० ॥ ( रागरामगिरी ) गात्र लूहे जिन मन रगङ्गसूं रे । (देवा) सखरसुधूपित वाससुं ॥ वाससुं(हां रे देवा ) वा० । गंध कसायसुमेलियै ॥ १ ॥ नन्दन चंदन चंदमेलियै रे (देवा) ॥ नं० ॥ मांहे मृगमद कुंकुम भेलीयै ॥ करलीयै ( हां रे देवा ) क० । रय ण पिंगाणि कचोलीये ॥ २ ॥ पग जानु कर खंधै सिरै रे ( देवा ) भाल कंठ उर उदर न्तरै । दुखहरै ( हां रे देवा ) सुखकरै । तिलक नवेअंग की जीये ॥ ३ ॥ दूजीपूजा अनुसरै ॥ श्रावक दू० ॥ हरि विरचै जिम सुरगिरै । तिमकरै ( हां रे देवा ) ति० । जिणपर जनमन रंजीयै ॥ गा० ४ ॥ राग ललितमें । दूहा ॥ ❋ ॥ करहु विलेपन सुखसदन । श्री जिनचन्द शरीर । तिलक नवे अंङ्गपूजतां । लहै भवोदधि तीर ॥ १ ॥ मिटै ताप तसु देहको । परम शसिरता संग । चित्तखेद सब उपसमें । सुखमें समर सीरंग ॥ २ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ विधि ( राग ललित ) ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ विलेपन कीजे जिनवर अंगे । जिनवर अंग सुगंधे ॥ वि० ॥ कुंकुम चन्दन मृगमद यक्षकर्दम । अगर मिश्रित मनरंगे ॥ वि० ॥ क्रम जानु कर खंधे शिर भाल कंठ । उर उदरन्तर संगे । विबुधपति अवमेरो करत विलेपन । नपत भुजति जिम अंगे ॥ वि० २ ॥ नव अंग नव २ तिलक करतही । मिलन नवेनिध चंगइ । कहै साधु तन सुचि करसु ललित पूजा । जे सें गंग तरंगे ॥ वि० ३ ॥ ❋ ॥ इति द्वितीय विलेपन पूजा ॥ २ ॥ ❋ ॥ एकही विलेपन कीजे । नव अंग पूजीये ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ तृतीय वस्त्र युगल पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अत्यन्त कोमल सुगंध अमोलक वस्त्र युगल पर । केसरनो साथियो करी । प्रभुजी आगे खमा रहे मुखें इम पढे ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) ॥ वसन युगल उज्जल विमल । आरोपें जिन अंग । लाभ ज्ञान दर्शन लहे । पूजा तृतीय प्रसंग ॥ १ ॥ ( राग गौडी ) ॥ कमल कोमल घन चन्दन चरचित । सुगंध गंधे अधिवासिया ए ॥ ( हां रे ) अइयो० ॥ कनक मंडित हिय लालपल्लव शुचि । वसन जुग कंति अधिवासिया ए ॥ ( हां रे ) अ० ॥ जिनप उत्तम अंगे सुविधि शक्रो यथा । करिय पहिरवाणी ढोइये ए ॥ ( हां रे ) अ० ॥ पापलूहण अंग लूहणो देवनें । वस्त्रयुग पुंज मल धोइये ए ॥ ( हां रे ) अ० २ ॥ ❀ ॥ इति ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ विधिः ( राग वैरागी ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ देव दुष्य युग पूजा वन्योहे जगतगुरु । ( हे हांए ) आगे वन्योहे जगतगुरु । देव दुखहर अब इतनो मांगुं । तुंहीहे सबहि हितु तुंहीहे सुगतिदाता । तिण नमि २ प्रभु जीके चरणें लागूं ॥ दे० १ ॥ कहें साधु तीजी पूजा केवल दंसण नाण । देव दुष्य मिसदेहु उत्तम वागूं । श्रवण अंजलि पुट सुगुण अमृतपानां । सबरागी दुख संशय घुरम भागूं ॥ दे० ॥ २ ॥ इति तृतीय वस्त्रयुगल पूजा ॥ एकही वस्त्र युगल चढावे ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ चतुर्थी सुगंधचूर्ण पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अगर. चन्दन. कपूर. कुंकुम, कस्तूरीका, चूर्ण करी । कचोली भरी । आगे ऊभा रहे । मुखें इम पढे ॥ ( गोमी रागमें । दूहा ) ॥ पूज चतुर्थी इण परे । सुमति वधारे वास । कुमति कुगति दूरे हरे । दहे मोह दलपास ॥ १ ॥ राग सारंग ॥ ❀ ॥ ( हां होरे देवा ) बावना चंदन घस कुमकुमा । चूरण विधि विरचे वासुए । ( हां होरे देवा ) कुसुम चूरण चंदन मृगमदा । कंकोल तणो अधि वासुए ॥ ( हां० ) २ ॥ वास दशोदिश वानें । पूजे जिनअंग उवंगए ॥ ( हां० ) ॥ लाभि भवन अधिवासीयो । अनुगानिक मरम अभंगए ॥ ३ ॥ इति ॥ ❀ ॥

## ॥ ❁ ॥ अथ विधिः ( राग पुर्वी गौरी ) ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ मेरै प्रभुजीकी पूजा आनन्द मेलै ॥ पू० ॥ वासभवन मोह्यो सवलोए । संपदा भेलै ॥ पू० १ ॥ सतर प्रकारी पूजा । विजय देवा तत्ताथे ई ॥ वि० ॥ अप्रमत्त गुण तोरा । चरण सेवै ॥ पू० २ ॥ कुंकुम चंदन वासै । पूजीये जिनराजता थेई । चतुरगति दुक्ख गोरी । चतुर्थी धनकि । पू० ॥ ३ ॥ इति चतुर्थी वासक्षेप पूजा ॥ ४ ॥ ❁ ॥ एकही वासचूर्ण प्रभुजीके विंब ऊपर छांटै । मंदिर मैं चूर्ण उछालै ॥ ❁ ॥ ॥ ❁ ॥

## ॥ ❁ ॥ अथ पांचमी पुष्पारोहण पूजा ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ गुलाव, केतकी, पांचे तरै का फूल रकेवीमें रक्खी । मुखै इम पढै ॥ ❁ ॥ ( दूहा ) ॥ मन विकसै तिम विकसतां । पुहप अनेक प्रकार । प्रभु पूजा ए पंचमी । पंचमि गति दातार ॥ १ ॥ ❁ ॥ ( राग कामोद ) ॥ चंपक केतकी मालती ए । ( हां रे अ० ) कुंदकिरण मचकुंद । सोवन जाई जूइका । वउल सिरी अरविंद ॥ १ ॥ जिनवर चरण उवारि धरै ए ॥ ( हां रे उ० ) मुकुलित कुशम अनेक । सिव रमणीसें वर वरै । विध जिन पूज बिवेक । वि० । इति ॥

## ॥ ❁ ॥ अथ विधि ( राग कानरा ) ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ सोहैरी माई वरणें । मन मोहैरी माई बरणैं । ( अहो वरणें ) विविध कुशम जिन चरणें । ( अ० ) । विकसी हसीय जंपें साहिवकुं । राख प्रभू हम सरणें ॥ सो० ॥ १ ॥ पांचमी पूजा कुशम मुकुलितकी ( कु० ) पंच विषे ( हां० पं० ) दुख हरणें ॥ सो० ॥ कहे साधु कीरति भगति भगवंतकी । भविक नरा । ( हां रे भ० ) । सुख करणें ॥ २ ॥ सो० ॥ ❁ ॥ इति पांचमी पुष्पारोहण पूजा ॥ पांच जातना पुष्प चढावै ॥ ❁ ॥

## ॥ ❁ ॥ अथ छठी पुष्पमाला रोहण पूजा ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ नाग, पुन्नाग, दमणो, गुलाव, पारूल, मोगरा, सेवती, चंपेली, मालती ( इत्यादि ) पंच वरण फूलांनी माला हाथे लेई खड़ा रहे । ( मुखे इम पढे ) ( दूहा ) ॥ छठी पूजा ए भनी । महा सुगन्ध पुष्फमाल । गुण गुंथी थापे गलें । जेमटले दुख जाल ॥ १ ॥ ( राग रामगिरी गुजरी )

॥ ❀ ॥ नाग पुन्नाग मंदार नवमालिका । मल्लिका सोग पारिध कलीए (भलां पा० ) ॥ २ ॥ मरुक दमणक बकुल तिलक वासंतिका । लाल गुलाल पाडल भिलीए । ( भलां पा० ) ॥ १ ॥ जासुमणि मोगरा बेलला मालती । पंचवरणे गुंथी मालतीए । ( भलां गुं० ) हेमाल जिनकंठ पीठे ठवी लह लहे । जाणि संताप सब पालतीए । ( भलां० ) ॥ इति ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ विधिः । ( राग आसावरी ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ देखी दामा कंठ जिन अधिक एथतनंदै । चकोरकुं देखि जिम चंदै । ( दे० ) ॥ १ ॥ पंचविधि वरणरची कुशमांकी ॥ जैसी रयणाहे ( जे० ) बलि सुह मंदै ( देखी० ) ॥ २ ॥ छठी रे तोभर पूजा तबभार धूजै सब आरियण ( हां रे स० ) होइ तिम छंदै । ( दे० ) ॥ ३ ॥ कहै साधु की रत सकल आस्या सुख । भविक भगत ( हां रे भ० ) । जे जिन बंदै । ( दे० ) ॥ ४ ॥ इति छठी टोभर फूलमाला पूजा ॥ ६ ॥ एकही प्रभुजीके कंठे फूलमाला चढावे ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ सप्तमी अंगरचन पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पंचवरणा फूल केसरसें अंगीरचै । सो हाथे लेई । मुखै इम पढै ॥ ❀ ॥ ( दूहा ) ॥ केतकी चंपक केवडा । सोहै तेम सुगात । चाढो जिम चढता हुवे । सातमी ये सुख सात ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥ (राग केदारो गौडी) ॥ ❀ ॥ कुंकुम चरचित विविध पंच वरणक कुशमसुंए ॥ ( हां रे अ० ) कुंद गुलावसुं चंपको दमणको जासुसुंए ॥ १ ॥ सातमी पूजामें अंगी अलंकीयै । अंग आतंक मिसमाननी सुगति आलिंगियैए ॥ २ ॥ इति ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ विधि ( रागभैरवी ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पंचवरणी अंगी रची कुशम जाती । ( पं० ) । कुंद मचकुंद गुलाब सिरोमणि । कर करणी सोवन जाती । ( पं० ) ॥ १ ॥ दमणक मरुक पाडल अरविंदो । अंश जुई बेलुलवार्नी । पारधि चरण कल्हार मंदारो । विण पट कुल बनी भाती । ( पं० ) ॥ २ ॥ सुर नर किन्नर रमणि गाती । भैरवी कुगति भ्रतनिवाती । ( पं० ) ॥ ३ ॥ इति सातमी अंगीरचन पूजा ॥ ७ ॥ सुगंध पुष्प करी अत्यन्त भक्तीमें भगवंतके शरीरे अंगी रचे ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ आठमी गंधवटी पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ घनसार, अगर, सेल्हारस, प्रमुखसें सुगंध बट्टी करि। जिनेश्वर नें आगे ले खडा रहै ॥ ( दूहा ) ॥ अगर सेल्हारस सार । सुमती पूजा आठमी । गंधवटी घनसार । लावै जिनतनु भावसुं ॥२॥(राग सोरठ) ॥ ❀ ❀ ॥ ❀ ॥ कुंदकिरण शशि ऊजलो जी ( देवा ) । पावन घस घन सारे जी । सुरभि सिखर मृगनाभिनो जी ( देवा ) । चुन्नरोहण अधिकारो जी ॥ १ ॥ वस्तु सुगंध जव मोरियो जी ( देवा ) । अशुभ करम चूरी जे जी अंगण सुरतरु मोरियो जी ( देवा ) । तब कुमती जन खीजै जी । ( तब सुमती जनरीझै जी ) ॥ २ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ विधि ( राग सामेरी ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पूजोरी माई जिनवर अंगसुगंधै ( जिन० पू० ) । गंधवटी घनसार उदारै । गोत्रतीर्थंकर बांधै । ( भलां०२ ) ( पू ) ॥ १ ॥ आठमी पूजा अगर सेल्हारस । लावै जिन तनु रागै । धारकपूर भाव घन वरषत । सामेरी मति जागै ॥ ( भलां २ ) ( पू० ) ॥ इति आठमी वरासचूर्ण पूजा ॥८

## ॥ ❀ ॥ अथ नवमीध्वज पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हिवे सधव स्त्री भेली होके ऊजल थाल में । कुंकुमको साथियो करै । अक्षत थाल में धरै । श्रीफल रूपानांणो धरै । धजा थालमें धरि सधव स्त्री माथै रक्खी । गीत गान गावतां । सर्व वाजित्र वाजतां । तीन प्रदक्षिणा देवै । पीछे ध्वजा ऊपरि गुरु पासें वासक्षेप करावै । प्रभू सन्मुख गहली करै ॥ ऊपरि अक्षतांसें साथियो करै । सुपारी चढावै । मुखें ऐसा कहै । ॥ ❀ ॥ ( दूहा ) मोहनध्वज धर मस्तकै । सुहव गीत समूल । दीजे तीन प्रदक्षिणा । परसिध नवमी पूज ॥ १ ॥ ( रागमेघगोडी ) ॥ ( वस्तु ) सहस जोयण २ हेममय दंड युतपताक पंचवरण । घुमघुमंत घुग्घरीय वाजे । मृदुसमीर लहिकै गयण ( ल० ) । जाण कुमतिदल सयल भाजे ॥ सुरपति जिम विरचै धजाए ( हांएवि० ) नवमी पूज सुरंग । ( न० ) तिणपर श्रावक धजवहन । ( ति० ) आपे दान अभंग । ( आ० ) १ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ विधि ॥ ( राग नट्टनारायण ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जिनराज को ध्वजमोहन । ध्वज मोहनारे ध्वजमोहना ॥ ( जि० ) मोहन सुगुरु अधिवासीयो । कर पंचसबद त्रि प्रदक्षिणा ॥ ( कृ० ) मधव वधू सिर सोहना ॥ २ ॥ ( जि० ) भांतिवसन पंच वरण वर्न्योंग । विधकरी ध्वजको रोहण ॥ साधु भणति नवमीपूजा नव । पाप नीयांणा खोहणा । शिव मंदिरकुं अधिरोहणा । जन मोहो नट्टनारायणा ( जि० ) ॥ २ ॥ इति नवमी पूजा० ॥ ❀ ॥ एकही ध्वजा चढाई जे ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ दशमी आभरण पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पिरोजा. नीलम. लसणिया. मोती माणकमें जड्या । आभरण लेई मुख इम पढे ॥ ॥ ( राग केदारेमें ) ॥ ( दूहा ) ॥ दशमी पूजा आभर ण । रचना यथा अनेक । सुरपति जिम अंगे रचे । तिम श्रावक सुविवेक ॥ १ ॥ शिर सोहे जिनवर तणें । रयण मुगट झलकंति । तिलक भाल अं गद भुजा । श्रवणकुंडल अति भांति ॥ २ ॥ ❀ ॥ ( राग अथवाम गुंडमल्हार । आशावरी ) ॥ ❀ ॥ पाच पीरोजा नील लसणिया । मोती माणिक लाल रसणीया । ( हीरा मोहेरे ) धूनी चूनी पुलकर केतना । जातिरूप सुभग अंक अंजना ( मनमोहेरे ) ॥ १ ॥ मौलिमुगट रयणे जड्यो । काने कुंडल ( हांरे ) अति झगने जड्यो । ( जल्हारूरे ) । ( मन वारूरे ) ॥ भालतिलक बांहे अंगदा । आभरण दशमी पूजा मुदा । ( सुखकारूरे ) ॥ ( दुखहारूरे ) ॥ २ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ विधिः ॥ ( राग केदारो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रभु सिरसोहे ॥ मुगटमणि रयणे जड्यो । ( रय० ) । अंगद बाहु तिलक भालस्थल । यहुनोको कौन घड्यो ॥ ( प्र० ) १ ॥ श्रवण कुं डल शशि तरुण मंडल जीपे । सुरतरुमें अलंकर्यो । दुखकेदार चमर सिंहासन । छत्र शिर उपर धर्यो । अलंकृत जचितवर्यो ॥ २ ( प्र० ) ॥ ❀ ॥ इति दशमी आभरण पूजा ॥ १० ॥ एकही आभरण ( तथा ) रोकनांणो रूपनाला चढावे ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ इग्यारमी फूलघर पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुगंध पुष्पकरी संयुक्त फूलघर हाथ लेई । मुखे इम पढे ॥ ❀ ॥

( दूहा ) ॥ ❀ ॥ फूलगरो अतिसोभतो । फूंदे लहके फूल । महके परिमल फलमहा । इग्यारमी पूज अमूल ॥ १ ॥ ❀ ॥ ( राग रामगिरी ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कोज अंकोल राय वेलि नवमालिका । कुंद मुचकुंद बर बिच कलूए ( हां रे अईयो ) तिलक दमणक दलं मोगरा परमलं । कोमला पारिध पाम्लूए ॥ ( हां० अ० ) प्रमुख कुशमै रचै त्रिभुवन कुं रुचै । कुशमगेहे विचि तोरणूं ए ॥ ( हां० अ० ) शुद्ध चंद्रोदयं फूंबका लम्बयं । जालिका गोख चितचोरणूंए । ( हां० अ० ) ॥ २ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ विधि ॥ ( राग रामगिरी ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मेरो मन मोह्यो माई री । फूलघर आनंद झीलै ( फू० ) अ सत लसत दाम वघरी मनोहर । देखत तबही सब डुरितखीलै ( फू० ) ॥ ॥ १ ॥ कुशम मंरूप थंभ शुद्ध चंद्रोदय । कोरणी चारु विनाण सजै । इ ग्यारमी पूज वर्णीहै रामगिरी । विबुध विमान जैसें तिपुरिभजे ( फू० ) ॥ २ मे० ॥ इति इग्यारमी फूलघरपूजा ॥ ११ ॥ एकही फूलघर चढाईजे ।

## ॥ ❀ ॥ अथ बारमी पुष्पवर्षा पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पंचवर्णफूल गुलाबजल लेई । मुखै इम पढै ॥ ( राग मल्हार ) ॥ ( दूहा ) वरषै बारमी पूजमें । कुशम बादलिया फूल । हरण ताप दुःख लोकको । जानुसमा बहुमूल ॥ १ ॥ ( राग भीममल्हार ) कम्खानी जाति॥

॥ ❀ ॥ मेघ वरसै भरी पुष्फबादल करी । जानु परमाण कर कुशम पगरं । पंचवरणे वण्यो विकचि अनुक्रम चिण्यो । अधोवृंते नहीं पीडपस रं ॥ १ ॥ मे० १ ॥ वासमहके मिलै । भ्रमर भ्रमरीमिलै । सरस रस रंग ति ण दुख निवारी । जिनप आगे करे सुरप जिम सुखवरे । बारमी पूज ति णपर अगारी ॥ मे० ॥ २ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ विधिः ( राग भीममल्हार ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुप्फ बादलीया वरसै । सुममां ( अहो० ) । योजन असु चिहर वरस गंधोदक । मनुहर जानु समां ( पु० ) गमन आगमन की पी रनही तसु । इह जिनको अतिमय सुगुणें । गुंजन २ मधुकर इम पभणें ॥ गुं० ॥ मधुर वचन जिन गुण थुणइ ॥ २ ॥ कुसुम सुपरि सेवा जो करे ।

तसुपीरु नही सुम्मणें । ( पु० ) । समवसरण पंचवरण अधोवृंत । वि
बुध रचे सुमना सुसमा ॥ ३ ॥ बारमी पूज भविक तिम करे । कुशम
विकस हम उचरे । तसु भीमबंधन अधरा हुवे । जेकर हिं जे जिननमें
॥ पु० ॥ ४ ॥ ❁ ॥ इति बारमी पुष्पवृष्टी पूजा ॥ एकही फूलउगाले ॥

## ॥ ❁ ॥ अथ तेरमी अष्ट मंगलीक पूजा ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ अष्टमंगलीक लेकर मुखे इम पढे ॥ ❁ ॥ रागवसंत ॥ ❁ ॥
( दूहा ) तेरमीपूजा अवसरे । मंगल अष्टविधान । युगति रचै सुमते स
ही । परमानंद निधान ॥ ❁ ॥ १ ॥ राग वसंत ॥ ❁ ॥ अतुल विमल मि
ल्या । अखंडगुणे भिल्या । शालि रजत तणा तंदुलाए । श्लषण समाजक
विध पंचवरणक । चंद्रकिरण जैसा उजलाए ॥ १ ॥ ( अ० ) ॥ मेल मंगल
लिखे सयल मंगल आखे । जिनप आगलि सुथांनक धरे ए । तेरमीपू
जा विध तेरमी मन मेरे । अष्टमंगल अष्टसिद्धि करे ए ॥ ( अ० ) ॥ २ ॥

## ॥ ❁ ॥ अथ विधिः ( राग कल्याण ) ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ हांहो पुजावणी ने रसमें ( हांहो रसमें ३ ) ॥ ते० ॥ अष्टमं
गल लिख कुशल निधान । तेज तरणके रसमें ॥ पू० ॥ १ ॥ दप्पण भ
द्रासन नंद्यावर्त्त पूर्णकुंभ । मछयुग श्रीवछ नसुमें । वर्द्धमान स्वस्तिक पूजा
मंगलकी । आनंद कल्याण सुख रसमें ॥ २ ॥ ( पू० ) ॥ ❁ ॥
इति तेरमी पूजा ॥ १३ ॥ ❁ ॥ अष्ट मंगलीक चढावे ॥ ❁ ॥

## ॥ ❁ ॥ अथ चौदमी धूप पूजा ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ धूप रकेबीमें धर मुखे इम पढे ॥ ❁ ॥ (दूहा) ॥ ❁ ॥ गंधवटी मृगमद
अगर । सेल्हारस घनसार । धरि प्रभु आगलि धूपणा । चवदमी पूजाचार
॥ १ ॥ ( राग वेलावल ) ॥ ❁ ॥ कृष्णागर कपूरचूर । मोगंध पंचेपूर । कुंदरुक
सेल्हारस मार । गंधवटी घनमार ॥ १ ॥ ❁ ॥ गंधवटी घनमार चंदन मृग
मदारस भेलि ये । श्रीवास धूप दशांग अंबर सुरभि बहु द्रव्य मेलिये ।
वेरुलिय दंड कनक मंडित धूप धाणो कर धरे । भवबृत्तिधूपकरंति भोगं
रोग मोग अशुभ हरे ॥ २ ॥ ❁ ॥ ॥ ❁ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ विधिः ॥ (राग मालवी गोमी) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सब अरति मथन मुदार धूपं । करति गंध रसालरे । ( देवा कु० ) धाम धूमा वलिय धूसर । कलुष पातिक गालरे ( देवा )॥ १ ॥ उ र्द्धगति सूचंति भविकुं । भवभयै कर नालरे ( देवा ) चवदमी वामांग पूजा । दीये रयण विशालरे । आरती मंगल मालरे । मालवी गौमी तालरे ( देवा० स० )॥ इति चौदमी धूप पूजा ॥ १४ ॥ एकही धूप धाणो प्रभूकै बायें अंग धरी खेईजे ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ १५ गीत गान पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( प्रभुजीके मुख आगै मधुर स्वरे गुण ग्राम गावै ) ॥ ❀ ॥ ( दूहा ) कंठ भलै आलाप कर । गावो जिन गुण गीत । भावो अधिकी भावना । पनरमी पूजा प्रीत ॥ १ ॥ ( श्रीरागे आर्या ) यद्रदनंत केवल म नंत फलमस्ति जैन गुण गानं । गुण वर्णतान वाद्यै । मात्रा भाषा लयै र्युक्तं ॥ १ ॥ सप्तस्वर संगीतैः । स्थानैर्जयतादि ताल करणैश्च । चंचुर चा री चारी । गीतं गानं सुपीयूषं ॥ २ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ विधिः ॥ ( श्रीराग ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जिन गुणगानं श्रुत अमृतं । तारमंद्रादि अनाहत तानं । केव ल जिम तिम फल अमृतं ( जि० )॥ १ ॥ विबुध कुमार कुमरि आलापे सुरज उपांग नाद जनितं ( जि० )। पाठ प्रबंध धूयो प्रतिमानं । आयति छंद सुरति सुमतं ( जि० ) ॥ २ ॥ सबद समान रुच्यो त्रिभुवनकुं । सुरनर गावै जिन चरितं । सप्तस्वर मान शिव श्रीगीतं । पनरमी पूज हरै दुरितं रे । ( जि० )॥ ३ ॥ ❀ ॥ इति पनरमी गीत पूजा ॥ १५ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ सोलमी नाटिक पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ समान अवस्थावाली सधव स्त्रीयां ( वा ) कुमरयां भेली होके प्रभूके सन्मुख भंका कला रहन नाटक करै । स्त्रीयोंका जोग नवणें ( तो ) समान अवस्थावाला पुरुष नाटक करै । ( वा ) कुमर कुमरयां मिलके नाटक करै नाटक करणेंमें केई जीव तीर्थंकर गोत्रबांधाहै । नाटक करतां मुखे इम पढे ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) ॥ कर जोमी नाटक करै । सजि सुंदर सिणगार ।

भव नाटक ते नविभमें । सोलमी पूजा सार ॥ १ ॥ ( राग सुध नट्ट ) ( काव्य ) भावादि प्यमणासु चारु चरणा संपुन्न चंदानना । सप्पिम्मा सम रूव वेसवयसो मत्तेभ कुंभत्थणा । लावणा सगुणापि कस्सरवई रागाइ आलावणा । कुम्मारी कुमरा विजै न पुरउ नच्चाति सिंगारणा ॥ १ ॥ ( गद्यं ) तएणंते अठसयं कुमारि कुमरीउ । सूरियाभेणं देवेणं संदिठा । रंग मंरूवे पविठा । जिणनमंता । गायंता । वायंता । नच्चंतेत्ति ॥ २ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ विधि ( राग नट्ट त्रिगुण ) ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ नाचंती कुम्मार कुमरी द्रागरूदि तत्ता थेइय ( अ० ) ॥ द्रागरूदि २ कि थौंगि २ न । मुखें तत्ता थेइय ( अ० १ ना० ) वेणु बीणा मुरज वाजै । सोलही सिणगार साजै । तनन्ननन्नेईय ( अइयो ) ॥ घ्रणण घ्रणण घुग्घरु घमकै । रणणणणेईय ( अ० २ ना० ) कसंती कंचूकी तरुणी । मंजरी फ़ैंकार करणी । सोभंती कुमरीय ( अइयो ) हस्त कंहा वादि भावै । ददन्ती भमरीय ( अ० ना० ) ॥ ३ ॥ सोलमी नाटक तणी । सूरीयाभै रावण कीनी ॥ सुगंध तत्तात्थेईय ( अ० ) जिमप भगतें भविक लीणा । आणंद तत्तात्थेईय ( अ० ना० ) ॥ ४ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

इति सोलमी नाटिक पूजा ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ सतरमी वाजित्र पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ सतरमी पूजामें सब जातिका बाजित्र बजावै । मुखै इम पढै ॥ तत घन सुखिरै आनिधै । बाजित्र चौविध वाय । भगत भली भगवंतनी । सतरमी ए सुखदाय ॥ १ ॥ ( गाहा ) सुरमद्दल कंसालो । महुयर मद्दल सुवज्जए पणवो । सुरनारि नंदितूरो । पभणइ तूं नंद जिणनाह ॥ १ ॥ ( राग मधुमाधवी ) ॥ तूं नन्दि आनन्दि बोलत नन्दी । चरण कमल जंतु जगत्रय वन्दी ॥ ( तूं० ) ॥ ज्ञाननिर्मल वावन सुखवेदी । तिवलवोलै रंग अतिहि आनन्दी । ( तूं० ) ॥ १ ॥ भेरी गयणवाजंती कुमति ताजंती । सेवै जैन जैणावंती । जैन शाशन जइवंत नंदंती ॥ उदयसिंघ परि परिय वदंती॥(तूं०) ॥ २ ॥ सेवभविक मधुमाधन फेरी । भवनी फेरी नप्पभणंती । कहै साधु सतरमी पूजा वाजित्रसव । मंगल मधुर धुनिकर कहंती ( तूं० ) ३ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ कलश पूजा ( राग धन्यासरी ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ भवितूं भण गुण जिनके सब दिन । तेजतरण सुखराजै । (ते०) कवितशतक आठ थुणत सक्रस्तव । थुय २ रंगै हमछाजै । ( भवि० १ ) अ णहल पुर शांति शिव सुख दाई । नवनिधि सिध आवाजै । सतरसुपूज सुवि ध श्रावक की । भणीमें भगति हितकाजै ( भ० २ ) श्रीजिनचंद्रसूरि खर तरपति । धरम वचन तसु राजै । संवत सोल अढार श्रावणधुरि । पंचमि दिवस समाजै ( भ० ३ ) दयाकलशगुरु अमरमाणिक्यवर । तासुपसायै सु विध हुइ गाजे ॥ कहै साधु कीरत करत जिन संस्तव । सब लीला सुख साजे ( भवि० ४ ) ॥ ❀ ॥ इति सतरभेदी पूजा समाप्त ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ आरतीकरण विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पूजाकियां पीछै । सब कपड़ा । पाघ प्रमुख पहरकै ॥ उत्तरास ण करे ॥ पीछे प्रभू सन्मुख । अन्तर पट करी । आपके निलाडे कुंकूंको ति लक करे । पीछे पट दूरि करि । रकेबीमें साथियो करे । मांहि रूपाना णो । चावल सुपारी धरे । पीछे आरती दीपकसुं संजोयनें प्रभूके सन्मुख दक्षिण आवर्त्तसुं । वाजित्र सब वाजतां । आरती करै । मुखै पढै ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ आरती लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जैजै आरती शांति तुह्मारी । तोरा चरण कमलकी में जाऊं ब लिहारी ॥ ( जैजै० ) १ ॥ विश्वसेन अचिराजीके नंदा । शांतिनाथ सुख पूनमचंदा ॥ ( जैजै० २ ) ॥ चालीस धनुष सोवनमें काया । मृगलंछण प्रभु चरण सुहाया ॥ ( जै० ) ॥ ३ ॥ चक्रवर्त्ति प्रभु पंचम सोहै । सोलम जिन वर सुर नर मोहै ॥ ( जै० ) ४ ॥ मंगल आरती भोरहि कीजे । जन्म जन्म को लाहो लीजे ॥ ( जै० ) ॥ करजोडी सेवक गुण गावै । सो नर नारी अमरपद पावे ( जै० ) ५ ॥ ❀ ॥ इति श्री आरती संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ श्रीसिद्धचक्रजीकी वडी पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नवपद जीकी महिमा संयुक्त पूजा लिखिये है ॥ ❀ ॥ ( दूहा ) ॥ ❀ ॥ परम मंत्र प्रणमीकरी । तासधरी उर ध्यान । अरिहंतपद पूजा क रो । निज २ शक्ति प्रमाण ॥ १ ॥ ❀ ॥ ( काव्य ) उप्पन्न सन्नाण महो

मयाणं । सप्पाभि हेरा सण संठियाणं । सद्देसणा णंदिय सज्जणाणं । नमो नमो होउ सया जिणाणं ॥ १ ॥ नमोनंत संत प्रमोद प्रदानं । प्रधानाय जव्यात्मने जास्वताय । थया जेहना ध्यानथी सौख्य जाजा । सदा सिद्ध चक्राय श्रीपाल राजा ॥ २ ॥ कस्या कर्म दुर्मर्म चकचूर जेणें । जला जव्य नवपद ध्यानेन तेणें । करी पूजना जव्यजावें त्रिकालें । सदा वासियो आतमा तेण कालें ॥ ३ ॥ जिके तीर्थंकर कर्म उदयें करीनें । दियें देशना जव्यनें हितधरीनें । सदा आठ महा पाभिहारे समेता । सुरेसें नरेसें स्तव्या ब्रह्मपूता ॥ ४ ॥ कस्या घातिया कर्म च्यारे अलग्गा । जवोपग्रही च्यारले जे विलग्गा । जगतपंच कल्याण कें सौख्य पामें । नमो तेह तीर्थंकरा मोक्ष गामें ॥ ५ ॥ ❋ ॥ (ढाल० ) ॥ ❋ ॥ तीरथपति अरिहा नमुं । धरम धुरंधर धीरो जी । देशना अमृत बरसता । निज बीरज वडबीरो जी । ( उल्लालो ) । वर अखय निरमल ज्ञानजासन सर्वजाव प्रकासता । निजशुद्ध श्रद्धा आतमजावें चरण थिरता वासता । जिन नामकर्म प्रजाव अतिशय प्रातिहारज सोजता । जगजंतु करुणावंत जगवंत जविक जननें थोजता ॥ ६ ॥ ( ढाल ) ॥ ❋ ॥ श्री सीमंधर साहिब आगे ए देशी ॥ ❋ ॥ त्रीजे जव वर थानक तपकरि । जिनबांध्युं जिन नाम । चउसठ इंद्रे पूजित जेजिन । कीजे तास प्रणामरे ॥ ❋ ॥ ( जविका ) सिद्धचक्र पद वंदो । जिम चिरकालें नंदोरे ( ज० ) उपशम रसनो कंदो रे ( ज० ) रत्नत्रयीनो वृंदो रे ( ज० ) सेवें सुर नर इंदोरे ( ज० सिद्ध० ७ ) ( आंकणी ) जेहनें होइ कल्याणक दिवसें । नरकें पिण अजुआलुं । सकल आधिक गुण अतिशय धारी । जेजिन नमी अघ टालुंरे । ( ज० ) जे तिहुं नाण सम्मग्ग उप्पन्ना । जोग करम क्षीण जाणी । लेइ दिक्षा शिक्षा दिइं जगनें । ते नमीइं जिननांणीरे ( ज०सि० ) ९ ॥ महागोप महामाहण कहीयें । निरयामक सत्थवाह । उपमा एहवी जेहनें छाजे । तेजिन नमीइं उल्लाहरे ( ज०सि० ) ॥ १० ॥ आठ प्राती हारज जसुछाजे । पेंत्रीस गुणयुत वाणी जे प्रतिबोध करें जगजननें । तेजिन नमिइं प्राणीरे ( ज०सि० ) ॥ ११ ॥ ॥ ❋ ॥ ( ढाल ) ॥ ❋ ॥ अरिहंत पद ध्यातो थको । दव्वह गुण पर्या

येरे । भेद भेद करि आतमा । अरिहंत रूपी थायेरे ॥ १२ ॥ बीर जिणे सर उपदिसें । सांभल जो चितलाईरे । आतम ध्याने आतमा । रुद्धि मिले सब आईरे । ( बी० ) ॥ १३ ॥ ❀ ॥ ॐ ह्रीँ परमात्मने । अनंतानंत ज्ञानशक्तये । जन्म जरा मृत्यु, निवारणाय । श्रीम त्सिद्धचक्राय पंचामृतं १ । चंदनं २ । पुष्पं ३ । धूपं ४ । दीपं ५ । अक्षतं ६ । नैवेद्यं ७ । फलं ८ । वस्त्रं । वासं । ययामहे स्वाहा ॥ ❀ ॥ इति प्रथमपदे श्री अरिहंतस्य कलशपूजा ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ २ श्रीसिद्धपदकी पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) दूजी पूजा सिद्ध की । कीजे दिल खुसियाल । अशुभ करम दूरे टलै । फलै मनोरथ माल ॥ ❀ ॥ ( काव्य ) सिद्धाण माणंद रमालयाणं । नमो नमो णंत चउक्कयाणं । समग्ग कम्मक्खय कार गाणं । जम्मं जरा दुक्ख निवारगाणं ॥ १४ ॥ करी आठ कर्म्म क्षये पार पाम्या । जरा जन्म मरणादि भय जेणवाम्या । निरावरणजे आत्म रूपे प्रसिद्धा । थया पार पामी सदा सिद्धबुद्धा ॥ १५ ॥ त्रिभागोनदेहा वगाहात्मदेशा । रह्या ज्ञानमय जाति वर्णादिलेशा । सदानंद सौख्याश्रिता जोतिरूपा । अनाबाध अपुनर्भवादी स्वरूपा ॥ १६ ॥ ❀ ॥ सकल करम मलक्षय करी । पूरण शुद्ध स्वरूपो जी । अव्याबाध प्रभुता मयी । आतम संपति भूपो जी । ( उल्लालो ) जेभूप आतम सहज संपति शक्ति व्यक्ति पणें करी । स्वद्रव्य क्षेत्र स्वकाल भावे गुण अनंता आदरी । स्व स्वभाव गुण पर्याय परणति सिद्ध साधन परभणी । मुनिराज मानसर हंस सम वरू नमो सिद्ध महागुणी ॥ १६ ॥ ❀ ॥ ( ढाल ) ॥ ❀ ॥ समय पए संतर अणफरसी । चरम तिभाग विशेम । अवगाहन लहीजे शिव पुहता सिद्ध नमो ते असेसरे ॥ १७ ॥ ( भ० सि० ) पूरब प्रयोगनें गति परिणामें । बंधन भेद असंग । समय एक ऊरधगति जेहनी । ते सिद्ध प्रणमों रंगरे ॥ १८ ॥ ( भ० सि० ) निरमल सिद्ध सिलानें ऊपरि । जोयण एक लोकंत । सादि अनंत तिहां थिति जेहनी । ते सिद्ध प्रणमो संतरे ॥ १९ ॥ ( भ० सि० ) जाणें पिण न सके कही पुरगुण । प्राकृत तिम गुणजास ।

उपमा विण नाणी भवमांहें । ते सिद्ध दीउ उल्लास रे ॥ २० ॥ ( भ०सि० ) ज्योतिसुं ज्योति मिली जसु अनुपम । विरमी सकल उपाधि । आतम राम रमापति समरो । ते सिद्ध सहज समाधिरे ॥ २१ ॥ ( भ० सि० ) ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ ❀ ॥ रूपातीत स्वभाव जे । केवल दंसण नाणीरे । ते ध्याता निज आतमा । होइ सिद्ध गुण खाणी रे ( वी० ) ॥ ❀ ॥ ॐ ह्रीं० ॥ ॥ ❀ ॥ इति द्वितीय श्री सिद्ध पदस्य कलश पूजा ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ तृतीय आचारज पद पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) हिव आचारज पदतणी । पूजा करो विशेष । मोह तिमर दूरे हरे । सूझै भाव असेस ॥ १ ॥ ❀ ॥ सूरीण दूरी कय कुग्गहाणं । नमो नमो सूरि सम प्पहाणं । सद्देसणा दाण समायराणं । अखंड छत्तीस गुणायराणं ॥ १ ॥ नमुं सूरिराजा सदा तत्वताजा । जिनेंद्रागमें प्रौढ साम्राज्य भाजा । षट्वर्ग वर्गित गुणे शोभमाना । पंचाचारनें पालवै सावधाना ॥ २ ॥ भवि प्राणिनें देशना देशकालै । सदा अप्रमत्ता यथा सूत्र आलै । जिके सासनाधार दिग्दंतकल्पा । जगत्ते चिरंजीव ज्यो सुद्ध जल्पा ॥ ३ ॥ ❀ ॥ ( ढाल ) ॥ ❀ ॥ आचारज मुनिपति गणी । गुण छत्तीसे धामो जी । चिदानंद रस स्वादता । पर भावे निक्कामो जी। ( उल्लालो ) निक्काम निरमल शुद्ध चिदघन साध्य निज निरधारथी । वरज्ञान दरशण चरण वीरज साधना व्यापार थी । भवि जीव बोधक तत्व शोधक सयल गुण संपतिधरा । संवर समाधी गत उपाधी दुविध तप गुण आदरा ॥ २५ ॥ ॥ ❀ ॥ ( ढाल ) ॥ ❀ ॥ पांच आचार जे सूधा पालै । मारग भाषै साचो । ते आचारज नमियै नेहसुं । प्रेम करीने जाचो रे ॥ ( भ० सि० ) २६ वर छत्तीस गुणें करि सोभै । युग प्रधान जग बोहै । जग मोहै नरहै खिण कोहै । सूरि नमूं ते जोहैरे ॥ ( भ०सि० २७ ) नित अप्रमत्त धरम उवएसै । नहीं विकथा न कषाय । जेहनें ते आचारज नमीइं । अकलुस अमल अमायरे ॥ ( भ० सि० २८ ) जेदिइं सारण वारण चोयण । पडिचोयण वलि जननें । पटधारी गछथंभ आचारज । ते मान्या मुनि मनेंनेरे ॥ ( भ० सि० २९ ) अत्थमिइं जिन सूरज केवल । वंदीजे जगदीवो । भुवन पदार

थ प्रगट नपट्ठते । आचारज चिरंजीवोरे ( ज० सि० ) ३० ॥ ❋ ॥ ( ढाल ) ॥ ❋ ॥ ध्याता आचारज जला । महामंत्र सुज ध्यानी रे । पंच प्रस्थानें आतमा । आचारज होइ प्राणी रे ( वी० ) ३१ ॥ ॐ ह्रीं० ॥ ❋ ॥

इति तृतीय श्री आचार्यपद कलश पूजा ( ३ ) ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ चौथी पाठक पद पूजा लि० ॥ ❋ ॥

॥❋॥ (दूहा ) गुण अनेक जगजेहना । सुंदर सोजित गात्र । नव जाया पद अरचिये । अनुजव रसनो पात्र॥१॥(काव्य)सुत्तत्थ वित्थारण तप्पराणं । नमो २ वायग कुंजराणं । गणस्स संधारण सायराणं । सव्वप्पणाव ज्जिय मह्वराणं ॥ १ ॥ नहीं सूरि पिण सुरि गुणनें सुहाया । नमुं वाचका त्यक्त मद मोह माया । वली द्वादशांगादि सूत्रार्थ दानें । जिके सावधानें निरुद्धाजिधांनें ॥ २ ॥ धरे पंचनें वर्ग वर्गित गुणौघा । प्रवादि द्विपोछेदनेंतु ल्य सिंघा । गुणी गछ संधारणें स्थंज पूता । उपाध्याय ते वंदिइं चितप्रजूता ॥ ३ ॥ ❋ ॥ ( ढाल ) ❋ ॥ खंतिज्जुआ मुत्तीजुआ । अज्जव मद्दव जुत्ताजी । सच्चंसोयं अकिंचणा । तव संयम गुण रत्ताजी । ( उल्लालो ) जेरम्या ब्रह्म सुगुप्त गुप्ता सुमति सुमता शुजधरा । स्याद्वादवादइं तत्वसाधक आतमपर विजजनकरा । जवजीरु साधन धीर शासन वहन धोरी मुनिवरा । सिद्धांत वायन दानसमरथ नमो पाठक पदधरा ॥ ३३ ॥ ❋ ॥ ( ढाल ) ॥ ❋ ॥ द्वादश अंग सिझायकरै जे । पारग धारग तास । सूत्र अरथ विस्तार रसिकते । नमो उवझाय उल्लासरे ॥ ( ज०सि० ) ॥ ३४ ॥ अर्थ सूत्रनें दान विजागे । आचारज उवझाय । जवत्रिएहे जेलहे सिवसंपद । नमीये ते सुपसायरे ( ज० ) ॥३५॥ मूरखशिष्य निपजाये जेप्रजु । पाहण पल्लव आणें । ते उवझाय सकल जन पूजित । सूत्र अरथ सविजाणेंरे ॥ ( ज०सि० ) ॥ ३६ ॥ राजकुमर सरिखा गणचिंतक । आचारज पदयोग । जे उवझाय सदा ते नमतां । नावे जव जय सोगरे ॥ ( ज० सि० ) ३७ ॥ बावना चंदन रस सम वयणें । अहित ताप सवि टाले । ते उवझाय नमी जे जेवलि । जिनशासन अजुवालेरे ॥ ( ज०सि० ) ॥ ३८ ॥ ❋ ॥

( ढाल )॥ ❀ ॥ तपसिझायें रत सदा । द्वादश अंगनो ध्यातारे । उपाध्याय ते आतमा । जगबंधव जगभ्रातारे ॥ ( बी० तु० )॥ १९ ॥ ॐ ह्रीं० ॥ इति चोथे पदे श्रीपाठकजीकी कलश पूजा सं० ॥ ४ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ पांचमी साधू पदपूजा लि०॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) मोक्षमारग साधन भणी । सावधान थया जेह । ते मुनिवर पद वंदतां । निरमल थाये देह ॥ १ ॥ ( काव्य ) साहूण संसाहिय संयमाणं । नमो २ शुद्ध दया दमाणं । तिगुत्त गुत्ताण समाहियाणं । मुणीण माणंद पय ठियाणं ॥ ४० ॥ करै सेवना सूरि वायग गणीनी । करुं वर्णना तेहनी सी मुणीनी । समेता सदा पंचसुमती त्रिगुप्ता । त्रिगुप्ते नहीं कांमभोगेषु लिप्ता ॥ ४१ ॥ वली बाह्य अभ्यं तरै ग्रंथटाली । हुइं मुक्तिनें जोग चारित्र पाली । शुभाष्टांग योगें रमै चित्तवाली । नमुं साधुनें तेह निज पाप टाली ॥ ४२ ॥ ❀ ॥ ( ढाल )॥ ❀ ॥ सकल विषय विष वारिनें । निकामी निस्संगी जी । भव दव ताप समावता । आतम साधन रंगी जी ( उल्लालो )। जेरम्या शुद्ध स्वरूप रमणें देह निर्म्मम निर्म्मदा । काउसग्ग मुद्रा धार आसन ध्यान अभ्यासी सदा । तप तेज दीपै कर्म्म जीपै नैव छीपै परभणी । मुनिराज करुणासिंधु त्रिभुवन बंधु प्रणमो हित भणी ॥ ४३ ॥ ❀ ॥ ( ढाल )॥ ❀ ॥ जिम तरु फूलै भमरो बैसै । पीडा तसुन उपाय । लेई रस आतम संतोषें । तिम मुनि गोचरी जायरे ॥ ( भ० सि० ) ॥४४॥ पांच इंद्रीनें जेनित जीपै । षट काया प्रतिपाल । संयम सतर प्रकार आराधे । वंदूं दीन दयालरे ( भ० सि० )॥ ४५ ॥ अढार सहस शीलांगना धोरी । अचल आचार चरित्र । मुनिमहंत जयणायुत वंदी । कीजै जनम पवित्ररे ( भ० सि० )॥ ४६ ॥ नवविध ब्रह्मगुपति जेपालै । बारह विह तपसूरा । एहवा मुनि नमीये जो प्रगटै । पूरव पुन्य अंकूरारे ( भ० सि० )॥ ४७ ॥ सोनातणी परें परिक्षा दीसे । दिन २ चढतै वानें । संयम खपकरता मुनि नमिइं । देश काल अनुमानरे ॥ ( भ० सि० )॥ ४८ ॥ ( ढाल ) ॥ ❀ ॥ अप्रमत्त जेनित रहे । नवि हरखे नवि सोचेरे ।

साधु सूधा ते आतमा। स्युं मुंमै स्युं लोचैरे॥ ( वी० )॥ ४९॥ ॐ ह्रीं०। इति पांचमे पदे श्रीसाधुजीकी कलश पूजा॥ ४०॥ ॥❀॥

## ॥❀॥ अथ छठी दर्शन पद पूजा लि० ॥❀॥

॥❀॥ ( दूहा ) जिनवर भाषित शुभनय। तत्वतणी परतीत। ते सम्यग् दरसन सदा। आदरियै शुभ रीत॥ १॥❀॥ ( काव्य ) जिणुत्त तत्ते रुइ लक्खणस्स। नमो २ निम्मल दंसणस्स। मिछत्त नासाइ समुग्गमस्स। मूलस्स सद्धम्म महा दुमस्स॥ विपर्या सहो वासना रूप मिथ्या। टलै जे अनादी अछै जे कुपथ्या। जिनोक्तै हुइं सहज थी शुद्धध्यानं। कहीइं दर्शनं तेह परमं निधानं॥ ५०॥ विना जेहथी ज्ञान मज्ञान रूपं। चरित्रं विचित्रं भवारण्य कूपं। प्रकृति सातनें उपसमइ क्षय तेह होवै। तिहां आप रूपें सदा आप जोवै॥ ५१॥❀॥ ( ढाल )❀॥ सम्यग् दरसन गुण नमो। तत्त्व प्रतीत सरूपी जी। जसु निरधार स्वभाव छै। चेतन गुण जे अरूपी जी ( चाल ) जे अनूप श्रद्धा धरम प्रगटै सयल पर ईहा टलै। निज शुद्ध सत्ता भाव प्रगटै अनुभव करुणा ऊछलै। वहुमान परणिति वस्तुतत्वें अहव सुरकारण पणें। निज साध्यदृष्टै सरब करणी तत्वता संपति गिणै॥ ५२॥❀॥ ( ढाल )॥❀॥ शुद्ध देव गुरु धर्म्म परिक्षा। सद्दहणा परिणाम। जेह पामी जै तेह नमी जै। सम्यग् दर्शन नामरे ( भ० सि० ) ५३॥ मल उपशम क्षय उपशम जेह थी। जे होइ त्रिविध अभंग। सम्यग्दर्शन तेह नमीजे। जिन धरमें दृढ रंग रे॥ ( भ० सि० ) ५४॥ पांचवार उपशम लही जे। क्षय उपशमीय असंख। एकवार क्षायक ते सम्यक्। दर्शन नमीइं असंख रे ( भ० सि० ) ५५॥ जेविण नाण प्रमाण न होवे। चारित्रतरु नवि फलिउ। सुख निरवाण न जे विण लहिइं। समकित दर्शन वली उरे॥ ( भ० सि० )॥ ५६॥ सड सठ बोले जे अलंकरिउ। ज्ञान चारित्रनुं मूल। समकित दर्शन ते नितप्रणमुं। सिवपंथनुं अनुकूलरे॥ ( भ० सि० )॥५७॥❀॥ सम संवेगादिक गुणा खय उपशम जे आवेरे। दर्शन तेहिज आतमा। स्युं होय नाम धरावेरे॥ ( वी०तुमे० )॥५८॥ (ॐ ह्रीं०)॥❀॥ इति छठे दर्शनपद कलश पूजा॥६॥

## ॥ ❋ ॥ अथ ७ में श्री ज्ञानपद पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ( दूहा ) ॥ ❋ ॥ सप्तम पद श्री ज्ञाननो । सिद्ध चक्र तप मांहि । आराधी जै सुन्नमनें । दिन २ अधिक उन्नाह ॥ १ ॥ ( काव्य ) अन्नाण सम्मोह तमो हरस्स । नमो २ नाण दिवायरस्स । पंचप्पयारस्सु वगारगस्स । सत्ताण सव्वत्थ पयासगस्स ॥ होइं जेहथी ज्ञानशुद्ध प्रबोधे । यथा वर्ण नासै विचित्रा विबोधे । तिणें जाणीइं वस्तु षट्द्रव्य न्नावा । न होवै विकल्ला निजेल्ला स्वन्नावा ॥ ५९ ॥ होइं पंचमत्यादि सुग्यान न्नेदे । गुरुपासथी योग्यता तेह वेदइं । वली ज्ञेय हेया उपादेय रूपै । लहै चित्तमां जेमध्यान प्रदीपै ॥ ६० ॥ ❋ ॥ ( ढाल ) ॥ न्नव्य नमो गुण ज्ञाननें । स्वपर प्रकाशक न्नावें जी । परयाय धरम अनंतता । न्नेदा न्नेद स्वन्नावे जी ॥ ( चाल ) ॥ जे मोख्य परणति सकल ज्ञायक बोध वास विलासता । मति आदि पंच प्रकार निरमल सिद्ध साधन लंछना । स्याद्वाद शंगी तत्वरंगी प्रथम न्नेद अन्नेदता । सविकल्पनें अविकल्प वस्तु सकल संसय छेदता ॥ ६१ ॥ ❋ ॥ ( ढाल ) ॥ ❋ ॥ न्नक्ष अन्नक्षन जे विण लहीयें । पेय अपेय विचार । कृत्य अकृत्य न जे विण लहीयै । ज्ञानते सकल आधाररे ॥ ( न्न० ) ॥ ६२ ॥ प्रथम ज्ञाननें पछे अहिंसा । श्रीसिद्धांते न्नाख्युं । ज्ञाननें बंदो ज्ञान मनिंदो । ज्ञानीयें शिवसुख चाख्युं रे ॥ ( न्न० सि० ) ॥ ६३ ॥ सकल क्रियानुं मूलते श्रद्धा । तेहनुं मूलजे कहीइं । तेह ज्ञान नित नित वंदीजे । ते विण कहो किम रहीइंरे ॥ ( न्न० ६४ ) ॥ पांच ज्ञान मांहें जेह सदागम । स्वपर प्रकाशक तेह । दीपकपरें त्रिन्नुवन उपगारी । वलि जिम रवि शशि मेहरे ॥ ( न्न० सि० ) ॥ ६५ ॥ लोक ऊरध अध तिर्यग् जोतिष । वैमानिकनें सिद्धि । लोक अलोक प्रगट सवि जेहथी । तेज्ञानें मुऊ शुद्धीरे ॥ ( न्न० सि० ) ॥ ६६ ॥ ❋ ॥ ( ढाल ) ॥ ❋ ॥ ज्ञानावर्णी जे कर्म छे । क्षय उपशम तसु थायैरे । तो होइए हीज आतमा । ज्ञान अबोधता जाइंरे ॥ ( वी० तु० ) ॥ ६७ ॥ ( उँ ह्रीँ पर० ) ॥ ❋ ॥ इति सातमी श्रीज्ञानपद कलश पूजा सं० ॥ ❋ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ आठमें श्रीचारित्र पद पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) अष्टमपद चारित्रनो । पूजो धरी उमेद । पूजत अनुभव रस मिलै । पातिक होय उछेद ॥ १ ॥ ❀ ॥ आराहिया खंडिअ सक्कियस्स । नमो नमो संयम वीरियस्स । सज्झावणा संग विवड्ढियस्स । निव्वाण दाणाइ समुज्जयस्स ॥ वली ज्ञान फल ते धरीयै सुरंगै । निरासंसता द्वाररोध प्रसंगै । भवां बोध संतारणे यानतुल्यं । धरुं तेह चारित्र अप्राप्त मूल्यं ॥ ६८ ॥ होइ जास महिमा थकी रंक राजा । वली द्वादशांगी भणी होइ ताजा । वली पाप रूपोपि निःपाप थायै । थई सिद्धते कर्मनें पार जाये ॥ ६८ ॥ ❀ ॥ ( ढाल ) ॥ ❀ ॥ चारित्र गुण वलि वलि नमो । तत्व रमण जस मूलो जी । पर रमणीय पणो टलै । सकल सिद्धि अनुकूलो जी । ( चाल ) । प्रतिकूल आश्रव त्याग संयम तत्व थिरता दममयी । सुचि परम खंती मुनि दसेपद पंच संवर उपचयी । सामायिकादिक भेद धरमें यथाख्याते पूर्णता । अकषाय अकुलस अमल उज्वल कामकस्मल चूरणता ॥ ७० ॥ ❀ ॥ ( ढाल ) ॥ ❀ ॥ देशविरतिनें सर्व विरतिजे । ग्रहीयतिनें अभिराम । ते चारित्र जगत जयवंतो । कीजें तास प्रणाम रे । ( भ० सि० ) ॥ ७१ ॥ तृणपरे जेषट्खंड सुखछंडी । चक्रवर्त्ति पिण वरिउ । ते चारित्र अक्षय सुख कारण । ते में मन मांहि धरिउरे ( भ० सि० ) ॥ ७२ ॥ हुआ रांकपणें जे आदरि । पूजित इंद नरिंद । असरण सरण चरण ते वंदुं । वरिउ ज्ञान आनंदरे ( भ० सि० ) ॥ ७३ ॥ वारमास परजाइ जेहनें । अनुत्तर सुख अतिक्रमिइ । शुक्ल सुकल अभिजात्यते ऊपरि । ते चारित्रनें नमीइ रे ( भ० सि० ) ७४ ॥ चयते आठ करमनो संचय । रिक्त करे जे तेह । चारित्र नाम निरुक्ते भाख्युं । तेवंदुं गुण गेहरे ( भ० सि० ) ७५ ॥ ❀ ॥ ( ढाल ) ॥ ❀ ॥ जाणि चारित्र ते आनमा । निज स्वभाव मांहि रमतो रे । लेश्या शुद्ध अलंकरयो । मोहवनें नवि भमतो रे । ( वी० तुमे० ) ७६ ॥ ॐह्रीं प० ॥ ❀ ॥ इति आठमी श्रीचारित्रपद कलश पूजा ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ हिवे ९ मी तप पद पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) करमकाष्ट प्रतिजालवा । परतिख अगनि ममान । ते

य पद पूजो सदा । निरमल धरिये ध्यान ॥ १ ॥ कम्मदुमोन्मूल न कुंज
स। नमो २ तिव्व तवोयरस्स। अणेग लद्धीण निबंधणस्स । दुस्सझ अ
ाणय साहणस्स ॥ ७७ ॥ इय नवपय सिद्धि लद्धि विज्जा समिद्धं । पयडि
सर वग्गं ह्रींतिरेहा समग्गं। दिसिवय सुरसारं खोणि पीढावयारं। तिज
विजयचक्कं सिद्ध चक्कं नमामि ॥ ७८ ॥ त्रिकालक पणें कर्म्मकषाय टा
। निकाचित पणें बांधिया तेहवालै । कह्यो तेह तप वाह्य अभ्यंतर दु
दे । क्षमा युक्ति निर्हेत दुर्ध्यान छेदे ॥ ७८ ॥ होइं जास महिमाथकी
ब्ध सिद्धि । अवांछक पणें कर्म्म आवरण शुद्धिः । तपो तेह
नजे महानंद हेतें। होइं सिद्धि सीमंतनी निज संकेतें॥ ८० ॥ इम नव
द ध्यावे परम आनंद पावे। नव भव शिव जावे देव नर भवज पा
। ज्ञान विमल गुण गावे सिद्ध चक्र प्रभावे । सब दुरति समावे विश्व
यकार पावे ॥ ८१ ॥ ❀ ॥ ( ढाल ) ॥ ❀ ॥ इछा रोधन तप नमो । बा
अभ्यंतर भेदें जी । आतम सत्ता एकता । पर परणित उछेदेंजी ॥ १ ॥
भलाजो ) उछेद कर्म्म अनादि संतति जेह सिद्ध पणो वरइ । सुभयोग
ग आहार टाली भाव अक्रियता करै । अंतर मुहुरत तत्व साधै सर्व
वरता करी। निज आतमसत्ता प्रगट भावें करो तप गुण आदरी॥ ८२ ॥
❀ ॥ ( ढाल ) इम नव पद गुणमंडलं। चउनिक्षेप प्रमाणें जी । सात न
यें जे आदरे। सम्यग् ज्ञानें जाणें जी। ( चाल ) निरधार सेती गुणें गुण
णो करइ जे बहुमानए। जसुकरण ईहा तत्व रमणें थाये निरमल ध्यान ए।
इम शुद्ध सत्ता भलो चेतन सकल सिद्धि अनुसरै । अक्षय अनंत महंत
चिदघन परम आनंदता वरै॥ ८३ ॥ कलश ॥ इम सयल सुख कर गुण
पुरंदर सिद्ध चक्र पदावली । सविलद्धि विज्जा सिद्धि मंदिर भविक पूजो
मनरली। उवझाय वर श्रीराज सारह ज्ञान धर्म सुराजता। गुरु दीपचंद
सुचरण सेवक देवचंद्र सुशोभता॥ ८४ ॥ ❀ ॥ ( ढाल ) ॥ ❀ ॥ जाणंता
त्रिहुं ज्ञाने संयुत। ते भव मुगति जिणंद । जेह आदरै करम खपेवा ।
ते तप सुरतरु कंदरे॥ ( भ० सि० ) ॥ ८५ ॥ करम निकाचित पणि क्ष
य जाइं । । क्षमा सहित जेकरतां। ते तप नमींइं तेह दीपावै। जिन शासन

नुजमंतां रे ॥ ( न सि० ) ॥ ८६ ॥ आमो सही पमुहा बहुलब्धी । होवे जास प्रजावे । अष्ट महासिधि नव निधि प्रगटे । नमीये ते तप जावेरे ॥ ( ज० सि० ) ॥ ८७ ॥ फल शिव सुख मोटुं सुर नरवर । संपति जेहनुं फूल । ते तप सुर तरु सरिषो वंदुं । शम मकरंद अमूलरे ॥ ( ज० सि० ) ॥ ॥ ८८ ॥ सर्व मंगल मांहि पहिलो मंगल । वरणवियो जे ग्रंथ । ते तप पद त्रिकरण नित नमिइं । वर सहाय शिवपंथरे ॥ ज०सि० ) ॥ ८९ ॥ इम नव पद थुणतो तिहां लीणो । हुउ तनमय श्री पाल । सुजस विलास बे चोथे खंमे । एह इग्यारमी ढालरे ॥ ( ज०सि ) ॥ ९० ॥ ❋ ॥ ( ढाल ) ॥ ❋ ॥ इछा रोधन संबरी । परीणत समता योगे रे । तप ते एहिज आतमा । वरते निज गुण जोगे रे ॥ ( वी० ) ॥ ९१ ॥ आगमनो आगमतणो । जाव ते जांणो साचोरे । आतम जावे थिरहुउ । परजावे मत राचोरे ॥ ( वी० ) ॥ ९२ ॥ अष्ट सकल समृद्धिनी । घट मांहि ऋधि दाखी रे । तिम नव पद ऋधि जाणज्यो । आतमराम बे साखीरे ॥ ( वी० ) ॥ ८३ ॥ योग असंख्य बे जिन कह्या । नवपद मुख्यते जाणोरे । एह तणे अविलंबने । आतम ध्यान प्रमाणो रे ॥ ( वी० ) ॥ ९४ ॥ ढाल बारमी एहवी । चोथे खंमे पूरी रे । वाणी वाचक जस तणी । कोइ नय रहीय अधूरी रे ॥ ( वी० ) ॥ ९५ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने । अनन्तानन्त ज्ञान शक्तिये । जन्म जरा मृत्यु निवारणाय । श्रीमत् सिद्धचक्राय । वासं । पंचामृतं । चंदनं । पुष्पं । धूपं । दीपं । अक्षतं । नैवेद्यं । फलं । वस्त्रं । यजामहे ॥❋॥ इति श्री देवचंदजी, जस विजयजी महोपाध्याय कृत सिद्धचक्र महातम. श्री नवपद पूजा सं० ॥ ❋ ॥

## ॥❋॥ अथ नवपद पूजादिकमें सामग्री चाहिये सो लि०॥❋॥

॥ ❋ ॥ ( पंचामृत ) दूध । दही । घृत । मिश्री । शुद्धजल ॥ केसर । सुगंध चंदन । कपूर । कस्तूरी । अंबर । रोली । मोली । छूटा फूल । फूलोंकी माला । फूलोंका चंद्रवा । धूप । चावल प्रमुख ( नव ) जातके धान । ( नव ) प्रकारके नैवेद्य । ( नव ) प्रकारके फल ( नव ) प्रकारके पक्वान्न । मिश्री । पतासा । लड्डू । बिदाम । सुपारी । प्रमुख । अंगलूहणा

खातर सपेद वस्त्र। पहरावणी खातर उत्तम रेसमी प्रमुख वस्त्र। वासक्षेप। गुलाबजल। अत्तर। इत्यादिक। और ( नव ) नालीके कलस ( ९ ) रकेबी। परात। तसला आरती। मंगलदीप। भगवानकै अंगी। समोसरण। इत्यादिक सब चीज पहली ठीक करके रक्खे। इससें। पूजामें। विघ्न न। होय। (इहां) संक्षेपविधि कही। विसेषविधि गुरूके मुखसें जाण लेणा॥

## ॥ ❋ ॥ अथ सबके जाणनेंकों। नवपदजीके पूजा करणेंकी कलस ढालणेंकी विधि कहते है॥ ❋ ॥

॥ ❋ चैत्र सुदि १५ ( तथा ) आसोज सुदि १५ के दिन। आंबिया नव करे। पंचामृत मोटे घर्ण प्रमुखमें करे। थापना में श्रीफल रोक नाणो धरे। पीछे गुरुके पास मंत्रायकै। केसरसें तिलक करै। कांकणडोरा हाथमें बांधे। दहणें हाथमें साथियो करिके। विधि संयुक्त स्नात्र पढावे। पीछे श्री अरिहंत पदमें चावल ( तथा ) चंदन। पुष्प। धूप। दीप। नैवेद्य(प्रमुख) अष्टद्रव्य। वासक्षेप। नागरवेल पांन। रकेबीमें धरके। हाथमे रक्खे। नव कलशके मोली बांधै। कुंकुमका साथिया करै। पंचामृतसें भरिके कलश हाथ में लेके पूजा पढै। संपूर्ण होणें सें कलश ढाले। बर्णी परातमें प्रतिमा जी पधरावे। ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं। इस माफक कहतो थको। अरिहंत पदकी पूजा करै। अष्ट द्रव्य अनुक्रमें चढावे॥ इति प्रथम पूजा॥ ❋ ॥ ॥ १ ॥ ( दूसरे ) सिद्धपद रक्तवर्ण। गहूं रकेबीमें धरै। श्रीफल ( तथा ) अष्टद्रव्य लेकर। ( ९ कलश ) पंचामृतसें भरिके पूजा पढे। ( पूर्ण होणें सें ) ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं कही। ( कलश ढालै )। अष्ट द्रव्य चढावै॥ इति द्वितीय पूजा विधि २॥ ❋ ॥ ( तीसरे ) श्री आचार्यपद। पीलेवर्ण। चिणाकी दालि। अष्टद्रव्य। श्रीफल प्रमुख लेके। कलश ( ९ ) पंचामृत सें भरिके पूजा पढे। पूर्ण होणेसें। ॐ ह्रीं णमो आयरियाणं ( कही )। कलश ढाले। द्रव्य चढावै॥ ❋ ॥ इति तृतीय पूजा॥ ३॥ ❋ ॥ (चौथे श्री उपाध्याय पद। नीले वर्ण। मूंग प्रमुख अष्ट द्रव्य लेके पूर्वोक्त विधि सें पूजा करे। संपूर्ण होणेंसें॥ ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं ( कही ) कलश ढाले। अष्ट द्रव्य चढावे॥ इति चोथी पूजा विधि॥ ४॥ ❋ ॥ ( पांचमें )

श्री सर्व साधुपद । स्यामवर्ण उमद प्रमुख लेवै । और पूर्वोक्त विधिः । (पूर्ण होनेमें) ॐ ह्रीं णमो लोए सव्व साहूणं ॥ इति पंचमी ५ ॥❀॥ (छठै) दर्शनपद स्वेत वर्ण । चावल प्रमुख पूर्वोक्त विधिसें । ॐ ह्रीं णमो दंसणस्स ॥ इति छठी पूजा विधि ॥ ६ ॥ ❀ ॥ (सातमें) श्री ज्ञान पद । स्वेत वर्ण । चावल प्रमुख पूर्वो० । ॐ ह्रीं णमो नाणस्स ॥ ❀ ॥ इति सातमी० ॥ ७ ॥ ❀ ॥ (आठमें) चारित्रपद । स्वेतवर्ण । चावल प्रमुख पूर्वोक्त विधिः । ॐ ह्रीं णमो चारित्तस्स ॥ इति आठमी पूजा विधि ॥ ८ ॥ ❀ ॥(नवमें)तपपद । स्वेत वर्ण । चावल प्रमुख पूर्वोक्त विधसें । ॐ ह्रीं णमो तवस्स ( कही ) कलश ढाले । अष्टद्रव्य चढावे । पीछे अष्ट प्रकारी पूजा करे । आरती करै ॥ ❀ ॥

इति नवपदजीकी पूजा विधि संपूर्णम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ वासक्षेप पूजा लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तीरथपति अरिहानमूं । धरम धुरंधर धीरोजी । देशना अमृत वरसता । निज वीरज वरू वीरोजी ॥ १ ॥ ( चाल ) वर अखय निर्मल ज्ञान भासन सर्व भाव प्रकासता । निज शुद्ध श्रद्धा आतमभावै चरण थिरता वासता । जिन नाम कर्म प्रभाव अतिसय प्रातिहारज सोभता । जगजंतु करुणावंत भगवंत भविक जननें थोभता ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमा० ॥ वासं यजामहे स्वाहा ॥ ❀ ॥ इति अरि० वासक्षेप पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( ढाल ) ॥ ❀ ॥ सकल कर्म मलक्षय करी । पूरण शुद्ध स्वरूपोजी । अव्यावाध प्रभुता मई । आतम संपति भूपोजी । ( चाल ) जे भूप आतम सहज संपति शक्ति व्यक्तिपणें करी । स्वद्रव्य क्षेत्र स्वकाल भावें गुण अनंता आदरी । स्वस्वभाव गुण पर्याय परणित सिद्ध साधन परभणी । मुनिराज मानसर हंस सम वरू नमो सिद्ध महागुणी ॥ २ ॥ ❀ ॥ ॥ ॐ ह्रीं प० ॥ इति सिद्धपद पूजा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( ढाल ) ॥ ❀ ॥ आचारज मुनिपति गणी । गुण छत्तीसे धामोजी । चिदानन्द रस स्वादता । परभावें निक्कामो जी ॥ ३ ॥ निक्काम निरमल शुद्ध चिदघन साध्य निज निर धारथी । वरज्ञान दरसन चरण वीरज साधना व्यापारथी । भविजीव वोधक तत्वमोधक सयल गुण संपतिधरा ।

संवर समाधी गत उपाधी दुविध तप गुण आगरा ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं ॥ ❁ ॥
इति आचार्य पूजा ॥ ❁ ॥ ॥ ❁ ॥ ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ ( ढाल ) ॥ खंतिजुआ मुत्तीजुआ । अज्जव मद्दव जुत्ताजी । सचं सोय अकिंचणा । तव संयम गुण रत्ताजी ॥ १ ॥ ( चाल ) जे रम्या ब्रह्म सुगुप्ति गुप्ता सुमति समता श्रुतधरा । स्याद्वाद वादें तत्वसाधक आत्मपर विभजन करा । भव भीरु साधन धीर सासन वहन धोरी मुनिवरा । सिद्धान्त वायण दान समरथ नमो पाठक पदधरा ॥ ४ ॥ ❁ ॥ ॐ० ॥
इति उपाध्याय पद पूजा ॥ ❁ ॥ ॥ ❁ ॥ ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ ( ढाल ) ॥ ❁ ॥ सकल विषय विषवारिनें । निकामी निस्संगीजी । भवपद ताप समावता । आतम साधन रंगी जी ॥ १ ॥ ( चाल ) ॥ जे रम्या शुद्ध स्वरूप रमणें देह निर्मम निर्मदा । काउसग्ग मुद्राधारि आसण ध्यान अभ्यासी सदा । तप तेज दीपै कर्म जीपै नैव छीपै पर भणी । मुनिराज करुणा सिंधु त्रिभुवन बंधु प्रणमुं हितभणी ॥ ५ ॥ ॐ० ॥ ❁ ॥
इति साधु पूजाः ॥ ❁ ॥ ॥ ❁ ॥ ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ ( ढाल ) ॥ सम्यग् दर्शन गुण नमो । तत्व प्रतीत सरूपीजी । जसु निरधार सुभाव छे । चेतनगुण जे अरूपी जी ॥ १ ॥ ( चाल ) जे अनूप श्रद्धा धर्म प्रगटै सयलपर ईहा टलै । निज शुद्ध सत्ता भाव प्रगटै अनुभव करुणा उछलै । वहुमान परिणत वस्तु तत्वें अहव तसु कारण पणें । निज साध्य दृष्टे सरव करणी तत्वता संपतिगिणें ॥ ६ ॥ ॐ० ॥
इति ६ दर्शनपद पूजाः ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ ( ढाल ) ॥ ❁ ॥ भव्य नमो गुण ज्ञाननें । स्वपर प्रकासक भावें जी । पर्याय धर्म अनन्तता । भेदाभेद स्वभावें जी ॥ १ ॥ ( चाल ) जे मोक्ष परिणत सकल ग्यायक बोध भावें सलक्षणा । मति आदि पंचप्रकार निरमल सिद्ध साधन लंछना । स्याद्वादशंगी तत्वरंगी प्रथम भेद अभेदता । सविकल्पनें अविकल्प वस्तु सकल संशय छेदता ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं० ॥ ❁ ॥
इति ज्ञान पूजाः ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ ( ढाल ) ॥ ❁ ॥ चारित्रगुण वलि वलि नमुं । तत्व रमण जसु

मूलो जी। पर रमणीय पणो पणो टलै। सकल सिद्धि अनुकूलो जी॥ १॥ प्रतिकूल आश्रव त्यागसंबर तत्व थिरता दममई। सुचि परम खंती मुनि दसे पद पंच संवर उपचई। सामायकादिक भेदधरमें यथाख्याते पूर्णता। अकशाय अकुलस अमल उज्वल कामकस्मल चूर्णिता॥ उँ ह्रीं०॥ ८॥ इति चारित्र पूजाः॥ ❀॥ ॥ ❀॥ ॥ ❀॥

॥ ❀॥ ( ढाल )॥ ❀॥ इछारोधन तप नमुं। वाह्य अभ्यन्तर भेदें जी। आतमसत्ता एकता। पर परणित उछेदें जी॥ १॥ उछेद कर्म अनादि संतति जेह सिद्धपणो वरै। सुभ जोग संग आहार टाली भाव अक्रियता करे। अन्तर मुहूरत तत्व साधे सर्व संबरता करी। निज आत्म सत्ता प्रगट भावें करो तपगुण आदरी॥ ९॥ ❀॥ ( ढाल ) ॥ ❀॥ इम नवपद गुणमंडलं। चौनिक्षेप प्रमाणें जी। सातनयें जे आदरै। सम्यग् ज्ञानें जाणो जी॥ १॥ ( चाल ) निरधार सेती गुणें गुणनो करै जे वहुमान ए। जसुकरण ईहा तत्व रमणें थाय निरमल ध्यान ए। इम सुद्धसत्ता भलो चेतन सकल सिद्धी अनुसरै। अक्षय अनन्त महन्त चिदघन परम आनंदता वरै॥ १०॥ ( कलश ) इम सयल सुखकर गुण पुरंदर सिद्धचक्र पदावली। सविलब्धि विद्या सिद्धि मंदिर भविक पूजो मनरली। उपझाय वर श्री राजसारह ग्यान धरम सुराजता। गुरु दीपचंद सु चरण सेवक देवचंद्र सुसोभिता॥ ११॥ उँ ह्रीं०॥ ❀॥ इति श्रीनवपद वासक्षेप पूजा संपूर्णम्॥ ❀॥ ॥ ❀॥ ॥ ❀॥

## ॥ ❀॥ अथ ऋषिमंडल पूजा लिख्यते॥ ❀॥

॥ ❀॥ ( दोधक )॥ ❀॥ प्रणमी श्रीपारस विमल। चरणकमल सुखदाय। ऋषिमंडल पूजन रचुं। वर विधियुत चितलाय॥ १॥ नंदीश्वर मंदरगिरे। शाश्वतजिन महाराज। अरचे अष्टविध पूजसें। जेसें सहु सुरराज॥ २॥ तिम चित जिनपति गुणधरी। श्रावक समकित धार। विरचे जिन चोवीसकी। अष्टविध पूजउदार॥ ३॥ ❀॥ ( गाथा )॥ ❀॥ सलिल १ सुचंदन २ कुसुमभरं। दीवगकरणंच ४ धूवदाणंच ५। वरअक्षत ६ नेविज्जयं ७। सुभफल ८ पूजाय अठविहा॥ १॥ ए अष्टविध

पूजा करणं । सुणियें सूत्रमझार । जे भवि विरचे प्रभूतणी । ते पामें भव पार ॥ २ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दोधक ) ॥ ❀ ॥ प्रथम जिनेश्वर तिम प्रथम । जोगीश्वर नराय । प्रथम भए युग आदिमे । सकल जीव सुखदाय ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( राग देशाख ) ॥ ❀ ॥ ( पूर्वमुख सावनं करि दशन पावनं । इस चालमें ) ॥ ❀ ॥ विमलगिरि उदयगिरि राज सिखरो परे । तरुण तर तेज दीपन दिणिंदा । युगल भ्रम वारकरी धरम उद्योत किय । विमल इक्ष्वाकुकुल जलधि चन्दा ॥ ( १ ) मात मरुदेवी वर उदर दरि हरि वरा । सकलनृप मुगुटमणि नाभिनन्दा । अखिल जगनायका सुगति सुखदायका । विमल वर नाण गुणमणि समन्दा ॥ ( २ ) वृषभ लांछनधरा सकल भवभय हरा । अमर वरगीत गुणकुमल कन्दा । गहिरसंसार सागर तरणि शमधरा । नमत शिवचन्द प्रभुचरण वंदा ॥ ३ ॥ ❀ ॥ ( काव्यम् ) ॥ ❀ ॥ सलिल ( १ ) चन्दन ( २ ) पुष्प ( ३ ) फलव्रजेः ( ४ ) । सुविमलाक्षत ( ५ ) दीप ( ६ ) सुधूपकैः ( ७ ) । विविध नव्य मधु प्रवरान्नके ( ८ ) । जिन ममीभिरहं वसुभिर्य्यजे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीपरमात्मने ऽनंतानंत ज्ञान शक्तये । जन्म जरा मृत्यु निवारणाय । श्रीमत ऋषभ जिनेंद्राय । जलं । चन्दनं । पुष्पं । धूपं । दीपं । अक्षतं । नैवद्यं । फलं । वस्त्रं यजामहे स्वाहा ॥ ❀ ॥ इति श्रीप्रथम जिनेंद्रास्याष्टविध पूजा ॥ १ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ (२)श्रीअजिताजिन पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ) दोधक ) जय जिणंद दिणंद सम । लखि भविकज विकसात । परमानंद सुकंदजल । विजया मात सुजात ॥ १ ॥ ❀ ॥ ( राग ) आयरहो दिलबागमें । प्यारेजिनजी । ( इस ख्यालके चालमें ) ॥ ❀ ॥ एक अरज अवधारिये । ( अजितजिन ) एक अरज अवधारिये ॥ ( आं० ) अजित जिनेसर जग अलवेसर । करम निजर निहारिये । ( अजितजिन एक० ) तारण तरण बिरुद सुणिनेरो । आयो सरण निहारिये । ) अजित जिन एक० ) ॥ १ ॥ चरमसिंधु भव भय जल निपतित । चरण पतित मोहि तारियै । ( अजित० एक० ) । परमानन्द घन शिव वनिता नन । कज मधुपा

न सुकारियै । ( अजित० एक० ) ॥ २ ॥ चिरसंचित घन दुरित तिमिर हर। तुम जिनत्रये तिमिरारियै । ( अजित० ) कहे शिवचंद्र अजित प्रभु मेरे । एह अरज न विसारियै । ( अजित० ) ३ ॥ ( काव्यं ) सलिल चं०॥ ॥ ❀ ॥ ॐ ह्रीं० श्री मदजित जिनेंद्राय । वसुद्रव्यं यजा० ॥ ❀ ॥ इति श्री अजित जिनेंद्रास्याष्टविध पूजा ॥ २ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ ( ३ ) श्रीसंभवजिन पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दोधक ) ॥ ❀ ॥ जय जितारि संभव सदा। श्रीसंभव जिन राज । सकल लोक जिण जीतलीय । जीतो मोह समाज ॥ १ ॥ ❀ ॥ ( राग ) गंधवटी घनसार केसर मृगमदारस भेलीयै ( ए चाल ) ॥ ❀ ॥ अपरिमित वर शिखर सागर धार संभवकार ए । जिनराज संभव पाय वंदो लहो भवजल पार ए। वलि जलधिजात सुजात कुंजर कुंभ भंजन जानियें । तसु जनक नाम समान नामा भये जिनवर आनियें ॥ १ ॥ जसु चरणपंकज मधुर मधुरस पान लय लागी रह्यो । मिलकरि सुरा सुर खचर यंतर भमर नितचित ऊमह्यो ॥ जसु चरणकमलै प्लवगलांछन कनक सुवर कायए । सहु भुवन नायक सुमति दायक जननि सेना जायए ॥ २ ॥ मधुर वाणी जगबखाणी तीस शर ( ३५ ) गुणधारिणी ॥ संसार सागर भय भराभर पतित पारउतारिणी । स्याद्वाद पक्ष कुठार धारा कुमति मद तरु दारिणी । प्रभुवाणी नित शिवचंद्र गणिकै हुवो मंगल कारिणी ॥ ३ ॥ ( काव्यं ) ❀ ॥ सलिल चंदन० ॥ ॐ ह्रीं श्री प० श्रीमत्संभव जिनेंद्राय वसुद्रव्यंय० ॥ ❀ ॥ इति तृतीय श्री संभव जिन पूजा ॥ ३ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ ( ४ ) श्रीअभिनंदन पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥❀॥ ( दोधक ) ॥ ❀ ॥ श्रीचतुर्थ जिनवर सदा । पूजो भवि चितलाय । भगति युगति संकट हरण । करण तीन सुध थाय ॥ १ ॥ ❀ ॥ ( राग सोरठी । ) कुंद किरण शशि ऊजलो रे देवा० । ( ए चाल ) ॥ ❀ ॥ संवर नंदन जिनवरू रे ( वाल्हा ) अभिनंदन हित कामीरे । जग दभिनंदन जय करूरे । ( वा० ) दुरित निकंदन स्वामीरे ॥ १ ॥ लोकालोक प्रकासतारे ( वा० ) । करता अविचल धामीरे । अव्याबाध अरूपिता रे ।

( वा० ) । विमल चिदानंद रामीरे ॥ २॥ वांछित पूरण सुरमणी रे (वा० ) ए प्रनु अंतर जामीरे । ऐसे जिन महाराजकुंरे । ( वा० ) चंद्र नमें सिर नामीरे ३ । ( काव्यं ) ४ ॥ ❀ ॥ सलिल चं० ॥ ॐ ह्रीं श्रीप० श्रीमद नि नंदनजिनें० । वसु०॥❀॥इति श्रीचतुर्थोनिनंदन जिनेंद्रस्याष्टविध पूजा ४॥

## ॥ ❀ ॥ अथ (५) श्रीसुमति जिन पूजा लि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दोधक ) ॥ ❀ ॥ पंचम जिन नायक नमुं पंचमि गति दातार। पंचनाण वर विमल कज । वन विकसन दिनकार ॥ १ ॥ ❀ ॥ ( राग केरवो ) वंगी नेरी वेरिणि वाजेरे । वैरिणि बाजे (ए चाल ( ॥❀॥ सुध नाव चित्त थिर धारकेरे । ( चित्त० ) पूजो सुमति जिणिंद । ( सुधनाव० ) जिन नक्ति करण रमीना । लहो परम आनंद ॥ १ ॥ ( सुधनाव० ) जिनराज सुमति ससंद । करे कुमति निकंद । ( सुध० ) प्रनुना चरण अरविंदा । वंदे असुर सुरिंद ( सुध० ) ॥ २ ॥ कनकान तनु द्युतिसोहै । प्रनु सुमंगला नंद ( सुध० ) करुणो पशम रस नरिया । वंदै नित शिवचंद । ( सुध० ) ॥ ३ ॥ ( काव्यं ) सलिलचं० ॐ ह्रीं० श्रीमत्सुमति जिनेंद्राय वसु द्रव्यं० इति श्री सुमति जिन पूजा ॥ ५ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ (६) श्री पद्मप्रनु पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दोधक ) ॥ ❀ ॥ हिवे षष्टम जिनवर तणी पूजन करहु उदार । नवि चित नक्ति धरी करी । सुख संपति करतार ॥ १ ॥ ❀ ॥ ( राग सारंग ) हांहों० । बावना चंदन वासि कुमकुमा ( ए चाल ) । ( हां हो रे वाला ) पदमप्रनु मुख चंद्रमा । नित सकल लोक सुखदाय ए ( हां० ) हरि सुर असुर चकोरमा । नित निरख रह्या ललचायरे॥ १ ॥ ( हां० ) जिन मुख वचन अमृत तणो । जे श्रवण करे नविपानए ( हां० )। ते अजरा मरता लहे। हरिगण करे जसु गुण गानए ( हां० ) ॥ २ ॥ धर नृप कुल नन दिन मणि । प्रनु मात सुसीमा नंदए ( हां० )। प्रनु दरसणतें प्रतिदिनें हुइ ज्यो शिवचंद आणंद ए ॥ ३ ॥ ( काव्यं ) सलिल० । ॐ० । श्रीपद्म प्रनु जिनें० वसु० ॥ ❀ ॥ इति श्री पद्मप्रनु जिन पूजा ॥ ६ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ ( ७ ) श्री सुपार्श्वजिन पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दोधक ) ❀ श्रीसुपार्श्व सुरतरु समो । कामित पूर
काज । जो नवियण पूजो सदा । वसु विध पूज समाज ॥ १ ॥ ( रा
कल्याण ) मेरा दिल लग्या जिने सरसें ( ए चाल ) ॥ ❀ ॥ मेरी लगी
लगन जिन वरसें ( मेरी० ) जैसे चंद्र चकोर नमरकी । केतकि कमल
मधुरसें ( मेरी० ) । एह सुपारस प्रनु नए पारस । गुणगण समरण फ
से ( मेरी० ) चेतन लोहपणो परिहरकै । हुयल्यै कांचन सरिसै ॥ १
( मेरी० ) ए प्रनु करुणा करकुं धरिल्यै । उर जिम कमल नमरसै ( मेरी०
जे नवि जिनपद लगन धरै तसु । नही नय मरन असुरसै ( मेरी० ) ॥ २
मात पृथवि तनु जात तनु द्युति । सम शुन्न कांचन सरसै ( मेरी० ) कौ
सिवचंद्र चित्त नित मेरो । रहो प्रनुपद लय नरसै ॥ ३ ॥ ( मेरी०
( काव्यं ) सलिल० ॐ ह्रीं० श्रीमत्सुपार्श्वजिनेंद्राय ॥ वसुद्रव्यं० ॥ ❀
इति श्रीसुपार्श्वजिन पूजा ॥ ७ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀

## ॥ ❀ ॥ अथ ( ८ ) श्रीचन्द्रप्रनु पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दोधक ) ॥ ❀ ॥ अष्टम जिनपद पूजिये । विविध कष्ट हरत
र । अष्टसिद्धि नवनिधि लहै । जिन पूजन करतार ॥ १ ॥ ❀ ॥ ( रा
शुंफ मिश्रित मल्हार ) ॥ मेघ बरसै नरी कुसुम वादल करी । ( ए चाल
परमपद पूर्व गिरिराज परि उदयलहि । विजित परचंद्र दिनकर अनन्ता
चंद्रप्रनु चांद्रिका विमल केवल कला । कलित सोनित सदा जिन महन्त
॥ १ ॥ ( परमपद० ) । कुमतिमत तिमिर नर हरीय पुन नूरि नवि । कुमु
सुख करीय गुण रयण दरिया । गहिर नविसिंधु तारण तरणि गुण । धा
नव तारि जिनराज तरिया । ( परमप० ) ॥ २ ॥ राखियै आज मों
लाज जिनराज प्रनु । करण सुख चरण जिन सरण परीया । परम शि
चंद्र पदपद्म मकरंद रस । पान नित करण ततपर नरीया ॥ ३ ॥ ( पर०
( काव्यं ) सलि० । ॐ ह्रीं० श्रीमच्चन्दप्रनु जिनें० वसु० ॥ ❀ ॥
इति श्री चंद्रप्रनु पूजा ॥ ८ ॥ ❀ ॥ ॥❀

## ॥ ❋ ॥ अथ ( ९ ) श्रीसुविध जिन पूजा लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ( दोधक ) ॥ ❋ ॥ सुविध २ समरण थकी । कामित फल प्रकटाय । अनिह गहन संसार वनि । वहुल अटन मिट जाय ॥ १ ॥ ❋ ॥ ( राग ( चंपक केतक मालती ( एचाल ( ॥ ❋ ॥ सुविध चरणकज वंदीयेए । ( अइयोवं० ) नंदीये अति चिरकाल । सिव तरवारि निकंदीयै । विघन कंद ततकाल ॥ १ ॥ आज जनम सफलो भयो । ( हांए सफ० ) दीठो प्रभुदीदार । तनु मन दृग विकसित भये । जिम कज लखि दिनकार ॥ २ ॥ अमृत जलधर वरसीयो । ( हां० अइ० व० ) भवि उर क्षेत्र मझार । दर्शन सुरतरु ऊगीयो । शिवफलनो दातार ॥ ( काव्यं ) सलिल० । ॐ ह्रीँ० । श्रीमत्सुविधि जिनें वसु० ॥ ❋ ॥ इति श्रीसुविध जिन पूजा ॥ ९ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ ( १० ) श्रीशीतल जिन पूजा लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ( दोधक ) मुझ तनु मन शीतल करो । श्रीशीतल जिनराय । तुम समरण जलधारसें । अंतर तपति बुझाय ॥ १ ॥ ( राग घाटो । दादा कुसल सुरिंद० इस चालमें ) ॥ ❋ ॥ मेरे दीनदयाल तुम भये सकल लोक प्रतिपाल । ( आ० ) सुणि शीतल जिनवर महाराज । चरण शरण धर्यो प्रभुनो आज । ( मेरे दी० ) न नमुं सहु सविकारी देव । करिसुं चरणकमलनी सेव । ( मेरे० ) ॥ १ ॥ जेसें सुरमणि करतल पाय । कुणल्यै काच शकल उलसाय । ( मेरे० ) तुम सम सुरवर अवरन कोय । हेर २ जग निरख्यो जोय ( मेरे० ) ॥ २ ॥ प्रभु दरसण जलधर वनघोर । लखिय नितकरे भविजन मोर ( मेरे० ) । पद शिव चंद्र विमल भरतार । अरज एह उरधरियै सार ( मेरे० ) ॥ ३ ॥ ( काव्यं ) सलिल० ॐ ह्रीँ० श्रीमच्छीतल जिनेंद्राय वसु० ॥ ❋ ॥ इति श्रीशीतलजिनेंद्र पूजा ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ ( ११ ) श्रीश्रेयांस जिन पूजा लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ( दोधक ) ॥ ❋ ॥ श्री श्रेयांस जिनेंद्रपद । नद छुति सलिला धार । जे नेत्रे मज्जन करे । ते सुचि हुइ विधुनार ॥ १ ॥ ( राग ) सोहम सुरपति वृषभ रुप करि ( इम चालमे ) ॥ ❋ ॥ श्री श्रेयांस जिणेसर जगगुरु । इंद्रिय मदन मतंगदहे । जसु वसु विध पूजनमें अरचो । नर धरि पर

मानंदहे । ए समकित धर श्रावक करणी । हरिणी जव मनरंग हे । बिजयदेव जिन प्रतिमा पूजी । जीवाजिगम नवंग हे ॥ श्री० ॥ १ ॥ सूरीयात्र प्रजुपूजन करियो । राय पसेणी नपांगहे । ग्याता अंगे द्रुपदि श्राविका । पूज्या जिन प्रतिबिंबहे । काल लगे जमसी जव वनमें । मन्दमती जयभ्रांत हे ॥ ( श्री० ) ॥ २ ॥ विष्णुमात तनुजात विष्णु नृप । विमल कुलांबर हंस हे । सकल पुरंदर अमर असुर गण । शिरो वरि प्रजु अवतंस हे इम सुरवरनी परि श्रावक जे । पूजे जिन नबरंग हे । ते शिव चंद्र परमपद लहिस्ये । निश्चय करी जवजंग हे ( श्री ) ॥ ३ ॥❋॥ ( काव्यं० ) सलिल० ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं० श्री श्रेयांस जिनेंद्राय ॥ ❋ ॥ ॥ इति ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ ( १२ ) वासुपूज्य जिन पूजा लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ( दोधक ) ॥ ❋ ॥ हिवबारम जिनवर तणी । पूजन करियै सार । जाव जक्तियुत जवि सदा । द्रव्यजक्ति चितधार ॥ १ ॥ ( राग ) सब अति मथनसुदार धूपं ( एचाल ) ॥ ❋ ॥ सकल जगजन करत बंदन । जया नंदन सामिरे ( देवा ) डुरित ताप निकंद चंदन । परम शिव पद गामिरे ( देवा ) ॥ १ ॥ ( सकल० ) नृपतिवर वसु पूज्य नृपकुल । बिपिन नंदन जातरे ( देवा ) सुहरि चन्दन नन्द नन्दन । नन्द मदकिय घातरे ( देवा ) ॥ २ ॥ ( स० ) वासु पूज्य जिणेंद्र पूजो । सकल जन महाराज रे । ( देवा ) करत नुति शिव चंद्र प्रजुए । निखिल सुर सिरताज रे । देवा । ( सक० ) ॥ ३ ॥ ( काव्यं ) सलिल० ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं० श्रीमद्वासु पूज्य जिनेंद्राय वसु द्रव्यं ॥ ❋ ॥ इति श्रीवासुपूज्य जिन पूजा ॥ १२ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ ( १३ ) श्री बिमल जिन पूजा लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ( दोधक ) ॥ ❋ ॥ विमल २ जिन कर मुझे । मलिन करम करि दूर । तेरम प्रजु रमियै सदा । मुजजर मझि गुणपूर ॥ १ ॥ ❋ ॥ ( राग ) सिद्धचक्र पद वंदोरे जविका । ए चाल ) ॥ ❋ ॥ विमल चरण कज बंदोरे । ( सूरीजन ) विम० ( वंदनसें आनन्दोरे । ( सू० वि० ) जसु गणधर मुनिवर गण मधुकर । सेवत पद अरविंदो । श्यामा नदर सुगति सुगता फल । कृत वरमा नृप वंदोरे ( सूरी० ) ॥ १ ॥ सहु जग मंगल विमल करणकूं ।

निज शासन नभचंदो। उदय भयो भवि कमुद विकसिवा। वर गुण रयण प्रमंदो रे (सूरी०)॥ २॥ यदि भव बंदि हरण भवि चाहो। प्रभुवंदी चिरनंदो। विमल चिदानंद घनमयरूपी। नित वंदत शिवचंदो रे (सूरी० ॥३॥ (काव्यं) सलिल०॥ १॥ ॐ ह्रीं०। श्रीमत् विमलजिनें०॥ ❀॥
इति श्रीविमल जिनपूजा॥ १३॥ ॥ ❀॥ ॥ ❀॥

## ॥ ❀॥ अथ (१४) श्रीअनन्त जिनपूजा लि०॥ ❀॥

॥ ❀॥ (दोधक)॥ ❀॥ हिव चवदम जिनपूजतां। हरियै विषय विकार। भो भवियण सुणिये सदा। ए प्रभु सरणाधार॥ १॥ पंचवरणी अंगीरची० (ए चाल)॥ ❀॥ पूजकरणी प्रभुनी दुरित निवारी। (दुरि श्रां०) अनन्त तरणी हिमकिरण तरुणतर। किरण निकर जीताहे भारी। अनन्त नाणवर दरसण तेजे। प्रभुसु यशोदरहे अवतारी (पूज०)॥ १॥ लोका लोक अनंत द्रव्यगुण। पर्याय प्रगट करण हारी। तातें अन्वययु। जिन धरियो। अनंत नाम अति मनुहारी (पूज०)॥ २॥ सिंहसेन नृप नन्दन वंदन। करत इंद्र चंद्र सुखकारी। सादि अनंत भंग थिति धरियो। पद शिव चंद्र विजयधारी (पूज०)॥ ३॥ (काव्यं) सलिल०। ॐ ह्रीं० श्रीमच्चतुर्दश अनंत जिनें० वसु०॥ ❀॥ इति श्री अनंत जिनपूजा॥१४॥

## ॥ ❀॥ अथ (१५) श्रीधर्मजिन पूजा लि०॥ ❀॥

॥ ❀॥ (दोधक)॥ ❀॥ भानु नृप कुल भानु कर। पनरम जिन सुर सार। सोभित महुजग विपिन जन। हरख फलद जलधार॥ १॥ (राग) धार समीरे यमुना तीरे। वसती वने वनमाली (ए चाल)॥❀॥ धर्म जिणेसर धरम धुरंधर। जगबंधव जगपाला। (में वारी जाउं। जग० धरम०)। सुव्रता नंदन पाप निकंदन। प्रभुभये दीन दयाला (मेंवा०। धर्म०)॥ १॥ प्रभु धीरज गुण निरखि अमर गिरि। लजि लीनो अचला धारा। (मेंवा०) जिन गंभीरता समरसिंधु लखि। किय लोकांत विहारा। (मं०। धर्म) ॥ २॥ एजिनचंद्र चरण अरचननें। लहि जिनपति अवतारा। (मेंवा०)। अगम वैरि दलकारि भवि लहिस्यो। पद शिव चंद्र उदारा। (मेंवा० धर्म०)

॥ ३ ॥ ( काव्यं ) सलिल चं० ॥ ॐ ह्रीं । श्रीप० श्रीमत धर्म जिनें० वसुद्र व्यं० ॥ ❀ ॥ इति श्री धर्मजिन पूजा ॥ १५ ॥ ❀ ॥　॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ ( १६ ) श्री शान्तिजिन पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दोधक ) अचिरा नयरे अवतरी । शांति करी सुखकार । मारि विकार मिटाय करि । नाम धरयो शांति सार ॥ १ ॥ ❀ ॥ ( राग विलास ) भाव धरि धन्य दिन आज सफलो गिणुं ( ए चाल ) ॥ ❀ ॥ शांति जिन चंद्र निज चरणकज शरणगत । तरणि गुणधारि भववारि तारी । कुमत ज न विपिन जानि कुमति घन वृतानि तति । छितिनि शितधार तरवारि वारी ॥ ( शांति० ) ॥ एक भव पद नभय चक्रधर तीर्थंकर । धारिया वारिया विघन सारा । सकल मदमारिया विमल गुण धारिया । सारिया भक्ति बांछित अपारा ॥ ( शांति० ) हरिण लांछन धरा वरण सुवरण करा । सुरवरा हितधरा गतवि कारा । मोहभट धरणिधर गण हरण वज्रधर । कुमुद शिव चंद्र पद रजनि कारा ॥ ( शां० ) ३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीप० श्रीमत् षोडशम शांति जिनेंद्राय वसु द्रव्यं० ॥ ❀ ॥ इति शांति जिन पूजा ॥ १६ ॥ ❀ ॥　॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ ( १७ ) श्रीकुंथुजिनपूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दोधक ) सतरम जिनवर दीवसम । मझि भव सागर जाण । भक्ति युक्ति नित पूजियै । लहीयै अमल विनाण ॥ १ ॥ ❀ ॥ ( राग ) अरिहंतपद नित ध्याइयै ( एचाल ) ॥ ❀ ॥ कुंथुजिणंद गुणगाइयै । (वारि) मनवंछित फल पाइयें रे । प्रभु समरण लय लाइयै । ( वा० ) भवि भवत जि शिवजाइयैरे ( कुंथु० ) ॥ १ ॥ भवजल गत निज आतमा । ( वा० ) करुणा उर धरि ताइयै रे । चरण करण उपयोगिता । ( वा० ) ग्रहण करणकुं धाइयै रे । ( वा० कुं० ) ॥ २ ॥ ए प्रभु दरसण जीवनें । (वारि) अ नुभव रसनो दाइयै रे । वर शिवचन्द्र विमल वधै । दिन २ सोभ सवाइयै रे । ( कुं० ) ॥ ३ ॥ ( काव्यं ) सलिलचं० । ॐ ह्रीं श्रीप० । श्रीकुंथु जिनें० । वसु० ॥ ❀ ॥ इति कुंथुजिन पूजा ॥ १४ ॥ ❀ ॥　॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ ( १८ ) श्रीअरनाथ पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दोधक ) ॥ ❀ ॥ जिनअढारमोध्याइयै । भवियण चित्तमझार

कगा तीन इक करमुदा । प्रतिदिन जय जय कार ॥ १ ॥ ❁ ॥ ( राग बसंत ) संग लागोहि आवे । कुणखेलै तोसुं होरी रे । संग० ( ए चाल ) ॥ ❁ ॥ निज विमल नक्तिमें । अरजिनसें नितरमियै रे । ( निजबि० ) । जिनगुण निजगुण तुल्य करणकुं । चंचल चित हय दमियै रे । ( नि० ) ॥ १ ॥ सुमति युवति संयम उर धरिके । कुमति नारि संग गमियै रे ॥ ( निज० ) ॥ अनुनव अमृत पान करण तैं । विषय विकृत विष दमियै रे । ( निज० अर० ) ॥ २ ॥ जिनवर संग रमण दवअनलै । पंक सघन वन धमियै रे । कहे शिवचंद्र जिनेंद्र रमणसें । नव रनमें नही नमियै रे ॥ ३ ॥ ( निज० ) ( काव्यं ) सलिल चं० ॥ ❁ ॥ ॐ ह्रीं० । श्रीमदष्टादश अरजिनें० । वसु० ॥ ❁ ॥ इति अरजिनपूजा ॥ १८ ॥ ❁ ॥ ॥ ❁ ॥

## ॥ ❁ ॥ अथ ( १९ ) श्रीमल्लिजिन पूजा लि० ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ ( दोधक ) ॥ ❁ ॥ उगणीसम जिन चरणकज । नमर होय नयलाय । सबे तसु नवि नमरता । अगणित दुरित विलाय ॥ १ ॥ ❁ ॥ ( राग ) मल्लिजिणंद उपगारी रे वाला । मल्लिजिणंद उपगारी ( हां रे हो रे वाला ) वारी जाउं वारहजारी रे ( वा० । मल्लिजि० ) कुंननरेसर गग नांगणमें । सहसकिरण अवतारी रे ( वाला० म० ) ॥ १ ॥ पूरब नव पद्मित्र नरिंद प्रति । बोधि सिंधु नवतारी । वेदत्रयी चिरही तनु धारयो सकल संघ सुखकारी रे ( वाला मल्लि० ) ॥ २ ॥ सकल कुशल हरि चंदन तरुवर । नंदनवन अनुकारी । संघ चतुरविध नृरिखचरगण । प्रणत चंद्र अनुहारी रे ( वा० मल्लि० ) ॥ ४ ॥ ( काव्यं ) सलिल० । ॐ ह्रीं० । श्रीमल्लिजिनें० जलं० ॥ ❁ ॥ इति मल्लिजिन पूजा ॥ १९ ॥ ❁ ॥

## ॥ ❁ ॥ अथ ( २० ) श्रीमुनिसुव्रताजिन पूजा लि० ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ ( दोधक ) पद्मोदर वर पद्मनद । गतपर पद्म समान । विंशति तम प्रनु पूजिये । केवल लब्धि निधान ॥ १ ॥ ❁ ॥ ( राग गरबो ) सुणिसहर सुजाण । परनारीसुं प्रीतडी कबहुं न कीजिये ( एचाल ) ॥ ❁ ॥ मुनिसुव्रताजिनेंद्र सुनिजर धरि मुजपर वर दरसण दीजिये । प्रनु दरस प्रीति निरवाधिकना । कारिये लहिये शिव साधकना । नव तुरत मिटे सिव वाधकना ।

॥ १ ॥ ( सुणि० ) अमृतमें साध्यपणो विलसैं । प्रभु दरसण साधनता उल्लसै । तदमुझमें साधकता मिलसै । ( सुणि० ) ॥ २ ॥ भिन्नादिकरणता यदि विघटै । एकाधिकरणता यदि सुघटै । तद मुझ शिव साधकता प्रगटै । ( सुणि० ) ॥ ३ ॥ एकाधिकरणता मुझ करियै । भिन्नाधिकरणता परिहरियै । शिव चंद्र विमल पद तद वरियै ( सुणि० ) ॥ ४ ॥ ( काव्यं ) सलिल० । ॐ ह्रीं० । बिंशतितम श्रीमत् मुनिसुव्रतजिनें० ॥ ❋ ॥

इति मुनिसुव्रत जिन पूजा ॥ २० ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ ( २१ ) श्रीनमि जिन पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ( दोधक ) अंतरवैरि नमाविया । तब लहियो नमि नाम । भवियण ए प्रभु पूजसें । सरीयै बंछित काम ॥ १ ॥ ( राग ) हमआए है सरण तिहारे । तुम प्रभु सरणागत तारे वारी० ( एचाल ) । ❋ । श्रीनमि जिनवर चरण कमलमें । नयन भ्रमर युग धरियैरे । तिण किय गुणमकरंद पानसें चेतन मद मत करियैरे । ( वारी ) चेतन मद मत करियैरे ( श्रीनमि० ) ॥ १ ॥ एह चरण कज अह निश विकसै । पर कज निसि कुमलावैरे । ( वारी पर ) एन बलै बलि तुहिन अनलसें । अपर कमल बल जावै रे । ( वारी० अप० ) ॥ २ ॥ ए पद कज गुन मधुरस पीवत । जीव अमरता पावै रे ( वारी० ) । अवर कमल रस लोभी मधु कर । कजगत गज गिल जावै रे ( वारी० ) ॥ ३ ॥ परकज निजगुण लछिपात्रहै । पद कज संपद देवै रे । तातै पदशिवचंद्र जिणिंदके । अहनिशि सुर नर सेवैरे ( वारी० ) । श्री० ॥ ४ ॥ ( काव्यं ) सलिल० ॥ ॐ० श्री नमिजिनें० ॥ ❋ ॥

इति श्री नमिजिन पूजा ॥ २१ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ ( २२ ) श्रीनेमि जिन पूजा लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ( दोधक ) बावीसम जिन जगगुरु । ब्रह्मचारी विख्यात । इण बंदन चंदन रसै । पाप ताप मिट जात ॥ १ ॥ ( राग रामगिरी ) गात्र लूहै जिनमन रंग सुरे । देवा ( ए चाल ) । नेमि जिणंद उर धारीयै रे (वाला) विसय कसाय निवारीयै ( वाला ) । ( वारीयै ) हां रे(वाला वारीयै ) । ए जिन नेंन विसारीयै रे ॥ १ ॥ जलधर जिम प्रभु गरजतारे ( वाला ) देशना

अमृत वरसतारे ( वाला ) ( देस° ) ।
मोर सुणि उलसतारे ॥ २ ॥ समवसरण
नामंडल चपला वह्यारे ( वाला ) । चपला
सुर नर चातक उमह्या ॥ ३ ॥ बोध बीज
नर क्षेत्र बधावीयो हांरे ( वाला धा° ) । भविक
( काव्यं ) सलिल° ॥ ॐ ह्रीं° श्रीमन्नेमि जिनें° ॥
इति नेमि जिन पूजा ( २२ ) ॥ ❋ ॥ ॥ ❋

## ॥ ❋ ॥ अथ ( २३ ) श्री मत्पार्श्वजिन

॥ ❋ ॥ ( दोधक ) ॥ अश्वसेन नंदन सदा ।
लोक सिखर सोभै प्रभु । विजित करम वरवीर ॥ १ ॥
( इस कैरवाकी चालमें ) ॥ ❋ ॥ पास जिणंदा प्रभु मेरे
जिणिंदा° । मेरे मन वसीयारे । मेरे दिल वसीया ( पास
कमलानन कमल विमल कल । तर मकरंद पान अ
॥ १ ॥ वामा नंदन मोहनि मूरत । सकल लोक जन
( पास जि° ) । परमज्योति मुख चंद विलोकित । सुर
रसीया ( चकोर ह° ) ( पास जि° ) ॥ २ ॥ अंजन गिरि
जलधर । देशना अमृत धार वरसीया ( धारवर° )
करि भवि चिरकाल तिरसीया । सुगति युवति तनु
जि° ) कुमुद सुपद शिवचंद्र जिणंदनी । वारीजातं
सीया ( पास जि° ) ॥ ४ ॥ ( काव्यं ( सलिल° ।
श्रीमत्पार्श्वजिनें° ॥ इति श्रीपार्श्वजिन पूजा ॥ २३ ।

## ॥ ❋ ॥ अथ ( २४ ) श्रीमद्वीरजिन

॥ ❋ ॥ ( दोधक ) ॥ ❋ ॥ वर इक्खाकुकुल
अवतार । ए प्रभुनी नित कीजीयै । विविध भक्ति
तेजतरणि सुखराजै ) । (हांरे सुखराजै) (प्रभु
चरम वीर जिन राया ( हांरे ) जिनराया । मेरे
( आं° ) । सिद्धारथकुल मंदिर धजसम ।

पंचाचार दीपै आचारिज । जुगवर गुणधारी । धारक वाचक सूत्र अर्थना पाठक भवतारी ( जय० ) ॥ ३ ॥ सम दम रूप सकलगुण ज्ञायक । मोटा मुनिराया । दंशण नाण सदा जय कारक । संजम तपभाया ( जय० ) ॥ ४ ॥ नव पदसार परम गुरु भाषै । सिद्धचक्र सुखकारी । ए नव परभव रिद्ध सिद्ध दायक । भव सायर वारी ( जय० ) ॥ ५ ॥ करजोडी सेवक गुण गावै । मनवंछित पावै । श्रीजिनचंद अखयपद पूजत । शिव कमला पावै ( जय० ) ॥ ६ ॥ इति श्रीनवपद आरती ॥ ❋ ॥ ॥❋॥

## ॥ ❋ ॥ अथ ऋषिमंडल आरती लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ जय जय जिनराजा । ( वारी ज० ) आरती करुं शिवकाजा । भव भय दुख भाजा ( जय० ) ॥ १ ॥ ऋषभ अजित संभव जिन राया । अभिनंदन सुमति । पद्म सुपारस चंद्रप्रभुतै । दूर हुवै कुमति । (जय०)॥२॥ सुविध शीतल श्रेयांस सवाई । करि बारम जिनकी । बिमल अनंत धर्म्म प्रभु शांति । हर आरति तनकी । ( जय० ) ॥ ३ ॥ कुंथुनाथ अरमल्लि मुनिसुव्रत । नमि नेमि श्रीकारा । पार्श्वजिनेश्वर वीर जिनंदा । आतमहितकारा । ( जय० ) ॥ ४ ॥ इण विधि आरति जे भवि करसी । भवसायर तरसी । श्रीजिनचंद अखयपद फरसी । शिव कमला वरसी । ( जय० ) ॥ ५ ॥ इति श्रीऋषिमंडल आरती ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ ऋषिमंडल सुननेंकी (वा) पूजनेंकी विधि ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ( प्रथम ) ॥ ❋ ॥ आद्यन्ताक्षर संलक्ष्य० । यह । ऋषमंडलस्तोत्र । धूप, दीपादि, बिधि संयुक्त, आठ महिनेतक प्रभात समय सुणें । ऋषिमंडल में ( जो ) मूलमंत्र है ( सो ) शुभदिन शुभघडी । हाथमें फल फूल भेट शक्ति माफक लेई । गुरूके पास जावे । भेट धरके । विनयसंयुक्त मूलमंत्र ग्रहण करै । ( उसका ) ८००० जाप, आठ महिनामे करै । आंबिल करणेंकी शक्ति होय ( तो ) सदा करै । नहिं तो । आठम । चवदस । दो आंबिल जरूर करै । आठ महिनां हुयां बाद ऊजमणो करे । ऊजमणेंके दिन १०८ वेरसुणें । पीछै शक्ति होय ( तो ) विधिसंयुक्त । ऋषिमंडल स्थापन करायके पूजा करे । विशेष शक्ति होय तो ( २४ ) प्रकारी पूजा करावे ।

पूजामें सामग्री ज्यो पहली नवपदजीकी बिधके ठिकाणें लिखीहै (सो) सर्व सामग्री इहां (२४) चोईस लेणी। एक एक महाराजकी पूजा पढायके। प्रथम जल। पीछै चंदन। ऐसें अष्टद्रब्य अनुक्रमसें चढावे। (पीछै) संपूर्ण पूजा हुयां बाद। गुरुभक्ति करै। साहमी वछल करै। (इहां) विशेषविधि गुरूके मुखसें समझके करणी॥ (यह) रूषमंडल सुणनेंवाले पूज णेंवाले भव्य जीवोंके घरमें कभी उपद्रव न होगा। सदा आनंद उछाह रहेगा। इत्यलंविस्तरेण। इति रूषिमंडल सुणनें (वा) पूजन करनेंकी विधि॥

## ॥ ❀ ॥ अथ विंशतिपद पूजा विधि लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) ॥ ❀ ॥ सुखसंपति दायक सदा। जगनायक जिनचंद। विघनहरण मंगलकरण। नमो नाभि नृप नंद॥ १॥ लोकालोक प्रका सिका। जिनवाणी चितधार। विंशतिपद पूजनतणो। कहिस्युं विधि वि सतार॥ २॥ जिनवर अंगे भाषिया। तप जप बहु परकार। विंशतिपद तप सारिसो। अवरन कोई उदार॥ ३॥ दान शील तप जप क्रिया॥ भाव विना फलहीन। जैसें भोजन लवण विन। नही सरस गुणपीन॥ ४॥ जे भवीयण सेवै सदा। भावै थानक वीश। ते तीर्थंकर पदलहै। वंदै सुर नर ईश॥ ५॥ (ढाल) श्री अरिहंतपद १ सिद्धपद २ ध्यावो। प्रवचन ३ आचारिज ४ गुणगावो। स्थविर पंचमपद ५ पुन उवझाया ६। त पसी ७ नाण ८ दंसण ९ मनभाया १ (उल्लालो) मनभाय विनया १० वश्यका ११ मलशील १२ किरीया १३ जानीयै। तप १४ विविध उत्तम पात्र १५ वेयावच्च १६ समाधि १७ वखानीयै। हितकर अपूरव नाणसंग्रह १८ धरौ मन सुजगीसए। श्रुतभक्ति १९ फुनि तीरथप्रभावन २० एह थानकवीसए २॥ (ढाल) एथानकवीस २० जग जयकारा। जपतां लही यै जिनपद सारा। करम निकंदै बिसवावीसै। भाष्या जग तारक जग दीसै॥ ३॥ (उल्लालो) जगदीश प्रथम जिणंद जगगुरु चरम जिनवर जी मुदा। भव तीसरै पद सकल सेवा लही जिनपति संपदा। बावीस जिनवर सकल सुखकर इंद्र जसु गुणगाइयै। इक दोय त्रिण सहुपद जपी नें तीर्थपति पद पाइयै॥ ४॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) ॥ ❀ ॥ अरिहंतादिक पद सदा । भजीयै तपकरी सुद्ध । अति निरमल सुभयोगता । करिकै तसुगुण लुद्ध ॥ १ ॥ विमल पीठ त्रिक तदुपरै । ठवीयै जिनवर वीस २० । पूजन उपगरण मेलि करि । अरचीजै सुजगीस ॥ २ ॥ एक एक ए पदतणी । द्रव्यपूजा परकार । पंच ५ अष्ट ८ विध जानीयै । सत्तर १७ इगवीस सार ॥ ३ ॥ अष्ट जातिना कलश करि । विमलजलै भरि पूर । पूजो भवीयण पद सहू । होय सकल दुखदूर ॥ ४ ॥ सोहै सहु परमेष्टिमें । जिनवर पद अभिराम । वेद ४ निक्षेपै समरीयै । वधतै सुभ परिणाम ॥ ५ ॥ ❀ ॥

॥ ( राग देसाख ) पूर्वसुख सावनं करिदसन पावनं ए चाल ॥ ❀ ॥ सकल जगनायकं परमपद दायकं । लायकं जिनपदं विमलभानं ( अईयो वि० ) चतु रधिक तीस ३४ अतिशय अमल बार १२ गुण । वचन पणतीस ३५ गुणमणि निधानं ॥ १ ॥ ( अइयोम० ) ॥ सुखकरण जिन चरण पद्मसेवित सदा । भमर सुर असुर नर हृदयहारी ( अईयो ) एह जिनवर तणी आण पूरण सदा । दाम जिम जगत जन शिरसि धारी ( अइ० ) ॥ २ ॥ जिनपपद दरस पारस फरसतें हुवै । प्रगट निजरूप परि णति विभासं । तजी बहिरात्म गिरीसारता भविलहै । अनुपमं आतमकांचन प्रकासं ( अ० ) ॥ ३ ॥ हुवई जिनराज पद जाप रवि किरणतें । तुरत बहु दुरित भर तिमिरनासं । घन चिदानंद वरकंद घन भविलहै । तीर्थंकर चरण कमला विलासं । ( अ० ) ॥ ४ ॥ वर विबुध मणिलही काच लघु सकलकौं । ग्रहण करिवा कवण कर पसारै । तिमलही जिन चरण सरण शुभयोगतें । अवर सुर सरण कुण रिदय धारै ॥ ५ ॥ प्रभुतणै पंचकल्याण कैरै दिनें । प्रगट त्रिहुं लोकमें हुइ उजेरौ । भविक देवपाल श्रेणिक प्रमुख जिनन मी । बांधीयौ गोत्र जिनराजकेरौ ॥ ६ ॥ जेह त्रिणकाल नितनमें जिन हरखसुं । तेह भवजल तिरै जनम तीजै । अधिक भव यदिकरै तदपि नि श्चय करी । सप्त वलि अष्ट भव करीय सीझै ( अइयोक० ) ॥ ७ ॥ ❀ ॥ ( काव्यं ) ॥ ❀ ॥ णमोणंत विन्नाण सद्दंसणाणं । सयाणंदिया सेस जंतूग

णाणं । नवां नोज विहे यणे वारणाणं । णमो बोहियाणं वराणं जिणाणं ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्री अर्हद्भ्योनमः ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ इति प्रथमपदे श्री जिनेंद्र पूजा ॥ १ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ (२) श्री सिद्धपद गुणवर्णन पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (दूहा) ॥ तनु त्रिभागके घटनतें । घन अवगाहन जास । विमलनाण दंसण कीयो । लोकालोक प्रकास ॥ १ ॥ अविनाशी अक्षित अचल । पदवासी अविकार । अगम अगोचर अजर अज । णमो सिद्ध जयकार ॥ २ ॥ ❋ ॥ ( राग सोरठ ) कुंदकिरण ससि ऊजलोरे देवा ॥ ए चाल ॥ ❋ ॥ अनुभव परमानंद सुंरे वाला । परमातम पद वंदोरे । करम निकंदौ वंदिनेंरे वाला । लहि जिनपद चिरनंदोरे ॥ १ ॥ गगन पए संतर वलीरे वाला । समयांतर अण फरसीरे । द्रव्य सगुण परजायनारे वाला । एक समय बिद दरसीरे ॥ २ ॥ एक समय रिजु गति करीरे वाला । नयेय परमपद रामीरे । नांगै सादि अनंत एरे वाला निरुपाधिक सुख धामीरे ॥ ३ ॥ अखिल करममल परिहरीरे वाला । सिद्ध

कुमति परिणमनता। दमो करण नयकार ॥ १ ॥ जैसें जलधर वृष्टितें। अखिल फलद विकसाय। तैसें प्रवचन नक्तितें। सुनपरणित उलसाय ॥ २ (श्रीराग) जिनगुणगानं श्रुत अमृतं ए चाल ॥❋॥ प्रवचन ध्यानं सुखकरणं। परिहरिये सहु विषय विकारं। करीयें प्रवचन आदरणं ॥ प्रवचन० १ ॥ सप्त नंगि नूषित ए प्रवचन। स्यादवाद मुद्रानरणं ॥ सप्तनयात्मक गुणमणि आगर। बोधिवीज उतपति करणं ॥ प्रवचन० ॥ २ ॥ जैसें अम्रित पान करणतें। हुवई सकल विष संहरणं। तैसें प्रवचन अम्रित पानें। कुमति हलाहल प्रविशरणं ॥ ३ ॥ प्र० ॥ प्रवचनकौं आधेय कहीयें। सकलसंघ तसु अधिकरणं। तिण एसंघ चतुरविध प्रवचन। एपद अखिल कलुषहरणं ॥४॥ प्र० ॥ यदि नविजन तुमए चाहतुहे। सुगतिरमणि जन वशकरणं। करणतीन इककरि तदकरीयें। प्रवचन पद समरण धरणं ॥ ५ ॥ प्र० ॥ जिनवरजी पिण ए तीरथनें। प्रणमें मध्य समवसरणं। नवजल तारण तरणि समानं। एतीरथ अशरण शरणं ॥ ६ ॥ प्र०॥ जिम नरतेसर संघ नगतिकरी। लहीयो पुण्य फलाचरणं। चक्रीपद अनुनवि वलि शिवपद। लीधकरीय क्रम निरजरणं ॥प्र० ॥७॥ नरपति संनव जिनहरषै करि। आराधी प्रवचन चरणं। करम निकंदि थया जगदीसर। जिन परमानर आनरणं ॥ प्र० ॥ ८ ॥ (काव्यं) ॥ अणंत संसुद्ध गुणाकरस्स। दुक्खंधया रुग्ग दिवाकरस्स। असंत जीवाण दयागिहस्स। णमो णमो संघ चनव्विहस्स ॥ ९ ॥ (ॐ ह्रीँ श्री प्रवचनायनमः) ॥ ३ ॥ इति तृतीयपदे श्री प्रवचन पूजा ॥ ३ ॥ ॥❋॥

## ॥ ❋ ॥ अथ चतुर्थ आचार्यपदपूजा लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (दूहा) ॥ ❋ ॥ पदचतुर्थ नमीयें सदा। सूरीसर महाराज। सोहम जंबू सारिसा। सकल साधु सिरताज ॥ १ ॥ सारण वारण चोयणा पमि चोयण करतार। प्रवचन कज विकसायवा। सहसकिरण अवतार ॥ २ ॥ (राग रामगिरी) गात्रलूहै जिनमनरंगसुंरेदेवा (ए चाल) ॥ ❋ ॥ आचारिज पद ध्याईयैरे वाला। तासाबिमल गुणगाईयै॥ पाईयै (हांरेवाला) पाईयै ॥ जिनपतिपद जग शिरतिलो रे ॥ १ ॥ आचारिज० ॥ जिनशासन उज्जुवालतारे वाला। सकलजीव प्रतिपालता ॥ पालता ( हांरेवाला )

पालता ॥ चरण करण मग चालतारे ॥ २ ॥ आचारिज० ॥ सूरि सकल गुण सोहतारे वाला । सुर नर जन मनमोहता ॥ मोहता ( हांरेवाला) मो० । नवीयणनैं पमिबोहतारे ॥ ३ ॥ आचा० ॥ पंचाचार विराजितारे वाला । सजल जलद जिम गाजता ॥ गाजता ( हांरेवाला ) गाजता ॥ सूरि सकल शिर गाजतारे ॥ ४ ॥ आ०॥ उपदेशामृत वरसतारे वाला । डुरिततापसहु निरसिता ॥ निरसिता ( हांरेवाला ) निरसिता ॥ परमातम पद फरसतारे॥५॥ आचा० ॥ धरम धुरंधरता धरारे वाला । जगबांधव जगहितकरा ॥ हितकरा ( हांरेवाला ) हितकरा ॥ स्व परसमय विउ गणधरारे ॥ ६ ॥ आ० ॥ पद श्री जिनहरषे ग्रह्योरे वाला । सूरीशर पद तपवह्यौ । तपवह्यौ ( हांरेवाला ) तपवह्यौं । पुरुषोत्तम नृप शिव लह्योरे ॥ ७ ॥ आ० ॥ ( काव्यं ) कुवादि केली तरु सिंधुराणं । सूरीसराणं मुणि बंधुराणं । धीरत्त संताज्जिय मंदराणं । णमोसया मंगल मंदिराणं ॥ ८ ॥ ( ॐ ह्रीं श्री आचार्येभ्योनमः ) ॥४॥❀॥ इति चतुर्थपदे श्री आचार्यपूजा ॥ ४॥ ॥ ❀ ॥ ॥❀॥

## ॥ ❀ ॥ अथ पंचम थिवर पदपूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ( दूहा ) ❀ ॥ डुविध थविर जिनवर कह्या । द्रव्य नाव प्रकार । लौकिक लोकोत्तर वली । सुनियै नेद विचार ॥१॥ जनकादिक लौकिक थविर । लोकोत्तर अणगार । पंचमपदमें जानियै । डुतीय थविर अधिकार ॥ २ ॥ ( सारंगराग ) ॥ नितनमीयै थविर मुनीसरा । पंचमहाव्रत धारक वारक । कुमति जगत जन हितकरा ॥ १ ॥ नितनमीयै० ॥ २ ॥ संयमयोगै सीदत वालक । ग्यानादिक सहु मुनिवरा । एहनें उचित सहाय दीयणतें । वारै एहना डुखनरा ॥ २ ॥ नित० पर्याय वय श्रुति त्रिविध ए थविरा । वीसरु साठ समोपरा । बयधर समवायादिक पाठक । एहथविर गुणआगरा ॥ ३ ॥ नित० ॥ तीजैअंग कह्या दशथविरा । रतनत्रयीना गुणधरा । तेइह निरमलनावें ग्रहिवा । नविक सरोज दिवाकरा ॥ ४ ॥ नित० ॥ क्षीर जलधि सम अतिइह गंनीरा । सुरगिरी गुरु धीरज धरा । शरणागत तारणता धारा । ग्यान विमल जल सागरा ॥ ५ ॥ नित० ॥ श्रुत तप धीरज ध्यान करणतें । द्रव्यादिक ग्यातावरा । तेह स्वरूप रमण थवि

राकह्या । नहिय धवल केशांकुरा ॥ ६ ॥ नित० ॥ एह थविर पद सेवी भग तैं । पदमोत्तर वसुधेसरा । पद श्रीजिनहरषै तिण लहीयो । मुनिवर कुमुद निशाकरा ॥ ७ ॥ नित० ॥ ( कलश ) सम्मत्त संयम पतित भविजन अ हित थिरकरता भला । अवगुण अदूषित गुणविभूषित चंद्रकिरण समुज्ज ला । अष्टाधिका दशसहस शीलांगरथ रुचिर धाराधरा । भवसिंधु तारण प्रवर कारण नमो थविरमुनी सरा ॥ ८ ॥ ( ॐ ह्रीं श्रीस्थविरायनमः ) ॥५॥ ❀ ॥ इति पंचमपदे श्रीस्थविरपूजा ॥ ५ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ षष्टपदे श्री उपाध्याय पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) ॥ ❀ ॥ प्रवर नाण दरशण चरण । धारक यतिध्रम सार । समितिपंच त्रिणगुप्तिधर । निरुपम धीरजधार ॥ १ ॥ ❀ ॥

( राग भैरव ) ॥ पंचवरणी अंगीरची कुसुमजाती ( ए चाल ) ॥ ❀ ॥ भावधरी उवझायावंदो विजयकारी । श्रीउवझाय परमपद वंदी । लहो जिनपद अतिशय धारी ॥ १ ॥ भाव० ॥ कुमती मदतरु भंजन सिंधुर । सुमतिकंद घन अवतारी । अंगदुवालस भणय भणावै । शिष्यभणी चित हितधारी ॥ २ ॥ भाव० ॥ सकल सूत्र उपदेश दीयणते । वाचक अति विमलाचारी । भव तीजै अम्रित सुखपामें । सुर असुरेंद्र मनोहरी ॥ ३ ॥ भाव० ॥ हय ग ज वृष पंचानन सरिषा । करमकंद वर नर वारी । वासुदेव वासव नृप दिन कर । विधु भंमारि तुलाधारी ॥ ४ ॥ भाव० ॥ जंबू शीतानदि कांचनगि रि । चरमजलधि उपमभारी । एउपमा बहुश्रुतनी जाणो । उत्तराध्ययन कहीसारी ॥ ५ ॥ भाव० ॥ अमल पंचविंशति गुणमणि निधि । स कल भुवन जन उपगारी । शंशय तिमिर हरण वासरमणि । पाप ताप आतपवारी ॥ ६ ॥ भाव० ॥ प्रवर शंख पय भरीयो सोहै । तिमए ग्यान चरण चारी । महेंद्रपाल पाठक पद सेवी । लहीयो जिनपद विजितारी ॥ ७ ॥ भाव० ॥ ( काव्यं ) सव्वोहिबीजं कुरकारणाणं । णमो णमो वायग वारणाणं । कुबोहिदंती हरिणेसराणं । विग्घोघ संताव पयोहराणं ॥ ८ ॥ (ॐ ह्रीं श्रीउपाध्यायेभ्योनमः ) ॥६॥ इतिषष्टपदे श्रीउपाध्यायपूजा॥६॥❀॥

## ॥ ❀ ॥ अथ सप्तम साधुपद पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जाणें जिनवाणी सरस । स्याद्वाद गुणवंत । मुनिकहीयै सिव पंथनें । साधै साधुकहंत ॥ १ ॥ समतारस जलझीलता । विशदानंद सुरूप तिण पांम्यो पद सप्तमें । नमोनमों मुनिभूप ॥ २ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

( राग गुंमिश्रित भीम म० ) मेघवरसेभरी पुष्फवादल करी ए चाल ॥ भक्तिधरि सातमें पद भजो मुनिवरा । सुखकरा विजित इंद्रिय विकारा । गुण सत्तावीस भूषणकरी शोभिता । क्षोभिता विकट कम सुभट सारा ॥१॥ भक्ति० ॥ चरणसत्तरि परम करणसत्तरि धरा । शिवकरण नाण किरिया प्रधाना । प्रतिदिनें दोष आहारना वरजिता । सप्तचालीस यतिभ्रम निधाना ॥२॥ भक्ति० ॥ मदनमद भंजता कुमति जन गंजता । भक्तजन रंजता क्षांतिधरीया । सुमति धरिया सदा चरण परीयाजना । तारीया ग्यान गंभीर दरीया ॥ ३ ॥ भक्ति० ॥ त्रिणमणी समगिणें चतुरविध धरमना । परम उपदेश दायक उदारा । बहिर भ्यंतर भिदा बारविध अतिकठिन । तपतपै सकलजीव अभयकारा ॥ ४ ॥ भक्ति० ॥ बलि अठावीस मनहरण गुण लबधि निधि । सातमें छठ गुणठाण वसीया । सप्त भयवारका प्रबर जिन आगन्या । धारका स्वगुण परिणमन रसीया ॥ ५ ॥ भक्ति० ॥ पंचपरमाद कल्लोलता कुलमहा । पारसंसार सागर जिहाजा । विविध नववाडि युत शीलव्रतके धरा । मधुर निजवाणिरंजित समाजा ॥ ६ ॥ भक्ति० ॥ कोडि नवसहस थुणीये महा मुनिवरा । वीरभद्र जिमकरीय साधुसेवा । परमपद जिनहरष सुग्रह्यौ तसुतणा । चरणकज युगनमें सकलदेवा ॥ ७ ॥ भक्ति० ॥ ( काव्यं ) संताजिया सेस परीसहाणं । निस्सेस जीवाण दया गिहाणं । सन्नाण पज्जाय तरूवणाणं । णमोणमो होउ तवोधणाणं ॥ ८ ॥ ( ॐ ह्रीँ श्री सर्व साधुभ्योनमः ) ॥ ७ ॥ इति सप्तमपदे श्री साधु पूजा ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ अष्टम ज्ञानपद पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) ॥ विमलनाण खर किरण किय । लोका लोक प्रकाश । जीतलई निजतेजसें । जिन अनंत रविभास ॥ १ ॥ सहु संशय तम अपहरै । जय जय नाणदिणंद । नाण चरण समरण थकी । विलय होय दुखदंद

॥ २ ॥ ❀ ॥ ( राग घाटो ) मेरो मन वसकर लीनो । ए चाल ॥ ❀ ॥
भावे ग्यान वंदन करीये । शिवसुख तरुकंद । भावे० ॥ जिनचंद्र पद
गुण धरीयै । वरीयै परम आनन्द ॥ १ ॥ भावे० ॥ मतिनाण श्रुत २
पुनरवधि ३ । मनपर्यव ४ जाण ॥ भावे० ॥ लोका लोकभाव प्रकाशी ।
वर केवल नाण ५ ॥ भावे० ॥ २ ॥ पंच ए इक्कावन ५१ भेदै । क
ह्यो जिनवर भान ॥ भावे० ॥ जगजीव जमता छेदै । ग्यानामृत रसपान ॥
भावे० ॥ विणग्यान कीधी किरिया । होय तसुफल ध्वंस ॥ भावे० ॥
भक्षाभक्ष प्रगट ए करीये । जिम पय जल हंस ॥ भावे० ॥ ४ ॥ वरनाण स
हितसु किरिया । करी फल दातार ॥ भावे० ॥ हुवो ग्यान चरण रसीला ।
लहो भवजल पार ॥ भावे० ॥ ५ ॥ ग्यानानंद अमृतपीधो । भरतेसर म
हाराय ॥ भावे० ॥ तिणमें अमृतपद लीधो । सुरपति गुणगाय ॥ भावे० ॥
॥ ... भये जिन महाराज ॥ भावे० ॥ सोहैग्यान
भूल:॥ ... ावे० ॥ ७ ॥ ( काव्यं ) छद्दव प
... । मिछत्त अन्नाण तमोहरस्स ।
...ीज्ञानायनमः )॥८॥ ॥❀॥
❀ ॥ ॥ ❀ ॥
...ा लि० ॥ ❀ ॥
... धर्म्मनो । एहना षट् उप
...ने जान ॥ १ ॥ जिणदर
...रधपुग्गल परियटरहै । तसु
संसारवितान । ... केतक मालतीए । अइ
यो मालती ए ॥ ... रसण मुझ मनवस्यो ए । (अइयो
मनवस्यो ए )। उपजत परम आनंद । जिनदरशन दरशन दीयै । विमलना
ण तरुकंद ॥ १ ॥ दरशण मोहरिपु जीतीया ए ॥ ( अइयो० ) वर दरशण
उलसंत । दरशण घट परगट हुआ । भवीयण भव नत्रमंत ॥ २ ॥ जिनव
रदेव सुगुरु व्रती ए । केवली कथित जिनधर्म । तीनतत्त्व परिणतिरमें । ते
दरशण करै शर्म ॥ ३ ॥ जिनप्रभु वचनो धरि सदा ए ॥ ( अइयो० )॥ थिर

स्तेश्रीगणपतिकुलदेवोप्रसा
।अविरलमदजलनिवहभ्रम
ोलंअभिमतफलदातारका
मा...प्रादिसाद्या:शुद्धा:सर्वत्रा
शण फ... मानवयुक्तनुयस्येवा
संवत्सरेसंवत१९
...तेमासोत्तमेमासे६

शरदहण धरंत । इण लक्षणतें जानीयै । समकितवंत महंत ॥ ४ ॥ इग, डुग, ति, चौ, शर, दश, विहा ए । (अइयो०) सतसठि ६७ भेद विचार। वलि परतीति समकित भएयो । द्रव्य भाव परकार ॥ ५ ॥ द्रव्यें जिनदरशण कह्योए। भावे समकित सार। द्रव्यत दरशण भावतो। दरशण कारणधार ॥ ६ ॥ द्रव्य दरश यदि गतबलीये । तदपि उत्तर हितकार। शय्यंभव जिनदरशणें। पायो दरशण सार ॥ ७ ॥ दरशण विण किरिया हता ए। अंकविना जिम बिंदु । बलि हणीयो विण चंद्रिका । वासरमें जिम इंदु ॥ ८ ॥ हरिविक्रम नृप सेवतोए । दरशण पद अभिराम । पद श्रीजिन हरषे धरयोए। वधतै शुभपरिणाम ॥ ९ ॥ (काव्यं) अणंतविन्नाण सुका रणस्स । अणंत संसार विदारणस्स ॥ अणंत कम्मावलि धंसणस्स । णमो णमो निम्मल दंशणस्स ॥ १० ॥ (ॐ ह्रीँ श्री दर्शनायनमः) ॥ ९ ॥ ❋ ॥ इति नवमपदे श्रीदर्शनपूजा ॥ ९ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ (१०) बिनयपद पूजा लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (दूहा) ॥ ❋ ॥ विनय भुवन रंजन करे। विनयै जस विसतार। विनय जीव भूषित करै। विनयै जय जय कार ॥ १ ॥ विनयमूल जिनधर्म्म नो। विनय ग्यान तरु कंद । विनय सकलगुण सेहरो । जय जय विनय सनंद ॥ २ ॥ (राग सामेरी) पूजोरीमाई जिनवर (ए चाल) ॥ ❋ ॥ ध्यावोरीमाई विनय दशमपद ध्यावे । पंच भेद, दश विध, तेरस विध । वावन भेद गणेशै ॥ ध्या० ॥ बासठ भेद कह्या आगममें। विनयतणा सुविसेसै ॥ १ ॥ ध्या० ॥ तीर्थंकर १ सिद्ध २ कुल ३ गण ४ संघा ५। किरिया ६ ध्रम ७ वरनांणा ८ ॥ ध्या० ॥ नांणी ९ आचारिज १० मुनिथविरा ११। पाठक १२ गणि १३ गुणजाणा ॥ २ ॥ ध्या० ॥ ए अरिहादिक तेरसपदनो । विनयकरै जेभावै ॥ ध्या० ते तीर्थंकरपद अनुभविनें । अमितपद सुखपावै ॥ ३ ॥ ध्या० ॥ जिमकांचनमें मृदुगुण लाभे। नहीय कालिमा पावे। ध्या० ॥ तिणए सकल धातुमें उत्तम । नाम कल्याण कहावै ॥ ४ ॥ ध्या० ॥ तिमविनयीमें है मृदुतागुण । कुमति कठिनता नासे ॥ध्या०॥ कृष्णादिक लेश्यानी मलीनता। जाये विनयगुण भा

से ॥ ५ ॥ ध्या० ॥ दोयसहस अरु अधिक चिहुत्तर । देववंदन निरधारो ॥
ध्या० ॥ गुरुवंदन विधि च्यारसै बाणुं । भेदकरी नरधारो ॥ ६ ॥ ध्या० ॥
तीर्थंकरादिकनौ मनरंगै । विनय चरण शुभध्यायो । धननामा भवि नमि जि
नहरषै । तीर्थंकर पद पायो ॥ ७ ॥ ध्यावो० ॥ ( काव्यं ) आणंदिया से
स जगज्जणस्स । कुंदिंदु पादा मलता चणस्स । सुधम्म जुत्तस्स दयासय
स्स । णमो णमो श्रीविनयालयस्स ॥८॥ ( ॐ ह्रीं श्री विनयायनमः ) ॥ १० ॥
इति दशमपदे श्रीविनयपूजा ॥ १० ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ ( ११ ) चारित्र पदपूजा लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ( दूहा ) ॥ ❋ ॥ इग्यारम पद नितनमुं । देश सरब चारित्र ।
क मलिनता दूरकरि । चेतन करै पवित्र ॥ १ ॥ एह चरण सेवन करै ।
कथकी सुरराय । तीन जगतपति पद दीयै । जसु सुर नर गुणगाय ॥ २ ॥
राग सारंग ) बावना चंदन घसि कुमकुमा ( ए चाल ) ॥ चरण शरण
ऊ मन हरयो । सुखकरण हरण घन पापए । ( हांहो रे वाला ) । एह चरण
लधर हरे । अग्यान तरुण तर तापए ॥ १ ॥ हां० ॥ आठ कषाय निवा
तां । देशविरति प्रगट हुवै खासए ॥ हांहो रे० ॥ बार कषाय निवारीया । सम
रतिलहे गुणवासए ॥ २ ॥ हां० ॥ इगवासर सेव्यो थको । शुध सरबसं
र चारित्रए ॥ हां० वाला ॥ परमानंद घन पददीये । सुरलोक जनित सुख
चेत्रए ॥३॥ हां० वाला ॥ भव भय तरुगण छेदिवा । एसंयम निशित कुठार
॥ हां० वाला ॥ ग्यान परंपर करणछे । अभितपदनो हितकारए ॥ ४ ॥
हां० वाला ॥ चरण अनंतर करणछे । निरवाण तणो निरधारए ॥ हां०
वाला ॥ सरबविरति सुचरणसें । पामें अरिहंत पदसारए ॥ ५ ॥ हां० वा
ला ॥ वरस चरण परजायमें । अनुत्तरसुख अतिक्रम होयए ॥ हां० ॥
वाला ॥ सतरभेद चारित्रना । कहीया जिनआगम जोयए ॥६॥ हां० वाला ॥
देशथी सम संयम विषै । उज्जलता अनंतगुण थायए ॥ हां० वाला ॥
अरुणदेव सेवी चरणनें । भये जगगुरु जिन महारायए ॥ हां० ७ ॥ ( काव्यं )
कम्मोघ कंतार दवानलस्स । महोदयानंद जयाजलस्स । विन्नाण पंकेरुह

काणाणस्स। णमोचरित्तस्स गुणापणस्स ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीँ श्री चारित्रायनमः ११ ॥ इति एकादशपदे श्री चारित्र पूजा ॥ ११ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ ( १२ ) ब्रह्मचर्य पद पूजा लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दूहा ) ॥ ❋ ॥ सुरतरु सुरमणि सुरगवी । कामकलश अवधार । ब्रह्मचर्य इणसम कह्यो । कामित फल दातार ॥ १ ॥ जिम जोतिषीयां रज निकर । सुरगणमें सुरराय । तिम सहुव्रत शिर सेहरो । ब्रह्मचारज कहिवाय ॥ २ ॥ ( राग ख्याल ) भला प्रभुगुण वालाहो (ए चालमें) ॥ ❋ ॥ भव भय हरणा, सिवसुख करणा, सदा भजोब्रह्मचारा ( मेंवारी जानं ) सदाभजो० हो ॥ भव० ॥ शील विबुध तरु पालन करिवा । कहि जिनवर नववाराहो । दिव्योदारिक करण करावण । अनुमति विषय प्रकाराहो ॥ १ ॥ भव० ॥ त्रिकरण जोगै ए परिहरीयै । भवीयै भेद अढाराहो ॥ भव० ॥ कनक कोडिनो दानदीयै नित । कनकचैत्य करताराहो ॥ भ० ॥ २ ॥ एहथी ब्रह्मचारज धारकनो । फल अगणित अवधारा हो ॥ भ० ॥ सहस चौरासी श्रमणदानफल । ब्रह्मव्रत फल समसाराहो ॥ भ० ३ ॥ विजयसेठ विजयासेठानी । उभयपक्ष्य ब्रह्मधाराहो ॥ भ० ॥ भये सुदर्शन सेठ शीलसें सुगतिबधू भरतारा हो ॥ भ० ४ ॥ सहस अढार शीलांग रथधारा । धारिकै निसतारा हो ॥ भ० ॥ सिंहादिक वसुभय तरु भंजन । कुंजर मद मतवारा हो ॥ ४ ॥ भ० ॥ कलहकारि नारदरिषि सरिषे । तरया भवजलधि अपारा हो ॥ भ० ॥ पच्चक्खाण विरति नहि एहमें । ए ब्रह्मव्रत उपगारा हो । भ० ॥ ५ ॥ सकल सुरासुर किन्नर नरवर । धरीय भगति हितकाराहो ॥ भ० ॥ ब्रह्मचारज व्रत धर नरवरके । प्रणमें चरण उदारा हो ॥ भ० ६ ॥ दशम अंग भणियो नरवर्मा । नरपति गुण आधारा हो ॥ भ० ॥ ब्रह्मचारिज व्रत पालि लह्योपद । जिनहरषै जयकारा हो ॥ भ० ॥ ७ ॥ ( काव्यं ) सग्गापवग्गग्ग सुहप्पयस्स । सुनिम्मलाणंत गुणालयस्स । सच्चव्वयाभूसण भूसणस्स णमोहि शीलस्स अदूसणस्स ॥ ८ ॥ ( ॐ ह्रीँ श्री ब्रह्मचर्यायनमः ) ॥ १२ ॥ इति द्वादशपदे श्री ब्रह्मचर्य पूजा ॥ १२ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ ( १३ ) किरियापद पूजा लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ( दूहा ) ॥ ❋ ॥ करम निरजरा हेतुहै। प्रवर क्रियां गुणखाण जिनशासननी स्थिति रही। किरिया रूपै जाण॥ १ ॥ भुवनमांहि किरियाम ही। सकलशुद्ध विवहार। प्रवरनाण दरशण तणो। शुधकिरिया शिणगार ॥ २ ॥ ( राग मालवी गौडी ) ॥ सब अरतिमथन मुदारधूपं ( ए चालमें ) शुभध्यान किरिया हृदय धरिनें। भ्रम सुकल भर धाररे। आर्त्त रोद्रनी हेतु किरिया। अशुभ पणवीस बाररे॥ १ शु० ॥ ग्यानवंत अशस्त्र भटहै। क्रिया शस्त्र वतंसरे। सुभटनाणी क्रियाशस्त्रे। करयकम अरिध्वंसरे॥ २ ॥ शु० ॥ ग्यानसेती वदै शिव यदि। तेरमें गुणठाणरे। एकनाणें तद जिणेसर। किमुनलहै निरवाणरे॥ ३ ॥ शु० ॥ जिनप शैलेशी करण करि। चवदमें गुण ठाणरे। सरबसंबर चरण करणें। लहै पद निरवाणरे॥ ४ ॥ शु० ॥ ए अनंतर अमृतकारण। कह्यो जिनवर भांणिरे। सरब संबर चरण किरिया। न शिव इणविनु जाणिरे॥ ५ ॥ शु० ॥ एकनाणें इक क्रियामें। नशिव वितरण शक्तिरे। कहै जिनवर उभययोगें। लहै भविजन मुक्तिरे॥ ६ ॥ शु० ॥ गरलमिश्रित सरस भोजन। अशुभ परिणति धाररे। अमृतसंयुत तेहभोजन रुचिर परिणति काररे॥ ७ ॥ शु० ॥ ग्यानसहिता तेमकिरिया। करिकरै नि सताररे। ग्यानविन किरियानदीपै। मनोमत फलसाररे॥ ८ ॥ शु० ॥ ग्यानपरिणति रमी किरिया। तेह किरिया साररे। भयो हरिवाहन जिनेसर। सुद्ध किरिया धाररे॥ ( काव्यं ) विशुद्ध सद्धाण बिभूषणस्स। सुलद्धि संपत्ति सुपोषणस्स। णमो सदाणंत गुणप्पदस्स। णमोणमो सुद्धक्रिया पदस्स। ॥ १० ॥ ( ॐ ह्रीं श्री क्रियायैनमः ॥ १३ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ इति त्रयोदशपदे श्री क्रियापद पूजा ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ ( १४ ) तपपद पूजा लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ( दूहा ) ॥ ❋ ॥ शमतारस युत तप रुचिर। भणियो जिन जगभांन। शिव सुरसुख चंदन फलद। नंदन विपिन समान ॥ १ ॥ सघन करम कानन दहन। करन विमल तपजांन। विपिन धूमकेतन समो। जय तप सुगुण निधान ॥ २ ॥ ( राग कल्याण ) तेरी पूजावनी हे रसमें

( ए चाल ) ॥ मेरीलगी लगन तप चरणें ॥ सकल कुशलमें प्रथम कुशलए । दुरित निकाचित हरणें ॥ १ ॥ मेरी० ॥ जैसें चक्रवाककी अरुणें । चकोरकी हिमकर किरणें ॥ मेरी० ॥ जैसें गणधरकी जिनचरणें । चातककी जलधरणें ॥ २ ॥ मे० ॥ जिनवर पिण तदभव शिवजाणें । त्रिण चउ नाण सुकरणें ॥ मे० ॥ तदपि सुकोमल करण चरणनें । ठवय कठिन तप करणें ॥ ३ ॥ मे० ॥ कपटसहित तप चरण धरणतें । वांछित फल नवितरणें ॥ मे० ॥ नितए दंभ रहित तपपदके । सुरपति गण गुण वरणें ॥ ४ ॥ मे० ॥ पीठ महापीठ मुनि मल्लीजिन । पूरब भव तप सरणें ॥ मे० ॥ रहीया तदपि कपट नवि छंड्यो । भये स्त्री गोत्रा चरणें ॥ ५ ॥ मे० ॥ दृढप्रहारि पांरुव घन करमी । छंड्या करमा वरणें । तपसें शोभलही त्रिभुवनमें । केवल कमला भरणें ॥ ६ ॥ मे० ॥ लाख इग्यारह असीहजारा । पंचसय शर दिन खिरणें । मासखमण करि नंदन मुनिवर । पांम्यो फल शिव धरणें ॥ ७ ॥ मे० ॥ तपकरीयो गुणरयण संवछर । खंधक समता दरणें । चवदसहस मुनिमें कह्यो अधिको । धन्नों तप आचरणें ॥ ८ ॥ मे० ॥ बाहिर भ्यंतर भेदैं एतप । बारभेद अधिकरणें । वसिनें कनककेतु पांम्योपद । जिनहरषै भवतरणें ॥ ९ ॥ ( काव्यं ) लछी सरोजा वलिता वणस्स । सरूव संलग्ग सुपावणस्स । अमंगला नोकुह दुदवस्स । नमो नमो निम्मल सत्तवस्स ॥ १० ॥ ( ॐ ह्रीँ श्रीतपसे नमः ) ॥ १४ ॥ ❀ ॥ इति श्रीतपपूजा ॥ १४ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ ( १५ ) गौतम गणधर पदपूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) ॥ ❀ ॥ गौतमगणधर पनरमें । पदसेवो सुप्रसन्न । वलि सहु जिन गणधर नमो । चवदैसै बावन्न ॥ १ ॥ दान सकल जग वस करै । दानहरै दुरितारि । मन वांछित सहु सुख दीये । दान धरम हितकारि ॥ २ ॥ ( राग सोरठ ) ॥ मैंतेरी प्रीति पीछानीहो प्रभुमें ( ए चाल ) पनरम पद गुनगाना हो भवी । पनरमपद गुणगानाहो ॥ आं० ॥ भावधरी करीयै मनरंगै । परम सुपात्रे दानाहोभवी ॥ पनर० ॥ १ ॥ पात्र कह्या द्रव्य भाव दुभेदैं । द्रव्य लछन ए जाना हो भवी ॥ पन० ॥ सरबोत्तम उत्तम हुवे भाजन । रतन कनक रूपाना हो भवी ॥ २ ॥ पनर० ॥ मध्यमपात्र

कहीजै एहवा । ताम्रधातु निपजाना होभवी ॥ पनर० ॥ पात्र लोहादिक अपर जातिना । तेह जघन्य कहाना हो भवी ॥ पन० ॥ ३ ॥ भावपात्रनो लछन कहीयै । सुनीयें सुगुण सयाना हो भवी ॥ पन० ॥ पंचम चरण धरै वलिवरतै । क्षीणमोह गुणठाना होभवी ॥ पन० ॥ ४ ॥ रतनपात्र सम ते सर्वोत्तम । पात्र कह्या जिनभानाहो भवी ॥ प० ॥ प्रवरनाण किरियाधर मुनिवर । लाभालाभ समांना हो भवी ॥ प० ॥ ५ ॥ ते कांचन भाजन सम कहीया । भवजल तारन यांना हो भवी ॥ पन० ॥ सुधमन द्वादशव्रत दरशनधर । तारपात्र सम जांना हो भवी ॥ पन० ॥ ६ ॥ सुध समकित धर श्रेणिक परमुख । रह्या अविरत गुनठाना हो भवी ॥ प० ॥ ताम्रपात्र सम एहनें कहीयै । भावी गुण मणि खाना हो भवी ॥ पनर० ॥ ७ ॥ अपर सकल जन मिथ्यादृष्टी । लोहादिपात्र गिनाना होभवी ॥ पन० ॥ जिनशासन रंगै रंगाना । वाचंयम सुप्रमाना हो भवी ॥ पन० ॥ ८ ॥ एहनें दानदीये शिव लहीयें । एह सुपात्र पहिचाना हो भवी ॥ पन० ॥ पंचदान, दसदान, निकरमै । अभय सुपात्र महिराना हो भवी ॥ पन० ॥ ९ ॥ नरवाहन सुभपात्र दानतें । भये जिनहरष निधानाहो भवी ॥ पन० ॥ सालिभद्र वलि सुरसुख लहीयो । सुरनर करय वखाना हो भवी ॥ पनर० ॥ १० ॥ ( काव्यं ) अणंत विन्नाण विभाकरस्स । दुवालसंगी कमलाकरस्स । सुलद्धवासा जरगोयमस्स । णमो गणाधीसर गोयमस्स ॥ ११ ॥ ( ॐ ह्रीँ श्री गौतमाय नमः ) ॥१५॥ इति पंचदशपदे सुपात्रदानाधिकारे श्री गौतम पूजा ॥ १२ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ ( १६ ) वेयावच्च पदपूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) ॥ ❀ ॥ सोलमपदमें जानीये । वेयावच्चविधान । अखिल विमलगुण मणितणो । सोहै प्रवरनिधान ॥ १ ॥ जिन, सूरी, पाठक, मुनी । बालक, वृद्ध गिलांन, । तपसि, चैत्य, संघनो, करो । वेयावच्च प्रधान ॥ २ ॥ ( राग ) बालोझांरो कब मिलसी मन मेलू ( ए चाल ) सेवो भाई सोलमपद सुखकारी । श्रीजिनचंद्र प्रमुख दश पद नो । करल वेयावच्च भारी ॥ सेवो० ॥ श्रीतीर्थंकर त्रिभुवन शंकर । अवर केवली हारी । मन पर्यव धर अवधिनाण धर । चउद पूरव श्रुतधारी ॥ २ ॥ सेवो० ॥ दशपू

वीं उतकृष्ट चरणधर । लब्धिवंत अणगारी । एजिन कहीयै इनवंदनतें । नविहुवै जिनअवतारी ॥ ३ ॥से०॥ जिनमंदिर बिंब करण करावै । पूजकरै म हुहारी । बेयावच्चकही ए जिनकी । करीयै नवजल तारी ॥ ४ ॥ से० ॥ आचारज परमुख नवपदको । बेयावच्च विजितारी । जगतिपूर्व वस्त्रौषध अन्नजल । देवै गुण विस्तारी ॥ ५ ॥ से० ॥ पंचसय मुनिनी करीय बेयावच्च पूरवनव व्रतचारी । नरत बाहुबल चक्रीपद नुज । बललह्यो वरी शिवना री ॥ ६ ॥ से० ॥ नंदिषेण सुलसा मुनिजनकी । करीय बेयावच्च सारी। तिणसें सरगलोकमें उयकी । नईय प्रसंसानारी ॥ ७ ॥ से० ॥ इत्यादिक सो लमपद उधरै । बहुलनव्य क्रमजारी । तिणसें इणबेयावच्च पदकी । वारी जानें वारहजारी ॥ ८ ॥ से० ॥ नृपजीमूत केतु सोलमपद । सेवीनयेडुख वारी । श्रीजिनहरष धरी हरिवंदत । शरणागत निसतारी ॥ ९ ॥ ( काव्यं ) मणुणसवा तिसयासयाणं । सुरासुराधीशर वंदियाणं । रवींडुबिंबा मल सगु णाणं । दयाधणाणं हि नमोजिणाणं ॥ १० ॥ ( ॐ ह्रीं श्रीजिनेभ्यो नमः )॥ ॥ १६ ॥ ❀ ॥ इति षोमशपदे श्रीवैयावृत्यपूजा ॥ १६ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ ( १७ ) समाधिपूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) ॥ ❀ ॥ सतरमपदमें सेवीयै । सहु सुखकरण समाधि । जिण सेवनतें नविकनो । गमें व्याधि अरुआधि ॥ १ ॥ ब्रह्मनगर पंथि विचरतां । वर पाथेय समान । ए समाधिपद जानीयै । सुरमणि किय हैरान ॥ २ ॥ वाजे तेराविडुआ (इस कैरवारी चालमें) ॥ ❀ ॥ मेरोरे समाधि चरण चित वसीयो ॥ चर० ॥ तसुगुण समरणि कियो मनुवसीयो ॥ मे० ॥ सकल जगत जन जिनकुं स्तवतुहै । अनुनव रंगै अतिह विकसीयो ॥ १ ॥ मे० ॥ द्रव्यत नावत डुविध समाधि । सुरतरु मांनुं नित नुवन विलसीयो । मे० । अशन वसन सलिलादिक नक्ती । करय संघनी करुणा रसीयो ॥ मे० ॥ २ ॥ द्रव्यसमाधि प्रथम एसुनियै । कह्यो जिन लोकालोक दरसीयो ॥ मे० ॥ सारण वारण चोयण प्रमुखै । पतित सुथिरकरै भ्रममें हरसीयो ॥ मे० ॥ ३ ॥ नावसमाधि डुतीयए कहीयै । जोकरै सो जिनचरण फरसीयो ॥ मे० ॥ सकल संघकों जो उपजावत । डुविध समाधि डुरित तसु नसीयो ॥ ४ ॥ मे० ॥ सु

मति पंच त्रिण गुपति धरैनित । सुरगिरिवरनो धीरज करसीयो ॥ मे० ॥ जगतजंतु अघतपति हरणकुं । अनुभव अम्रित धार वरसीयो ॥ ५ ॥ सुकल अनिल करमेंधन दाहत । जिणसें परगुण परिणति खिसीयो ॥ मे० ॥ ए मुनि तरणि तेज सम दीपत । अमृत सुखामृत पान तिरसीयो ॥ ६ ॥ मे० ॥ इणपदमें ऐसे मुनिजनके । समरणतें हुय जग अवतसीयो ॥ मे० ॥ एप दसेवी नृपतिपुरंदर । भये जगपति जिनहरष उल्लसीयो ॥ ७ ॥ ( काव्यं ) सर्विंदिया पार विकार दारी । अकारणा सेस जणोवगारी । महाभवातंक गणापहारी । जयोसदा सुद्ध चरित्त धारी ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीचारित्रधारिभ्योनमः

## ॥ ❀ ॥ अथ ( १८ ) अपूर्व श्रुतग्रहण पदपूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) ॥ ❀ ॥ श्रुत अपूर्व ग्रहिवो सदा । अष्टादश पदमांहि । इणपद सेवक जनतणा । सहु संकट भय जांहि ॥ १ ॥ जैसी कुमति विशुद्धता । घोर तपैकरि होय । तत् अनंत गुणि शुद्धता । सुग्यानीकी जोय ॥ २ ॥ ❀ ॥ दिलदार यार गबरू । राखुं रे घुंघटदा पटमें ( ए चाल ) ॥❀॥ जिनचंद्र ग्यान तेरा । होजीते रे विकट भवभटनें ( आं० ) ॥ सदपूर्व ग्यान धरणा । वितरै जिनेंद्र चरणा । करि सर्व कर्म हरणा ॥ १ ॥ जीते० । ( जिनचंद्र० )॥ जगमें महोपकारी । भवसिंधु वारितारी । कुमतां धता बिदारी॥२॥ जी० ॥ जि० ॥ सहुभावनो प्रकासी । परमस्वरूप भासी । समकित सद्भवासी ॥ ३ ॥ जी० ॥ जि० ॥ विणुहेतु विश्वबंधू । गुणरत्न राशिसिंधू । शमता पीयूष अंधू ॥ ४ ॥ जीते० ॥ जिन० ॥ स्याद्वाद पक्षगाजे । नयसप्तसें विराजे । एकांतपक्ष भाजे ॥५॥ जी० ॥ जि० ॥ लहि तीर्थ पावतारा । इणसें जिनेंद्रसारा । किया भव्यके उधारा ॥६॥ जी० ॥ जि० ॥ पद सेविए नरिंदा । भये सागरादि चंदा । जिनहर्षके समंदा ॥ ७ ॥ जी० ॥ जि० ॥ ( काव्यं ) सुद्धक्रिया मंभल मंभनस्स । संदेह संदोह विखंभनस्स । मुत्ती उपादान सुकारणस्स । नमो ही नाणस्स जयो धणस्स ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं श्रीज्ञानाय नमः ॥ १८ ॥ ❀ ॥ इति श्रीअपूर्वश्रुत ग्रहणरूपा ज्ञानपूजा ॥ १८ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ ( १९ ) श्रुतपद पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) ॥ ❀ ॥ पाप ताप संहरण हरि । चंदन सम श्रुतसार ।

तत्वरमण कारण करण । अशरण शरण उदार ॥ १ ॥ इगुनवीस पदमें भजत, जिनवर श्रुतनी भक्ति । इन पद वंदनसें लहै । अमल नाण युत मुक्ति ॥ २ ॥ ( राग ) व्रजवासी कांन तें मोरी गागर ढोरी रे ( अपर ) आजआयोरे उछाह । जीवभानाच जिणंद आगै ( इस चालमें ) ॥ ❋ ॥ भविजन श्रुत भक्ति चरणशरण उर धरीयै रे । ए श्रुत भक्ति सुमंगल माल । विमल केवल कमला वरमाल ॥ भविजन० ॥ १ ॥ सकल द्रव्य गुणगण परयाय । प्रगट करण एश्रुत मनभाय ॥ भवि० ॥ अतुल अनंत किरण समवाय । धरण तरणिगण सम कहिवाय ॥ भ० ॥ २ ॥ एश्रुत कुमति युवतिनें संग । अगणित रमणितणो करैभंग ॥ भवि० ॥ अरथै भाष्यो श्री जिनराज । सूत्रै गणधर मुनि सिरताज ॥ भवि० ॥ ३ ॥ ए श्रुतसागर अगमअपार । अनंत अमलगुण रयणाधार ॥ भवि० ॥ भव भय जलनिधि तरण जिहाज । निसुणि मगनभई सकल समाज ॥ भ० ॥ ४ ॥ भवकोटी लगि तपकरि जीव । अग्यानीकरै जितनी सदीव ॥ भवि० ॥ करम निरजरा तितनी होय । ज्ञानीकै इकखिणमें जोय ॥ भवि० ॥ ५ ॥ एक सहस कोडि १०००००००००, छस्सय कोडि ६००००००० । चतुरतीस कोडि ३४००००००, अक्षर जोडि ॥ भवि० ॥ अडसठ लाखरु ६८००००० सात हजार ७०,०० । अडसय ८०० असीय ८० प्रमिति चितधार ॥ ( १६०३४६८७८८० ) भवि० ॥ ६ ॥ इतने वरणसें इकपद होय । एक श्लोकका गणितए जोय ॥ भवि० ॥ इकपदको परिमांण एजाण । इणपदसें आगम परिमाण ॥ भवि० ॥ ७ ॥ तीन कोडि ३००००००० अरु अडसठ लाख ६८००००० सहस बयालीस ४२००० एपदलाख ॥ भ० ॥ इतने पदसैं अंग इग्यार । केरी गणना भवि चितधार ॥ भ० ॥ ८ ॥ बारम द्दष्टिवादको मान । असंख्यात पदको पहिचान ॥ भ० ॥ इणको चवदपूरब इकदेश । इसको पारलह्यो है गणेश ॥ भ० ॥९॥ एह दुवालस अंग उदार । एहनी जईयै नित बलीहार ॥ भ० ॥ एहनी द्रव्य भाव बहुभक्ति । करीयै धरीयै जिनपद युक्ति ॥ भवि० ॥ १० ॥ रत्नचूरु नृप सुखमाधार । जिन श्रुतभक्ति करी हितकार । भ० ॥ भये जिनहरष परमपददाय । जिनके सुर नर पति गुनगाय ॥भ०॥

॥ ११ ॥ ( काव्यं ) अन्नाणवल्ली वन वारणस्स । सुबोहि बीजांकुर कारणस्स । अणंत संसुध्द गुणालयस्स । णमो दयामंदिर सब्बुयस्स ॥ १२ ॥ ( ॐ ह्रीँ श्री श्रुतायनमः ॥ इति श्री श्रुतपूजा ॥ १९ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ २० तीर्थप्रभावन पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ( दूहा ) ॥ प्रावचनी १, अरु ध्रमकथी २। वादि ३, निमत्ती ४ जांण । तपसी ५, विद्या ६, सिध्द ७, बलि । कवी ८, एहमुनिभांण॥ १ ॥ भावतीर्थ प्रभूकह्या । प्रभावीक एअष्ट । तीर्थप्रभावन जेकरै । ते फलल्है विशिष्ट ॥ २ ॥ ❋ ॥ ( राग धन्यासिरी ) तेजतरणि मुखराजै ( ए चाल )॥ परभावन जयकारा । ( अहो जयकारा ) तीरथ परभावन जयकारा ॥ जिन् सेंभवसागर जलतरीयै । ते तीरथ गुणधारा । तीर० ॥ १॥ जिनके गणधर तीरथ कहीयै । बलि सहु संघ सुखकारा । एह महातीरथ पहिचानो । वंदिलहो भवपारा ॥ तीर० ॥ २ ॥ अरुसठ लौकिक तीरथ ताजि करि। भज लोकोत्तर सारा । द्रव्यभाव दोयभेद लोकोत्तर । थिर जंगम भयहारा तीरथ० ॥ ३ ॥ पुंडरीक परमुख पंचतीरथ । चैत्यपंच परकारा । एह वर तीरथ थावर कहीयै । दीठां दुरित विदारा ॥ तीर० ॥ ४ ॥ श्री सीमंधर प्रमुख वीशजिन । विहरमान भवतारा । दोयकोडि केवलि विचरंतां । जंगम तीर्थ उदारा ॥ तीर० ॥ ५ ॥ संघ चतुर विध जंगम तीरथ । जिनशासन उजीयारा । वरअनंत गुण भूषण भूषित । जिनकूं नमत जिनसारा ॥ ती० ॥ ॥ ६ ॥ ए तीरथ परभावना करीयै । सुभभावना आधारा । शिवकज जल विंशति तम पदकी । जाउं प्रतिदिन बलिहारा ॥ तीर० ॥ ७ ॥ ए तीरथ परभावना करतो । मेरुप्रभू अविकारा । पद जिनहरष लहीनें तरीया । भवभय जलधि अपारा ॥ ८॥ तीर० ॥ ॥ ( काव्यं ) महा महा नंद पद प्रदाय । जगत्त्रयार्थीश्वर वंदिताय । जिनश्रुतज्ञान पयोनदाय । नमोस्तु तीर्थाय शुभंददाय ॥ ९ ॥ ( ॐ ह्रीँ श्री तीर्थायनमः ) ॥ ❋ ॥ इति ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ विंशति पद स्तुति ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ( गरबो ) सुणिचतुर सुजाण परनारीसुं प्रीतमी० ( ए चाल ) ॥ ॥ ❋ ॥ चितहरषधरी, अनुभवरंगै, वीश परमपद वंदीयै । शिव रमणि

वरी, केवल सखीय सहाय, करी चिरनंदीयै ( आं० ) एवीशचरण अशरण शरणा। चिरसंचित दुरित तिमिर हरणा । नित चित एपद समरण धरणा । चि० ॥ १ ॥ एपद समरण जिण चितधरीया। तरीया तरसै तरै भवदरीया। सदनंत भविक सहु भयहरीया ॥ चि० ॥ २ ॥ एपद गुणसागर मनुहारा। वरणन तरणीयै वहुहारा। इंद्रादिक सुरन लह्यो पारा ॥ चि० ॥ ३॥ एपद अतिशय महिमाधारा। आश्रितपद कमला भरतारा । जिनचंद्रा नंदघनपद कारा ॥ चित० ॥ ४ ॥ जिनहरष सुरिंदकै शिवकरणा । चंद्रामल गुण विंशति करणा। हुइज्यो प्रभुअरजए अवधरणा ॥ चि० ॥ ५ ॥ ❀॥ इति श्री समस्त विंशति पदस्तुति ॥ २१॥ ❀॥

## ॥ ❀ ॥ अथ कलश ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ एवीशथानक भुवननंदन अघ निकंदन जानीयै। विबुधेंद्र चंद्र नरेंद्र वंदित पद जिनेंद्र बखानीयै ।ए वीशपद भव जलधि तारन तरण गुन पहिचानीयै । इमजानि भविजन कुशलकारन वीश पद उर आनीयै ॥ १ ॥ इहवरस चंद्र दिनेंद्र हरिमुख विधि नयन छिति मिति धरू। तिह मासभाद्रव धवल दल तिथि पंचमी रविवासरू । बंगाल जनपद जिह विराजित शिखर तीरथ गिरीवरू। सहु नगर सोभित अजीमगंजपुर दुतीय वालूचरपुरू ॥ २ ॥ खरतर गणेसर विजित सुरगुरु विमल गुण गिरिमाधरा। गुणभवन भविजन नलिन कानन नित विकासन दिनकरा मुनिचंद्र श्री जिनलाभ सूरिंद सुगुरु महीयल युगवरा। सकलेंद्र वंद्य जिनेंद्र शासन मंभना नित हितधरा ॥ ३ ॥ तसुपद उजल शिखरि गणवर उदय गिरि वासरकरा। योगींद्र वृंद नरेंद्र वंदित चरण पंकज गणधरा । आचार पंच छत्तीस गुणधर सकल आगम सागरा। युगप्रवर श्री जिनचंद्रसूरी गुरु सकल सूरीसरा ॥४॥ तसुचरण कमलज युगलसेवन अहनिशिमधुकरता धरी। वलि सुगुरुपद अरविंद युगनी कृपा नित चित आदरी । गणधार श्री जिनहरषसूरी हरष धरी घन अघहरी। या वीशपदकी विविधि पूजन विधितणी रचनाकरी ॥ ५ ॥ इति श्री विंशति स्थानक स्तुतिमयःपूजा विधि॥

## ॥ ❀ ॥ अथ वीशस्थानककी आरती लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जीया चतुर सुजाण नवपदके गुन गायरे ( एचाल ) ॥ ❀ ॥ पियाविंशतिथान मंगल आरती गायरे ( आं० ) सुमति प्रिया कहै चेतन पतिको । निसुण वचन मनलायरे ॥ पि० ॥१॥ यदि निजगुण परणति तुमचहीयै तिनको एह उपायरे । ॥ पि० ) ॥ अरिहंत सिद्ध आचारिज पाठक । साधु सकल समुदायरे ॥ पि० ॥ २ ॥ इत्यादिक विंशतिपद समरण । नवलय हरण विधायरे ॥ पि० ॥ एह आरती दुरति वारती । अनुपम सुरसुखदायरे ॥ पि० ॥ ३ ॥ जैसें नगतैं करत आरती । सकल सुरा सुर रायरे ॥ पि० ॥ तैसें नवितुमे करउ आरती । एपद गुण चितलायरे ॥ पि० ॥ ४ ॥ पंच प्रदीप सें करय आरती । जेनित चित उल्लसायरे ॥ पि० ॥ तेलही पंच चिदा नंद घनता ॥ अचल अमर पद पायरे ॥ पि० ५ ॥ पंचप्रदीप अखंमित ज्योतै । दुरमती तिमिर विलायरे ॥ पि० ॥ एहआरती तुरत तारती । नवजल निपतत घायरे ॥ पि० ॥ ६ ॥ पद जिनहरषतणी एकरणी । मन हरणी कहिवायरे ॥ पिया० ॥ चंद्र विमल शिव सिद्धि निधि धरणी । वरणी किणविध जायरे ॥ पि० ॥ ७ ॥ इति वीश थानक आरती संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ स्रगधरा छंद काव्य तीन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ योजीसुतां जनोघां, जन गिरिसदृशां, कामिकेतु प्रमुक्तो । दुर्वार स्फार पंको त्कट तर समर, व्रातता गम्परूपा । अव्याबाधा व्ययो द्यत पर म पद दशां सद्दशां योविभर्त्त । योनित्यं क्षायिकाख्या क्षय विमल लसत्तै लपूर्त्ति दधानः ॥ १ ॥ स्वाद्रादौ द्दामध्वामो ह्वलद तुलकल प्रज्वल ज्ञात वेदौ । ज्वाला माला कुलांगा जनित नव महा रएय जातंक संगाः । यत्रा नेके पतंगाः कुमत मिमतयो जीजनन्नष्टरंगा । नस्मी नावं स्वकीयं सकल नयहरः शंकर प्राणनाजां ॥ २ ॥ प्रध्वस्तां नंतचंच त्किरण गणलस त्सप्त संतिप्रतापो । लोका लोकाव लोका स्वजित विमलतो दग्रजाग्रत्प्रकाशः त्रैलोक्या नंदन स्सप्रकृत कुशलक्ष छंदन श्चामेरंदै । श्रीवामानंदनोयं जगति विजयतां जैनचंद्रः प्रदीपः ॥ ३ ॥ त्रिभिर्विशेषकं॥ ❀ ॥ इति ॥ ❀ ॥ यह तीन काव्य आरती कियां पीछे दोनुं हाथ जोडके कहै ॥ ❀ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ नंदीश्वराष्टमद्वीपांतर्गत द्वापंचाशज्जिनप्रासाद शाश्वत जिनप्रतिमार्च्चन विधि लिख्यते ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ( दोधक ) ॥ ❋ ॥ स्वस्तिश्री सुखकरण घन । विघनहरण जयकार । अश्वसेन नंदन चरण । शरण रुचिर उरधार ॥ १ ॥ जिनवाणी समरणकरी । सकल जीव सुखकार । कहिशुं नंदीश्वर जगत । पति पूजन विसतार ॥ २ ॥ ( ढाल ) ॥ अखिलद्वीप सिरताज विराजै । अष्टमनंदीश्वर द्वीप छाजै । वलयाकार जगत सुखकारी । निरुपम अतिशय गुण मणि धारी ॥ ३ ॥ ( उल्लालो ) ॥ मणिधारि वावन विमलगिरवर जैनमंदिर युतसदा । शुभभक्तिधर निर्जर पुरंदर निरखिपांमे संपदा । इककोटि शत त्रिण सठिकोटिय चौरासिलख योजना । इण द्वीपनो चक्रवाल विष्वंभ मान जाणो भोजना ॥ ४ ॥ ( ढाल ) ॥ इणद्वीपैं पूरब दक्षिण आसा । पश्चिम उत्तर दिश चउ पासा । चक्र रंजनगिरि सुखमा धारी । चारणसुर विद्याधर चारी ॥ ५ ॥ ( उल्लालो ) धरचारि निज द्युति भर विनिर्जित, सजल जलधर घनघटा । वलि चतुरशीति सहस्रयोजन तुंगता धरतास्फुटा । इणप्रवर अंजन शिखर शिखरें शाश्वता जिनमंदिरा । चउसंख्य सुंदर कनक कलशोपमधरा जग सुखकरा ॥ ६ ॥ ( ढाल ) ॥ इक इक अंजनगिरि चउपासा । चउपुष्करिणी प्रकट प्रकासा । विस्तर इगलख योजनसारा । तासुमांहि इक इक उदारा ॥ ७ ॥ ( उल्लालो ) इक इक उदारा सहस्र चउसठि योजनोन्नतता कुला । जिनराज मंदिर मंभिता सहु चंद्र किरण समुज्वला । दधिमुख धरा धर दीर्घका प्रति विदिशि दोय दोय रतिकरा । दश सहस्र योजन उन्नता धर उदय करुणा रुणवरा ॥ ८ ॥ ( ढाल ) ॥ जिनमंदिर युत रतिकर विमला । पूरबदिशि तेरस सहु अचला । एहरीतिपर त्रिणदिशि जांणो । इम वावन्न गिरेंद्र वखाणो ॥ ९ ॥ ( उल्लालो ) ॥ इव खाण शतयोजन सुदीर्घा वहुत्तर योजन प्रमा । अतिउन्नता पंचासयोजन विस्तरा जिनगृहसमा । शतएक अष्टोत्तर प्रमाणा पंचशत धनुरुन्नता । इणरीति प्रतिमासाद प्रतिमा जाणीयें बिंबशाश्वता ॥ १० ॥ ❋ ॥

( दोधक ) ऋषभानन चंद्रानना । वारिषेण वधमांन । एजांणो शाश्वत

सकल। जिनप्रतिमा अभिधान ॥ ११ ॥ सुरगिरि सिखरै जिनतणो । जिन न्हवणोत्सव सार। करिकैं नंदीश्वर जई। हरिगण विबुध उदार॥१२॥ अनुभव रसयुत भक्तिधर। हृदय सरोज मझार। इणपरि शाश्वत जिनतणी। करइ पूज अतिसार॥ १३ ॥ पूरबदिशि अंजनगिरी। मंदिरगत जिनराज। अरू विध पूजायें सदा। अरची जै हितकाज॥ १४ ॥ प्रथम पूज जिनराजनी। विमलजलै भरपूर। करियै न्हवण सदाभवी। होइ सकल दुखदूर॥ १५ ॥ ॥ ❀ ॥ कुंदकिरण शशिऊजलोरे देवा ( ए चाल ) ॥ ❀ ॥ मिलिकरि सकल सुरासुरारे वाला । निज सेवक सुरपासेंरे। क्षीरजलधि मागध थकी रे वाला। सिंधुनदी गंगासें रे॥ १ ॥ बलि वरदाम सुतीर्थसें रे वाला। विमल सलिल अणावेंरे। मणि कनकादि कलस भरी रे वाला। उषधि कुसुम मिलावेंरे ॥ २ ॥ इंद्रादिक सहु सुरगणारे वाला। शाश्वत जिन न्हवरावै रे। विमल सलिल धाराकरी रे वाला। कुमति तापनें गमावै रे॥ ३ ॥ इण परि जेभगते भवी रे वाला । न्हवणकरै जिनअंगैरे। ते सुरवर सुख अनुभवीरे वाला। लहे शिवपद मनरंगे रे ॥ ४ ॥ द्रव्यपूज करि सुरवरारे वाला । करइ जिणिंद गुणगानारे। कुशल कुमुद विकसायवारे वाला। प्रभु शिव चंद्र समानारे॥ ५ ॥ ( काव्यं ) दुरितदाघ वना तप वारणं। सकल भाव विकाशन कारणं । जगति भव्य भवोदधि तारणं । जिनगणं स्नपयाम्य मलैर्जलै ॥६॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परमात्मनेभ्योऽनंतानंतज्ञानशक्तिभ्यः । प्रणत सकल सुरासुरेंद्र वितेंद्रवृंदविहितभक्तिभ्यः । कठिन कर्मशालमालोन्मूलनवारणेभ्यो। जन्म मृत्यु निवारणकारणेभ्यो। नंदीश्वराष्टमद्वीपगत। पूर्वांजनगिरी शिखरस्थ। सिद्धायतन मंम्नाय मानेभ्यः। श्रीऋषभाननः चंद्रानन, वारिषेण, वर्द्धमाना· भिधाना ष्टोत्तरैकशत शाश्वतजिनेंद्रेभ्यो । जलं ययामहे स्वाहा इति प्रथम जलपूजा ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ द्वितीय चंदन पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दोधक ॥ ❀ ॥ द्वितीय पूज जिनराजकी। करहु भक्ति भरसार। वर सुगंध द्रव्यें करी । तरहु सिंधु संसार ॥ १ ( राग भीममल्हार ) मेघवरसे भरी पुष्फवादल करी ( ए चाल ) ॥❀॥ भक्तिधारे भवीयजन पूज महा

राजकुं। एह वरगंध द्रव्यै सदाई। विमल घनसार चंदन सरस मृगमदा। कुंकुमें कर विलेपन मुदाई ॥ १ ॥ भक्ति० ॥ जेभवी सुरभितर गंध द्रव्ये करी। सुरभि तनुकरे जिनराजकेरो। तेहनी चंद्रकर अमल यशवासना सुरभितम करइ सहुजग घणेरो ॥ २ ॥ भक्ति० ॥ एमवर सुरभितर द्रव्य सें सुरवरा। अरचकरि जगतपति बिंबसारा। परम शुभभावना भावता। गावता। विशद जिनवरगुणा अति अपारा ॥ ३ ॥ भ० ॥ सकल सुरगण मिली एमजंपे मुदा। भोसुरा आज जिनराज अरचो। विरति गुण रहित निजजन्म सफलो कीयो। सुमति संयोग दुरमति विगूचो ॥ ४ ॥ भ० ॥ दुतीय इमपूज करतां हरइ भव्यनो। पाप घनताप आपें अपारा। सरग निरबाण पुरपंथ प्रकटीकरण। विशद शिवचंद्र करगण उदारा ॥ ५ ॥ ( काव्यं ) मृगमदोज्ज्वल कुंकुम चंदनै। श्चिरतनांतर ताप निकंदनैः। जिन वरानव तामस भास्करान्। स्वहित वृद्धिधियेच समर्चये ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्री अर्हं परमात्मनेभ्यो ऽनंतानंत ज्ञानशक्तिभ्यः। कठिन कर्मशाल मालोन्मूलनवारणेभ्यो। जन्म जरा मृत्यु निवारण कारणेभ्यो। नंदीश्वरा ष्टमद्वीपगत पूर्वांजनगिरि शिखरस्थ। सिद्धायतन मंम्नाय मानेभ्यः। श्री ऋषभानन चंद्राननन, वारिषेण, वर्द्धमाना, भिधानाष्टोत्तरै कशत शाश्वत जिनेंद्रेभ्यो। श्चंदनं ययामहे स्वाहा ॥ २ ॥ इति द्वितीय गंध पूजा ॥ २ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ तृतीय पुष्प पूजा ॥ ❀ ॥

॥❀॥ दोधक ॥ ❀ ॥ तृतीयपूज जिनराजनी। विकसित अतिहि रसाल सुरभि कुसुमकरी भविकजन। करीयै भक्ति विशाल। १ ( राग भैरवी ) पंचवरणी अंगीरची कुसुमजाती ( ए चाल ) ॥ एह जिनकी पंकहरणी भगती सारी। मिलकरि हरिवर सकल सुरासुर। त्रिकरण इककरि हितकारी ॥ १ ॥ ( एहजिनकी० ) अनुभव रसयुत चित्त भक्तिधरि। पूरब पुण्य उदयभारी ॥ एह० ॥ इण विध कुसुम भक्ति जिनवरकी। करइ हरइ घन दुरितारी॥ एह० ॥ २ ॥ मालती नाग पुन्नाग केवडा। दमणक कुंद सुगंधि धारी ॥ एह० ॥ मरुक केतकी पद्म मोगरा। कुसम मालकरि मनुहारी ॥ एह० ॥ जिनवर कंठठवै प्रभुआगलि। कुसुम पुंज धरि दुःखवारी ॥ एह० ॥ इण विध पुष्प

भक्तिकरी भविजन। वरइ सकलजग शिरनारी ॥ ४ ॥ करिकै शुक्ल ध्यान पावकसें। भस्म विषम सम कर्म वारी ॥ एह० ॥ चिदानंद घन शिव चंद्रोपम। पामें अति गुण विस्तारी ॥ एह० ॥ ( काव्यं ) भव दवानल ताप घनाघनं। कुशल चंदन नंदन काननं। विशद शारद चंद्र समाननं। जिनगणं कुसुमैश्च समर्चये ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परमात्मनेभ्यो अनंता० ॥ प्रणत० कठिन० नंदीश्वरा० श्री ऋषभानन, चंद्रानन, वारिषेण, वर्द्धमानाभिधानाऽष्टोत्तरै कशत शाश्वत जिनेंद्रेभ्योपुष्पं यजामहेस्वाहा ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ इति तृतीय पुष्पपूजा ॥ ३ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ ४ धूपपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दोधक ) ॥ जगनायक जिनचंदनी। एह चतुर्थी जांण। धूप पूज करीयें सदा। हरीयें कुमती अनाण ॥ १ ॥ ( राग मालवी गोडी ) ॥ सव अरतिमथन मुदारधूपं ( ए चाल ) ॥ जग कुशलकारि अघालिहरणं। धूपपूज उदाररे। धूप अनलै कुगति दुखभर। फलद दहत अपाररे ॥१॥ जग० सरस चंदन अगर अंबर। मृगमदा घनसाररे। कुंदरुक्क वली सेल्हारस। करीयें गंधवटि साररे ॥ २ ॥ जग० ॥ रतनमय वर धूप धाणो। धूपभृत कर धाररे सुर पुरंदर पूजकरतां। लहै लाभ अपाररे ॥ ३ ॥ जग० ॥ धूप परिमल महमहै जिम। तेम भुवन मझाररे। धूपपूजा ते भविकनो। गुणसुगंध विचाररे ॥ ४ ॥ जग० ॥ भवअंध कूप पतंग उधरत। धूप अरचन धाररे। कहत गणि शिवचंद पाठक। पूज चउथी साररे ॥ जग० ॥ ५ ॥ ( काव्यं ) भवसु दुस्तर वारधितारकं। विषयसौख्य विकार निवारकं। निरुपमोत्तर मंगलकारकं। जिनगणं घृत धूप करायजे ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परमात्म० श्रीऋषभानन, चंद्रानन, वारिषेण, वर्द्धमाना, भिधानाष्टोत्तरैकशत शाश्वत जिनेंद्रेभ्यो धूपंयजामहे स्वाहा ॥ ❀ ॥ इति चतुर्थी धूपपूजा ॥ ४ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ ( ५ ) दीपकपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दोधक ) ॥ ❀ ॥ दीपपूज इह पंचमी। करीयै विविध प्रकार। दीपपूज करतो भविक। दीपै जगतमझार ॥ १ ॥ ( राग कल्याण ) तेरी पूजावणी तेरसमें ( ए चाल ) ॥ मेरी लगीय प्रीति प्रभुचरणें २ ॥ निजगुण

परणति करण करावण । सकल लोक सुखकरणें ॥ मेरी० ॥ १ ॥ गहिर सिंधु नव निपतीत तारण । तरण तरणि गुणधरणें ॥ मेरी० ॥ अनंतरूप धर दुरगति नयहर । परमज्योति अधिकरणें ॥ २ ॥ मेरी ० ॥ करुणाधार विमलगुण आगर । निरुपम अशरण शरणें ॥ मेरी० ॥ ए जिनचरण दीप पूजनसें । अरचीजै दुखहरणें ॥ ३ ॥ मेरी० ॥ केवल विमल चिदानंद ल हीयै । दीपपूजके करणें ॥ मेरी० ॥ रतनदीपसें करै आरती । हरषित जिन गुण वरणें ॥ ४ ॥ मेरी० ॥ ए प्रनुचरण सेव नवि जनकुं । अमित पद सुवितरणें ॥ मेरी० ॥ कुमति रजनी अग्यान तिमिरहर । वर शिवचंद्र सुकिर णें ॥ मेरी० ॥ ५ ॥ ( काव्यं ) मदन सिंधुर सिंधुर वैरिणं । गुरुकषाय करे णु समीरणं । मदधरा धरता बल वैरिणं । जिनगणं प्रयजे सुप्रदीपके ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परमात्मने० । प्रणत० । कठिन० । नंदीश्वर० । श्री रुषना नन, चंद्रानन, वारिषेण, वर्द्धमाना, त्रिधाना ऽष्टोत्तरैकशत शाश्वत जि नेंद्रेभ्यो । दीपं यजामहेस्वाहा ॥ ❀ ॥ इति पंचमी दीपपूजा ॥ ५ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ ( ६ ) अक्षत पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ( दूहा ) ॥ छठी अक्षत अरचना । करियै धरि सुननाव । बरि यै सिद्धिवधू परम । अक्षय सुखनोदाव ॥ १ ॥ ( राग सारंग ) हां होरे देवा बावन्नाचंदन घासि कुमकुमा ( ए चाल ) ॥ हांहोरेवाला ॥ एजगदीशर हि तकरू । अलवेसर जिनमहाराज ए ( हांहोरेवाला ) अतिगहिरा नव जल धि तें । प्रनु तारण तरण जिहाजए ॥ १ ॥ ( हांहोरे० ) नीमकरम कुंजर घटा । नंजन मृगराज समानए ( हांहोरे० ) नव्यकमल प्रतिबोधवा । ए प्रनु वासर महिरानए ॥ २ ॥ ( हांहोरे० ) रजतशालि तंदुलमयी । अक्षत पूजन अग्रसारए ( हांहोरे० ) ए पूजा जिनचंद्रनी । वांछित सुखनी दातारए ॥ ३ ॥ ( हांहोरे० ) ठवण जिनंद दरशण अछै । अनुनव रस तरुनो कंदए । ( हांहोरे० ) नाव जिणेसर दरशनो । कारण कह्यो सकल जिणंदए ॥ ४ ॥ हां० ॥ ए पाठक शिवचंद्रनें । जिनचरण शरण आधारए ॥ हां० ॥ प्रतिनव हुइज्यो एकही । छठी अक्षत पूजा सारए ॥ ५ ॥ ( काव्यं विजित मं दर नूधर धीरतं । निहत सागर राज गंनीरतं । प्रजित पातक योध सुवीरतं

जनगणं प्रयजे ऽक्षतपूजया ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परमात्मभ्योऽनंता० णत० । कठिन० । नंदीश्वरा० श्री ऋषभानन, चंद्रानन, वारिषेण, वर्धमाना नधानाऽष्टोत्तरैकशत शाश्वत जिनेंद्रेभ्यो ऽक्षतं यजामहे स्वाहा ॥ ❋ ॥ ति छठी अक्षत पूजा ॥ ६ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ (७) नैवेद्य पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ( दूहा ) हिव पूजा नैवेद्यनी । सप्तम अतिह रशाल । करीयें जि वरनी अचल । लहीयें मंगल माल ॥ १ ॥ ( राग ) जिनगुणगानं श्रुत मृतं ( ए चाल ) ॥❋॥ जिनवर दरसण वर अमृतं । एजिनदरसण अम्रित फ से । पामें अनुपम कांचनतं । तिणसें सुरपति प्रभुदरसण वरि । भगतें ावे जिनचरितं० ॥ २ ॥ जिन० ॥ मोदक घृत वर खज्जक परमुख । वरनै द्य सरस धरितं । हरि गण गज प्रभु आगलि ढोवै । मणि मय नक थाल भरितं ॥ जि० ॥ ३ ॥ जेनैवेद्य करी जिन पूजन । करइतेह जग मन हरितं । अतिही स्वादु सुर गति शिव पद सुख । तति नितसेवै भ वे तुरितं ॥ ४ ॥ जिन० ॥ विंशति पदमें एजिनपति पद । वर शिवचंद्र विम ल अनितं । इण पद सेवक भविजन केरो । संचित भूरि हरइ दुरितं ॥ ५ ॥ जिन० ॥ ( काव्यं ) अनंत विज्ञान मयस्वरूपं । समस्त लोक त्रय भूति भूपं । लसद्गुणौवा मृत चारु कूपं । यजेसु नैवेद्य चया जिनौघं ॥६॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परमात्मभ्यो० । प्रणत० । कठिन० । नंदी० । श्रीऋषभानन, चं द्रानन, वारिखेण, वर्द्धमाना, भिधानाष्टोत्तरैक शत शाश्वत जिनेंद्रेभ्यो नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति सप्तमी नैवेद्य पूजा ॥ ७ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ (८) फल पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ( दूहा ) ॥ जिन फल पूजा अष्टमी । कष्ट अनिष्ट विदार । करीयें सुभभावें सदा । भरीयै पुण्यभंभार ॥ १ ॥ ( राग धन्या सिरी ) तेज तरणि मुखराजै ( ए चाल ) ॥ सुरनायक जशगावै । जिनजीको सुर० ( आंकणी ) निरमल मन वच काय करणतें । ढलि २ सीस नमावै । सुर अवतार सफल भयो मेरो । जिनपुजन सुपसावै ॥ १ ॥ जिनजीको सुर० नयन चकोर चंद्र समज्योती । संचित दुरित पुलावे । निरखि निरखि मन

मोहन मूरति। आनंद अंग न मावै ॥ २ ॥ जिनजीको० ॥ नालिकेर नारंगी कवला। केला आम्र अणावै। पुंगीफल दाडिम परमुख फल। जिनवर चरण चढावै ॥ ३ ॥ जिन० ॥ जेभवि फल पूजा जिनवरकी। करे करावै भावै। अनुमोदै तेपरम चिदानंद। घन अमित फलपावै ॥ जिन० ॥ ४ ॥ वरसअढार छिहोत्तर जेठे। प्रतिपद सुकल सुहावै। चंद्र सूनु वासर जयनगरै। खरतरगछ जगचावै ॥ जि० ॥ ५ ॥ श्रीजिन हर्षसूरि सूरीसर। विजयमान वडदावै। रूपचंद्र गणि पाठक पारिंद्र। वादींद्र विरुद धरावै ॥ जिनजी० ॥ ६ ॥ तासुशीश वाचक पुण्यशील शिष्य। समय सुंदर कहिरावै। तासुशीश पाठक शिव चंदें। पूजरची मनुभावै ॥ ७ ॥ जिनजी० ॥ जेनंदीश्वर शास्वत जिनकी। वसुविध पूज रचावै। ते जन सकल लोकके ईश्वर। तीर्थंकर पद पावै ॥ ८ ॥ जिन० ॥ ( कलश ) सुरपति सुरासुर, वृंद वंदित, चरण पंकज मघहरं। सद्वीप नंदीश्वर जिनालय, परमतर सुखमाकरं। अतविशद हिमकर चंद्रिकामल निखिलगुण मणि सागरं। जिनराज गण मह मर्चये वर फलचयैः करुणाकरं ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परमात्मभ्यो०। प्रणत०। कठिन०। नंदी०। श्री ऋषभानन, चंद्रानन, वारिषेण, वर्द्धमाना भिधानाष्टोत्तरकैशत शाश्वत जिनेंद्रेभ्यो फलं यजा महे स्वाहा ॥ ❀ ॥ इत्यष्टमी फल पूजा ॥ ८ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ दूहा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पूरबदिशि अंजन गिरी। मंदिरगत जिनराज। अष्टविध पूजायै सदा। अरचीजे हितकाज ॥ १ ॥ पूरब प्रमुख चिहुंदिशै। पुष्करणी अभिराम। दधिमुख चउमंदिर जिना। अरचीजै शुभकाम ॥ २ ॥ ईशानादिक विदिशि गत। वसु रतिकर गिरिराज। मंदिरगत जिनराजकी। रचीयै पूजसमाज ॥ ३ ॥ दक्षिण दिशिअंजनगिरी। मंदिरगत महाराज। वसुविध पूजायै सदा। पूजीजै हित काज ॥ ४ ॥ दक्षिण अंजन शैलनै। चउदिशि दधिमुख सार। चउमंदिर जिनरायकी। करीयै पूजउदार ॥ ५ ॥ दक्षिण ईशानादिकै। विदिशें अतिह उदार। अरु रतिकर गिरिवर जिना। पूजो विविध प्रकार ॥ ६ ॥ पश्चिमदिशि अंजन गिरी।

मंदिर जिन महाराज । वसुविध पूजायें सदा । पूजो भविक समाज ॥ ७ ॥ पश्चिम अंजन शैलनें । चउदिशि दधिमुखधार । चउ मंदिर जगनाथकी । पूजकरो सुखकार ॥ ८ ॥ पश्चिम ईशानादिकै । विदिशै जग हितकार । अरु रतिकर गिरि जिन प्रतें । अरचुं जगदाधार ॥ ९ ॥ उत्त रदिशि अंजनगिरी । मंदिर गत जगराय । अष्टविधार्चनसैं भविक । अर चो जीउ सुखदाय ॥ १० ॥ उत्तर अंजन शैलनें । चउ दिशि दधिमुख । नाम । चउ मंदिर तीर्थेशनें । अरचो शुभपरिणाम ॥ ११ ॥ उत्तर ईशाना दिकै । विदिशै रुचिराकार । वसु रतिकर गिरि जगप्रभू । पूजो अरति विदार ॥ १२ ॥ सकल संघ वलि जेठमल । कोठारी चितचंग । इनके आग्रह सें करी । एहपूज मन रंग ॥ १३ ॥ इति नंदीश्वरद्वीपकी पूजा सं० ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ नंदीश्वर लघु अष्टप्रकारी पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ स्ववासिवासे सुतरां प्रकाशे । नंदीश्वरे द्वीप वरेष्टमेहम् । सुगंधि तीर्थांमि जलैः सुभक्तए । जिनेश्वराणां स्नपयामि मूर्त्तीः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरे । अष्टम द्वीपे । श्रीमत्शाश्वत जिनेश्वरेभ्यो । जलं० ॥ ❋ ॥ स्ववासिवासे सुतरां प्रकाशे । नंदीश्वरे द्वीपवरेष्ट मेहम् । कर्पूर स चंदन कुंकु मैश्च । समर्चये श्रीजिनराज मूर्त्तीः ॥ २ ॥ ❋ ॥ स्ववासिवा०नंदी०।विकास भाक् शुद्धसुगंधि पुष्पैः । समर्चये श्रीजिनराज मूर्त्तीः ॥ ३॥❋॥स्ववासिवा से० नंदी० । तुरुक्क कृष्णा गुरु मुख्यधूपं । मुदा प्रयच्छामि जिनेश्वरेभ्यः ॥ ४ ॥ ॥❋॥स्ववासिवा०। नंदी०। सुनिर्मलाज्येन घृतैः प्रदीपैः । कुर्वे प्रमोदा जिन राज पूजाम् ॥ ५ ॥ ❋ ॥ स्ववासि० । नंदी० । स्वयं पुरस्ता जिन पुंगवानां। सदक्षतौघा नुप ढौकयामि ॥ ६ ॥❋॥ स्ववासि० । नंदी०। स्वयं पुरस्ता० । नैवेद्य जातान्युप ढौकयामि ॥ ७॥ ❋ ॥ स्ववासि० । नंदी० । स्वयंपुर० । फलानि चाग्रयाण्युप ढौकयामि ॥ ८ ॥ ❋॥ इत्थं जिनानां प्रविधाय पूजां। सद्रव्यतो भाव विशुद्धिभाजः । भव्यांगिनो नुक्रमतो लभंते । स्वर्गंच मोक्षं विरहाद्भवस्प ॥ ९ ॥ इत्यष्टप्रकार पूजाष्टकम् ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ श्रीनंदीश्वराष्टमे द्वीपे द्वापंचाशज्जिनालय पूजा विधिः ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ तहां पहला पूर्वदिशिमें चौमुख पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पूर्व दिशिके बीचमें अंजन गिरीके चौमुख आगे । अष्टद्रव्य ना लेर पांन थापना लेकर खमा रहै ॥ नमोर्हत् सिद्धा० ॥ शिखरणी छंद ॥ दिशी श्रीपूर्व्वस्यां सुरवर युतैं देवरमणैः । स्फुरत् तुंगे शृंगे जलदसदृशै कज्जल गिरौ ॥ जगत्पूज्ये सिद्धायतन उदिते जूमि विदिते । नमो नंदीद्वीपे रुषज जिननाथादि विजवैः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हंपरमात्मने अनंतानंत ज्ञानशक्तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीरुषजानन चंद्रानन वारिषेण वर्द्धमाननामानो एकशत चतुर्विंशति अधिक शाश्वत जिननाथाय जलं चंदनं पुष्पं धूपं । दीपं अक्षतं नैवेद्यं फलं ॥ यजामहे स्वाहा ॥ इति प्रथम पूजा ॥ १ ॥ ❀ ॥

### ॥❀॥दधिमुखपर्वतपूर्वदिशिमें(पूर्ववत्)द्रव्यलेकेखडारहै॥❀॥

॥ ❀ ॥ शिखरणी छंद ॥ ततः प्राच्यां वापी विमलसलिला देव रमणा । दनंद्या नंद्याकाजल जललिता तोरणभृता । तदुत्संगाधिस्थे दधिमुख गिरौ चैत्य निलये । नमंस्तत्र श्रीमदृषजजिननाथादि विजवे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हँपरमा० अष्टद्रव्यंयजा० ॥ २ ॥

॥ ❀ ॥ दधिमुखपर्वत दक्षिणदिशिमें ॥ शिखरणी छंद ॥ तदैताद्रेरम्या च लद नल सत्तोय निवहा । शुन्ना मोघाप्राच्यां भ्रमर निकरैर्नक्ततितरा॥तदुत्संगाधिस्थे दधिमुखगिरौ चैत्य निलये । नमस्तत्र श्रीमदृषजजिननाथादि विजवे ॥१॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ पर० अष्टद्रव्यंयजामहे स्वाहा ॥ इति ॥ ३ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पश्चिम दिशि दधिमुखपर्वतमें ॥ शिखरणी छंद ॥ प्रतीच्या माशायां तदधि गिरितौ मंजुलधरा । सुवापीगोस्तूपा सुर सरदिवा जांति सततं । तदुत्संगाधिस्थे दधिमुखगिरौ चैत्यानिलये । नम स्तत्रश्री मद्वृषजजिननाथादिविजवे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं० अष्टद्रव्यंय० स्वाहा ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ उत्तरदिशिमें दधिमुख पर्वतपर ॥ शिखरणी छंद ॥ उदीच्यां सोपाना वतर दमरस्त्री व्रजवदा । सुदर्शाद्यानांता तदचलवरा त्पुष्करणिका॥तदु

त्संमाधिस्थे दधिमुख गिरौ चैत्यनिलये । नमस्तत्र श्रीमदृषभ जिननाथादि विभवे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं० अष्टद्रव्यं य० स्वाहाः ॥ ५ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ईसानकूणमें रतिकर पर्वतपर ॥ वसंततिलकाछंद ॥ वाप्यंतरे रतिकरः प्रथितावदातः । ईशानगो गिरिवरो मगनाश्रितश्च॥ तत्रस्थ चैत्य ऋषभादि जिनेश्वराणां । वंदे मुदाविशद बिंब मुदारवृत्त्या॥१ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अ० अष्टद्रव्यंय० स्वाहा ॥ ६ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ॥ ❋ ॥ ईशानकूणमें दूसरा रतिकरपर्वतपर ॥ काव्यं ॥ तादृक्वरो रतिकरोपि तथा द्वितीयः। शैल स्सहोदरइव प्रचकास्ति यत्र । तत्रस्थ चैत्य ऋषभादि जिनेश्वराणां। वंदे मुदा विशदबिंब मुदारवृत्त्या ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं० अष्टद्रव्यंय० ॥ ७ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अग्नि कूणमें प्रथम रतिकरपर्वतपर ॥ काव्यं ॥ अग्न्याश्रितो रतिकरो रति मूर्त्तिरूपः । स्वर्गांगणो वसुमतीव तथैव तस्य । तस्मिन् जिनालय वरेजगदीश्वराणां । रूपं ततोस्मि नरजन्म फलाभिलाषो ॥१॥ ॐ ह्रीं श्रींऽर्हं० अष्टद्रव्यं० य० इति ॥ ८ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋॥ ॥❋॥

॥❋॥अग्निकूणमें दूसरा रतिकर पर्वतपर॥काव्यं॥तत्रैव तत्समधरस्समपंक्तितोभ्यो।गोत्रोत्तमो रतिकरो नरदेवकाम्य॥तस्मिन्जिना०रूपंततो०ॐ ह्रीं०॥९॥ ॥ २ ॥ नैरुतकूणमें रतिकर पर्वतपर ॥ काव्यं ॥ नैरुत्यगौ रतिकर स्सुरशैलकीर्त्तिः ॥ विस्फूर्त्तिमूर्त्ति विजितः शुशुभे सदैव ॥ तत्रस्थ जैनभुवने भुवनोत्तमत्वे । संस्तोमि साधुऋषभादि प्रभुं सदाभं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऽर्हं अष्टद्रव्यंय० ॥ १० ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ नैरुतकूणमें दूसरे रतिकर पर्वतपर ॥ काव्यं ॥ तस्यैव पार्श्वपरिवर्त्ति नगाधिराज॥ स्तत्तुल्यगो रतिकरो द्युतिभृद्दिगंतः । तत्रस्थजैन० ॥ संस्तोमि० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं० । अष्टद्रव्यंय० स्वाहा ॥ ११ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ वायव्यकूणमें पहिले पर्वत रतिकरपर ॥ काव्यं ॥ गीर्वाण वर्गगतिदः शुभदो जनानां । वायव्यगो रतिकरः कुधर स्तथैव । तत्रापि पारगत मंदिरबिंब वृंदं । नित्यं नमामि वृषभादि जगत्प्रभूणां ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऽर्हं० स्वाहा ॥ १२ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ वायव्यकूणमें दूसरे रतिकरपर्वतपर ॥ काव्यं ॥ ततसदृशो रतिकरः सुख चारुभूमिः । पद्मानुराग इतरः कलकेलि सद्म । तत्रापिपारग० । नित्यं नमामि० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऽर्हं । अष्टद्रव्यं यजा० ॥ १३ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दक्षिणदिशिमें अंजनगिरि पर्वतपर ॥ काव्यं ॥ इंद्रवज्राछंद ॥ योदक्षिणस्यां दिशिभ्राजतिनित्यं । द्योतांजनाद्रीरमणीय ताद्रः । तस्योपरस्थे जिनराज चैत्ये । नौमि स्वयंभू रुषभादिजातं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं०॥१४॥

॥ ❋ ॥ पूर्वदिशि पुष्करणी दधिमुख पर्वतपर ॥ काव्यं ॥ तत्पर्वता त्प्राक दिशि राजमाना । नंदोत्तरा पुष्करणी प्रधाना । दध्याननाद्रेः तदगाधतोये । चंद्राननाद्यं प्रणमामिसद्यः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं० स्वाहा ॥ १५ ॥ ॥❋॥

॥ ❋ ॥ दक्षिणदिशिमें अंजनगिरिदाधिमुखपर्वतपर ॥ काव्यं ॥ नित्योद्योता दंजना द्दक्षिणस्यां । नंदावापी सार्वनाम तदंतः ॥ दध्यास्याद्रौ चंदनाद्यै र्भजामि॥प्राशादे श्रीवर्द्धमानादि सार्वं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऽर्हं० ॥१६ ॥

॥ ❋ ॥ पश्चिमदिशि दधिमुखपर्वतपर ॥ काव्यं॥तस्यैवाद्रेः पश्चिमायां सुनंदा । तस्यामध्ये श्रीदधिस्यान्न गेंदुः । तस्मिनूचैत्ये श्रीजिनाधीश जालं । नामंनामं तंनमामि प्रकामं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऽर्हं० स्वाहा ॥ १७ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ उत्तरदिशि वाप्यां दधिमुखे ॥ काव्यं ॥ उदीचीना दीर्घिका नंदिवर्द्ध नीसान्वर्था तन्नगा तत्रसंस्थे । जैनावासे बारिषेणादिबिंब । मत्वानाथे मुक्तिसौख्यंनितांतं॥१॥ॐ ह्रीं श्रीं॥अर्हंपरमात्म० अष्टद्रव्यं य० स्वाहा ॥१८॥

॥ ❋ ॥ इशानकूणें प्रथमरतिकरविषै चैत्य० ॥ काव्यं ॥ रतिकरोस्ति जिनालय माश्रितो । विदिशि भैरव दैवत एतयोः । तदचले रुषभादिजिनेश्वरं समनुनम्य रमामितदंतिके ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऽर्हं० स्वाहा ॥ १९ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ईशानकूणे द्वितीयरतिकरपर्वते ॥ काव्यं ॥ द्रुतविलंबितछंद ॥ तदपरोपि तथैव तदन्वितो । जिननिकेतन केतु सुमंण्डितः । तदचले रुषभादि जिनेश्वरं । समनुनम्य रमामित दंतिके ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मा० स्वाहा ॥२०॥

॥ ❋ ॥ अग्निकूणें रतिकरपर्वतें ॥ काव्यं ॥ द्रुतविलंबितछंद ॥ रतिकरो जिनराज गृहांकितो । लसतिवन्हि बिदिग् क्षितिभूषितः । तदपरस्तदगे रुषभादिकं । नमत नाथ मनाथ ॥१॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमात्म० ॥२१॥

॥ ❀ ॥ अग्निकूणेंदूजे रतिकरपर्वतें ॥ काव्यं ॥ तद परापरगो नग नायको। रतिकर स्तादिते जिनमंदिरे । नति तति प्रतिरोह तुमामकी। त्नसदनं त गुणाकरते प्रजो ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीं परमा० स्वाहा ॥ २२ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नैरुतिकूणें प्रथमरतिकरें ॥ काव्यं ॥ द्रुतविलंबितछंद ॥ विदिशि नैरुतिगे जिनपालये । रतिकरे रुषन्नादि स्वयंनुवं । सुमनसा सुमनोत्नि रितोजनात् । यजत नव्यजना अतिन्नावतः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीं ऽर्हं० ॥ २३ ॥

॥ ❀ ॥ नैरुतें दूजे रतिकरें ॥ काव्यं ॥ द्रुतविलंबितछंद ॥ तदितरः समसीम धरा धरो । रतिकरो विन्नवेश्म नित्नर्त्तियः । तदचले जिनराज जगद्गुरु सतत नौमि मुदा रुषन्नादिकं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीं परमा० स्वाहा ॥ २४॥❀॥

॥ ❀ ॥ वायव्यकूणें प्रथमरतिकरें ॥ काव्यं ॥ द्रुतविलंबितछंद ॥ अनिल देव विदिग्धरणीधरो । रतिकरो जनतोस्ति तदिद्रगे ॥ नवतुमे रुषन्नादि जगत्पतो । सतविधानमनंत मनंतशः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीं० ॥ २५ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वायव्ये दूजे रतिकरें ॥ काव्यं ॥ द्रुतविलंबितछंद ॥ रतिकरोपि तदन्यतरस्तथा । शिरसितस्य जिनायतने यथा । दधतुमे जिनपुंगवचंदना ॥ विधिवदंग नव त्वदपंकजे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीं ऽर्हं ॥ २६ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पश्चिम दिशि अंजनगिरि विषे चैत्यपूजाः ॥ काव्यं ॥ नंदीश्वरे नंदित पश्चिमायां । स्वयंप्रनः सुप्रन यांजनाद्रिः॥ तज्जैन सद्मे गतन्नीति छद्मे । नजामिन्नत्त्या वृषन्नादिवृंदं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीं ऽर्हं० ॥ २७ ॥ ॥❀॥

॥❀॥ पश्चिमदिशि अंजनगिरिसें पूर्वदिशि दधिमुखपर्वतें चैत्यगृहआगें ८ वस्तुलेईपढे ॥ काव्यं ॥ हिरणीछंद ॥ दधिमुखगिरि न्नेद्रा वाप्यां रराजतदंजना । दधिनिचैत्ये पौरस्त्याया सुरासुर सेवितः । जिनपतिगृह तस्मिन्नृप्रो जिनं रुषन्नादिकं ॥ नमनविषयी कृत्यास्वादं सुधारस जं लन्ने ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीं ऽर्हं० ॥ २८ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दक्षिणदिशि दधिमुखरेविषे चैत्यचौमुखआगें अष्टप्रकारपूजा ॥ ॥ काव्यं ॥ हिरणीछंद ॥ कलजलविशालायांवाप्यांतदेवनगांजनात । दिनकर करा घो घो पाच्यां दधीतमुखा चलः । तदचलवरे देवावासे प्रन्नोचरणांबुजे । परमशरणं प्राप्यानंनं मुदं लन्नितोस्मिते ॥१ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीं ऽर्हं० ॥२९॥

॥ ❀ ॥ पश्चिम दिशि दधिमुख चैत्यः ॥ काव्यं ॥ हिरणीछंद ॥ कमकु मुदा वाप्यांतस्मा द्विलोचयतो जनात् वरुणककुभिः श्रीदध्यास्य स्तदङ्गु परि स्थिते। जिनपवसतौ श्रीमज्जैना कृतिं विधिवदन्नृशं । प्रणाति तातिं भिनेत्वा नाथे स्वकीयसुखास्पदं ॥ १ ॥ ऊँ ह्रीँ श्रीँ ऽर्हं० ॥ ३० ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ उत्तरदिशि दधिमुखचैत्यआगे अष्टप्रकार पूजा ॥ काव्यं ॥ हिरणीछंद ॥ जलधिसदृशां पुंडरियाद्याकिणीकिलदीर्घिका। दधिमुखनगःकौवेरी या तदंतरतौंजनात्। तदुपरिगतेऽर्हत प्रासादे जिनेंद्रकदंबकं। तामित दुरितौ जातो जातु प्रणम्य प्रभोः पुरः ॥ १ ॥ ऊँ ह्रीँ श्रीँ ऽर्हं० ॥ ३१ ॥ ॥ ❀ ॥

॥❀॥उत्तरदिशि अंजनगिरिविषे अष्टप्रकार पूजा ॥ काव्यं॥ हिरणीछंद ॥ जलधिसदृशा पुंडरियाद्या किणीकिल दीर्घिका।दधिमुखनगःकौवेरीया तदंत रतौ जनात्। तदुपरिगते ऽर्हत्प्रासादे जिनेंद्र कदंबकं । तामितदुरितौ जातो जातु प्रणम्यप्रभोः पुरः ॥ १ ॥ ऊँ ह्रीँ श्रीँ ऽर्हं० ॥ ३२ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पश्चिम दिशि अंजनगिरितः दिर्घिकावापिके ईशान कूणमें प्रथम रतिकरैचैत्य ॥ काव्यं॥ दीर्घिकयो रंतराल ईशांनग रतिकर नाम । तत्र विचित्र चरित्र जिनेश्वरध्यान। तद्गृहीत साधतसद्मिनि श्रीरुषभादि राजान । मंतर्गत धृतिमत्यां वंदन सद्धान ॥ १ ॥ ऊँ ह्रीँ श्रीँ ऽर्हं० ॥ ३३ ॥

॥ ❀ ॥ पश्चिम दिशि अंजनागिरितः दीर्घिकावापीके ईशानकूणमें द्विति यरतिकरपर्वते जिनालयआगें ऽष्टप्रकारद्रव्यलेईकुभार है ॥ काव्यं ॥ तैनैव रीत्या रतिकर इतर स्तस्य समेन । शोभाति सोन्नत यशसासोयं सोश्च गुणेन। तद्गृहीत साधित सद्मनि श्रीरुषभादिराजान । मंतर्गते धृतिमत्यां वंदे ॥ १ ॥ ऊँ ह्रीँ श्रीँ ऽर्हं० स्वाहा ॥ ३३ ॥❀॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हिवे ऽग्निकूणकेविषे दोयरतिकरहै तिसमें पहिले रतिकरें॥ काव्यं॥ धन्यतम स्त्वं रतिकरगिरवर रत्नसमान । विदिशि कृशानौ मतमितानां पुण्य प्रधान । श्रीरुषभानन प्रभृति प्रभूणामूर्द्धस्थितेन । सिरासिध्दतः श्रीसिद्धायतनै त्वयिकायेन ॥ १ ॥ ऊँ ह्रीँ श्रीँ ऽर्हं० ॥ ३४ ॥❀॥ ॥❀॥

॥ ❀ ॥ अग्नि कूणे दूसरा रतिकर चैत्य आगैं ॥ काव्यं ॥ समश्रेणि स्थित विस्तृत पर्वत इतर स्त्वमेव । रतिकर रुचिर प्रभा खर जिनवर सद्म त

देव । शक्त्या त्रिकरण भक्त्या नम्यां नंदत एव । त्वामेव ददतु महोदय मेव श्री देवाधिदेव ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऽर्हं० ॥ ३५ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नैरुत्यकूर्णे प्रथम रतिकर पर्वत चैत्य आगे ८ प्रकारें पूजा ॥ काव्यं ॥ भवत्रय त्रायक शिव सुख दायक ऋषभादि देव । त्वद्विंबावलिमालित्य चैत्य विराजित एव । जातौ नैरुत विदिश जग द्रतिकर कारक ईश । रति कर नत श्रयितो स्मि त्वा महमेवमुनीश ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऽर्हं० ॥ ३६ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नैरुत्यकूर्णे २ रतिकरे पूजा ॥ काव्यं ॥ अपरे रतिकर ऊपरि न भोचर चर्चित चैत्य । चंचुसुदं चचराचर केतु मुदार मुपेत्यं । श्री ऋषभादि पदोत्पल उज्वल अकल कृपेश । चेतो मधुकर उपरम तिस्म मे मुक्तिरमेश ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऽर्हं श्री परमात्म० ॥ ३७ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ काव्य कहे ॥ समराधीश विदिशित्वदा श्रयतो रतिकारः । उदया चलाति धरातल उत्तम जिनपविहार ॥ तत्र चतुर्विध शुद्धसुधा निधि विबुध विवंद्य । श्रीऋषभादि प्रभुं प्रणमामि यशोजर नंद्य ॥१॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमात्म० ३८ ।

॥ ❀ ॥ अन्यतरे रतिकर गिरि शिषरे प्रवर प्रासाद । उद्यत चातुर्द्वार उ दार अपार अनादि । चातुर्गत भव भ्रांति निवारक अभिनव भान । श्री ऋष भादि जिनाय नमो नमो भानु समान ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऽर्हं ॥ ३९ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ उत्तरस्यां अंजन गिरि चैत्ये ॥ काव्यं ॥ चतुर शीति सहस्र योजन समुछिते सांजन गिरि । मूलतो दश सहस्र योजन विस्तृतः शिरसोपरि । एक सहस्र योजन उदीचीनो रम्य श्री रमणायकः । स्तूयते तत्र सदैवमनका सार्व श्री ऋषभादिकः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऽर्हं० ॥ ४० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ काव्यं ॥ ततोंजनतोलक्ष योजनगते विजया सुनृता । प्राच्या सुवापि सत योजन लक्षमायत विसृता । अति कांत दधिमुख गिरि स्तस्यां अंबु मध्य गतोमता। स्तदुपरि प्रभु श्री ऋषभ प्रभुत सनमामि प्रमोदतः ॥१॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमात्म० ॥ ४१ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ काव्यं ॥ परिपूर्ण पथो वैजयंति दाक्षिणात्या तदगिरे । विपुल गगनोत्कर्ष दधिमुख पर्वत स्तदभ्यंतरे । तस्य शिषरे धर्मनिकरे विशदतर जिनमंदिरे । गतऊमेतोर्हंजिन नमन्न पि पुण्यपुंजस दीदिरे ॥ १ ॥ ४२ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ काव्यं ॥ जलधि जयनि प्रतिचीनाजयंती वापीततः । तन्मध्य दधिमुख भूभृदुच्चै त स्तथै वात्र समासतः॥जिनराज भुवनं शर्म सदनं कर्म शत्रु निकंदनं ऋषभादिपत्कज पुनीतंमे भवतुभूयो वंदनं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ ऽर्हं० ॥ ४३ ।

॥ ❀ ॥ काव्यं ॥ अपराजितां भूराजितांजन पर्वता दुत्तरभूवि । निर्मत्स्यकलकल्लोलकालिता द्योतयंती भुवोभुवि । नगमुख्य दधिमुख भदगमध्ये तदुपरि चैत्यालयै । ऋषभादि बोधिदमयिकरोवि बोधिलाभ गुणाशये ॥ १ । ॐ ह्रीँ श्रीँ ऽर्हं० ॥ ४४ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ।

॥ ❀ ॥ ( काव्यं ) रमणीयकांजन रसाधरतो रतिकरो धरणी धव । ईशनभूमौ तस्यमौलौ विश्वपति गृहपुंगवः । तत्र तादृश तदाकारं ऋषभप्रभृति कृपानिधिः । संस्मर्यचेतासि नमनलाभं लभे देव दयानिधिः ॥ १ । ॐ ह्रीँ श्रीँ ऽर्हं० ॥ ४५ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ।

॥ ❀ ॥ ( काव्यं ) तत्साम्य द्वितीयो चजा द्वितीये रतिकर द्युती मर्तं सदा । सकल मंगलमाल दातारि दीनबंधु गृहे मुदा।ऋषभादि दीनानाथ सेवं प्रतिदिनत्वा प्रतिततः । तत्र भवभय दुःखनिकरा न्मुच्यतां मां प्रति यतः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ ऽर्हं० ॥ ४६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ काव्यं॥ वहुल विदिशि विभर्त्तिसोयं रतिंविभुवर गृहं । विश्वभूषणमखिलदूषण दुष्टदुर्मति निर्ग्रहं । सद्भाव भावित भव्यभाविजन व्यनीत खौश्रमः । ऋषभादि पुरुषोत्तम पुनीतं जयंतु योहि नगोत्तमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ ऽर्हं० ॥ ४७ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ काव्यं ॥ अपर भूधर रूप सुंदर रतिकरे नत सुरनरे । विश्वेशविशद विहारधारे रत्नमय आनंदकरे । नाथ करुणाकर कृपालो श्रीश ऋषभादि प्रभो । त्वच्चरणसेवा सरण करणं दिशतु मांप्रतिहे विभो ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ ऽर्हं० ॥ ४८ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ काव्यं ॥ हे भविजन नैऋति विदिशि । नगेंदु रतिकरोपरि जिनालये । भविजन ऋषभप्रभृति जिन । चंद्रमभिनौमि विशदाशये । ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ ऽर्हं० ॥ ४९ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥❀॥

॥ ❀ ॥ काव्यं ॥ हेरतिकर धन्यतमोऽसि । तदन्य आप्त निकेतन शोभित

हेतारक चेनो रमतु त्वदंत । उत्तम मे विभवोन्वितः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऽर्हं०॥५०॥

॥ काव्यं ॥ हेभविजन वायुविदिशि रतिकार । सानुनि जिन सद्मानि ततः हेजीवन श्रीऋषभादि स्वरूप । मनुभव तपस्यतु यतः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं० ॥ ५१ ॥

॥ ❀ ॥ काव्यं ॥ हेभविजन तत्सम रतिकरनाम । तत्रैवास्ति गुणोत्करः ॥ हेजिनपाति चैत्यालय ऋषभादिदेव । ममैधी श्री सुखकरः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऽर्हं० ॥ ५२ ॥ ❀ ॥ ॥❀॥ ॥❀॥

॥ कलश ॥ युगवराः श्रीकरा दुःखकश्मलहरा भूरिसूरीश्वराःसुचितराए । धर्मरुचिकारका भवसमुद्रतारका धीर्य गांभीर्य गुणसागराए ॥ दीपनंदीश्वरे, पंचाभ्रिजिनगृहे, ऋषभप्रमुखाः सतां बंधुराए । जैनचंद्राः सदा, त्रिभुवने सुकृतिनो, जयतु मद मान वन सिंधुराए ॥ ५३ ॥ इति श्रीनंदीश्वर मंगल५२ चैत्यपूजनविधिः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥❀॥

## ॥ ❀ ॥ अथ नंदीश्वरद्वीपतपस्याविधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम दीवालीसें तपस्या अंगीकारकरै ॥ प्रतिक्रमणादि पूजा देववंदन पर्यंत सर्वकृत्यकरके गुणनो करै ॥ यथा ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीऋषभादि वर्द्धमानांताशास्वता जिन सर्वज्ञायनमः ॥ इसको २००० गुणनोकरै । छठतपकरै । पीछे बारे मास अमावसको अमावस १२ उपवास करे । फेर दूसरी दीवाली आवै जब तेलोकरै । नंदीश्वर ५२ जिनालयकी थापना करके जूदा २ काव्य पूजापढके ॥ जल चंदनादि अष्टप्रकारसें पूजाकरे । सब फल धजा दीपक बावन चैत्ये चढावै ॥ इसीतरै उद्यापन साहमी वत्सलकरै ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ नंदीश्वर दीपकी आरती लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जीया चतुर सुजाण । नवपदके गुण गायरे ॥ ( ए चाल ) ॥❀॥ जीया अष्टमद्वीप । मंगल आरती गायरे । परमानंद पद एहीज जपतां । अजरामर सुख पायरे ॥ जी० ॥ १ ॥ ऋषभानन चंद्रानन वारिषेण । व्रधमान पद भायरे ॥ जी० ॥ एच्यारे जिन सास्वत सोहै । समरण मंगल थायरे ॥ जी० ॥ २ ॥ अष्टप्रकारी पूज मनोहर । मनशुद्ध कर मन भायरे ॥ जी० ॥ जन्मजरा दुःख दूरकरणनै । कीजै एह उपायरे ॥ जी० ॥ ३ ॥ पंच

प्रदीपसें आरती कीजे । भावे आवर्त्त कहायरे ॥ जी० ॥ जैन आरती पढे पढावे । तोथायै सुररायरे ॥ जी० ॥ ४ ॥ मंगलकारी विघननिवारी । सुख कारी लय लायरे ॥ जी० ॥ पंचमगति पांमें एहनां मै । जेगावै चितलायरे जी० ॥ ५ ॥ एहआरती भविजनमोहे । नांमें नव निध थायरे ॥ जी० ॥ सुखकारी ए सकल मनोहर । कर्पूरचन्द्र गुणगायरे ॥ जी० ॥ ६ ॥ ❋ ॥

इति नंदीश्वरजीकी आरती संपूर्णम् ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथैक विंशतिविध जिनेंद्रपूजा लिख्यते ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दोधक ॥ मंगल हरिचंदन रुचिर । नंदन बिपिन उदार । वामानंदन पद पदम । वंदन करि जयकार ॥ १ ॥ प्रवचन मैं प्रभुनी कही ॥ इकवीस परम प्रकार । पूजा हित सुख क्षेम शिव । पद करणी मनुहार ॥ २ ॥ राग ॥ वासु पूज्यजिन अंतरजामी ॥ एचाल ॥ ए इकवीस विध पूजनकरीयै । जिननो भवभय हरियैरे । स्नपन । विलेपन २ भूषण ३ निरुपम । पुष्प ४ वास ५ गंधरियैरे ॥ ए० १ ॥ सुरभिधूप ६ फल ७ दीपक ८ तंदुल ९ । वरनैवेद्य । १० मधु करियैरे । पत्र ११ पुंगीफल १२ निरमल जलभृत । कलश १३ बिंपुर धरियैरे ॥ ए० २॥ वसन युगल १४ सितछत्र १५ चमर १६ धुनि । मधुरतूनी १७ करियैरे गीत १८ नटन १९ जिनवर गुणनी स्तुति २० ।कोशवृद्धि २१ शुभ धरियैरे । ए० ३ ॥ इति इकवीस विधि पूजानाम पदम् ॥ १ ॥

( दूहा ) प्रथम पूज ए जाणियै । न्हवण करै जिन अंग । इण अरचनतें भव्नौ । होइ कुमति मलभंग ॥ १ ॥ कलश सुंगध अवोटजलसुं भरी लेकरि खम रहै ॥ रागदेशाख ॥ पूर्वसुखसावनं एदेशी ॥ अन्यदा कनकगिरि राजशिखरै । जिन निलय तत्र जिनचंद्रवसिया । विविध वरभक्ति भरकरणकूं सुरगणा । प्रभुचरण पद्मनतिकरण रसिया ॥ अ० १ ॥ आवि चउसठि जिनभक्ति धरि रिगणा । मिलिकरी सुर असुर कोडि कोडी । तीर्थपति ध्यावता विमलगुण गवता । प्रभूदरश पावता पाणि जोडी ॥ अ० २ ॥ तीर्थ वरदाम परभास मागधपदम । क्षीरसागर प्रमुख सलिल भरिया । सुरवरा कनक मणि रयण रजतामय । कलश करकमल ऊपरि धरिया अ० ॥ ३ ॥ कलश मुख पतितघन चंद्रकर निर्मलतर । सलिल भरुधारसें सहुसुरेंद्रा । सुर गिरैं सकल जिनराजकौ न्हव

..रामफल किय निजजनम विगततंद्रा ॥ अ० ४ ॥ इणपरें सुभमती शुद्ध श्रावक सदा। विमलजलसें करै न्हवण जिनकौ। तेह शिवचंद्र कर विमलपद्कुं लहे॥ हरिय संसरण संसारवनकौ ॥ अन्य० ५ ॥ काव्यं ॥घनतरांतर ताप विनाशनं। सकल मंगल शाल घनाघनं । जिनगण प्रमुदा जल धारया हितकृते स्नपयामि रमारया ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्री अर्हं अनंतानंत ज्ञानशक्तिभ्यः सकल सुरवेंद्र वृंद विहित भक्तिभ्यो जन्मजरामरण निवारणकारणेभ्यः कुमनेमन तरुणगण कानन समूलोन्मूलना वारणेभ्यो एहिलौकिक श्रीऋषभादि श्रीवर्द्धमान पर्य्यंतेभ्य श्चतुर्विंशतिजिनेंद्रेभ्यो जलंयजामहे स्वाहा ॥ ॥ ❀ ॥ इति प्रथम जल पूजा ॥ १ ॥❀॥ ॥❀॥ ॥❀॥

## ॥ ❀ ॥ अथ चंदनपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा॥द्वितियपूज चंदन सरस। कुंकुम अरु घनसार। घसिकै करियै जिनतणें। तिलक विलेपन सार ॥ १ ॥ अंगणवार्क एलची रेवाला एचालमें। हरिचंदन वर मृगमदारे वाल्हा। कुंकुम वलि घनसाररे। म्हांरौमन जिनचरणे हो लगगयो। वसिकरि कनक कचौलीयारे वाल्हा। भरिकर धरि गंधसाररे ॥ म्हां० १ ॥ मिलिकरि सकल सुरेसरारे वाल्हा। जिन अरचन चितधाररे ॥ म्हां० ॥ करइ तिलक नव अंगमेंरे वाल्हा। जिनके विलेपन साररे ॥म्हां०२॥ जिन नवतनु तिलकार्चनेरे वाल्हा । उपजितफल असमानरे ॥ म्हां० ॥ सुगतिरमणि भालस्थलेरे वाल्हा। भविहोय तिलक समानरे ॥ म्हां०॥ ३ ॥ जेभवियण इणपरिकरेंरे वाल्हा। चंदन पूजरसालरे ॥ म्हां० ॥ तेशिवचंद्र विमललहे रवाला। निरुपम गुण मणि मालरे ॥ म्हां० ॥ ४ ॥ काव्यं ॥ विमल भाव भरान्वित यार्चया । सुरभिचंदन जातसपर्यया । जिनवरंद्रसुभुवनमर्चया। निशमहं सम पूजन वर्यया ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अ० श्रीऋषभादि चतुर्विंशतिजिनेंद्रेभ्योश्चंदनं यजामहेस्वाहा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ इति द्वितीय चंदनपूजा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ आभूषणपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तीजीपूजामें आभूषण अथवा रोकनाणोलेखणोरहे ॥ दूहा ॥ तृतीयपूज जिनराजनी । करहु भविक सुखदाय । मंडन मंडित

जिनतनू। करियै भक्ति मिलाय ॥ १ ॥ राग ॥ पासजिनेसर अरजसुणीजे ए चाल ॥ भूषणपूज तीसरी हरिगण। विरचै हित सुख कारी रे। भू. जिनअंगें निरुपम। अनुभवरस जहै भारीरे ॥ भू० १ ॥ विविधरयण अतिसुंदर।मौलिमुकुट अतिराजैरे। अरध चंद्र सम प्रभु भालस्थल।विमल तिलक द्युतिछाजैरे ॥ भू० २ ॥ पूरणचंद्र तरणि मंडल द्युति। कुंडल युगल सोहैरे। श्रवणे अंगद बाहुयुगलमें। त्रिभुवन जन मन मोहैरे ॥भू०३॥ थाल विसाल उरस्थल। हारि तार मणिहारारे। इणविधिपूजी शाश्वत जिनकुं। सफल गिणें अवतारारे ॥ भू० ४ ॥ इणपरि सुधसमकितधर नरवर॥ पूजे जिन जयकारूरे। ते शिवचंद्र विमल जिन पतिपद। संपदलहै अतिवारूरे ॥ भू० ५ ॥ काव्यं ॥ अतिमनोहरि निर्ग्गतदूषणै। विविध दीप्ततरा भूषणैः। जिनवरौघ महं प्रयजामिस। त्तममनंतमनुत्तर सद्गुणं ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अ० श्रीऋषभादि चतुर्विंशतिजिनेंद्रेभ्य भूषणंयजामहे स्वाहा ॥ ❀ ॥ इति तृतीय आभूषण पूजा ॥ ३ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ पुष्पपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चौथीपूजामेंपुष्पमाला बूटाफूलजेईळभोरहै ॥ दूहा ॥ जे भवियण भगवंतनी। पूज चतुर्थी सार। रचइ सुरभि कुसुमैं करी। लहैं सिंधु भवपार ॥ १ ॥ रागभीममल्हार। गुंडमिश्रित ॥ मेघबरसैभरी ॥ एदेशी॥ सुरभितर कुसुम पूजन भणी उमह्या ॥ शाश्वताजिनतणी सकलइंद्रा। कुंद मचकुंद अरविंद मंदारजुहि। विभलसिरि बकुल दमणक वितंद्रा॥सु० ॥ १ ॥ तिलक सुम मोगरा मालती मल्लिका। नाग पुन्नाग नवमालिकाली। केतकी जाल गुल्लाल शरवरणयुत। जलज वलि थलज गुणशालि काली ॥ सु० ॥ २ ॥ घनघना घन घटाकार बादल विरचि। पुष्पके कुसुम जलधार वरसैं। वेग मिथ्यामतीदेषके अवगिणें। समकिती बहुलनर भमरहरसै ॥ सु० ॥ ३ ॥ इणपरैं जिनतणी कुसुम पूजन करी। जिन चरणपद्म हरि हुइ भमरिया। इणविधैं जेहजन कुसुम अरचन करै तेह अति गहिर भवसिंधु तरिया ॥ सु० ॥ ४ ॥ का० ॥ त्रिभुवनेश्वरता कमलालयं। सकलभाव निभाल

ानचयं विमलाकृत चिन्मयं । सुकुसुमैः प्रमहासि सदोदयं ॥५॥
कुसुमंयजामहेस्वाहा ॥ इति कुसुमपूजा ॥ ६ ॥ ॥ ❁ ॥

## । ❁ ॥ अथ पंचमी वासक्षेप पूजा ॥ ❁ ॥

्हा ॥ ❁ ॥ वास पूजए पंचमी । विरचै सुरवर सार । मुगतिवास
उरधारि भावअपार ॥ १ ॥ एचूरण भरपूर । दुरितकरै चकचूर ।
न करतार । दुत्तर तरइ संसार ॥ २ ॥ राग वेलाउल । गंधवटी
र ॥ बावनाचंदन विपिननंदन जनितसुभघनसारये । वलि
कुंकुम मृगमदागंधसारये । कंकोल अंबर द्रव्यघसिकरि
रिभलौ । जिनराज अंग उपांग पूजो लहो पदजगसिर
दूहा ॥ भावधरी भरपूर । सुरवर चढते नूर । अरचै श्रीजिनपद
रष अपार ॥ ४ ॥ ढालतेहिज ॥ वर वासपूजन भगति करतां
ाश महमहे । इण भगतिकारक विमलजससें सकलजग सुरभित
वासभगतै भगत भयहर अखिलमंगल नितलहै । शिवचंद्र विमल
ाविक कुगति तति तरुवन दहै ॥ ५ ॥ काव्यं ॥ वरतराउत वासमत

स्तरै ॥ न्ना० ॥ तीनज्ञुवनकुं सुरन्नित करियै । तातैं धूपपूज उर धरियै ॥ न्ना० ॥ ४ ॥ इम शिवचंद्र कहै जोन्नविका । इण पूजनसैं अंतकर न्नवका ॥ न्ना० ॥ सुरपति धूपपूज करिसारा । लहै जिनदरशसें हरष अपारा ॥ न्ना० ५ ॥ काव्यम् ॥ सुरन्निधूप सुपूजनतः सदा । निज मनोमत मद्रकरं मुदा । सकल विघ्नहरं वरसिद्धये । जिनवरेंद्र कदंबक मंचये॥६ ॐ ह्रीं श्रीं०धूपंयजामहे स्वाहा॥ इति षष्ठी धूपपूजा ॥ ६ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ फलपूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ( दूहा ) करण तीन इककारि न्नवी । करियै विगत विकार फलपूजा ए सातमी । वांछितफलदातार ॥ रागकामोद ॥ चंपक केतकिमालती ॥ एचाल ॥ नवरंगी नारंगीया हांरेनारंगीयाए अमल आम्रफल सार।सुखकरणा करणा न्नला।वरणया कविमनुहार ॥ १ ॥ जंबू नीबू करमदा हांरेअइयो क० ए । कर्कटि दाडिमसार।कदलीफलखारक वली फणस विदाम विचार ॥२ ॥ श्रीफल अरु जंबेरीयाए । निमजा पिसता दाष । इत्यादिक गतदोष वर । सुरन्नि स्वादुफलन्नाष ॥ ३ ॥ एह विविध फलसैं न्नरचो हांरे० फ० ए। कंचनथाल विशाल । जगनायक आगलिधरे । सुरपति न्नगति रसाल ॥ ४ ॥ इणपरि न्नविजन सुधमती हांरे० ए । फलपूजा करतार सुरसुख फल लहि तेहुवइ । शिववनिता न्नरतार ॥ ५ ॥ काव्यं ॥ अति सुगंधियुतै र्गतिदूषणै। र्विविधसुंदरशाल विन्नूषणैः । प्रवरकांचनपात्र गतैः फलै । सुविमलैः प्रयजे जिनमंम्फलं ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अ० फलंयजामहेस्वाहा ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ इति सप्तमी फलपूजा ॥ ७ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ दीपपूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥दूहा॥ जगगुरु पूजा अष्टमी।सुरपति न्नक्ति मिलाय । जिनमंदिर दीपक करै।हरै कुमति समुदाय॥१॥राग सारंग॥हांहो रे देवा बावना चंदन घस एचाल ॥ हांहोरेवाल्हा ॥ इंद्र चंद्र नागेंद्र सुरा । करै दीपक न्नक्ति रसालए ॥ हां० ॥कनक रयण मणि रजतना।वर पात्र करै घृतगाल ए ॥ हां० ॥ अनल ज्योतियुत वर्त्तिका।तसु माझि धारि विमलप्रकासए॥हां०॥ करइ मंदिर मणि मालिका। नासै सहु तिमिर विलासए(हां०)२॥मंगलदीपककर धरी मं

गल मंदिर सुरराय ए(हां०)करि जिन आरति पुर धरै । प्रभु मुख लषि चित
नउमायए ॥ हां०३॥ दीप पूज करतारनो । डुरितांतर तिमिर विला
यए ( हां० ) लोकालोक प्रगट करू । केवल सूरज उलसायए ( हां० )४ ॥
शिवचंद्र जिन पूजमें । इणपरि श्रावक मनभायए ॥ हां० ॥ तेह होइ दीप
क ममो।त्रिभुवन मंदिर दीपायए ॥ ५ ॥ काव्यं ॥ जलशनाभि कजासन
जालया । कुगवेश्वर तामलमालया । विमल मंगल दीपकमालया
क्रमलया कलया जिनमर्चये ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं० दीपं यजामहे स्वाहा ॥
इत्यष्टमी दीपपूजा ॥ ९ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथाक्षत पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा )॥ एनवमी पूजा सुमति । करियै धरि सुभभाव। विमल
चारु तंडुल तणी । हितकरणी एदाव ॥१॥ राग आनंद कल्याण ॥ पूजावणी
तरसमें ॥ एचाल ॥ प्रभु पूजा प्रवचने वरणी ॥ प्र० ॥ इंद्र चंद्र नागेंद्र सुरा
सुर । समकित धर नर करणी ॥ प्र० ॥ अति अपार संसार जलधि जल ॥ नि
पतित तारण तरणी ॥ प्र० ॥ १ ॥ हित सुख क्षेम परमपद परमा । नंद वृंद
निधि धरणी ॥ प्र० ॥ ग्याता अंगेद्रुपदि श्राविका ॥ दृढ समकित गुण
धरणी ॥ प्र० ॥ २ ॥ जिन महाराज तणी किय अरचा । सतरभेद श्रुतवरणी
॥ प्र० ॥ जेह अभव्य मंदमति कुमती । भव अनंत वन भ्रमणी ॥ प्र० ३ ॥
पूजउथापे परतिख प्रभुनी । चितधरी कुमति कुरमणी ॥ प्र० ॥ वर शिवचंद्र
किरणगण उज्जल । अक्षत तंडुल हरणी ॥ प्र० ॥ ४ ॥ सेवकरें सुरराय
समकिती । इणविध श्रावक करणी ॥ प्र० ॥ इह विपरीत मंदमति भाषै ।
पूजा शिवपुर सरणी ॥ प्र० ॥ ५ ॥ काव्यं ॥ अशकलोज्वल तंडुल मंगलै ।
रजत शालिमयैः कृतमंगलैः । सकल विश्वपति सुरसेवितं । जिन वरेंद्र
महं प्रयजेन्वहं ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हंप० अ० अक्षतंयजामहेस्वाहा इति
नवमी अक्षतपूजा ॥ ९ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ नैवेद्यपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ ❀ ॥ पूज एह नैवेद्यनी । दशमी अतिहउदार । भविक
रिपे हरिपे विघन । दुर्जय विषय विकार ॥ १ ॥ रागनमगिरी ॥ गात्रलूहे

१३

जिन ॥ ए चाल ॥ लपनश्री वर घृतवरारे वाल्हा ॥ सिंहकेसरीया सुखकरा । सुखकरा हां रेवाल्हा सुखकरा ॥ दालि शालि घृत युतिधरा ॥ ल० ॥ १ ॥ दाली यामोदक सेवियारेवाल्हा ॥ मोतीचूर जलेबीया । मनहरा हां रेवाल्हा म०द्राख सरकरा दुःखहरा ॥ २ ॥ इत्यादिक निरवद्यनैं रे वाल्हा । थालभरी नैवेद्यनै। ढोईयै हां रेवाल्हा ढो०॥प्रभुपुर पातक धोईयै ।ल० ॥३॥ एहपूज सुखदायिनी रेवाल्हा ॥ दुरगति दुःख भरजायनी।हरिकरै हां० हरि०॥ तिम वलि श्रावक चित्त धरै ॥ ल० ४ ॥ काव्यं ॥ नैवेद्यपूजार्चित मिंद्रवंद्यं ॥ युतं समग्रा तिशयै रनिंद्यं । जित व्रजंवासवतांभगद्या । नैवेद्यभूपं प्रमुदाभिवंदे ॥५॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं० अनंता नंतज्ञानशक्तिभ्यः नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति दशमी नैवेद्यपूजा ॥ १० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ।

## ॥ ❀ ॥ अथ पत्रपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ उत्तमवृक्षकाअखंमसुगंध सुवर्णपत्रलेकेंखभारहे ॥ ( दूहा ) पत्र पूज इग्यारमी । रिदय रमें सुरराय । करणदमीं करियै मुदा ॥ दरशन सुख मिलाय ॥ १ ॥ रागभैरवी ॥ पंचवरणी अंगीर० ॥ एचाल ॥ पूजकरणी प्रभु जीनी कुशलकारी ॥ पू० ॥ नाग पुन्नाग मंदारसु मरवो कुंद अरविंद सुचुकुंद हारी ॥ अंब कदंब अशोक मल्लिका जाइजूही शतपत्रिवारी ॥ पू० ॥ १ ॥ भुज गवल्लि परमुख सुरभितवर वर्णफलदल लेईसारी ॥ कनकपात्र धरि जिनबिंब आगलि ॥ ढौवै परमभक्तिमनधारी ॥ पू० २ ॥ एह भगतिकर सहु सुर नायक ॥ दायक संपद फल भारी । इणपरसुध समकित धर भविजन ॥ पत्र पूज करणी सारी ॥ पू० ३ ॥ पद शिवचंद्र जिनेंद्रनौ अरचन । करतांहोय सरण कारी । कुगति पतित जग जीवकुं उधरत । जिम सागर गति तरिवारी । पू० ४ ॥ काव्यं ॥ सुरभि पत्र सदर्चन पूजितं ॥ परमचित्रकरातिशयैर्युतं । सम सुरा सुर वासव वंदितं । जिनगणं मदनारिमहंयजे ५ ॐ ह्रीँ० पत्रंयजमहेस्वाहा । इति इग्यारमी पत्रपूजा ॥ ११ ॥ ❀॥ ॥ ❀ ।

## ॥ ❀ ॥ अथ पूंगीफलपूजा ॥ ❀ ॥

( दूहा ) अति सुंदर तर पुंगफल । जिनवर चरण चढाय । पूज बारमी जानीयै । करियै भवि मनभाय ॥ १ ॥ श्रीचंद्राप्रभु जिनवर साहि० एचाल

अर्चीजे जिनचंद्र चरणकज भमरहोय भविसारा ॥ में वारी जाउं ॥ भ० ॥ जेंम कीट फीट हुय भमरी । ऐसाध्यानउपगारा ॥ अ० १ ॥ इह अखंड सुभ सरस पूंगफल । करलेई अमृत आहारा ॥ में० ॥ क० ॥ अ० ॥ भगति युगति धरि जिनवर आगलि । ढोवै हरष अपारा ॥ में०ढो० अ० २ ॥ इम सुरनायकनी परि जेभवि। निरखी जिन दीदारा ॥ में० ॥ सुंदर करियै जिनपद पूजन । तजि जंजाल अपारा ॥ में० ३ ॥ पूंगीफल पूजाफल सारा। चितधरि भवि मनुहारा ॥ में० ॥ पद शिवचंद्र लहो अवतारा । इम कहै प्रव चनगारा ॥ में० ॥ इ० अ० ४ ॥ काव्यं ॥ सकल विश्वजनौघ वशंकरं । चरण पद्मनता खिल शंकरं । दिनकरं हरणोघ तमोर्च्चिषां । जिनवरं वर पूंगफलैर्यजे ॥५॥ ॐ ह्रीं० पूंगीफलं यजामहे स्वाहा ॥ इति बारमी पूंगीफल पूंजा॥१२॥

## ॥ ❀ ॥ अथ कलश पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) कलश पूज एतेरमी । सहु मनगमी सुहाय । एह पूजसें भविकनो । पातिक दूर पुलाय ॥ १ ॥ राग ॥ दादा कुशल सुरिंद तुमद० ॥ ॥ एचाल ॥ वारी जय जिनराज जय २ सकल देव सिरताज ॥ वा० ॥ जय२ त्रिभुवनजन महाराज । सोहै प्रभुपुर वार समाज ॥ वा० ॥ तुम प्रभु जगमें दीनदयाल ॥ तुम प्रभु शरणागत प्रतिपाल ॥ वा० १ ॥ कलशपूज प्रभुनी अ तिसार । करीयै लहीये भवजल पार ॥ वा० ॥ गंगा मागध वलि वरदाम । तीरथ जलभरीय। सुखधाम ॥ वा० २ ॥ रयण कनक मणिना अवदात । सुषमा मंदिर कलश सुजात ॥ वा० ॥ अखिल पुरंदर कर परिधार । प्रभु पुर धरियै हरष अपार ॥ वा० ॥ ३ ॥ जेंमें कलश पूजसें इंद । पूजे जगनायक जिनचंद ॥ वा० ॥ तेंसें श्रावक समकिति वृंद । जिनपति पूजे परमानंद ॥ वा० ४ ॥ कहै शिवचंद्र हृदय सुविशाल । प्रभुगुण समरण दीपक माल ॥ वा० ॥ धरि हरि पापतिमिर गत पार । भगति करो भय निकर विदार । ॥ वा० ५ ॥ काव्यं ॥ कलशपुंज मनोरम पूजितं । जिनवरेंद्र नतिं धृनम स्मतिं । हृदि सन्निजनैः इलनस्थितं । प्रतिदिनं प्रयजेर्विजितस्पृहां ॥६॥ ॐ ह्रीं० कलशं यजामहे स्वाहा ॥ इति कलश पूजा ॥ १३ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ वस्त्र पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दूहा ॥ वसन युगल पूजा हिवै । चवदमि मन उल्लसाय । करियै श्री जिनराजनी ॥ सकल जीउ सुखदाय ॥ १ ॥ राग वेलाउल । चित सेवा प्रभु चरण की क० ॥ एचाल ॥ देववसन युग अतिभलो । पल्लव सुकुमाल चंद्र किरण गण ऊजलो । अदभुत ज्योति विशाल ॥दे० ॥ अखिल विबुध वर ऊमह्या ॥ चितधरि भगति अपार । बसन युगल मंफ्तिकरै ॥ जिनवर बिंब उदार ॥ दे० ॥ २ ॥ एसमकितधर हरितणी । करणी सुखकार । इणपरिदेस विरति करै । कुमति अनल जलधार ॥ दे० ॥ ३ ॥ यदि शिव चंद्र पद कम लनी । सुख मधुर सनी आस । तद भवियण प्रतिदिन करौ । एपूजन शिव वास ॥ दे० ४ ॥ काव्यं ॥ वसन युग्म सुमंफ्ति भूघनं । परमशांति सुधारस सद्घनं । जिनमिनंच महामिव सूचयै । वसन युग्म चयैर्न्नितरांमुदा ॥ ५ ॥ उँ ह्रीं० वस्त्र युग्मं यजामहेस्वाहा ॥ इति चवदमी दिव्य वसन पूजा ॥ १४ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ छत्र पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दूहा ॥ पूजछत्रनी पनरमी । दुरित तमी दिनकार । ए पूजन करता धरै । तीन छत्र सिरसार ॥ १ ॥ म्हां रै भलैरे ऊगो दिहाडो आजनोरे । एचाल ॥ जिनराज पूज जयकारिणी रे । सित चंद्र मंम्ल छत्रधारिणीरे ॥ जि०॥दुरितांतर ताप निवारिणी रे॥अति गहिर सिंधु भव तारिणी रे जि० ॥१॥ सुमतीजन हर्ष बधारणीरे ॥ कुमती जन हरष विदारिणीरे ॥ जि० ॥ सहु जगजीउ जन मन हारिणीरे ॥ कुमतीनी कुमति सुधारिणी रे ॥ जि० ॥ २ ॥ यातो त्रिभुवन यश विसतारिणीरे ॥ काल कुशल व्रतति आसारिणीरे॥जि०॥ सिरसोहै तसु मनुहारिणी रे । करै छत्र पूज शिवचारिणीरे ॥ जि० ३ ॥ हरि जिम भवि सुखचारिणीरे ॥ भवसायर पार उतारिणी रे ॥ जि० ॥ नरकादि कुगति दुख मारिणीरे ॥ शिवचंद्र किरण अनुकारिणी रे ॥ जि० ॥ ४ ॥ काव्यं सकल लोक शिवंकरताभरं ॥ कुमति घूक मत क्षिति भास्करं । सुविमलातप वारण पूजया । ह्यलमलंकृत माप्त महंयजे ॥ ५ ॥ उँ ह्रीं० छत्रं यजामहे स्वाहा ॥ इति छत्र पूजा ॥ १५ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ चामर पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ ❀ ॥ चमरपूज ए सोलमी । करियै भक्ति समाज । चमरयुगल करकमलधरि । पूजीजै जिनराज ॥ १ ॥ रागकेदारोगौडी ॥ कुंदकिरण शशि ऊजलोजी देवा ॥ ए चाल ॥ धवलरयण मणि जातनारे ॥ वाल्हा ॥ वाला अति सुकुमालारे । चंद्रतरणि किरणोज्वलारे ॥ वाल्हा ॥ विविध रयण दंडजालारे ॥ १ ॥ प्रतिजिनदोयपासैखभारे वा० । सकल अमर प्रतिपालारे । ऊपरें जिन महाराजनें रें ॥ वा० ॥ वींजै चमरविसालारे ॥ २ ॥ चामरयुग हरि वींजतारे ॥ वा० ॥ गत चामरता लहिस्यैरे । अमर अजर शिवपद लहीरे ॥ वा० ॥ सफल अमरता वहिस्यैरे ॥ ३ ॥ चमर पूजकरि सुखरारे ॥ वा० ॥ अनुभव अमित चाखैरे । इणपरिश्रावकजनकरैरे ॥ वाल्हा ॥ सुमतिवंत श्रुतभापेरे ॥ ४ ॥ काव्यं ॥ विशदचामर पूजन भूषितं ॥ विगतमार विकार मदूषितं । जिनगुणं विमलाखिल सद्गुणं । भयहरंचदधे हृदयांबुजे ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अ० श्चामरयुगंयजामहेस्वाहा ॥ इति चामरपूजा ॥ १६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ वाजित्रपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ ❀ ॥ पूज सतरमी मनरमी । करौभविक चितलाय । मधुरतूर धुनि कीजीयें । पूजनमें उलसाय ॥ १ ॥ रागकाफी ॥ अष्टापदगिरि यात्रकरणकुं ॥ ए चाल ॥ द्रागिडिदि द्रागिडिदिकि धपमपधोंधों । मुरज मधुरस्वर वाजै । भो त्रिभुवन महाराजभजध्वं ॥ इमसुरदुंदुभिगाजे । मनसु धभावें होलाल ॥ श्री जिनवंदन करीयें । भावे पूजी हो लाल ॥ जिनपद कमला वरीयें ॥ ताल कंसाल भेरि शंख झल्लरि । निज निज धुनिसें गाजे ॥ झणण २ वलि रणण २ कर । ताल माल करवाजे ॥ म० ॥ २ ॥ वेणुवीणा दिक सुर संबंधी । सुर वाजित्र वजाया ॥ भूरि तूर रव मिलित मधुरस्वर । सुरांगी गुणगाया ॥ म० ॥ ३ ॥ इणविध श्रावक पूजरचावे । विविध वाजित्र वजावे । बहुविध भवबन भ्रमण नजीनें । पद शिवचंद्र सुपावे ॥ म० ॥ ४ ॥ काव्यं ॥ विबुध वादित तूररवाश्रितं । प्रवरपूजन मंचित मत्पदः ।

सुरगणैः सुरराज समुन्वितै । जिनगणस्य मुदा विदधेसदा ॥ ५ ॥ इति सतरमीवादित्रपूजा ॥ १७ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ गीत पूजा ॥ ❋ ॥

॥❋॥ दूहा ॥ गीतपूज अष्ठारमी । चित्तरमी सुखकार । गीतगान जिन आगलै ॥ करहु भक्ति धरिसार ॥ राग वसंत ॥ व्रज मंम्झल देश दिखावो रसीया ॥ एचाल ॥ बलिहारी तेरी नाथ सूरिति परीया ब० ॥ जानुं बलिहारी बारह जारी ॥ एसूरति गुणमणि दरीया ॥ ब० ॥ १ ॥ जेसूरति नलिनी गुणमणि सम ॥ पानकरणि हुय मधुकरीया ॥ ब० ॥ ते भवसागर पार उतरीया ॥ चिदानंद घनपद वरिया ।ब०॥२॥ इंद्रादिक वर सकल सुरासुर॥ एजिन चरण शरण धरिया ॥ ब० ॥ इंद्राणी परिकर परिवरीया ॥ गीतगान सुंदर करीया ॥ ब० ॥ ३ ॥ जलतरंग शिवचंद्र बिमलयश । सुरभिगंध जग विसतरीया ॥ ब० ॥ एजिनगीत पूज करि हरिगण । इण विधि भविकर गुण भरीया ॥ ब०४ ॥ काव्यं ॥ मधुरगीत सुपूजन पूजितं । प्रबल मोहनरेन्द्र बलाजितं॥ परमशांति सुधारस सागरं । जिनवरं प्रणमामि मुदाकरं ॥ ५ ॥ इति अष्ठारमी गीतपूजा ॥ १८ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ नाटक पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दूहा ॥ भवअटवी भटकनतणी । विघटनता प्रकटाय । नटन पूज उगुणीसमी । करतां संकट मिटाय ॥१॥ आर्यावृत्ते ततःवीणाप्रभृतिकं । तालप्रभृतिघनं । वंशादिकंतु सुषिर । मानद्धं मुरजादिकं ॥१॥ ततघन शुषिरा नद्धा द्यनेकगीर्वाण तूर्यरव मिलितैः ॥ सप्तस्वरैश्च षडजादिमैः सुधास्पर्द्धिश्चमाधुर्यैः ॥ २ ॥ भक्तिरताः सुरवनिताः । श्रीमज्जिनचंद्र चंद्र गुणगानं । मधुरतरामृत मधुरं । प्रकुर्व्वते सत्वरं सुतरां ॥३॥ युग्मं ॥ काव्यं ॥ सध्यानामदभृङ्गजेंद्रगमनाः कल्याणकुंभस्तनाः । सद्भक्त्याकृत जैनपादनमनाः संपूर्ण चंद्राननाः । चंचद्भिर्दशाभिः षरुत्तरगतैः श्रृंगारकैः शोभिता । नृत्यंतित्रिदशेंद्र वृंद वनिताः सौंदर्यदर्पोध्दताः ॥ ३ ॥ राग कैरवो ॥ बाजे तेरा बिछुआरे । वा० ॥ एचाल ॥ निरत करत सुरकुमर कुमरीया ॥ नि० ॥ बाजे सुर दुंदुभिगगन मधुरीया ॥ नि० ॥ जिनमुखकजमाझि दृग मधुकरीया । निरखि हरषि सुरदेत भमरीया

॥ नि० ॥ १ ॥ अरधचंद्रसम भालविराजत ॥ शरदचंद्रमुख अमित उरीया ॥ ॥ नि० ॥ अति विशाल सारंग विलोचन ॥ निराषित सहु सुर जनमन हरीया ॥ नि० ॥ २ ॥ सकललोक जनमन जीतणकुं ॥ मदनि मन मनु प्रकटन करीया ॥ नि० ॥ तव सुरवनिता सुरसमलोहित । जलदघटा मांझ जैसी विजुरीया ॥ नि० ३ ॥ झणण झणण रणकित नेउरीया ॥ ठमिक२ पाय वजित घुघरीया ॥ नि० ॥ तत्ताथेई तत्ताथेई चलतचरण गति ॥ त ननन गी री गान उचरीया ॥ नि० ॥ ४ ॥ ताल कंसाल वेणु वीणादिक ॥ विविध तूर धुनि गयण पसरीया । नि० । द्रागमिदिकी २ धपमप धौंधौं । द्रें द्रें वाजित मुरज मधुरीया ॥ नि० ५ ॥ विविध तूर धुनि करत बधरीया ॥ अ नुभव अमृत धार उलरीया ॥ नि० ॥ नटनकरंती अमर कुमरीया ॥ जिन गुण गावत मधुर सुसुरीया ॥ नि० ६ ॥ सजीय सोल सिणगारसुंदरीया ॥ सकलदेव द्युति धर सुर तिरीया ॥ नि० ॥ परम रूप लवणिमकी दरीया । मनुयवागकिय कामकेसरीया ॥ नि० ७॥चिरंजीव चिरनंद जिणेसर॥भवजल तारण तरण सुतरीया॥नि०॥चिदानंदघन सुख आगरीया॥वारीजाउंजिनजी नींखरति उपरीया ॥ नि० ८ ॥ जय जगबांधव जय जगवछल । जय२ जिन महाराज शंकरीया ॥ नि० ॥ जेमनु ममरण तरणि पकरीया । तेह चरम सा गर भवतरीया ॥ नि० ९ ॥ सूरीयाभ दशकंधरनीपरि । जेह नटन जिनपति पुरकरीया । नि० । ते शिवचंद्र अमल जिनपद युत । अमित कमला लिंग नधरीया ॥ नि० १० ॥ काव्यं ॥ भववनाटन नाटन नाशकं । कुशल पद्मदि नेश विकाशकं । कुमतिशंचटनं नटनं मुदा । न्वहमहं विदधे पुरतोऽर्हतां ॥ ११ ॥ इति उगणीसमीनाटकपूजा ॥ १९ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ जिनगुणस्तुति ॥ ❀ ॥

( दूहा ) जिनगुणस्तुति पूजन सदा । करोसुमति गुणधार । इणपूजन कर्त्तानणो । करे स्तवन दसुजार ॥ १ ॥ विचलरे मधुवनके वावरे । मैं कैसें भरनजाउं पानीया ॥ एचाल ॥ मेरी लगीय लगन जिनराजचरणमें ॥ मैं अव तरीया भवदरीया ॥ मे० ॥ तुम प्रभु जीनलीये सुरगिरीया । धीरज गुर सुखकरीया ॥ मे० १ ॥ जीनो अनिह गंभीर गुणे करि । परम

चरम सागरिया ॥ मे० ॥ चरण कमल सेवित अतिरसिया । हरिगण अमर नमरिया ॥ मे० २ ॥ अलख निरंजन अगम अगोचर । तूं प्रभु जगदीसरिया ॥ मे० ॥ अशरण शरण चरण निपतित भवि । जनगण तारण तरिया ॥ मे० ॥ ३ ॥ लोकालोक कमलबन विकसित । तुम प्रभुवासर करिया ॥ मे० ॥ तुम महाराज सकल जगजनको । तुम दरसण दृग ठरिया ॥ मे० ४ ॥ मंगलकैरव कानन विकसन । प्रभु शिवचंद्र निकरिया ॥ मे० ॥ जे भविमुख जिन तवन उच्चरिया । तेजिन कमलावरिया ॥ मे० ५ ॥ इणविध श्रावक करियै जिननुति । अनुभवरस गुणभरिया ॥ मे० ॥ जिननुति कारक भविजनकुं नित । प्रणमत भुवन विसरिया ॥ मे०६ ॥ काव्यं ॥ विबुध संस्कृत सन्नुति राजितं । सकल सद्गुण संग विभासितं । जिनगणस्य सदा स्तवनं मुदा । सुखकरं सुतराविदधेतरां ॥ ७ ॥ इति जिनगुणस्तुति ॥ २० ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ कोशवृद्धिपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) कोशवृद्धि इकवीसमी । जिनपूजा मनुहार । करो भविक तिणसें भरो । विमल पुण्य भंडार १ ॥ सब अरति मथनसु० ॥ एचाल ॥ रजतमणि कलधौत वरतर रयण द्रव्य उदाररे । अखिल हरिगण लेइ बहुतर भरय जिनभंडाररे ॥ रज० १ ॥ जेह सुमती उचित बहु धन । भरै कोश अपाररे । तेह निज जीवकोश माहें । भरय ज्ञान उदाररे ॥ र० २ ॥ जे अधरमी मंद कुमती । हरै पूजनसाररे । तेहि निज चेतन सदनकुं । करै व्यसनागाररे र० ३ ॥ निसुणिभवि शिवचंद्र जंपै । पूज एह विसालरे । करो तुमे तिण नित्य लहिस्यौ । अमल मंगल मालरे ॥ र० ४ ॥ काव्यं ॥ अमल कोश विवृध्दिसु पूजना । चिंतमनंत सुखव्रज संगतं । यतिनतं त्रिजगज्जन सम्मतं । निहत दुर्मत माप्त महंयजे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हंत अनंतानंत ज्ञानशक्तिभ्यः सकल सुरवरेंद्रवृंद विहित भक्तिभ्योजन्मजरामरण निवारणकारणेभ्यः कुमति मततरुगण काननसमूलोन्मूलनवारणेभ्यो ऐहि लौकिक श्रीऋषभादिश्रीवर्द्धमानपर्य्यंतेभ्यःश्चतुर्विंशति जिनेंद्रेभ्यः कोश वृद्ध्यर्थं दिव्य द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ ❀ ॥ इति कोश वृद्धि पूजा ॥ २१ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ राग धन्या सिरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तेज तरणि मुखराजै ॥ एचाल ॥ जिनजीको सुरपति गण गुण गावै ॥ सु० ॥ जे इकवीसभेद जिनपूजा ॥ करइ करावै भावै ॥ ते जन सकल दुरित अरि हरकरि ॥ तीर्थंकर पदपावै ॥ जि० ॥ वरसनाग ऋषि वसु धरणी मित ॥ सकल संघ सुखपावै ॥ माघमास सित पंचमि दिनकर ॥ वासर सहु दिनरावै ॥ जि० २ ॥ श्री जिन चंद्र सूरि खरतरपति । पटनभ तरणि कहावै ॥ श्रीजिन हर्ष सूरि सूरीश्वर ॥ विजयमान वरुदावै ॥ जि० ३ ॥ संघाग्रह हुंती जय नगरे ॥ महो वझाय पद चावै ॥ रूप चंद्र वादींद्र विरुद धर ॥ जसुगुणि जनगुण गावै ॥ जि० ४ ॥ तसु विनेय वाचकवर पदधर ॥ पुण्य शील शुभ भावै । समय सुंदर गणि तसुपद पंकज । सेवन भमर कहावै ॥ जि० ॥ ५ ॥ सु० ॥ समरण करि जिन वर गिरको तसु॥चरण कमल सुपसावै ॥ पूजरची पाठक शिव चंदे ॥ परमानंद वधावै ॥ जिन० सु० ॥ ६ ॥ ❀ ॥

इति शिवचंदजी उपध्यायकृत इकवीश प्रकारी पूजा सं० ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ श्रीसमेताशिषरपूजा लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चौवीसे जिनवर तणा।प्रणमीभावै पाय।समेतशिखर गिरिरायनी॥ पूजकरूंमनलाय ॥ १ ॥ शिखरसमेतासिरोमणी । एगिरवरकैलास। अतिउत्तग मनोहरू । एजोगिंद्र विलास ॥ २ ॥ वीशप्रभू मुगतैं गया । कर अणशण इह ठोर । तातैं सुर किंनरसवे । वंदतहै करजोर ॥ ३ ॥ महिमा जाकी महियलें । कहि न सकै कवि कोय । मुक्ति महिल निश्रेणिकी । एतीरथजगहोय ॥ ४ ॥ मिथ्यामत राची रह्या ॥ तिनकुं ए न सुहाय । घूकतणें मन किमगमें। दिनकर सव सुखदाय ॥ ५ ॥ अजिताजिणंद दिणंद सम । दूषम सुषमा काल । कुशल करन भव भय हरन। प्रगट भए प्रतिपाल ॥ ६ ॥ श्रीराग ॥ हांहोरेदेवा बावना चंदनघसकुमकुमा ॥ एचाल ॥ हांहोरेदेवा ॥ समेताशिषरगिररायना । गुणगावो मनधर प्रेम ए। हांहोरेदेवा । सुरगुरु पिण एगिरतणी । बहु महिमा वरणें केमए ॥ १ ॥ हांहोरेदेवा ॥ वीसप्रभु मुगतैं गया ॥ अजितादिक श्रीजिनचंदए ॥ हांहोरेदेवा ॥ इणकारण एगिरवरू । निश्रेयस सुरतरु कंदए ॥ २ ॥ हांहोरेदेवा । कोडाकोडी मुनिवरू । सीधावहु इणगिर आयए ॥ हांहोरेदेवा ॥ एगिर फरस्यां

भावथी। पापी पिण पावन थायए ॥३॥ हांहोरेदेवा। श्रावक सुध समकित धरै ते विधपूर्वक धर प्रेमए ॥ हांहोरेदेवा ॥ बालकहै जिनचंद्रनी । करै भक्ति सदा निजखेमए । हांहो० ॥ ४ ॥ इति । १ । ढाल दूजी। पूर्वमुषसावनंकरिदशं नपावनं । एचाल ॥ अजित जिनचंद्र सुरवृंद सेवित सदा ॥ सुभग पतकज तणी सेवना । हांरेअईयोसेवनाए । जगत दुर्लभमणी रत्नपर जीवकुं । पूजीयै चरण जिन देवनाए ॥ हांरे० ॥१॥ तरण तारण भवोदधि भविकजीव केई ॥ परम उपगार कर निस्तरया । हांरे०। शिखरगिर राय पर पाय निर्वाणपद ॥ सिद्ध निजरूप गुण संभरया ॥ हांरेअ० ॥२॥ अष्टविध पूजना द्रव्य भावै करै॥ भाव मन सौच धर जेनरा ॥ हांरेअ० ॥ तेशिखरतीर्थ शिवसौख्य संपदवरै॥ बाल जिनभक्तवत्सलकरा । हांरेअईयो वत्सल० ॥ ३ ॥ इति । उँ ह्रीं श्रीपर मात्मनेअनंतानंत ग्यानशक्तए जन्मजरा मृत्युनिवारणाय श्रीअजितजिनें द्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहाः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ द्वितीयपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ ❀ ॥ श्रीसंभव भवदव अनल । जलधर सम जिनराज । परउपगारी परमगुरु । भए भविक सुखकाज ॥ १ ॥ रागवेलावल ॥ विलेपन कीजे श्री जिनवर अंगे ॥ ए देशी ॥ पूजियैजिन मनरंगै जिनेसर॥ पूजि० ॥ जल कुंकुमाक्षत धूप दीप करी । नेवजफल मनचंगै ॥ जिने० १॥ सेना मात जितारी तात सुत । श्रीसंभव जिन अंगे । हार मुगट कुंडल वर भूषण। चाढो भवि सुभढंगे ॥ जि० पू० ॥ २ ॥ शिखर शिखर पर शिखरभएहै अनंतचतुष्क सुरंगे । बालचंद्र प्रभु अधम उधारन । प्रभुता परम प्रसंगै

अधम उधारन भवदुःख वारन । सिव सुरतरुनो कंदो । इंद्र चंद्र असुरेंद्र नमैं नित । वंदित सुर नर वृंदो ॥ भ० अ० ॥ २ ॥ समेतशिखर पर सिवसुख पायो । मिटगयो भवभय फंदो । वालचंद्र प्रभु तरण तारणको । पूजनकरी चिरनंदो ॥ भवि० अ० ॥ ३ ॥ इति । ॐ ह्रीं श्री परमात्मने० श्री अभिनंदन जिनेन्द्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहाः ॥ ३ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ चतुर्थीसुमतिजिनपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ ❀ ॥ सुमतिनाथ समसंपदा । सदा सुमति दातार । सेवे सुर नर अमरसहु । चरन सरन चितधार ॥ २ ॥ रागसारंग ॥ चरणकी चरणकी चरणकी । वारीजाउं मैं० ॥ ए चाल ॥ बलिजाउं मैं सुमति जिनंदकी ॥ व० ॥ आंकणी ॥ पूरनब्रह्म भए परमातम । मेघकुलांबर चंदकी ॥ बलि० ॥ १ ॥ भविकुल कमल बिकास करनकुं । प्रगट प्रताप दिणंदकी । सवि गुणलायक वंछित दायक । शासन सुरतरुकंद की ॥२॥ वलि०॥करन सुसेवा खचर अमरनर । मात सुमंगला नंदकी । बाल चंद्र प्रभु पतित उधारन । सबगुन रतन समंदकी ॥ वलि० ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने० श्रीसुमतिजिनेंद्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहाः ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ पंचमी पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) ॥ पदम प्रभूपद पद्मकी । सरनगही सुखदाय । दर्शन विन अनदेवको । संग कबून सुहाय ॥ १ ॥ राग सोरठ मल्हार ॥ अणियारे नैन जिनके । सखि सुनि संग बालक किनके ॥ एचाल ॥ प्रभुसेती प्रीत लागी । मेरी भाग्यादिसा अब जागीरे ॥ प्रभु० आंकणी ॥ पद्मप्रभुजीकें दरसण अंतर । आगल अब मेरी भागीरे ॥ प्रभु० १ ॥ प्रभु परमातम में बहिरातम । अनुभव आतम सागी । प्रगट प्रताप प्रभू प्रभूतालख । अब में भयो अनुरागी ॥ प्रभु० २ ॥ अंतरगतकी वेहीज बूझै । क्या बूझै जो दागी । बाल चंद्र निज नाथ निहारत । कुमति कुटलता त्यागीरे ॥ प्रभु० ३ ॥ इति ॐ ह्रीं श्रीपरमात्मने श्रीपद्मप्रभूजिन अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहाः ॥ ५ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ षष्टी सुपार्श्वजिन पूजा ॥ ❀ ॥

॥❀॥ (दूहा)॥ लोहधातु सम आतमा । परमातम चिद्रूप । कंचनरूप करै

प्रगट । श्रीसुपास जिन भूप॥१॥श्रीसुपास जग जीवको। पारससम जिनराज।
अण घड आतम लोहकुं । कंचन करै सुकाज ॥ २ राग वसंत ॥ दादा कुसल
सुरिंद तुम दरसणतैं परमानंद ॥ दादा०॥ ए चाल ॥ भवि पूजो सु
पास । सहुनी वंछित पूरै आस ॥ भवि० । जाको कमल सम सुगंध
सास । आहार नीहार अदृस्य जास ॥ भवि० ॥ १ ॥ न घटै न वधै नख केस
पास । मांसासृग उज्वल वर्णतास ॥ भवि० ॥ अतिसय चौतीस तणो प्रकास।
तरण तारण जग जस सुवास ॥ भवि० ॥ २ ॥ श्री समेतशिखर पर कर
निवास । प्रभु पायो मुक्तिमहिलसुवास ॥ भवि० ॥ प्रभुके समरणसें कर्मनास ।
कहै बाल सदा मैं प्रभुकोदास॥ भवि० ॥ ३ ॥ इति । ॐ ह्रीं श्री परमात्मने०
श्रीसुपार्श्वजिन अष्टद्रव्यंयजामहे स्वाहाः ॥ ६ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ सातमीपूजा ॥ ❋ ॥

॥❋॥ चंद्रा प्रभुकी चंद्रसम । मुखसोभा मनुहार ॥ देखत दृग आनंद लहै ।
सूरत अति सुखकार । मल्लि मनोहर तुझ ठकुराई॥ए राग॥ श्री चंद्रा प्रभु अरज
सुणीजै। श्री चंद्रा०आंक०॥त्रिभुवन नाथ गरीबके ऊपर । दीनदयाल निवा
सकीजै ॥ श्रीचंद्रा० १ । अधम उधारन विरुदतुमारो । मोसो अधम न अ
कहीजै ॥ श्री० ॥ इह संसार अपार अगाधमै । साहिब सरणागत रषलीजै ।
श्रीचं० ॥ २ ॥ मोपतितनकुं पार उतारो ॥ निज निर्यामक विरुद वहीजै ।
श्री० ॥ बालचंद प्रभुशिव सुख दायक। आतम संपद अवमोहिदीजै॥श्रीचं०
॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने अनंतानंत ग्यांन० जन्म० श्रीम० श्रीचंद्रा प्रभु
अष्ट द्रव्यं यजा महेस्वाहा ॥ ७ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ अष्टमी पूजा ॥ ❋ ॥

॥❋॥(दूहा)सुविध जिनंद दिनंदसम। जग जीवन हितकार। मिथ्या मो
अग्यानतम । दूर हरन दिनकार ॥ १ ॥ राग ॥ जियाचतुर सुजांण नवपद
गुणगायरे ॥ एहनी ॥ भेटो भविक सुजाण सुबिध जिणंद सुभभावरे ॥भे०
उत्तम कुल नरभवतें पायो ॥ फिर ऐसो नही दावरे ॥ भे० १ ॥ भक्त उध
रन भवि निस्तारन । भवसागरकी नावरे ॥ भे० ॥ तन मन बसकर नि
आतमकों । प्रभु समरण लय लावरे ॥ भे०२॥ द्रव्य भाव युत पूजन करियै

मनधर अधिक उछाधरे ॥ जे० ॥ बालचंद प्रभुपतित उधारन । मिलगए पुन्य पसावरे ॥ जे० ॥ ३ ॥ इति ॐ ह्रीँ श्री परमात्मने श्री सुविध जिनेंद्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहाः ॥ इति अष्टमी पूजा ॥ ९ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ नवमी पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दूहा ॥ ❋ ॥ श्रीशीतल मुनिइंद्रकी । महिमा अजब अपार । ज्ञानानलथी जिणदीया । कर्मअष्टेंधनजार ॥ १ ॥ ढाल ॥ सिद्धाचलगिरि भेट्यारे धनभाग्य हमारा ॥ एहनी ॥ श्रीशीतलजिनवंदो रे भविजनसुखकारा श्री० पतित उधारन दुरगति वारक । दायक शिवसुख साररे ॥ भ० ॥ १ ॥ भक्तभविक भव भय अपहारी । ए प्रभु परम सुप्याराररे । भ० मिथ्या ग्रीषम ताप निवारन । प्रभुचंदन अनुकाराररे ॥ भ० २ ॥ परउपगारी परम महागुरु । परमातम अविकाराररे ॥ भ० ॥ बालकहै प्रभुको भवभवमें चरणसरणमनवाराररे ॥ भ० ३ ॥ ॐ ह्रीँ श्री परमात्मने० श्री शीतलजिनेंद्राय अष्टद्रव्यंयजामहेस्वाहाः ॥ ९ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ दशमीपूजा ॥ ❋ ॥

( दूहा ) श्री श्रेयांसजिणंदनी । चरन सरन सुखकार॥ पुन्यप्रशाद मिल्यो मुझे । भव २ सुखदातार ॥ १ ॥ ढाल ॥ दादाचिरंजयो सेवकजन सुखदाई दरसण सदादियो ॥ एचाल ॥ भवि भावधरी श्री श्रेयांसजिनेसर पूजो मन रली ॥ भ० एप्रभुसम अवरन कोदेवा । जाकी चौसठइंद्र करे सेवा ॥ तेलहै सुरसुख सिवसुख मेवा ॥ भ० १ ॥ प्रभु परतिख सुरतरु सम स्वामी । जाकी पुन्यप्रसाद सेवा पामी । प्रभु जगजीवन अंतर जामी ॥ भ० २ ॥ प्रभु दीनदयाल परमदाता । जगवत्सल जगबंधव त्राता । कहै बाल सकलदायक साता ॥ भ० ३ ॥ इति । ॐ ह्रीँ श्रीपरमात्मने श्री श्रेयांसजिनेंद्रायअष्टद्रव्यंयजामहेस्वाहाः ॥ १० ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ इग्यारमीपूजा ॥ ❋ ॥

( दूहा ) परमातमपरमेसरू । श्री तेरमजिनराज । ध्यावो सेवोभविकजन । ज्युंपावो सुखसाज ॥ १ ॥ रागकनडो । मेरी लागीलगन जिनचरणे ॥ मेरी० एचाल ॥ मनमोह्योरी मेरो जिन चरणे म० ॥ दुःख दोहग सबहरणे । मन० ॥

विमलजिनंदकी अदभुत तनुछवि । सोजत सोवनवरणैं । म० ॥ १ ॥ दीन दयाल दयानिध दाता । सबजीवन सुखकरणैं ॥ म० ॥ परमातम प्रभुपरम परमगुरु । प्रभुभए तारण तरणें ॥ म० २ ॥ पुन्यप्रसाद लह्यौ प्रभु दरशन। सास्वत शिवसुख धरणें । म० । बालकहै प्रभु सेवकजाणी । रख लीजै मोहि सरणैं ॥ म० ३ ॥ इति । ॐ ह्रीँ श्री परमात्मने अनंता० जन्मज० श्रीमत् श्री विमल जिनेंद्राय अष्टद्रव्यं यजामहेस्वाहाः ॥ ११ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ बारमी पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दूहा ॥ श्री अनंत जिन देवकी । सेवकरो मनलाय । मनवंछित सुख जिमलहै । दुरगत दूर पुलाय ॥ १ ॥ रागमालवीगौडी ॥ सब अराति मथन सुदार धूपं ॥ करतगंध रसालरे ॥ देवा० ॥ एचाल ॥ ध्यावो सेवो भविजन भक्ते। अनंतजिनंद महाराजरे देवा ॥ एसुरतरुसम जगमें जिन वरोतारणतरण जिहाजरे ॥ देवा ॥ ध्या०१ ॥ कृपासिंधु भगवान परमगुरुती नभुवन सिरताजरे । देवा ॥ जिनसेवातें शिवसुख पामें । सफलहुवै सब काजरे । देवा । ध्यावो० ॥ २ ॥ इह संसार असार भजनविन । कैसें रहै निज लाजरे । देवा । बालचंद्र प्रभु परउपगारी । दायक अविचल राजरे । देवा।ध्या वो०३। ॐ ह्रीँ परमात्मने अनंत जिनेंद्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहाः१२॥❋॥

## ॥ ❋ ॥ अथ तेरमी पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ( दूहा ) ॥ धर्म जिनेसर परमगुरु । परउपगारी देव । परमातम प्रभु चरणकी । कीजै नितप्रति सेव ॥१॥ राग भैरवी॥पंचवरणी अंगीरची कुसुमजाती । कुसुमजातीरे अईयो कुसुम० पां० एचाल ॥ सुखकारीरे देवा सुखकारी । धर्मजिनंद सेवो सुखकारी । सुखकारीरे देवा।ध० । तीन भुवनके साम शिरोमणि । सब जीवनकोहै हितकारी ॥ धर्म० १॥जगजीवन जगबंधव जगगुरु । परम पुरुष प्रभु उपगारी । अकल सकल अघहर पर अनुपम।अचल अगोचर अविकारी । धर्म० २ । भवसंताप निवारण तारण । जिनसेवा मोहि अतिप्यारी। सुरतरुसम प्रभु चरणशरणकी । बालचंद कहै बलिहारी। धर्म०३ इति । ॐ ह्रीँ श्रीपरमात्मने अनंता० जन्म० श्रीमत् श्रीधर्मजिनेंद्राय अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहाः ॥ १३ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ चवदमी पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ( दूहा) शांति करण सब दुःखहरण । शांतिजपो सुखकार । शिव सुखदायक जगतगुरु । परमातम अविकार ॥ १ ॥ राग गोमी ॥ केसरीयानें ज्याजको लोक तिरायो । ए अचिरिज मोहि आयो के० एचाल ॥ शांतिजिनेसर ध्यावो।नविजन शांति०। तरण तारण नवसागर जिनको । तीनजगत जस चावो ॥ न० शां० १ ॥ शांति सुधारस नाम प्रनुको । समरण कर मन नावो । कर्मकोट सतखंम हुवै तब। सुध सरूपी थावो ॥ न० शां २ । नक्ति करो मनसुध नगवंतकी।मन सुध प्रनुगुण गावो । बालकहै प्रनुके सेवनसैं । मनवंछित फलपावो । न० शां० ३ इति ॐ ह्रीं श्रीपरमात्मने० श्रीशांतिजिनेंद्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहाः ॥ १४ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ पनरमी पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ सोरठो ॥ कुंथुजिनेसर देव । नविजन पूजो नावथी । चरण कमल की सेव । इंद्रादिक नित प्रति करै ॥ १ ॥ राग सोरठ ॥ कुंद किरण सासि ऊजलोजी देवा । पावन घसि घनसारोजी आछो ॥ एचाल ॥ चंद्र किरण जेसो ऊजलोरे देवा । जग जश प्रनुविस्तारोजी ॥ आछो ॥ अनंत गुणोंकरी सोनतारे ॥ देवा ॥ कुंथुजिनंद जग सारोजी ॥ १ ॥ आछो ॥ कामित दायक सुरतरूरे देवा ॥ सर्व जीवन प्रति पालोजी ॥ आछो ॥ नवि जन पूजो नावथी रे ॥ देवा ॥ ए प्रनुपरम आधारोजी ॥२॥ आछो शिवसुख दायक साहिबारे ॥ देवा ॥ पतित उधारन हारोजी । आछो बालचंद्र जिनचंद नोरे ॥देवा॥सरणगह्यो सुखकारोजी ॥आछो॥ चंद्र० ३ इति ॥ ॐ ह्रीं श्रीपरमात्मने श्री कुंथु जिनेंद्राय अष्ट द्रव्यं यजामहेस्वाहाः ॥ १५ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ सोलमी पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दूहा ॥ श्री अरनाथ जिनंदनी । पूजा अष्टप्रकार । करियै मन सुध नावसों, नवनव सुखदातार ॥ १ ॥ राग कालिंगडो ॥ मनारे जिन चरणा चितलावो, मनारे एहनी ॥श्री अरनाथ कुं ध्यावो मनारे त्रिनुवन पति गुण गावो ॥म० त्रिनु०॥ऐसो अवरन देव जगतमें । जाको जगजश चावो ॥ म०त्रि०१॥ सूर नरेसर नंदन प्रनुजी ॥ मात प्रनावती छावो ॥तन मन लगन

लगावो प्रजूसें ॥ नरक निगोद नजावो ॥ म०त्रि० २ ॥ परम पुरुष परमेशर प्रजुको। चरण शरण मनजावो। दीनदयाल दयानिध पूजत । बाल परम सुख पावो ॥ म०त्रि० ३ इति । ॐ ह्रीं श्री परमात्मने श्री अरनाथ जिनेंद्राय अष्टद्रव्यं यजामहेस्वाहाः ॥ १६ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ सतरमी पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दूहा ॥ कुंज समुद्भव जगधणी। मल्लिजिनेसर देव। जसु पद पंकज की करै । इंद्र चंद्र नितसेव ॥ १ ॥ राग कल्याण । तेरी पूजावनी तेरसमें ते० एचाल ॥ मेरी लगन लगी जिन चरणें। मल्लिजिनंद सुखकरणें। होमेरी० ॥ त्रिजुवन नायक सब सुख दायक। एप्रजु अशरण शरणें ॥ होमेरी० १ ॥ अनुपम रूप विराजित प्रजुजी। सोजत सोवन वरणें ॥ होमेरी० २ ॥ अकल अगोचर प्रजु जपगारी। ध्यावो सब दुख हरणें। होमेरी० ॥ जो निज आतम कुं सुखचावो। लावो चित्त समरणें ॥ होमेरी० ॥ बालकहे प्रजु अधम जधारन रखलीजें मोहि सरणें होमे० ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने श्री मल्लिजिनं द्राय अष्ट द्रव्यं यजामहेस्वाहाः ॥ १७ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ अढारमीपूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दूहा ॥ ❋ ॥ विंशतितम जिनवर नमुं। मुनिसुव्रत जिनचंद। जावें जविजन जेटियै । दूरटलें जविफंद ॥ १ ॥ रागमल्हार ॥ चिहुंजर बदरियाबरसै ॥ ए चाल ॥ मुनिसुव्रतस्वामीदरसै ॥ आजआनंद घनवरसैहो मु० ॥ समेतशिखरपर प्रजुपद पंकज। पुन्यप्रसादें फरसैहो ॥ मु० ॥१॥ प्रजुदर शन घनघोर घटालख। मोरनयनयुग तरसै ॥ हो मु० ॥ जविजनचात्रक प्रजुगुन गावत । जावत जावन उरसै ॥ हो मु० ॥ २ ॥ धर्मध्वनिजाकें जपजत खेती। कर्म निरसहोय निरसै ॥ हो मु० ॥ बालप्रसाद प्रजुजीके आतम। परमातम प्रजु सरसै ॥ हो मु० ॥ ३ ॥ इति। ॐ ह्रीं श्री परमात्मने० अनं० जन्म०श्रीमत्० श्रीमुनिसुव्रतजिनेंद्रायअष्टद्रव्यं यजामहेस्वाहाः ॥१८॥

## ॥ ❋ ॥ अथ जगणीसमीपूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दूहा ॥ ❋ ॥ नमिजिन पूजो जावसों। जविक जक्ति मनलाय। जावसुध जिन पूजतां। डुरगति दूर पुलाय ॥ १ ॥ रागमालवीगौमी ॥ सब

अरतिमथनसुदारधूपं ॥ ए चाल ॥ नमिजिनेशर जगदिनेशर । पूजो भविजन भावरे । जगतपति जिनराज साहिब । भवसमुद्रनो नावरे ॥ न० ॥ १ ॥ इंद्र चंद्र सुरेंद्र नर सुर । पूजनको जसुचावरे ॥ तरण तारण कृपासागर । सेवनको अवदावरे ॥ न०॥ २ ॥ पुन्यभदै प्रभु दरसनपायो । आनंदकंद सुभभावरे । बालकहै प्रभुके चरणकी । सरणमोहि सुहावरे ॥ न० ॥ ३ ॥ इति । ॐ ह्रीँ श्री परमात्मने० अनं० जन्म० श्रीमत्० श्रीनमिजिनेंद्रायअष्ट द्रव्यंयजामहेस्वाहाः ॥ १९ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ बीशमीपूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दूहा ॥ ❋ ॥ पारश पारशनाथका । गुणगातां गहिगट्ट । कष्टटलै संपति मिलै । मनवंछित फलथट्ट ॥ १ ॥ राग । सांवरीयास्वामीजीअबमो हितारो ॥ ए चाल ॥ शांवरियासाहिबकी बलिहारी सां० ॥ अश्वसेनतात वामा देवीमाता । पाशजिणंदहैसुखकारी ॥ सां० ॥ १ ॥ जाकेगुनको पारनपावै । इंदनरेंद नरनारी ॥ सां० ॥ भवभवभमतां प्रभुजीमेंपाया । दुरगति दूर निवारी ॥ सां० ॥ २ ॥ अबमें प्रभुबिन और नचाहुं । एहीसुझमन इकतारी । बालकहै प्रभुसाहिब मेरै । शिवसुखदो मोहितकारी ॥ सां० ॥३॥

॥ ❋ ॥ ढाल दूसरी ॥ तेजतरणमुखराजे । हांजे मुख० एचाल ॥ भविजन शिखरसमेतवधावो । भ० । वीसजिनेशर मुगतसिधाए । ए तीरथ जगचावो । भ० १॥ द्रव्य भावकरी पूजरचावो । त्रिभुवनपति गुणगावो । समकित पुष्टालंबन कारन । एसम भर नभावो ॥ भ० २॥ सकल संघ मकसूदावादमें । आनंद अधिक बढावो । भक्ति भावसें प्रभुजीकुं पूज्या । मनवंछित फल पावो ॥ भ० ३ ॥ संवत सिधि नभनिधि वसुधा सुभ । कार्त्तिक सुदि पणचावो । जिन सौभाग्य सूरी सर गुणनिधि । खरतर गछपति चावो ॥ भ० ४॥ अमृत लाभ समुद्र पसायै ॥ पूजर ची भवि भावो ॥ बालचंद परमातम प्रभुका ॥ हरष हरष गुण गावो ॥ भ० ५॥ इति ॐ ह्रीँ श्री परमात्मने अनंतानंत ग्यानशक्तये जन्म० श्रीमत् पार्श्व जिनें द्राय अष्टद्रव्यं यजामहेस्वाहाः ॥ २० ॥ राग कमखो ॥ शिखर गिरितीर्थंकर वीश जिनवर मुदा । भक्ति भर भविकवर पूज करियै । अष्टविध विविध धरि सिद्धि नवनिधि सही । सुघट घट संपदा प्रगट वरियै । शि० १ । विकट घट

कर्मकी जोट दूरै करी । विबुध बुध आत्म निज सुद्धि धरियै । चरण जिन रण गहि भवतरण जन लहै । चरण दरसण लही ज्ञान चरियै । शि० २ धन्य दिन आज जिनराज गिरराज चढ । दरस लहि सरस संसार दरियै । ध धर मगन जिन भक्ति पूरनगही । दुरति गति दुःखसें दूर टरियै । शि० ३ अष्ट नव निद्धि सदा सिद्धि सुद मावमें । पूज करि शक्ति निज भक्ति भरियै बाल प्रतिपाल सुविसाल गुनगावतां । धार भव वार निधि पार तरियै ॥ शि० ॥ ४ ॥ इति श्रीबालचंदजी उपाध्याय कृत समेत शिखरगिर पूजा संपूरणम् ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ वार व्रतकी पूजा लिख्यते ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ प्रथम समकित द्रढ करण जल पूजा ॥ दूहा ॥ व्रत बारै आद करी । पूजा तेर विधान । आनंदादिक संग्रही । सप्तम अंग प्रधान ॥ १ ॥ राग सरपदो ॥ ज्योति सकल जग जागती हां० ॥ ए चाल ॥ ज्योति विमल जगझलहलै । हां रे अइयोऊ० ए । शाशन पति जिनचंद । त्रिकरण प्रणमन करिनमूं । वीरचरण अरविंद ॥ १ ॥ न्हवन १ विलेवण २ बासनी ३ हां रे० । मालं ४ दीवंच ५ धुवणियं ६ ॥ फूल ७ सुमंगल ८ तंदुला ९ । हां रे० ए० ॥ अमलं दप्पणंच १० नैवज्जं ११ ॥ २ ॥ ध्वज १२ फलवृं १३ एमेलियै । हां० ए । पूजा त्रिदश प्रकार । हांए । व्रत ग्रहि अनुक्रम अरचीयै । जगपति जगदाधार ॥ ३ ॥ सिवतरु सुखफल स्वादनो । हां रे० दायक गुणमणि खांण । हांए । कुशल कला कलना थकी । प्रगटै परम निधान ॥ ४ ॥ दूहा ॥ समकित व्रत धुर आदरो । मेटो निज मन भर्म दूर थकी ए परि हरो । कुगुरु कुदेव कुधर्म ॥ १ ॥ धुर दर्शनाण सुचरण अणसण धीर वीर्य वखानियै । तपइम सकलना सिद्धि गज वसु पण ति वार सुठानियै । व्रत वारना अतिचार शर शर परम गुरुमुख जानियै । करित्याग राग प्रशस्त धरिमन विमल संबर मानियै ॥ १ ॥ राग रामगिरी ॥ गात्रलूं जिनमन रंगसूंरे देवा । स० । ए चाल ॥ धुर समकित व्रत चित धरो रे बा ल्हा । भवभय दुःख दल परिहरो । परिहरो हां रे बाल्हाप० । शिवरमणी व लीजीयै ॥ १ ॥ वीर जिनेसर वंदीयैरे वाल्हा । जिम चिरकालसुं नंदीयै ।

नं० हारेवा० ॥ कुमति दुरति सरकीजीयै ॥ २ ॥ चरण करण गुण मणि निलोरे वाल्हा० । जगजन तारण सिरतिलो । सिं० हां० ॥ सदगुरुचरण नमीजीयें ॥ ३ ॥ जिन भाषित श्रुतसागरोरे बा० भेद विविध विधि आगरो । आगरो० हांरे० ॥ श्रवण जुगलकर पीजीयै ॥ ४ ॥ जिन शासन जिनधर्म नोरे बा० । रागदलन वसुकर्मनो । कर्म० । हां । कुश लकला रसभीजीयें ॥ ५ इति ॥ दूहा ॥ सकल करमदल मलहरण । पूजा धुर जलधार । जगनायक जिनतुंगनी । नरधर भगति उदार ॥ १ ॥ रागझिंझोटी ॥ निरमल होय भजलै प्रभुप्यारा । सव० ॥ ए चाल ॥ जिनवर न्हवण करण सुखदाई । छूटै जनम मरण दुःखदाई । जि० । टेर॥ खीरजलधि गंगोद कमांहि । अमल कमल रस सरस मिलाई । जिन० ॥ १ ॥ निरमल शकल परम तीरथ जल । मणियुत कंचन कलश भराई ॥ जिन० ॥ २ ॥ या जिन जीके नवण करणतें । भवभय दुःखदल दाघसमाई॥ जि० ॥ ३ ॥ द्रव्य भाव विधि समकित फरसै । तेनर नरक निगोद न जाई ॥ जि० ॥ ४ ॥ यातें भवि जनके दुःख नासै । कपूर कहै सुरहोत सहाई ॥ जि० ॥ ५ ॥ इति० ॥ काव्यं परमलंकृत संस्कृत श्रध्दया । स्नपति यो जिनचंद्र मिमंमुदा । भवभयं परिमुच्य सदोदयं । भजति सिध्धिपदं सुखसागरं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्री परमात्मने अनंतानंत ग्यानसक्तये । जन्मजरा० श्रीमद्० श्रीसमकितव्रत उपदेशकाय जलं यजामहेस्वाहा । इति प्रथम समकित व्रतपूजा ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥❀॥ अथ प्राणातिपातव्रते केशर चंदन विलेपन पूजा ॥❀॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ प्राणातिपात विरमण व्रतें । छंमो जंतु विनास । इणसुं शिवसुख नामिलै । हिंसा दोषविलास ॥ १ ॥ हमकुं छांडचले बनमाधो । राधा० ॥ ए चाल ॥ भविजन जीवदया व्रत धारो । सम परिणाम संभारोरे । भ० ॥ टेर ॥ अपराधी पिण जीव न हणियै । भाषै जगदा धारोरे । देशविरति धरनें पिण भाख्यो । विन अपराध न मारोरे । भ० गो गज सैंधव महिषा दिकनें । बंधन वध न विचारोरे । कीजै न अवयव छेद त्रिकालै । जल चारो न विसारोरे ॥ भ० ॥ २ ॥ कीमी कुंजरनें सम गिणीयै । सुख दुःख जोग विकारोरे । थावर त्रस पंचेंद्रयादिकनो । होय रहि

यै हित कारो रे ॥ भ० ॥ ३ ॥ ए व्रत रत चित जे नर जगमें। सुर नर गण मन प्यारो रे। तेहिज लोभ महाभटमारयो। सकल करम परिवारो रे भ०।४ थूलथकी ए व्रत जे पालै। तेलहै शिवसुख सारो रे। कुशल कला कलना करी प्रगटै। अनुभवरंग उदारो रे। भवि० ॥५॥ दूहा ॥ भव दव दाघ सवे मिटै। पूजो परम दयाल। भावठ भंजन सुखकरण। दूजी पूजरसाल ॥ १ ॥ (राग घाटो)। जिनराजनाम तेरा म्हाराज०। ए चाल ॥ पूजो जिनेंद्र प्यारा। होतारो रे विकट भवजलसें। हो०। टेर ॥ हां रे घनसार चंदन वासै। हां रे सुकुरंग नाभि जासै। दुःख नारकादि नासै ॥ होता० ॥ १ ॥ घसि सूक्ष्म दि भेली। नाना सुगंध मेली। शिवदैन कर्म ठेली ॥ होता० ॥ २ ॥ पूजा सदा रचावो। वर भावनापि भावो। शिवसौधमे समावो ॥ होता०॥३॥ विधि भाव द्रव्य धारो। हिंसाको दोष वारो। प्रभुनाम नां विसारो। होता० ॥ ४ ॥ तज पाप भार फंदा। शिवशं कलाप कंदा। साधै कपूरचंदा ॥ होता० ॥५॥ इति प्रथम पूजा ॥ काव्यं ॥ अमल कुंकुम केशर मिश्रितै। जिनपतेर्युगपाद समर्चनं। हरति सो भवदाघ मसुंदरं। रचतियो घनसार सुचंदनै ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने अनंता० जन्म० श्रीमत्० प्राणातिपात विरमण व्रत उपदेशकाय चंदनं यजामहे स्वाहाः ॥ इति प्राणातिपात पूजा ॥ २ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ मृषावाद व्रते वासक्षेप पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ॥ दूहा ॥ मृखात्याग व्रत दूसरो। कुमति दुरति हरतार। भविजन भावै आदरो। शिवतरु फलदातार ॥ १ ॥ राग वशंत ॥ सब अरति मथन सुदारधूपं। कर० ॥ ए चाल ॥ सुण भविक नर धर दुतिय व्रत मन। मृखावादन बोलरे। बाला मृखा०। टेर ॥ मृखावाद कुवाद शेखर कुजशवाद न ढोलरे। बाला। कुजश० सु० ॥ १ ॥ सकल शिवसुख धाम ध्रमरवि। ढकण राहु निटोलरे। शिवपुर नगर पथि शवर सरिखो। अरति व्यापन घोलरे। बाला। अरति० बाला०। सु० ॥ २ ॥ निपट कूट कलाप करिनें! परखुपति मतखोलरे। रुणविधौ धनधान्य निकरै। कपट कूट न तोलरे ॥ बालाक० सु० ॥ ३ ॥ कूटलेख कुसाख भरिनें। रचयमां रुमझोलरे। अन्य सिरसि कलंक धरिनें। चरित हांनुं न बोलरे। बाला चरित०

सु० ॥ ४ ॥ वसुनरेसर वृथा रचिनें । लह्यो कुगति कचोलरे । तृतीय व्रत रस राग भैरवी । कुशलसार विमोलरे । बालाकुश० सु० ॥ ५ ॥ इति ॥ ॥ दूहा ॥ जगदाधार जिनंदनें । पूजो वासरसैण । शिववनिता वस कीजियै । पूजा त्रयतम एण ॥ १ ॥ राग गरबो ॥ भवि चतुर सुजाण परनारी सुं प्रीत मी कबहुन कीजियै ॥ भ० । ए चाल ॥ भविभाव धरी भवसागर निस तार क जिनपति सेवियै ॥ भ० ॥ टेर ॥ बावनाचंदन खंम्हन करियै । तेहमां वलि कुंकुमरस भरियै । मृगमद परिमलता अनुसरियै ॥ भवि० ॥ १ ॥ कंकोल सुवासित वलि कीजे । तिम विवध कुसुम रस कस दीजे । ए चूरण विधि निज वसकीजे ॥ भवि० ॥ २ ॥ इम वासरसैं जे जिन पूजे ॥ तिणसैं स वि करम सबल धूजे ॥ सुखसंपति जायन घर दूजे ॥ भवि० ॥ ३ ॥ सुर किंनर नर सासन धारै । विनसमरयां सहुसंकट वारै । ए पूजन मनवंछित सारै ॥ भवि० ॥ ४ ॥ विमला कमला सबला पावै । जे प्रभुगुण गण भावन भावै । इम चंदकपूर सुजशगावै ॥ भवि० ॥ ५ ॥ इति काव्यं ॥ मृगमदां वर घश्रण मिश्रितै । वैरवरास सुचंदन संस्कृतैः । रचतियो जिन पूजन मंजसा । सलभते निभृर्ति किलवासकैः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमात्मने अनंतानंत ग्यानसक्तये । जन्मजरामृत्यु श्रीमद० मृषावाद विरमण व्रत उपदेशकाय वा सक्षेपं यजामहेस्वाहाः । इति तीसरी मृषावाद व्रत पूजा ॥ ३ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ चोथी अदत्तादांन व्रते पुष्प माल पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ व्रततृतीय हिवसांभलो । भाखे जगताजिनंद । स्तेयकरण सब सुख हरण । अष्टकरम दलकंद ॥ १ ॥ राग सोरठ ॥ हांहोरे देवा । बावन चंदन घसि कुमकुमा । चूर० । ए चाल ॥ हांहोरे वाला । परधनहरण गमन करो । धरि त्रिकरण शुद्ध विलाशए । हांहोरेवाल्हा । ए भवजल जलधर समो । व लि समकित वृंद विनास ए । व० ॥ १ ॥ हांहोरे वाल्हा ॥ कनक रजत मणि धातुनो । जल थल खल पशु पटकूलए । ज० ॥ हांहोरे वाल्हा ॥ इमतनु थू ल जगतिभरया । लही सकल पदारथ मूलए । ल० ॥ २ ॥ हांहोरे वा ल्हा । कुमति दुरति रमणी तणो । ते सदन ए चोरीनो कर्मए । ते० । हांहोरे वा० । विपद जलधि पिण जाणियै । सचपल थई नासेधर्मए । स० ॥ ३ ॥

हांहोरे बा० ॥ ए व्रत सुरतरु सारिखो । शिव सुख फल दैन उदार ए । शि० हांहोरे बाल्हा । कुशल कलायुत कीजियै । लहियै भवजलनोपार ए । ल० ॥ ४ ॥ इति ॥ दूहा ॥ पूज चतुर्थी मालनी । करियै भक्ति वशेण । मोहति मर भर उपशमें । प्रगटै बोध खिणेण ॥ १ ॥ राग खंभायची । भवभय हरणा । शिवसुख करणा । सदा भजो भ्रम० में० एचाल ॥ भविजन पूजो जिन ग्रीवा धरि । बर फूलनकी माला । मेंवारी० ब० ॥ ए पूजन दुरगति घरछेदी । विरचै शिवसुख साला । मेंवा० विर० भवि० ॥१॥ चंपक मरुक तिलक चंपेली । पाडल लालगुलाला । मेंवा० पा० । विमल कमल परिमल मदमाता । नतजे अलि मतवाला । मेंवा० । नत० भवि० ॥२ ॥ जाई दमण जूही कोरंटक । मालती मरुक रसाला । मेंवा० मा० । ऐसें पंचवरण कुसुमें करि । माल रचन परनाला । मेंवा० मा० भवि० ॥३॥ ए मालापूजन करीनासै । कोटि करम दुःखजाला । मेंवा० को० । सुमति सुरति अनुभव वलि प्रगटै । त्रासे कुमति कुचाला । मेंवा० त्रा० । भवि० ॥ ४ ॥ ए विधि संबरद्वार विकासै । पापसदन मुखताला । मेंवा० पा० । कपूरकहै प्रभुचरण शरणमैं । मंगल माल विशाला । मेंवा० मं० भवि ॥ ५ ॥ इति ॥ काव्यं । सरस मुज्झर चंपक पाटलै । मरुक मालति केतकी सत्कजैः । विधि विगुंफ्यजिनं परिपूजयेत । सज मजश्रम मीभिरजेद्धकः १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमात्मने अनंतानं० जन्मजरा० श्रीम० अदत्तादान विरमण व्रत उपदेशकाय । मालं यजामहेस्वाहाः॥ इति अदत्तादान व्रत चोथी पूजा ॥४॥

## ॥ ❋ ॥ अथ पांचमी मैथुन व्रते दीपपूजा ॥ ❋ ॥

॥ दूहा ॥ ❋ ॥ व्रत चोथे मैथुन तजो । भजो भविक भगवान । शीलाराधन योगसें । लहियै शर्म्म वितान ॥ १ ॥ राग सोरठ ॥ कुंद किरण शशी ऊजलोरे देवा । पाव० ॥ ए चाल ॥ मन वच काया थिरकरीरे । बाल्हा । कुदुख कुशील निवारोरे । आछो । एह नरक रमणी तणो रे । बाल्हा । शोदर अति हित कारो रे । आछो ॥ १ ॥ नर सुर पशु सहुजातनोरे बाल्हा । विषय कलित बहु दोषैरे । आछो । ते परिहरिनें थिररहो रे बाला० । निजदारासंतोषैरे ॥ २ ॥ आछो । लंकापति नरकै गयोरे । बाल्हा एमैथुनरस धारूरे आछो । एहनें तजकरि केईलह्यारे । बाल्हा । जीवसकल सुखसारूरे

॥ ३ ॥ आछो । शील रत्न जतनें धरोरे बाल्हा । तसदूषण सविछंमीरे आछो। कुशलकला करिनें जहोरेवा० । शिवसुख माल प्रचंमी रे । आछो ॥४॥ इति ॥ ❀ ॥ दूहा ॥ दीपकपूजा पंचमी । करै सकल दुःखनास । ज्ञायक लोका लोकनो । प्रगटै बोधिविकास ॥ १ ॥ रागदेश वरवो ॥ केसरियानेंफाऊ को० ॥ एचाल ॥ ❀ ॥ भावधरी दीपक पूज रचावो । यातैं शिव सुख संपति पावो । भा० । रक्त पीत सित वरण विचितृत । सूतनीवाट वणावो । गोघृतमांहि अधिक तरकारिनें । सुभमन दीपजणावो । भा०१ । दीपकनेंमिस मनमंदिरमे । ग्यांनकोदीप जगावो । जम्ताितिमर कलापहरीनें । मंगलमालवधावो । भाव० ॥ २ ॥ अरतिहरण रतिदायक जगमें । एपूजन मनभावो । सुर नर पायनमें ततखिणही । यातें नरकनजावो ॥ भाव० ॥३॥ अनुभव भावविशाल करीनें । आतमसुं लयलावो । कपूरकहै भविजनसें प्रभुके । वर गुणगण जश गावो ॥ भाव० ॥ ४ ॥ काव्यं ॥ आतमप्रबोधै कविवर्धनाय । जाड्यांधकारजमर्दनाय । भव्यप्रदीपं कुरुभक्तिवृंदैः । प्रभोगृहे वायघतर्ज्जनाय ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमात्मने अनंतानंत० जन्मजरा० श्रीमज्जि० मैथुन विरमणव्रत पदेश काय दीपंयजामहेस्वाहाः ॥ इति पांचमीमैथुन व्रत पूजा ॥ ५ ॥❀॥

## ॥ ❀ ॥ अथ छठी परिग्रह व्रते धूप पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ भविकीजे व्रत पंचमै । सकल परिग्रह मांन । ए मोहा —शवरनो । भूधर दुःखनी खांन ॥ १ ॥ राग वशंत ॥ अतुल विमल —पा अखंम गुणे । मेल्या० ए चाल ॥ सकल भविकभरया विमल गुणे —हा । मांन परिग्रहनो करो ए । सकल० ॥ टेर ॥ वज्र समान ए समगिरि —न । दोष दिवश पति वासरो ए । स० ॥ १ ॥ धन कण वशन गवादिक —नो । धातु निकर तिम जांणियै ए । इत्यादिक नवभेद विधांने । दशवै —नेक भाणियै ए ॥ सक० ॥ २ ॥ एहनें मूलथकी जेहरै नर । तेहनें मोक्ष मिले सहीए । सुचिर काल ग्रहवास वसै जे । तेहनें देश विधै कहीए । सक० ॥३॥ नरक निवास इणें विनपाम्यो । मुम्मण सेठ ते भाखियै ए । भविजन ए व्रत भावथी पालो । कुशल कला निजदाखिये ए ॥ स० ॥ ४ ॥ इति ॥ ❀ ॥ दूहा ॥ छठी पूजन धूपकी । धुवो जिनवर अंग । कुशुर

न्नि करमतणी हरै। दायक शिवसुख चंग ॥ १ ॥ राग देसाख ॥ प्यारी ब्रि-
ववरणी न जाय। प्यारी०। थां रै मुखम्हारी हो वारीराज। प्या ॥ ए चाल ॥
ऐसी विधि पूजन न्नाई दिलधार। धूप धूम घनसार धार करि। ऐसी०।
टेर ॥ या न्नवन्नीम वारिसागरमें। तरस तरंम्क तरन्न विचार। धूप० ॥ १ ॥
चंदन देवदारु बलि अंबर। मृगमद गंधवटी घनसार। धूप० ॥ २ ॥
ऐसें सुरन्निद्रव्य बहुमेली। तिणमें सेल्हारस नविसार। धूप० ॥ ३ ॥ म
णियुत कंचन धूपदानमें। बिमलानलथी करि सुप्रचार। धूप० ॥ ४ ॥ क
पूर करत ब्रुतिया जिन पूजा। न्नविजन गणकी तारणहार। धूप० ॥ ५ ॥
काव्यं ॥ नानासुगंध वस्तुनिर्मित सारधूपं। चाकर्षितं भ्रमरवृंद मतिर्हियेन ॥
श्रष्टाश्रये विधि निवेश्य बिशालन्नक्त्या। धूपे जिनाधिपतिनं शिवदं
सुदावे ॥ १ ॥ उँ ह्रीँ श्रीँ परमात्मने अनंतानंत० श्रीमज्जि० परिग्रह प्रमाण व्रत
उपदेशकाय धूपं यजामहेस्वाहाः इति परिग्रह प्रमाण व्रत बठी पूजा ॥ ६ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ सातमी दिशपरिमाण व्रते पुष्प पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दूहा ॥ बठो व्रत दिशमानको। गमनागमन निवार। अकुश
लता सवि उपशमै। श्रेयसंपजे सार ॥ १ ॥ रागगरबो। सिद्धाचलमंम्ण स्वा
मीरे ॥ ए चाल ॥ ❋ ॥ श्रीशिवसुख संपति वरियेरे। न्नवन्नय डुखवार
ण करियै रे। करिदिशि परिमाण जेचरियै। रसीला। न्नाव विमल दिल
धरियै रे। वाल्हा धरियै तो समरस न्नरियै। र० ॥ १ ॥ अध ऊर्धनें तीरब
वखाणो रे। दिश विदिशनें तेम प्रमाणो रे। ए बे संकट जलधिनोराणो ॥ रसी०
॥ २ ॥ एमां गमनागमन निवारैरे। ओबै कुमति डुरति न्नरतारोरे। इकच
क्री लह्यो डुखन्नारो। रसी० ॥ ३ ॥ ए व्रत शिवसाधन चंम्गेरे। तुमे न्नविजन
एहन खंम्गेरे। कहै कुशलकन्ना नितमंम्गे। रसी० ॥ ४ ॥ इति ॥ ❋ ॥
॥ ❋ ॥ दूहा ॥ न्नवियण पूजा सातमी। कीजे न्नक्ति विशाल। ससुरन्नि नाना
जातना। विमल कुशम न्नरथाल ॥ १ ॥ ❋ ॥ रागधन्याशरी ॥ कबहुमें नीके
नाथन ध्यायो ॥ क० एचाल ॥ प्रन्नुजीकी फूलै पूजन सारो ।प्र० ॥ टेर ॥ श्रीजिन
जीके चरणकमलमें। अलि समता गुणधारो। प्रन्नु० ॥ १ ॥ चंपक कुंद गुलाब
केवम्। पारधिनाग कल्हारो। जासु दमण वासंति मोगरा। पाम्ल जाल मं

दारो । प्रभु० ॥२॥ इम नानाविध कुशम घटा करि । भाव विमल जलधारो तोलहिये भविजन ध्रुव करिनें । अचिरथकी भवपारो । प्रभु० ॥ ३ ॥ व्रत धर फूल कलाप रुचिर ग्रहि । पूज तजे जगतारो । कपूर कहत जिन चरण सरण लहि । करम सबल दल मारो । प्रभु० ॥ ४ ॥ इति ॥ काव्यं ॥ गंधामलादि गुण लक्षण लक्षितैर्वै । पुष्पोत्करै रखिल गुंजित चंचरीकैः ॥ संसेवये द्विविध जाति समुद्भवैर्या । जैनेश्वरं व्रजतिसोह्य चिराच्छिवंना ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने अनंतानंत० जन्म० श्रीमज्जि० दिशि परमाण व्रत उपदेशकाय पुष्पंयजामहेस्वाहाः ॥ ❁ ॥ ॥ ❁ ॥

इति दिशि परमाण व्रत सातमी पूजा ॥ ४ ॥ ❁ ॥ ॥ ❁ ॥

## ॥❁॥अथ आठमी अष्टमंगलीक भोगोपभोग व्रतपूजा ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ जगनायक पदकमलमें । धरियै करि मनभृंग । भोग अनें उपभोगनो । एसहुव्रत गिरिशृंग ॥ १ ॥❁॥ सिद्धचक्रपद वंदोरे । भविकासि० ए चाल ॥❁॥ सकलसचित्तनें द्रव्यविकृती । बाहन बलि तंबोल । वसन कुशम दल पानहि तिमवलि । सयण विलेवण घोलरे । भविका । इण व्रतमें मनभंभो । शिवसुख रयण करंभोरे । भविका । इण० ॥ १ ॥ ब्रह्मचार्य दिशि न्हाण भत्त इम । नियम चतुर्दश माल । प्रतिदिन भाव हृदयधारि करियै । एहनी सार संभालरे । भवि० इण० ॥ २ ॥ तिमही अभक्ष करोत्तर त्रिंशत । अखिल विपुल महिकंदो । कालखीण सहु द्रव्य अजाणयो । फल निशिभोजन छंदोरे । भ० ॥ इण० ॥ ३ ॥ विविध अप्पोल दुप्पोल विभेदै । अशनारंभ विशाल । इंगालादिक करण करावण । कर्मादान कुचालरे । भ० ॥ ४ ॥ इण० ॥ एहंभै ते शिवसुखभंभै । खंभै कुगति दुकाल । सहजानंद शस्यसुख प्रगटे । भवदै त्रिजगत्पालरे । भ० । इण० ॥ ५ ॥ इण व्रतकरि चितमंदिर भरियै । तरियै भवजलपार । अनभव चंद्र सुधा झडभंभै । कुशलकला निरधाररे । भ० इण० ॥ ५ ॥ इति० ॥ ❁ ॥ ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ दूहा ॥ मंगलपूजा अष्टमी । करमदलन असिधार । करियै श्रीजिनराजकी । वरियै शर्म अगार ॥ १ ॥ राग ठुमरी ॥ ❁ ॥ तुमबिन दीनानाथ दयानिधि कोनखबरले मेरीरे । तु० । ए चाल ॥ भ

विजन नावे श्रीजिनवरकी । मंगलपूजा कीजैरे० । बालामंग० ॥ टेर॥ श्लीलायन शरलासन नंद्या । वर्त्त कुंन निरमीजैरेमीनजुगल श्रीबह्न सरावनो संपुट स्वस्ति करीजैरे । बाल्हा। संपु० । नवि० ॥ १ ॥ ए अष्टमंगल मंरून कारण। कंचन थालरचीजैरे । रुचिराखंरू विमल गुणधारी। तंडुलसें लिखलीजैरे। नवि० ॥ २ ॥ निजमन नक्तिनाव धरि नविका। प्रनुसनमुख धरदीजैरे। तोसुखधाम मुक्तिपुट नेदन। निवसन कृत्य लहीजैरे। नवि० ॥ ३ ॥ स्वांत गगनसम सूर्योदयथी । कोटिकरम तम बीजैरे। प्रगट प्रताप पीन जिन चरणें। चंदकपूर नमीजैरे । नवि० ॥ ४ ॥ इति ॥ काव्यं ॥ यःसत्कांचननाजने शुचितरे मण्युत्तमैर्मंरुिते । श्लीलान्यष्ट सुमंगलानि विधिना मंरूयप्रनो सन्मुखे। नक्त्यात्मा परिढोकये द्रुचिपरः सोघव्रजं नाशयेत्। निते दुर्गति नूधरं च लनते स्वर्गादि मोक्षाश्रयं॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मने अनंतानंत ग्यांनसक्तये जन्म० श्रीमज्जि० नोगोपनोगव्रत नुपदेशकाय अष्टमंगलं यजामहे स्वाहाः॥ इति नोगोपनोग व्रत आठमी पूजा॥

## ॥ ❀ ॥ अथ नवमी अनरथ दंडव्रते तंदुल पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ नवि ए व्रत अष्टमधरो। अनरथ दंरू विचार । पाप चिरंतन नुपशमै । प्रगटै पुन्यप्रचार ॥ १ ॥ सुगणसनेही साजन श्रीसीमंदिरसामि। अ० ॥ ए चाल ॥ त्रिकरणशुद्ध निसुणनवि अनरथ दंरू विचार। समकित सुनटनो गंजन नंजन संवर द्वार। मनमथ बोधविकासक शास्त्र पठन अधिकार। मुख नू दृग तनुथी करै नंरूकुचेष्टागार ॥ १ ॥ हास्यथकीवली कुबचन नाषण मुखरप्रबंध। ऊखल मूशल घरट्टादय अतिधरण दुरंध। स्नानसमें जल तेल अधिकतर अप्रतिबंध। पापविधाना देशप्रकाशन दूषणखंधासरस वस्तुनृत पात्र मात्र विन ढादनठान। धरणकरण सुबिवेकबिकल तिम दानादान। इम सहु अनरथ करम अवरापिण दुःखनी खान । व्यर्थ पणें मनमान्यां ढेदै पुन्यप्रधान॥ २ ॥ इण कारिपूर्वै केइगया नरसंकटधाम। व्रतग्रहिनें रहियै तव लहियै शिवसुखठाम। ए व्रत तरणी नवोदधि तारण तरण प्रकाम। कुशलकला नितकरतां प्रगटै अनिनवमांम ॥ ४ ॥ इति ।

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ नवमी श्रीजिनराजनी । पूजा परमविलाश । विमलाक्षत भरिभाजनें । भविजन करो प्रकाश ॥१॥ राग पीलू ॥ अबतो उधास्यो मोहि चहीये जिनंदराय । राखुं भरोसेमें रावरे चरणको । अ० ॥ ए चाल ॥ श्रीजिनवरजीकी सेवा सारे । सो भवभय दुःख दूरनिवारे । श्रीजि० ॥ तंदुलविमल सकलगुण मंडित । खंडितदोष रहित उरधारे । कंचनपात्र भरी जिन आगे । ढोकनबुद्धि प्रबल सुविचारे ॥ श्रीजि० ॥ १ ॥ या पूजन जन तन मनरंजन । गंजन कुगतिकुं बोधविदारे । सबल करम नग भेदनहारो । भवन भवोदधि पारउतारे ॥ श्रीजि० ॥ २ ॥ सुमति साक्षुभव आन मिलावे । तेणिण पद दिवशर्म समारे । पीनमहोदय धार भावधरि । चंदकपूर सनूर नि हारे ॥ श्रीजिन० ॥ ३ ॥ काव्यं ॥ यःखंडजाति गुणवृंद समन्वितानि । नाढोकये द्विपुलनिर्मल तंदुलानि ॥ कर्म्मावलिं झटति छेद्य हिमाञ्जिनाग्रे । सोवैभजे छिवसुखं सुतरामनंतं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँपरमात्मने अनंतानं० ज० श्रीमज्जि० अनरथदंड विरमण व्रत उपदेशकाय अक्षतं यजामहे स्वाहाः ॥ इति नवमी अनर्थ दंड विरमण व्रत पूजा ॥ ॥ ९ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ❀

## ॥ ❀ ॥ अथ दशमी सामायक व्रते दर्पण पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ नवमो नव निधि जाणिये । सामायकव्रत सार । सुर जे हनी आसाकरे । सुरतरु समदातार ॥ १ ॥ राग ॥ आयरहो दिल बाग में होप्यारे जिनजी । आय० ॥ ए चाल ॥ सामायक व्रत पालरे । भ विकजन । सामाय० ॥ टेर ॥ त्रिकरण त्रिकजोगे इकमहुरत । निरतीचारे । चालरे । भवि० ॥ १ ॥ सा० गृहव्यापार तजीनें सुभमन । धारि निरवद्य विशालरे । भ० ॥ २ ॥ सामा० ॥ मन वच वपु प्रणिधान असेवन । स्मृति विहीनता टालरे । भ० ॥ ३ ॥ सा० ॥ द्वात्रिंशत दूषण परिहारिनें । पंचम गुण वरमालरे । भ० ॥ ४ ॥ सा० ॥ इम धनमित्र तणीपर सीझो । कुश लकला परनालरे । भ० ॥ सा० । इति ॥ ❀ ॥ दूहा ॥ दशमी दर्प्पण पूज ना । कीजे श्रावक सुद्ध । सुरपादपसम शंकरण । हरणपाप संकुद्ध ॥ १ ॥ राग कालिंगडो ॥ नेम प्रभुजीसुं कहज्योजी म्हारा । नेम० ॥ ए चाल ॥ जिन पूजनमें रहीयेरे । म्हारा जि० । मन वंछित फल लहीयेरे । म्हां०जि०

॥ टेर ॥ कंचनमणी रतनेकर जमियो । वर दरपण करगहीये । जिनवर सनमुख दाखन विधिसें । सकल करम वनदहीयैंरे । म्हांरा । जिन० ॥ १ ॥ प्रभुजीकीसेवा सब सुखदाई । भावभक्ति उरचहीयै । शिववनिता तुम प्रेम विलूधै । अपर अधिकस्युं कहीयैंरे । म्हां० ॥ २ ॥ जि० निजकसरीर प्रमाद वसै करि । भवदल भीतिनसहीये । सुभमन समकित वीरसंगले । चंदकपूर निवहियैंरे । म्हां० ॥ ३ ॥ जि० । इति ॥ काव्यं ॥ रुचिर निर्मल दर्प्पण दर्शनं । विनयभृद्धदयः किलकारयेत् । जिनपते रचिरा द्भवसंगमं । सचनिरस्य भजे द्भिवमंजसा ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मने अनंतानंत ग्यानसक्तये जन्मजरा० श्रीमज्जि० सामायक व्रत ग्रहण उपदेशकाय । दर्पणं यजामहे स्वाहाः ॥ इति दशमी सामायक व्रत पूजा ॥ १० ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ इग्यारमी देशावगासी व्रते नैवेद्य पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ दसमो व्रत हिव भवियणा । धारो धरि वर भाव । संसाराणव गहिरनो । तारण वर तरनाव ॥ १ ॥ सिद्धाचलगिरिभेट्यारे । धन्य भाग हमारा । सिद्धा० ए चाल ॥ ❀ ॥ श्रद्धा धर मन भाजेरे । घनपाप तिहारा । श्रद्धा० । भाजे० । टेर ॥ विमल सकल सुभ विनय धरीनें । गुरु मुख वचन हजारा । ए व्रत सुंदर दिल धरो भविजन । देशावकास विचारारे । घनपा० । श्रद्धा० ॥ १ ॥ द्रव्यानयन प्रेक्षप्रयोगै । सब्द रूप अनुसारा । पुग्गल पेक्षण प्रभृति सकलना । तजीयै दूषण धारारे । घनपा० ॥ २ ॥ परमोत्कृष्ट जघन्य प्रकारै । प्रत्याख्यांन प्रचार । सहु व्रतनो आगमन ए व्रतमें । गुणमणि रयण भंडारारे । घनपा० ॥ ३ ॥ कर्म कषाय हरीनें छेदै । चउगति गेह विहारा । अजरामर धनदैलह्योनिरमल । कुशलकला कारिसारारे । घनपा० ॥ ४ ॥ श्रद्धा० ॥ इति ॥ दूहा ॥ एकादशमी पूजमें । विवध भांति नैवद्य । मेल करो जिनराजनी । दायक सुखनिरवद्य ॥ १ ॥ राग कल्यांण ॥ तेरी पूजावणी है रसमें । होते० । एचाल ॥ ❀ ॥ सेवासारो श्रावक जिन चरणैं । होसे० । टेर ॥ मोदक लपनश्री वर घेवर । शिता सुरस घृत झरणैं । मुक्त चूर विंध्रादिक वहुतर । नैवेद्य नानावरणैं । होसे० ॥ १ ॥ रयणांकित कंचन भाजन भरि । मन वय तनु थिरकरणैं । करिढोकन विधि परम विन

य धरी । रहियै नित प्रभु सरणें । होसेवा० ॥ २ ॥ दुःखदल नासन या पूजन विधि । निर्वृति विशद सुख भरणें । चंदकपूर कहत भविजनके । क लिमलमाला हरणें । होसेवा० ॥ ३ ॥ इति ॥ काव्यं ॥ धवल धाम शिता र्प्पि समुद्भवे । विमलभक्ति समन्वित कर्प्प रे । जिनपते विंदधाति वियूषनं सजलभते शिवशं प्रवरान्नकैः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमात्मने अनंतानंत० ग्यां न सक्तिये जन्म० श्रीमज्जि० देशावगासिक व्रत द्रढ ग्रहण उपदेशकाय नै वेद्यं यजामहे स्वाहाः ॥ इति इग्यारमी देशावगासी व्रत पूजा ॥ ११ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ बारमी पोसहव्रते ध्वजपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ व्रतपोषध इग्यारमो । भावो भविकविधान । ध्यावो ज्युं द्रुतसंहरै। भाक्तनकर्म वितान ॥ ए देशी ॥ इण सरवरियानी पालऊभादोयराजवी । म्हां रालाल ऊभा० ए चाल ॥ भविजन भाव विसाल प्रमाद नीवारीयै । म्हां० प्र० टेर ॥ पोसहव्रत चितमांहि विनयधरि धारीयै । म्हांरा० वि० ॥ ते पिण दुविधप्रकार चतुर न विसारियै । म्हां० च० ॥ प्रतिवासर प्रतिपर्व्व सजैतिम सारियै । म्हां० स० ॥ १ ॥ पडिलेहण धुरधार सकल किरिया करो । म्हां० स० ॥ परिठावण विधिवाद मयाधरि आदरो । म्हां० म० षटकाया संघट्ट तजीनें संचरो । म्हांरा० त० ॥ अचपल थई पचक्खांण विविधमनसंभरो । ह्मां० ॥ २ ॥ वि० ॥ बलिसहु दूखण टालिनें पापनिकंदियै । ह्मां० पा० ॥ चौगति च्यार कषाय करमदल छंदियै । ह्मां० ॥ इण विधि तारण तरण सुगु रुपदवंदियै । ह्मां० सु० ॥ कुशल कलादल मालकरी चिरनंदियै ॥ ३ ॥ ह्मं० क० इति ॥ दूहा ॥ द्वादशमी धज पूजमें । घोषणदेई अमार । धरियै द्वादश भावना । तरियै भवजलपार ॥ १ ॥ राग देशाख ॥ कुबजानें जादु मारा ॥ ए चाल ॥ प्रभुजीसें प्रीतलाना । करीध्वजपूजन विविधानाहो । प्र० ॥ १ ॥ टेर ॥ जोयण सहस मानमणि मंडित । कंचनदंड रचानाहो । प्र० ॥ २ ॥ पंचवरणयुत वसनपताका । अधिवासित लहकानाहो । प्र० । ३ ॥ दक्कनाद करी तीन प्रदिक्षणा । रोहणविधि मनभानाहो । प्र० ॥ ४ ॥ या विधिमकल करम रिपुदारण । जोतिमें जोतिममानाहो । प्र० ॥ ५ ॥ ज गतारण श्री जिनदरशणमें । चंदकपूरलुभानाहो । प्र० ॥ ६ ॥ इति काव्यं ॥

भव्यार्चंति ध्वजवरैः सधुभैः सलीलै । जैनेश्वरं कनकदंड युतैः सशोभैः॥ कर्मारि वृंदजय लब्ध समन्वितैर्यो । वैसोभजे शिव दिवादिसु राज्यलक्ष्मीः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमात्मने अनंतानंत जन्म० श्रीम० पोसहव्रत ग्रहण उपदेशकाय ध्वजं यजामहे स्वाहाः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

इति बारमी पोसहव्रते ध्वजपूजा ॥ १२ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ तेरमी अतिथिसंविभाग व्रते फल पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ द्वादशमोव्रत सुखफलद । साधु दांनसनमान । अजरामर पदसंपजै । सालिभद्र अनुमान ॥ १ ॥ राग कजरी ॥ मेरो मनमोह्यो माई आणंदजिलै आ० ॥ ए चाल ॥ साधुदान व्रत भवि हृदय धरो । हृदय धरोरेभाई हृदय धरोरे । सा० ॥ टेर ॥ व्रतसंयम गत परलिंगीनें । पखिला भन मति रिजुनकरो । रिजु० ॥ १ ॥ भा० सा० ॥ जिनमत मुनिवर चरण नमीजै । अशनादिक देई सुकृतवरो । सुकृ० भा० । सा० ॥ २ ॥ वलि पंचातीचार निवारी । परम विरतिना विघन हरो । विघ० भा० ॥ ३ ॥ सा० श्रीश्रेयांसनें चंदन वाला । अनुमानें पदनिर्वृतिवरो निर्वृ० भा० ॥ ४ ॥ सा० इति ॥ दूहा ॥ फलदल पूजा तेरमी । भविभाजन कमनीय । भविक रचौ भगवाननी । भवविषधर दमनीय ॥१॥ राग ष्याल ॥ लोभी नैनारे लोभी नैना । हो दरशणके० ए चाल ॥ ❀ ॥ लोभीसैणारे लोभीसैणा हो पूजन के लोभीसैणा ॥टेर॥ पूजनविधि प्रभुकी दिल धरलै । थिर करि मनतनु वैणा । हो पू० ॥ १ ॥ श्रीफल पुंगी वीजपूर वलि । आम्र कदली फल लेणा । हो पू० ॥ २ ॥ इम नानाफल गहिप्रभु आगै । भविभाजन धर दैणा । हो० पू० ॥ ३ ॥ भक्ति विमल सुचितर धर मनमें । प्रभु समरण दिनरैणा । हो पू० ॥ ४ ॥ कपूरकहै प्रभुपद पंकजमें । षट्पद भए लुगनैणा । हो पू० ॥ ५ ॥ इति ॥ कलश ॥ हांहो यश धारा । प्रभुजीका वचन अमृत यश धारा ॥ टेर ॥ सुर नर मुनि तिरियग वन सींचन । बचन सजल घनकारा ॥ हांहो० प्र० । विक्रमपुर श्रीत्रिशलानंदन । जिनवर त्रिभुवन प्यारा । द्वादश व्रत पूजन विधि पभणी । भवियण गण हितकारा ॥ हांहोहि० १ प्र० ॥ गुरु खरतर जिन चंद्र सूरिवर । राजै विगति विकारा । श्रीमति भा

श्रुति रादि कलितके । धरि मन बचन अगारा । हांहो० आ० प्र० २ ॥ संवत रस त्रिक निधि रात्रिकर । मासाश्विन मनुहारा । धवलपक्ष प्रतिपद तिथि भोजन ॥ रजनीपति सुतवारा ॥ हांहो सु० ३ । प्र० ॥ श्रीजिनरत्न सूरिशाखाधर । पाठकपद विसतारा । रूपचंदगणि चरण कमलमें । कुशलसार मधुकारा । हांहो म० प्र० अपर नामकरि चंदकपूरा । रचि जिनपति नुतिसारा । लक्ष्मीप्रधान प्रवर गणिवरकी । प्रेरणया सुविचारा । हांहो०प्र० ५ इति ॥

॥ ❀ ॥ काव्य ॥ जंवाम्रादि फल व्रजैः ससुरसै र्गंधादिभि र्मिश्रितै । नूनं । द्रव्य हृत् इवेश्च विधिना कुर्यात् प्रभोरर्च्चनं । भक्तः स प्रभु पूजनैक निरतो भूयोपि भूयो भजे । द्धर्म्मस्वर्ग तरोरकं सुखफला गारं वरं निर्मलं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्री परमात्मने अनंता० श्रीमज्जि० अतिथि संविभाग व्रत उपदेशकाय फलं यजामहे स्वाहा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

इति श्री साधुकपूरचंदजीकृत बारह व्रत पूजा संपूर्णम् ॥ ❀ ॥ ॥❀॥

## ॥ ❀ ॥ अथ संक्षिप्त विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ विशाल जिन मंदर अथवा धर्मशालामें त्रिगढ पीठ सम वसरण की स्थापना करै । जिसपर पूर्व दिशकी तरफ श्रीमहाबीर स्वामी, एवं चारे दिशें चार प्रतिमा स्थापन करै । आगे एक चौखूणा अथवा चांदी पीत लादिकका पट्ट स्थापन करै । जिसपर एक बीचमें । ६ ऊपर । ६ नीचे एवं १३ साथिया करके १३ चावलोंका पुंज करै । ऊपर व्रतनाम युक्त १३ चिठी स्थापन करै । वामपासे कल्पवृक्ष, दहिणें पासे धजा अष्टमंग लीकादि सोभता अतिशय स्थापन करै ॥ अब १३ चिठी लिखनेकी रीति ॥

॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्री सर्व धर्म मूल श्री सद्दर्शनायनमः ॥

॥ २ ॥ ॐ ह्रीँ श्री स्थूल प्राणातिपात विरमण व्रतायनमः ॥

॥ ३ ॥ ॐ ह्रीँ श्री स्थूल मृषावाद विरमण व्रतायनमः ॥

॥ ४ ॥ ॐ ह्रीँ श्री स्थूल अदत्तादान विरमण व्रतायनमः ॥

॥ ५ ॥ ॐ ह्रीँ श्री स्थूल मैथुन विरमण व्रतायनमः ॥

॥ ६ ॥ ॐ ह्रीँ श्री स्थूल परिग्रह परिमाण विरमण व्रतायनमः ॥

॥ ७ ॥ ॐ ह्रीँ श्री दिशा परिमाण गुण व्रतायनमः ॥

॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्री भोगोपभोग परिमाण गुण व्रतायनमः ॥
॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं श्री अनर्थ दंड विरमण गुण व्रतायनमः ॥
॥ १० ॥ ॐ ह्रीं श्री सामायक शिक्षा व्रतायनमः ॥
॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं श्री देशावगाशीरूप शिक्षा व्रतायनमः ॥
॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं श्री पोषधोपवासरूप शिक्षा व्रतायनमः ॥
॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं श्री अतिथि संविभाग दानरूप शिक्षा व्रतायनमः ॥

॥ ❋ ॥ इसीतरै चिठी १३ लिखके स्थापित करै। तीन नवकार गुणके वाशक्षेपसें प्रतिष्टत करै ( और ) जल, चंदन, पुष्प, धूप, दीप, नैवद्य, फल, अक्षत, वस्त्र, धजा, अष्टमंगलीक आदि तेरै तेरै, पूजाके लायक द्रव्य १३ थाल्यामें लगाय दोनूं तरफ रखै। पीछैं स्नात्र करायके पूजा करावै। जो पद की पूजा सरू होय सो थाली लेतो रहै चढातो रहै ( परंतु ) नालेरका गोटा १३ वरग लगाया हुवा और धजा १३ व्रतका मांडलापर व्रत दीठ चढावै। बाकी द्रव्य सर्व थाल्यांमें दोनुं तरफ रखै। दीपक पूजामें १३ दीपक तो एक थालीमें रखै। और वारह व्रतका अतीचार १२४ वर्जण निमत्त १२४ एकसो चौवीस दीपक मांडलेके चारुं तरफ सोभता श्रेणीवद्ध रखै इत्यादि यथा शक्ति चित्तकी उदार वृत्तीसें पूजनविधि करै, करावै, करतां की अनुमोदना करै। विशेष चित्तकी उमंग होय तो वाजित्रादि उछवके साथ मोटी धजा, कल्पवृक्ष अष्टमंगलीक नगरमें फिराकर लावै। उत्तम उत्तम द्रव्य भगवानके भेट करै ॥❋॥ इति वारह व्रत पूजा विधि संपूर्णम् ॥

## ॥❋॥ अथ पाठक बालचंदजी कृत पंच कल्याणक पूजा ॥❋॥

### ॥ ❋ ॥ तत्र प्रथम च्यवन कल्याणिक पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ( दूहा ) ॥ ज्योतिरूप जगदीशनो, अद्भुत रूप अनूप ॥ प्रवचन प्रभुता प्रगट पण, जय जय ज्योति सरूप ॥ १ ॥ ❋ ॥ चौवीसे जिनवर नमी, पंच कल्याणक रूप ॥ शासन नायक वरणवुं, दर्शन ज्ञान सरूप ॥ २ ॥ ❋ ॥ कल्याणक उछव करे, इंद्रादिक जे देव ॥ ते भावे भविजन करे, श्रीजिनवरनी सेव ॥ ३ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ राग सरपदो ॥ जोति सकल जगदीशनी ॥ हां रे जगदीशनी ए ॥ चार निक्षेप प्रमाण ॥ नाम जिनादिक जिन कह्या, आगममांहि प्रधान ॥१॥

॥ गाथा ॥ नाम जिणा जिण नामा। ठवण जिणा उ जिणंद पडिमाउ ॥ दव्वजिणा जिण जीवा। भाव जिणा समवसरणत्था ॥ १ ॥ ❋ ॥

॥ ढाल तेहीज ॥ विन कारण कारज नही, हां रे का० ए ॥ ए सब लोक प्रसिद्ध ॥ भाव निक्षेप प्रधानता। कारज रूपें सिद्ध ॥ १ ॥ विण आकारें द्रव्यनो ॥ हां० ॥ द्र० ए ॥ न हुवे थापन सिद्ध ॥ नामविना आकारनो, प्रगट पणे नवि बुद्ध ॥ २ ॥ नामादिक कारण सही ॥ हां० ॥ का० ए ॥ इन विन भाव न होय ॥ भाव विशुद्धे जिनतणी। पूज करो सहु कोय ॥ ३ ॥ व्यवहारें निश्चय लहे ॥ हां० नि० ए ॥ कारण कारज होय ॥ पावरू शाला क्रम करी, सौध चढे सहु कोय ॥ ४ ॥ ❋ ॥

॥ (दूहा) ॥ ज्ञानकला कलितातमा। लोकालोक प्रकाश ॥ व्यापकभावें थिर रह्यो। शुद्ध विकास विलास ॥ १ ॥ ❋ ॥

॥ राग सारंग ॥ हांहो रे देवा, जोति सकल जिन राजनी। सहु लोकालोक प्रकाश ए ॥ हांहो रे देवा, राजत श्रीजिनराजनी। वाणी प्रवचन शुभ वास ए ॥ १ ॥ हांहो रे देवा, मात नमुं नित्य शारदा। गुरुपंच कल्याणक सार ए ॥ हांहो रे देवा, तीर्थंकरना वरणवुं। गुण शास्त्र परंपर धार ए ॥ २ ॥

॥ (दूहा) ॥ शासन नायक जग धणी। त्रिभुवन पति परमेस ॥ पर उपगारी प्रभु तणा, गुण गावत सहु वेस ॥ १ ॥ ❋ ॥

॥ ढाल तेहीज ॥ हांहो रे देवा, वीश थानक करि सेवना, बांध्युं जिन नाम प्रधान ए ॥ हांहो० ॥ दिव्य अमर सुख अनुभवे। प्राये प्रभु पुण्य प्रमाण ए ॥ १ ॥ हांहो० ॥ निरमल तर वर ज्ञानना। धारक कारक शुभयोग ए ॥ हांहो० ॥ शब्द वरण रस गंधना। शुभ फरस तणा वर भोग ए ॥ २ ॥ हांहो०। शाश्वत सिद्धायतण तणा। नित उत्सव करत सुरंग ए ॥ हांहो० ॥ बालचंद पाठक कहे। नित मंगल होत सुचंग ए ॥ ३ ॥ ❋ ॥

॥ (दूहा) ॥ पुण्य पूर्व भव प्रभुतणो। प्रगट्यो प्रगट प्रभाव ॥ सुरकुमरी नित प्रति करे। नाटक नवनव भाव ॥ १ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

अवतरे माता उदरनमें ॥ आ० ॥ १ ॥ नृपति सदन बहु सुपन शास्त्र विध, अर्थ विचार करि निज मनमें ॥ पुत्र रतन फल वचत नृपति कुल, परम कल्याण होत जनजनमें ॥ आ० ॥ २ ॥ प्रफुलित हरख भरत हीय उल्लसत, जिन जननी सुतात सुन तनमें ॥ दिन दिन बढत प्रवर धन जन मन, अधिक उत्साह घर घरनमें ॥ आ० ॥ ३ ॥ रूप्प रजत मणि माणक मोतियें, शंख प्रवाल शिल वरसनमें ॥ धनद धनद सुरइंद्र हुकमतें, भरत भंमार नृपके सदनमें ॥ आ० ॥ ४ ॥ ताल कंसाल मधु वीण वजावत, गीत गान गावत तन ननमें ॥ दुन्दुभि मुरज मृदंग घन गरजत, गरज गरज मानुं जैसे घनमें ॥ आ० ॥ ५ ॥ सुर नर लोक मांहे अधिक उत्साह वाह । निशिदिन होत जनजनपदमें ॥ इंद्र इंद्राणी नृप दोहद पूरत, मनोरथ होत जो जो मातु मनमें ॥ आ० ॥ ६ ॥ परम कल्याण शुभयोग संयोग भयो । शुभ घरि शुभ ग्रह शुभ दिनमें ॥ वरण सके न ताहि कवि अवसरकों, आनंद भयो है तीन भुवनमें ॥ आ० ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मनेऽनंतानंत ज्ञानशक्तिये जन्मजरामृत्युनिवारणाय, श्रीमज्जिनेंद्राय चवनकल्याणके अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति प्रथम चवन कल्याणक पूजा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ द्वितीय जन्मकल्याणक पूजा ॥ ❀ ॥

( दूहा ) ॥ प्रगटे पावन पतित प्रभु, अधम उधारन काज ॥ नृपकुलमांहे अवतरे, त्रिभुवनके शिरताज ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ राग सोरठ ॥ ❀ ॥

॥❀॥आज अधिक आनंद भयो रे वाला, आज सुरंग वधाई रे ॥ आलो, जगपति जिनवर जनमिया रे वाला, सुर वधुवन मिल आई रे ॥१॥ आलो आज आनंदघन उलस्यो रे वाला, दिशि कुमरी हरखाई रे ॥ आलो दशदिश निर्मलता थई रे वाला, फूल रही वनराई रे ॥२॥ आलो फूलें फूली वनलता रे वाला, मधु मालती महकाई रे ॥ शालि प्रमुख सहु धान्यनी रे वाला, निपजी राशि सवाई रे ॥ ३ ॥ नारकी जीवें नरकमां रे वाला, क्षण इक शाता पाई रे ॥ सव जन मन हरषित भयो रे वाला, नृमंमल छवि आई रे ॥ ४ ॥ शुभदिन शुभ महुरतवली रे वाला, शुभग्रह शुभ पल आई रे ॥

जन्म थयो जिनराजनो रे वाला, प्रगटी पूर्व पुण्याई रे ॥ ५ ॥ ए पढी पुष्प तथा गुलाबजलकी वर्षा करे ॥ ❋ ॥

॥ ( सोरठो ) ॥ त्रिभुवन मांहि सुरूप, जन्मसमय जिनराजनें ॥ वाजित्र वजत अनूप, सुर नर कृत उत्सव हुवे ॥ १ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ रावण निरत वणावे हो भला एचाल ॥ ❋ ॥

॥❋॥ आज आनंद बधाई रे, देखो, आज आनंद वधाई ॥ जयजयकार भयो जिनशासन, सुरकुमरी हरखाई रे ॥ दे० ॥ १ ॥ घरवर गोरी मंगल गावत, मोतियन चोक पुराई रे ॥ ईति उपद्रव भय सब भागे, खार समुद्रे जाई रे ॥ दे० ॥ २ ॥ आज सनाथ भयो हे त्रिभुवन, ॥ जिनवर जनम्या भाई रे ॥ आज अधिक जग हर्ष भयो हे, धन धन माता कहाई रे ॥ दे० ॥ ३ ॥ जन्म महोत्सव करननकुं सब, दिशिकुमरी मिल आईरे ॥ करि कदलीगृह सुंदर रचना, पावन कर उर लाई रे ॥ दे० ॥ ४ ॥ जिनजननी जिनवर पय प्रणमी, मस्तक आण चढाई रे । स्नान करावत उभय शरीरे, तैलाभ्यंग कराई रे ॥ दे० ॥ ५ ॥ भूषण भूषित अंग बिलेपन, देवदूष्य पहराई रे ॥ दर्प्पण ले मंगल घट थापी । चामर जुगल ढुलाई रे दे० ॥ ६ ॥ पंचवरनके फूल सुगंधित, सुर कुमरी वरषाई रे ॥ होम करी रक्षापोटरिया, जिनवर करे बंधाई रे ॥ दे० ॥ ७ ॥ मंगल गावत जिन जगजननी, निजगृह मांहे ठाई रे ॥ सफल भयो निज आतम जाणी, दिशि कुमरी घर आई रे ॥ दे० ॥ ८ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ।

( दूहा ) ॥ अतिहि अधिक उत्सव करी, गइ कुमरी निज थान ॥ इं हवे उत्सव करे, जन्म समय जिन जाण ॥ १ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ राग गोडी ॥ सांऊ समे जिन वंदो ॥ ए देशी ॥ ❋ ॥

॥❋॥ आज उछव मन भायो रे ॥ देखो माई ॥ जगजननी जिन जायों ॥ दे० ॥ आ० ॥ त्रिभुवन मांहि प्रकाश भयो हे, इंद्रासन थररायो रे ॥ दे ॥ आ० ॥ १ ॥ अवधिज्ञानधर जिनजीकुं निरखत, हृदय कमल उलसाय रे ॥ हरिणगमेषी इंद्र हुकमतें, घंट सुघोष घुरायो रे ॥ दे० ॥ आ० ॥ २ बनठन नवनवरूप मनोहर, सुरसमुदय मन भायोरे ॥ सुरकुमरी वरभूषण

सिन, अद्भुत रूप बनायोरे ॥ दे० ॥ आ० ॥ ३ ॥ नव नव यानवाहन रच सुरवर, सुरगिरि शिखरें आयोरे ॥ चौसठ इंद्र करत अति उत्सव, मेघ घटा बररायोरे ॥ दे० ॥ आ० ॥ ४ ॥ काली घटा वरदामनि चमकत, दादुर मोर सुहायोरे ॥ अतिहि सुगंध पुष्पव्रज वरसत, मोतियनकी झर लायोरे ॥ दे० ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ (दूहा) ॥ शक्र जाय जिनवर गृहे, जिनजननी जिनराज ॥ प्रणमी श्रीमहाराजनी, भक्ति करे सुरराज ॥ १ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ सुंदर नेम पियारो माई ॥ ए देशी ॥ ❋ ॥

॥ तुम सुत प्रान पियारो माई ॥ तु० ॥ ए आंकणी ॥ जगवत्सल जगनायक निरख्यो, धन धन भाग्य हमारो माई ॥ तु० ॥ १ ॥ धन जगजननी तुम सुत जायो, अधमउधारण हारो माई ॥ धन धन प्रगट भयो जग दिनकर, त्रिभुवन तारन हारो माई ॥ तु० ॥ २ ॥ सब सुर चाहत स्नात्र करनकुं, सुरगिरि प्रभुजी पधारो माई ॥ कर जोमी प्रभु अरज करतहुं सब जनकाज सुधारो माई ॥ तु० ॥ ३ ॥ में सेवक तुम सुत चरणनको, आयो हूं अधिकारो माई ॥ इंद्र कहे पदपंकज प्रणमुं, भय सब दूर निवारो माई ॥ तु० ॥ ४ ॥ पांच रूप करि प्रभुजीकुं लावे, पांडुगवन सिणगारो माई ॥ चोसठ इंद्र महोत्सव करिहे, पूजन अष्ट प्रकारो माई ॥ तु० ॥ ५ ॥

॥ इहां प्रभु प्रतिमा पंचतीर्थी अंदरसें लायके, सिंहासण ऊपर स्थापन करे (पीछे) स्नात्र पूजा करावे ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ (दूहा) ॥ पंचरूप कर इंद्र जिन, पंडुग वन ले जाय ॥ सिंहासन उछरंग गहि, स्नात्र करे सुरराय ॥ १ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ इतनो गुमान न करियें छबीली राधा हे ॥ ए देशी ॥ ❋ ॥

॥ जिनजीको पूजन करियें, हां रे हो रंगीले श्रावक हो ॥ जि० ॥ द्रव्य भाव वेहुभेदें करतां, भव सागर निस्तरियें ॥ जि० ॥ १ ॥ गंगाजल चंदन पुष्पादिक, अष्टविध मंगल धरियें ॥ भावविशुद्ध जिन गुण गावो, नाटक नवनव करियें ॥ जि० ॥ २ ॥ बहुविध प्रभुकी भक्ति रचावत, वर्नन करन न सरियें ॥ वो आनंद देखे मोह जाने, दुःख सब दूर हरियें ॥ जि० ॥ ३ ॥

पूजन करि प्रभुकुं घर लावे, आतम पुण्यें भरियें ॥ कर अठाइ महोत्सव आवत, सब सुर मिल निज घरियें ॥ जि० ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं प० अ० ज० जन्मकल्याणके अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ २ ॥ ❋ ॥ ॥❋॥

## ॥ ❋ ॥ अथ तृतीय दिक्षा कल्याणक पूजा ॥ ❋ ॥

॥ (दूहा) ॥ सुरकृत उत्सव अति अधिक, भये अनंतर प्रात ॥ मात पिता उत्सव करे, निज कुलक्रम विख्यात ॥ १ ॥ पार नही धनको जहां, अगणित भरे भंमार ॥ दान मनोवंछित दिये, दयावंत दातार ॥ २ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ गात्र लूहे० ॥ ए देशी ॥ ❋ ॥

॥ जिनजन्म महोत्सव रंगशुं रे, भये प्रात करत उछरंगशुं ॥ रंगसुं हां रे देवा रंगशुं ॥ नृपउत्सव करे अति घणो ॥ १ ॥ पुत्रजन्म कुल क्रम करे रे देवा, जगजश कीरत विस्तरे ॥ वि० हां०॥ घरघर उत्सव रंगमें ॥ २ ॥ सुर वधु मिल सुरसंगशुं रे ॥ देवा० ॥ करे नाटक नवरंगशुं ॥ रंग० हां रे० ॥ बाललीला जिनसंगमें ॥ ३ ॥ रूपातिशयें शोभता रे ॥ देवा ॥ इंद्रादिक मन मोहता ॥ मो० हां रेमन० ॥ विद्याप्रभु विस्मयवती ॥ ४ ॥ परमप्रमोद प्रवीणता रे देवा, सुरक्रीमा अतिशयवता ॥ अ०हां० ॥ वैक्रिय शक्तिसमेलशुं रे ॥ ५ ॥ गावतगीत उमंगशुं रे देवा, वाजित्र नवनव रंगशुं ॥ रं० हां० ॥ वजित अहोनिशि संगशुं रे ॥ ६ ॥ ❋ ॥

॥ ( दूहा ) ॥ तीन ज्ञान अतिशय धरे, अतिशय कला सुधाम ॥ सुर सुसंग क्रीमातिशय, अतिशयगुण अभिराम ॥ १ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ पंच वरणी अंगी रची ए देशी ॥ ❋ ॥

॥❋॥ वरणी न जाती रे, व० ॥ जिनजीकी शोभा व० ॥ चित्रजात नर सुरासुर निरखत, उरन एसो जग भाती ॥ जि० ॥ १ ॥ अनंत गुणें करि शोभित प्रभु जी, शुद्ध संवेग सोवन जाती ॥ शिव मारग शुध सेवत निशि दिन, पुण्यपुरुष पायाराती ॥ जि० ॥ २ ॥ पर उपगारी परम पुरुषोत्तम, अद्भुत अनुभव रस पाती ॥ कामभोग वरविबुध प्रकारें, प्रात भये सुख संघाती ॥ जि० ॥ ३ ॥ जसु जस ख्यात प्रगट त्रिभुवनमें, कुल राजन्योत्तम जाती ॥ धन धन तीन भुवनके साहिब, श्याम हमारो वरगाती ॥ जि० ॥

॥ ४ ॥ इंद्र अहोनिशि आवन आवत, देख दरश अति हरखाती ॥ दुन्दु
भि प्रमुख वाजित्र वजत नित । सुरवधु वनमंगल गाती ॥ जि० ॥ ५ ॥
ग, पढके प्रभुकों पुष्प वासक्षेप चढावे ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) ॥ प्रवरभोग प्रभुपुण्यतें । प्रगटे प्रगट प्रधान ॥ गुण
ग्राहक ग्रह वासमें, दर्शन ज्ञान निधान॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग ठुमरी ॥ तुम विन दीनानाथ० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रभुविन दीनानाथ दया विन, कोन कहावत कोई रे ॥ प्र० ॥
ग्रहवासें शुधसंयमधारी, शुभ्रसुभावें होई रे ॥ प्र० ॥ १ ॥ सम्यग्दर्शनभ
वनिर्वेद, स्वतनकी जर खोई रे ॥ प्रभुता प्रभुकी को कहि वरनें, सुर नर नारी
मोही रे ॥ प्र० ॥ २ ॥ शुभलेश्या शुभध्यान रमें नित । आतम निरमल
धोईरे ॥ आतमरूप निहारत निजघर । संगसुमति जह जोई रे ॥ प्र० ॥
॥ ३ ॥ प्रगट प्रकाश आतम उजियारे । साम कहावत सोई रे ॥ ग्रहवासें
शुद्धसंयम रागी, लागी लगन सवाई रे ॥ प्र० ॥ ४ ॥ निजप्रभुता प्रभु
जीनो लीनो, अंतर शत्रु विगोई रे ॥ विषयवासना छीण भई लख । आतम
शक्तिशुं छोई रे ॥ प्र० ॥ ५ ॥ ऐसा कही फूल चढावे ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) ॥ दाता दीन दयाल प्रभु, देत संवत्सरिदान ॥ दूर करै
दारिद्र जग. त्रिभुवनमांहि प्रधान ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मरुदेवानंदकी. क्या छवि लागत प्यारी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जगपति जिनवरकी. क्या छवि मोहनगारी ॥ ज० ॥ मोहत
प्रभुकें मोहनरूपें. निरख निरख नरनारी ॥ क्या० ॥ १ ॥ भोगकर्म अंतराय
कर्म कछु. क्षीण भए निरधारी ॥ दानसंवत्सर घन जिम वरसत, पृथ्वी प्रमुदि
तकारी ॥ क्या० ॥ २ ॥ नवलोकांतिक देव सवे मिल, हाजर होय सुचारी ॥
जय जय मंगल शब्द उचारत. धर्म गहो सुखकारी ॥ क्या० ॥ ३ ॥ दान
धर्म शिवमारग प्रभुजी. प्रगट कियो हितकारी ॥ दाता दीनदयाल जगतमें
जिन सम को सुविचारी ॥ क्या० ॥ ४ ॥ इंद्रादिक सुर सुरी नर नारी, दीक्षो
त्सव अतिभारी ॥ गान दान मनमान तान करी. प्रभुगति सकल सुप्यारी ॥
क्या० ॥ ५ ॥ तजि संसार लियो शुभयोगें. संयम मनरुचकारी ॥ मनपर्यव

वर ज्ञान भयो तब, विहरत पर उपगारी ॥ क्या० ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीँ पं० श्र० ज० श्री दी० अष्टद्रव्यं० स्वाहा ॥ ३ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ चतुर्थ केवलज्ञानकल्याणक पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दोहा ॥ गजवर अश्व समूह रथ, पायक कोमा कोम ॥ जिनदीक्षा महोत्सवसमें, हाजर होय तिण ठोर ॥ १ ॥ इंद्रादिक सुर असुर नर, प्रभुकुं करे प्रणाम ॥ नर नारी आशीष दे। जयजय त्रिभुवन साम ॥ २ ॥ तजि आश्रव संबर गहे, संयमभाव निधान ॥ सब संसार तजी करी, भए अणगार प्रधान ॥ ३ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ तेरी पूजा बणी ते रसमें ॥ ए देशी ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ धारी धारी धारी, जिन भए संयमपद धारी ॥ चरणकमल व लिहारी ॥ जि० ॥ पंचसुमतिधर तीन गुपतिकर। सब जीवां सुखकारी ॥ जि० ॥ १ ॥ जीत लिये उपसर्गपरीसह, शत्रुसेना गणभारी ॥ भयभैरववें निःप्रकंप भए, निर्मम निरहंकारी ॥ जि० ॥ २ ॥ क्रोध मान माया लोभ अकिंचन, आकिंचन ब्रह्मचारी ॥ पुष्करसम निरलेप जगत गुरु, नीरंजन अविकारी ॥ जि० ॥ ३ ॥ चेतन पर प्रभु अप्रतिघाती। खेसम निराश्र यारी ॥ खड्गी शृंग परे एकाकी, अप्रतिबंध बिहारी ॥ जि० ॥ ४ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ( दोहा )॥ रत्नत्रय परिग्रह करी। मुक्तिमार्ग अभिराम ॥ निशि दिन करत विहारक्रम। प्रासुकाम निजधाम ॥ १ ॥ ॥ ॥ ❋ ॥

॥❋ ॥ सद्गुरुजी सुनो मेरी अरजी ॥ ए देशी॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ जिनवरजी जगतहितकारी ॥ जि० ॥ जग वत्सल जगबंधु जगत गुरु, जग नायक जयकारी॥जि०॥१॥कूर्मतणीपर गुप्तइंद्रिया, अप्रमाद भारंमसुचारी ॥ अतिशय धाम धाम निजवीरज, वृषभपरें सुविहारी ॥ जि० ॥ २ ॥ शूर वीर प्रभु सिंहतणी पर। कुंजर करम बिदारी ॥ अतिगंभीर सायरसम शोभित। सौम्यलेश्या सुखकारी ॥ जि० ॥ ३ ॥ तेज पुंज दिनकर सम दीपत, हेम वरण मनुहारी ॥ सर्वसहन कारक धरणीपर, स्वच्छ हृदयकजधारी ॥ जि० ॥ ४ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❀ ॥ ( दोहा ) अनुत्तर धर संयमकिया, कल्पातीतजिणंद ॥ वीतराग विचरे प्रवर, रत्नत्रय जगचंद ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कुबजानें जादू मारा ॥ ए देशी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जाके रागद्वेष भया न्यारा रे, सोई श्याम सकल सुखकारा ॥ जा० ॥ वासी चंदन सम प्रभु जगमें, अपकारें उपकारा रे, ॥ सो० ॥ १ ॥ कंचन काष्ठ समान हे जाके, सुख दुःख सम उपचारा ॥ कोऊ निंदत कोऊ पूजत, जिनजी हे अविकारा रे ॥ सो० ॥ जा० ॥ २ ॥ शिवसुख अरु भवसुख हू न वांछे, वीतराग प्रभु प्यारा ॥ शूरवीर प्रभु क्षपकश्रेणि चढ, मोहनी मल्ल पिछारा रे ॥ सो० ॥ जा० ॥ ३ ॥ क्षायिक संयमने शुभ योगें, अनुत्तर गुण गण धारा ॥ पाठक विजय विमल कहे प्रभुके, चरणकमल बलिहारा रे ॥ सो० ॥ जा० ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दोहा ( घनघाती चउ कर्मकों, क्षयकर क्षायिक ज्ञान ॥ दर्शन लोकालोकको । प्रगट प्रकाशी भान ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग ठुमरी ॥ वस मन क्षत्री कुंभके तीर ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पायो प्रभु भवजलनिधिको तीर, अतुलीबल वरवीर ॥ पा० ॥ अनुत्तर जाके सुमति गुपति हे, अनुत्तरक्षमासुधीर ॥ पा० ॥ १ ॥ मार्दवआर्यव अनुत्तर जाके, रोक्यो आश्रव नीर ॥ संवरजोग क्रिया नवि विणठी, रही ईर्या सुख सीर ॥ पा० ॥ २ ॥ घनघाती सब शत्रुविनाशी, केवलज्ञान सुधीर ॥ पूरन दर्शन प्रगट भयो हे, निज आतम गुणक्षीर ॥ पा० ॥ ३ ॥ प्रातिहार्य अतिशय जिनसंपद, भयो अनुकूल समीर ॥ दे उपदेश भविक प्रतिबोधन, वचनातिशय गंभीर ॥ पा० ॥ ४ ॥ लोकालोक प्रकाश परम गुरु, कहि न शके मति भीर ॥ पाठक विजयविमल परमातम, प्रभुता परम सुधीर ॥ पा० ॥ ५ ॥ ॐह्रीं परमा० अ० ज० श्रीम० केवलज्ञानकल्याणके अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ पंचम निर्वाण कल्याणक पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ इंद्रादिक सुर सब मिली, तीन भुवन शिरदार ॥ सब दरशी सर्वज्ञनो, महिमा करे अपार ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❋ ॥ अतुल विमल मिल्या, अखंम गुणें० ॥ ए देशी ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अतुल विमल प्रभुता प्रभुकी लख, चोसठ इंद्र उछव धरे ए ॥ चार प्रकारके सुर सब मिलकर, समवसरण रचना करे ए ॥ अ० ॥ १ ॥ रजत कनक वररत्नप्रकारें, कनक रत्न मणि कंगुरा ए ॥ वृक्ष अशोक सिंहासन शोभित, तीन छत्र चामर ढुरा ए ॥ अ० ॥ २ ॥ दुंदुभि प्रमुख श्रवण सुखदायक, गहिर सुरे वाजित्र घुरे ए ॥ जानुप्रमाण पुष्पघन वरसत, जलज थलज विकसित सुरे ए ॥ अ० ॥ ३ ॥ साधु साधवी श्रावक श्राविका इंद्रादिक सुरी सुर वरे ए ॥ नरनारी तिर्यग् विद्याधर, द्वादशविध परिषद भरे ए ॥ अ० ॥ ४ ॥ भविजन धर्म तणें उपदेशें, जोजन गामि मधुर गिरे ए ॥ प्रतिबोधत चौमुख श्रीजिनवर, निज निज भाषा अनुसरे ए ॥ अ० ॥ ५ ॥ ए पढके वासक्षेप करे ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दोहा ॥ प्रगटपणें प्रभुकी प्रभा, प्रगट प्रकाशक रूप ॥ प्रगटी प्रभुता परमसम । परमातम पदभूप ॥ १ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ बिगरी कौन सुधारे नाथ विना ॥ ए देशी ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ भूमंडल भविकमल विबोधन, दिनकर सम जिनराया रे ॥ भू० ॥ अणहुंते इक कोमी अमरपद, पंकज भमर सुभाया रे ॥ भू० ॥ १ ॥ ग्राम नगर पुर पट्टण बिचरत, त्रिभुवननाथ कहाया रे ॥ चौसठ इंद्र करे जाकी सेवा, तन मनसें लयलाया रे ॥ भू० ॥ २ ॥ इंद्राणी मिल मंगल गावत, मोतियन चोक पुराया रे ॥ सर्व जीव हितकारक प्रभुजी, निःश्रेयस सुखदाया रे ॥ भू० ॥ ३ ॥ भवजलनिधि निर्यामक जगगुरु, तारक सकल कहाया रे ॥ शासननायक संघसकलकुं । प्रवचन तत्त्व सुनाया रे ॥ भू० ॥ ४ ॥ अनंतगुणाकर प्रभुजीकी महिमा, वरने को कविराया रे ॥ पर उपकारक प्रभुके पाठक, विजय विमल गुण गाया रे ॥ भू० ॥ ५ ॥ ए कहके वासक्षेप करे ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ( दोहा ) ॥ निज निज भाषा भविकजन, तृपत न सुनतहि श्रोत ॥ मीठी अमृत सम गिरा, समझत श्रम नहि होत ॥ १ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❃ ॥ राग कहेरवो ॥ ❃ ॥

॥ ❃ ॥ जिनंदवामिल गयोरे, दोय चरणुं परध्या न ॥ शुक्ल मन गह गह्योरे ॥ जि० ॥ ज्ञायकज्ञेय अनंतनोरे, सबदरसी जिनचंद ॥ सुरतरु सम जग वाल्हहोरे, सेवत सुर नर इंद ॥ धर्ममें ल्ह लह्योरे ॥ दो० ॥ १ ॥ चौदम गुण थानक करेरे, आतम वीर्य अनंत ॥ योग निरोधनकी क्रियारे, सूखम बादरकंत ॥ बंध सब टर गयोरे, सरब संबर भयोरे ॥ दो० ॥ २ ॥ घन कर आत्मप्रदेशनोरे, कर शैलेशी कर्ण ॥ कर्म सकल दूरें क़ियारे, जीर्णवस्त्र जिम पर्ण, मुक्ति पद जिम लह्योरे ॥ दो० ॥ ३ ॥ ज्ञान क्रिया कर कर्मकोरे, क्षय कर पर अनुबंध ॥ निजआतम रूपें लह्युंरे, शाश्वत सुख संबंध, सिद्ध शुद्ध बुध थयोरे ॥ दो० ॥ ४ ॥ ❃ ॥

॥ ❃ ॥ ( दोहा ) अकल अगोचर अगमगम, सिद्ध भए सुविशुद्ध ॥ परमातम प्रभु परम पद, चिदानंद अविरुद्ध ॥ १ ॥ ॥ ❃ ॥

॥ ❃ ॥ राग धनाश्री ॥ तेजतरणिसुखराजे ॥ ए देशी ॥ ❃ ॥

॥ ❃ ॥ तेज तरणि सम राजे, प्रभुजीको ॥ ते० ॥ एकसमयप्रभु ऊरध गतिकर, मुक्तिमहल सुविराजे ॥ प्र० ॥ ते० ॥ १ ॥ सादि अनंत सदा शाश्वत वर, अनंत महासुख भाजे ॥ अचल अगोचर प्रभु अविनाशी, सिद्धस रूप बिराजे ॥ प्र० ॥ ते० ॥ २ ॥ निरुपाधिक निरुपम सुख प्रभुके, कहि न शके कविराजे ॥ अजर अमर अक्षय अविकारी, सकलानंद सहाजे ॥ ॥ प्र० ॥ ते० ॥ ३ ॥ संवत उगणीसे तेरो त्तर, श्रावण शुदि पख राजे॥ श्रीजिनराज तणा गुण गाया, पंचमि दिवस समाजे ॥ प्र० ॥ ते० ॥ ४ ॥ श्रीविक्रमपुर नगर मनोहर, श्रीसंघ सकल समाजे ॥ पंच कल्याणक पूजा प्रभुकी, कीनी हित सुखकाजे ॥ प्र० ॥ ते० ॥ ५ ॥ श्रीखरतरगछ नायक लायक, युगप्रधान पद भाजे ॥ जंगमगुरु भट्टारकवरश्री, जिनसौभाग्य सुराजे ॥ प्र० ॥ ते० ॥ ६ ॥ प्रीत विलास धम्मसुंदर गणि, अमृत समुद्र सुभ्राजे ॥ पाठक विजय विमल प्रभुके गुण, गावत घन जिम गाजे ॥ प्र० ॥ ते० ॥ ७ ॥ हंसविलाश प्रवरगणिवरकी, प्रेरणया सुसमाजे ॥ श्रीजिनवरकी स्तवना कीधी, धर्म्मप्रभावन काजें ॥ प्र० ॥ ते० ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीँ प० ॥ अनं० ॥ जन्म जरामृत्यु निवारणाय: श्री मज्जिनेंद्रेभ्यो निर्वाणकल्याणके अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति श्री पाठक बिजयविमलजीविरचित पांच क० पू० सं० ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ आरती ॥ राग मालवी गोडी ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ शुभ आरती प्रभुकी उदारचित्तें, करो भविक रसालरे ॥ प्रथम धूप सुगंधजिनकुं, उखेवो जिननालरे ॥ १ ॥ भाल निजकर तिलक सुंदर, पहर पुष्प सुमालरे ॥ दक्षिणकर जिन राजप्रभुके, कर आवर्त्त सुथालरे ॥ शु० ॥ २ ॥ यथासगतें शुद्धभगतें, करो दिल खुशियालरे ॥ द्रव्यभावें विविधपूजा, भविकभाव विशालरे ॥ शु० ॥ ३ ॥ गुण अनंत महंत गावो, दयालरे ॥ जन्म सफलो करो भविजन, कहे पाठक बालरे ॥ ॥ ४ ॥ इति आरती ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ पांच कल्याणक पूजा विधिः ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ प्रथम बिंबप्रतिष्ठामें ( तथा ) ऋद्धीवंत सेठ सऊकारादिककी तरफसें ( तथा ) संघ समुदायके तरफसें, जो पांच कल्याणकका उछव होय ( तबतो ) विस्तार विधिसें एकेक दिनमें एकेक कल्याणकका उछव करे। पांच दिनमें पांच कल्याणक करे ( और ) जल यात्रा, चोवीस प्रकारी वीश स्थानक, सतर भेदी, नवपदजीकी एकेक दिन पूजा उछव विस्तार विधिसाथ करावै। ऐसें १० दिनका उछव करै॥ ( यथा ) पहले दिन पूठिया चंद्रवा तोरणादिकसें मंडपकी स्थापना करावे ॥ १० दिग्पालाकों वलवाकुल

रुपियांसें। चवन कल्याणककी थापना करै ( और ) चवन कल्याणककी पांच पूजा पढै ॥ ❋ ॥ इति च्यवन कल्याणक पूजा ॥ १ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ जन्मकल्याणक विधिः ॥ ❋ ॥

॥ तीशरे दिन जन्म कल्याणकको संपूर्ण उछव करै ( जैसें ) छप्पन दिश कुमरीका आगमन, और यावन्मात्र केली गृह रचना, दर्पण दर्शनादिक उछव करै ॥ तिस पीछे सुमेरु पर्वतकी थापनाके ऊपर इंद्रादिकका रूप करके भगवानकों थापन करे। सोनें, रूपे, तांबा, पीतल, मट्टी आदि अनेक तरै का कलश वन सके तो १००८ कलश गंगानदी आदि अनेक ठिकाणेंका जलसें भरभरके स्नात्र उछव करावै ॥ भृंगार १। दर्पण २। रत्न करंरुक ३। स्थाल ४। पुष्प चंगेरिका ५। इत्यादि उपगरण पूजाका सर्व भगवान आगे रखै ॥ सर्व क्षेत्रांकी सुगंधी उषधीयांसें स्नात्र करावे। गुलाबजलकी, पुष्पांकी, रत्नांकी, वर्षा करे। तदनंतर सिधार्थ राजायें जिस माफक उछव कियो उस माफक अपनेसें वन सके जिस मुजब संपूर्ण उछव करे। ( तदनंतर ) घृतसेर २४, । नैवेद्य सेर २४। गुरु सेर २४। फल अछा २४। चढावे। २४ सधव स्त्रियां मिलके २४ गवली करै ॥ जन्मकल्याणककी पांच पूजा पढै। आरती मंगल दीप उतारे ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ दिक्षा कल्याणक विधिः ॥ ❋ ॥

॥ चोथे दिन दिक्षा कल्याणकको उछव करै। खाशा पालखीमें भगवानकों वेठाके, वर घोडो वाजित्रादि सहत वडे उछवसें निकाले। अछा वाग वगीचामें लेजाके। अशोक, आम्रादि, उत्तम वृक्षके नीचे सिंघासनपर स्थापन करके स्नात्र उछव करावे। २४ गज उत्तम वस्त्र चढावे। वाश क्षेप देके नवीन चंद्रवा चढावे। दिक्षा कल्याणककी पांच पूजा गवावे। जैन याचकादिककों दान देवै। साहमीवछल करे ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ केवल ग्यान कल्याणक पूजा विधि ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ पांचमें दिन त्रिगडा समोशरणकी रचना करे। मुगट छत्र चामरादि अनेक तरैके रत्नजडित आभूषण सहत भगवानकों स्थापन

करे । पंचवर्णा सुगंधी फूलांकी वर्षा करे । नाना प्रकारका वाजित्र वजावे केवल ग्यान कल्याणककी मीठा स्वरसें पांच पूजा गावे ॥ इति ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ शांतिपूजा विधि लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ शुभ दिन शुभ महुर्त्ते जिन मंदरमें समोसरणपर जिन प्रतिमा स्थापन करावे (आगे) पंच परमेष्टी पट्ट स्थापन करे (तथा) भगवानके दहिणेंपासे दश दिग्पाल पट्ट (और) वामपासे नवग्रह पट्ट स्थापन करे (पीछे) एक मोटा, एक छोटा, तांबे, पीतल, मट्टी आदिकका हंमा ऊपर खमी सपेद मिट्टी पोतके, चार चार केशर कुंकुका साथिया करे ॥ पीछे ऊंची नींची दोय टिवची काठकी धरावे । नींची टिवचीपर मोटा हंमा धरे । ऊंचीपर छोटा हंमा धरे । छोटा हंमाके तले एक छिद्र करे । दोनुं मटकाके भीतर साथिया करे ॥ वमा मटकाकी टिवचीके नीचे । चावलका साथिया करके । ऊपर नालेर रुपियो थापनाको धरे ॥ दोनुं मटका ऊपर मोली सुत्रवटके पंचरंगी खजली । एकेक खूणें २१ इकीस पोकर । चारुं खुणे ८४ खजली पोके तणी बांधे ॥ नालेरके आकार मोली सुत्रको दमो नीचला मोटा हंमामें लटकतो रखके । ऊपरकी मोली छोटा हंमाके छिद्रमें पोकर, ऊपर जो चोखुंणी तणी बांधीहे । जिसके बीचमें गांठ देवे (पीछे) जो संघ संमुदायकी तरफसें शांतिपूजा होय (जबतो) मंदरको कलश लेवे (और) एकजनकी तरफसें होय । (तब) शांतिकारकके गृह सेती सधवस्त्री, जिसका । माता, पिता, सासू, सुसरा, भरमाइत जीता होय जिस स्त्रीकुं अछा वस्त्र आभूषण पहरायके, कलशके मांह, कुंकु केशरको साथियो करके, चावल, सुपारी, पंचरत्नकी पोटली धरके । मुखपर नालेर१ ढकणें माफक लगाय, कसुंबल कपमो मोली सेती बांधे । ऊपर चार साथिया कर पूर्वोक्त स्त्रीके मस्तकपर रखके । गीतगान पूर्वक नानाप्रकार वाजित्रादि उछवसहित जिनमंदरमें लावे ॥ समवसरणके सन्मुख चावलांको साथियो करके । ऊपर कलश थापन करे ॥ (पीछे) पांच दश जणा द्रव्ये भावे अपना अंग शुद्ध करे ॥ गुरूकेपासे केशर मंत्रायके तिलक करे ॥ दहिणा हाथके मोली कांकणमोरा मंत्रायके बांधे ॥ ॐ परमेष्टी नमस्कारं० ॥

इत्यादि स्तोत्रसें गुरु आत्मरक्षा करावै ॥ ( पीछे ) एक थालीमें १० । एक थालीमें ९। एक थालीमें ९। नागरवेलका पान सर्व २८ लगावे (जिसपर) फूल, अक्षत नेवेद्य, फल, रोक नाणो, सब पानपर बराबरधरायके तैयार रक्खे ॥ और पिण, पंचामृत, फूल, फूलमाला, अक्षत, नेवेद्य नानाजात का, लीला, सूका, फल, अत्तर, गुलाबजल, केशर, कपूर, रोली, मोली आदिपूजापेको सर्व सरंजाम यथाशक्ति तैयार मंगायके रक्खे ( पीछे ) पूजा सरू करे ॥ ❋ ॥ प्रथम स्नात्रपूजाकी थापना रखके। कुशुमांजली लेके स्नात्रपूजा ( तथा ) अष्टप्रकारी पूजा करावे. ( पीछे ) पंचपरमेष्टी पट्टा ऊपर चावलांका तीन ढिगला करके। ग्यान, दर्शन, चारित्र, की थापना करे (ऊपर) वासक्षेप करके, चढाये सूधा तीन पान चढावे। उसके आगे दो चावलका ढिगला करके, चैत्यदेवता क्षेत्रदेवताकी, थापना करावे, पान दोय चढावे ॥ ऊपर कसंबल कपडो बांधे ( पीछे ) दशदिग्पालके पट्टेऊपर जलका छांटा देके वासक्षेप करे ॥ एकेक दिग्पालके टीकी देके फूल चढायके। एकेक चढापे सूधो नागर वेलको पान चढावे ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ दश दिग्पाल पूजा लि० ॥ ❋ ॥

॥ ॐ इंद्राय। सायुधाय। सवाहनाय। सपरिकराय। इह अस्मिनूजंबुद्वीपे। दक्षिण भरतार्द्धक्षेत्रे। असुकनगरे। अमुकजिनचैत्ये। शांतिपूजा म होछवे। आगछ २। बलिं गृहाण २। उदयमभ्युदयं कुरु २ स्वाहा ॥ ❋ ॥
ॐ इंद्रायनमः इतिइंद्रआह्वान पूजा ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥
पूर्वदिशे जलचंदनादि अष्ट द्रव्य चढावे ॥ ❋ ॥ १ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ अग्नि दिग्पाल पूजा लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ॐ अग्नये। सायुधाय। सवाहनाय। सपरिकराय। अस्मिन् जंबुद्वीपे। दक्षिण भरतार्द्धक्षेत्रे। असुक नगरे। अमुक चैत्ये। शांति पूजा महोछवे। आगछ २ बलिंगृहाण २। उदय मभ्युदयंकुरु २ स्वाहाः ॥
ॐ अग्नयेनमः ॥ २ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ यमदिग्पाल पूजा लिख्यते ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ॐ यमाय। सायु०। सवा०। सपरि०। अस्मिन् जंबु०। दक्षि०।

असुक० । असु० । शांतिपूजा० । आ० । वलिंगृहाण २ । उदय म० । स्वाहा ॥ ❀ ॥ ॐ यमायनमः ॥ ❀ ॥ दक्षिण दिशकीतरफ यमदिग्पालकी पूजा करे ॥ ३ ॥ ❀ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ नैऋत दिग्पालपूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ नैरुताय । सायु० । सवा० । सपरि० । अस्मिन् जंबुद्वीपे० । शांतिपूजा० । आगछ २ । वलिं० । उदय० कुरु २ स्वाहाः ॥ ॐ नैरुतायनमः ॥ नैरुत कूणकीतरफ अष्ट द्रव्यचढावे ॥ इतिः ॥ ४ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ वरुणदिग्पाल पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ वरुणाय । सायु० । सवा० । सप० । अस्मिन् जंबुद्वीपे० शांति पूजा० । आ० । वलिं० । उदयम० । स्वाहाः ॥ ॐ वरुणायनमः ॥ पश्चिम दिशकीतरफ अष्टद्रव्य चढावे ॥ ५ ॥ इति ॥❀॥ ॥❀॥

## ॥❀॥ अथ वायव दिग्पाल पूजा ॥❀॥

॥ ❀ ॥ ॐ वायवे । सायु० । सवा० । सप० । अस्मिन् जंबुद्वीपे० । शांति पूजा० । आ० । वलिंगृहाण २ । उदयम० । स्वाहाः ॥ ॐ वायवे नमः ॥ वायवकूणकीतरफ अष्टद्रव्य चढावे ॥ ६ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ कुबेर दिग्पाल पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ कुबेराय । सायु० । सवा० । सप० । अस्मिन् जंबुद्वीपे । दक्षिणभर० । शांति० । आ० । बलिं० । उदय मभ्युदयं कुरु २ स्वाहाः ॥ ॐ कुबेरायनमः ॥ उत्तरदिशितरफ अष्टद्रव्य चढावे ॥ ७ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ ईशान दिग्पाल पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ ईशानाय । सायु० । सवा० सप० । अस्मिन्० । दक्षिण० । असुक० । असुक चैत्ये । शांतिपूजा० । आगछ २ । बलिं० २ । उदय मभ्युदयं कुरु २ स्वाहाः ॥ ॐ ईशानाय नमः ॥ ईशानकूणकीतरफ जल चंदनादि सर्व द्रव्य चढावे ॥ ८ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ ब्रह्मदिग्पालपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ ब्रह्मणे । सायुधाय । सवा० । सप० । अस्मिन्० दक्षिणभ

र० । शांति० । आ० २ । बलि० उदय मभ्यु० स्वाहाः ॥ ॐ ब्रह्मणे नमः ॥
उर्ध्वदिश तरफ अष्टद्रव्य चढावे ॥ ९ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ नागदिग्पालपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ नागाय । सायु० । सवा० सप० । अस्मिन् जंबु० । दक्षि० शांतिपूजा० । आगछ २ । बलि० । स्वाहाः ॥ ॐ नागायनमः ॥ अधोदिशि अष्टद्रव्य चढावे ॥ १० ॥ ऊपर कसुंबल वस्त्र मोलीसें बांधे ( पीछे ) ॐ दशदिग्पालायनमः ॥ ऐसा कहके, यथाशक्ति रोकमी द्रव्य सहत नागरवेल का पान आदि सर्व द्रव्य चढावे । पछाके, दशुं दिशकी तरफ १० दीपक फूलवत्ती खमी धरके जगावे । ( वा ) एक दीपक आगे जगाकर रखे ॥
॥ ❀ ॥ इति दशदिग्पाल पूजनविधिः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ नवग्रह पूजन विधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ नमो आदित्याय । सायुधाय । सवाहनाय । सपरिकराय । अस्मिन् जंबुद्वीपे । दक्षिण भरतक्षेत्रे । असुक नगरे । असुक चैत्ये । शांतिपूजा महोत्छवे आगछ २ । बलिपूजा गृहाण २ उदय मभ्युदयं कुरु २ अत्रपीठेतिष्ट २ स्वाहाः ॥ ॐ सूर्यायनमः ॥ ऐसा कहके जलचंदनादि अष्ट द्रव्य चढावे ॥ इति सूर्यपूजा ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ चंद्रपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ चंद्राय । सायुधाय । सवाहनाय । सपरिकराय । अस्मिन् जंबु० । दक्षि० । शांतिपूजा० आ० २ । बलि० । अत्रपीठे तिष्ट २ । उदयमभ्यु० स्वाहाः ॥ ॐ चंद्रायनमः ॥ ऐसा कहके जलचंदनादि अष्टद्रव्यसें चंद्रमाकी पूजा करे ॥ ❀ ॥ २ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ मंगलपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ नमो भोमाय । सायु० । सवा० । सप० । अस्मिन् जं० । दक्षि० । असु० । शांतिपूजा महोत्छवे । आगछ २ । बलि० २ । अत्रपीठे २ । उदय० । स्वाहाः ॥ ॐ भोमायनमः ॥ मंगलकी पूजा करे ॥ ३ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ बुधपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ नमो बुधाय । सायु० । सवा० । सप० । अस्मिन् जं० । दक्षि

ण० । अमुक० । शांतिपूजा महोत्सवे । आगछ २ । बलि० २ । अत्रपीठे तिष्ट २ । उदय० । स्वाहाः ॥ ॐ बुधायनमः ॥४॥ ऐसा कहके बुधकी पूजा करे ॥

## ॥❋॥अथ बृहस्पति पूजा॥❋॥

॥❋॥ ॐ नमो बृहस्पतये । सायु० । सवा० । सप० । अस्मिन्० । दक्षिण० शांति० आ० २ । बलि० २ । अत्रपीठे० २ । उदय० स्वाहाः ॥ ॐ बृहस्पतयेनमः ॥ ऐसा कहके बृहस्पतीकी पूजा करे ॥ ५ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ शुक्रपूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ॐ नमो शुक्राय । सायु० । सवा० । सप० । अ० दक्षिण० अमु० । शांतिपूजा० । आ० । बलि० २ । अत्रपीठे० । उदय मम्युदयं कुरु २ स्वाहा ॥ ॐ शुक्रायनमः ॥ ६ ॥ इति ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ शनिपूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ॐ नमो शनिश्चराय । सायु० । सवा० । सपरि० । अस्मिन्० । दक्षि० । असु० । शांति० । आ० २ । बलि० । अत्रपीठे० २ । उदय मम्युदयं कुरु २ स्वाहा ॥ ॐ शनिश्चरायनमः ॥ इति ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ राहु पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ॐ नमो राहवे सायु० । सवा० । सपरि० । अस्मिन्० । दक्षि० अमुक० । शांतिपूजा० । आ० २ । बलि० २ । अत्रपीठे० २ । उदय० स्वाहाः ॥ ॐ राहवेनमः ॥ ८ ॥ इति ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ केतूपूजा ॥ ❋ ॥

॥ ॐ नमो केतवे । सायु० । सवा० । सप० अस्मिन्० । दक्षि० । अ० । शांति० । आगछ २ । बलि० २ । अत्रपीठे० । उदय० स्वाहा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ इसीतरे क्रमसें भगवानके वामपासे पट्टापर नवग्रहकी स्थापना करे ॥ ऊपर कसुंबल वस्त्र मोलीसें बांधे ( पीछे ) नागरवेल पान आदि सर्व द्रव्य ( तथा ) शक्ति मुजब रोकड़ नाणो ऊपर भेट करे ( ऐसा कहे ) ॐ नवग्रहायनमः ॥ चारुं तरफ नवदीपक ( वा ) एक दीपक धरे ॥ ❋ ॥ इति नवग्रह पूजन थापन विधि ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❁ ॥ इसीतरै, अन्य मंगल प्रतिष्टादिकमें ( जब ) दशादिग्पाल, नवग्रहकी थापना पूजा करणी होय ( तो ) शांतिपूजाके ठिकाणें, जो पूजादि उत्सव होय। उसीका नाम लेकर पूजन थापन करावे ॥ विशेष विधि जो होय। सो गुरूके मुखसें समझके करावे ॥ ( पीछे ) शांतिकारकके गृहसें शुद्ध जलसें सधव स्त्रीके हाथसें किया हुवा पांचुं रंगके धानका बाकुला ( तथा )पांचुं रंगकी खजली, गुलगुला, खीर, दहीको करवो, मालपूवा, पांच रंगका लाडू, ( इत्यादि ) उत्तम २ खाद्यवस्तु मंगाके। एक परातमें सब द्रव्य भेला करै (और) घृत, खांड, अत्तर, गुलाबजल, पांच वर्णा फूल, आदि सुगंधी द्रव्य मिलाके बलवाकुल तैयार करै॥ ( पीछे ) गुरु, वासक्षेपकी मुठी तीन वेर मंत्रसें मंत्रके, तीनवेर बलवाकुल ऊपर वाशक्षेप करै ॥ ❁ ॥ ॥❁॥

## ॥ ❁ ॥ वासक्षेप मंत्र ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ ॐ ह्रां ह्रीं सर्वोपद्रवं बिंबस्य रक्ष २ स्वाहा ॥ ॐ णमो अरिहंताणं। ॐ णमो सिद्धाणं। ॐ णमो आयरियाणं । ॐ णमो उवज्झायाणं । ॐ णमो लोए सव्वसाहुणं । ॐ णमो आगास गामीणं । ॐ णमो चारण लद्धीणं। जे इमे किन्नर। किंपुरस। महोरग। गरुड । गंधर्व । जक्ख । रक्खस। पिशाच। भूअ। डाइण प्पभइउ। जिणघर निवासिणो । सन्निहियाय। तेसव्वे विलेवण धूव पुप्फ फल वइवसणाहिं। बलिपडिछंता। तुठिकरा भवंतु। पुठिकरा संतिकराभवंतु। सव्वं जणं कुर्वंतु। सव्वजिणाणं संहाणपभावउ । पसन्नभावतणे । सव्वत्थ रक्कंतु कुर्वंतु । सव्व दुरियाणी नासंतु। सव्वासिव मुवसमंतु । संति तुठि पुठि सिव सत्थयण कारिणो भवंतुस्वाहा ॥ इस मंत्रसें तीनवेर वासक्षेप करके बलवाकुलकों शुद्ध करै।(पीछे)आधा बलवाकुल, दूसरी परातमें विसर्जनके निमत्त पट्टेपर वस्त्रसें ढांकके रख देवे । आधा बलवाकुल लेके घरके ( तथा ) चैत्यकेऊपर ११ स्नात्रिया शुद्ध होके जावे । ( जिसमें ) प्रथम विनयवंत श्रावक चोटीका केश खुला करके बलवाकुल दोनुं हाथांमें लेके, पूर्व दिशकी तरफ खडा रहै ॥ १ ॥ दूशरो केशरकी कटोरी २। तीशरो फूलकी चंगेरी ३। चोथो आरीसो ४। पांचमो धूपदानो ५। छठो दीपक ६। सातमोचामर ७। आठमो घंटा ८। नवमो जलको कल

श ९। दशमो वलिवाकुलकीथाली १०। इग्यारमो मंगल वाजित्र ११। इसी तरैसें सब स्नात्रिया एकेक दिशतरफ खरारहै । ( जब ) शुद्ध हरफ उच्चारण करनेवाला पंम्ति गुरू, जो दिग्पालकी पूजा बोलचूके ( तब ) क्रमसें जल्र वाला, जल, केशर, फूल, वलवाकुल चढावे। चामरकरे। काच देखावे । वा जित्र वजावे। इत्यादि ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ दशदिग्पाल आह्वान मंत्र ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ऐरावतः समारूढः। शक्रःपूर्वदिशिस्थितः। संवस्य शांतयेसोस्तु वलिपूजां प्रयह्नतु ॥ १ ॥ ऐसा कहके पूर्वदिशकीतरफ जलचंदनादि वलवा कुल चढावे ॥ १ ॥ ( अग्निकूणके सन्मुष ) ॥ सदावन्हि दिशोनेता। पाव को मेषवाहनः। संघस्य शांतिये सोस्तु। वलिपूजां प्रयह्नतु ॥ २ ॥ ऐसा कह के वलवाकुल चढावे ॥ ( दक्षिण दिशकीतरफ ) दक्षिणस्यां दिशःस्वामी। यमोमहिषवाहनः संघस्य०। वलि० ॥ ३ ॥ वलवाकुल चढावे । वाजित्रव जावे ॥ ४ ॥ ( नेरुत कूणकीतरफ ) ॥ यमापरांतरालोको। नैरुतः शिववा हनः। संघस्य०। वलि० ॥ ४ ॥ ( अथ पश्चिमदिशि ) ॥ यः प्रतीची दि शोनाथः। वरुणो मकरस्थितः। संघस्य०। वलि० ५ ॥ ( अथ वायवकूण ) हरिणो वाहनंयस्य। वायव्याधिपतिर्मरुत्। संघस्य०। वलि० ॥ ६ ॥ ( अथ उत्तरदिशि ) निधान नवकारूढ। उत्तरस्यां दिशिप्रभुः। संवस्य० वलि० ॥ ॥ ७ ॥ ( अथ ईशानकूण ) सितेवृषेधिरूढश्च। ईशानांच दिसोविभुः। सं घस्य०। वलि० ॥ ८ ॥ ( अथ अधोदिशी ) ॥ पातालाधिपतियोस्तु। सर्व दा पद्मवाहनः। संघस्य०। वलि० ॥ ९ ॥ ( अथ ऊर्ध्वदिशि ) ॥ ब्रह्मलो क विभोयस्तु। राजहंस समाश्रितः। संघस्य०। वलि० ॥ १० ॥ ऐसा कहके, ऊर्ध्वदिशिकों जलचंदनादि वलि चढावै ॥ ❀ ॥

इति दशदिग्पाल आह्वान वलवाकुल देनेकी विधिः ॥ ❀ ॥

॥ ( पीछे ) कलशके भीतर श्रीशांतिनाथ स्वामीकी प्रतिमा निश्चल पणें रक्खे । पंचरत्नकी पोटलीरक्खे । केशर पुष्पादिकसें कलशकी पूजा करे। गुरू वासक्षेप करे। तिसकेबाद कलशके आगे। कुशमांजली १। लवण उतारण २। पहरावणी ३। मंगलदीप ४। करे। मंगलदीपकमें मोतीकी वट्टी

घृतऐसा रक्खे। कि। शांतिपूजा पूरण होय उहांतक तो अवश्य अखंम रहे (पीछे) चतुर्विध संघसहत गुरू, इरियावही पडिक्कमें। चारनोकारको कावसग्ग करके, लोगस्स कहै॥ बेठके, दक्षिणो गोमो धरतीपर रक्खे। मा वोगोमो नम्रीभूत करके, चैत्यवंदन करै। णमोत्थुणं० कहके, अरिहंत चेइ याणं०। वंदणवत्तिया० अन्नत्थू०। एक नवकारको कावसग्ग करे। नमोर्हत् सिद्धा० कहके। थुईकी गाथा कहे (यथा)॥ यदंघ्रि नमना देव। देहिनः संतिसुस्थिता। तस्मै नमोस्तु वीराय। सर्वविघ्न विघातिने॥ १॥ लोगस्स० वंदन० अनत्थू० कहके १ नवकार०॥ दूजीथूई कहे॥ सुरपतिनत चरण युगा। न्नाभेयजिनादि जिनपती न्नौमी। यद्वचन पालनपराः। जलांजलिं ददतु दुःखेभ्यः॥ २॥ इहां पुक्खरवरदी०। वंदनवत्तिया० कहके कावसग्ग करे॥ तीसरी स्तुति कहे॥ वदंति वंदारु गणाग्रतो जिनाः। सदर्थतो यद्रच यंति सूत्रतः। गणाधिपास्तीर्थ समर्थ नक्षणे। तदंगिना मस्तु मतंनमुक्तये॥ ३॥ इहां। सिद्धाणं बुद्धाणं०। अनत्थू० कहके १ नवकारको कावसग्ग करे॥ चौथी स्तुती कहे (यथा) शक्रःसुरा सुरवरैः सहदेवताभिः। सर्वज्ञ शासन सुखाय समुद्यताभिः। श्रीवर्द्धमान जिनदत्त मतिप्रवृत्तान्। न्नव्यान् जनाः न्नवतु नित्य ममंगलेभ्यः॥ ४॥ (पीछे) बेठके, णमोत्थुणं० कहके खमा हुवे॥ श्रीशांतिनाथ देवाधिदेव आराधनार्थं करेमि काउसग्गं॥ वंदन वत्तिया०। अन्नत्थू० कहके १ नव०॥ रोग शोगादिन्निर्दोषै। रंजिताय जि तारये। नमः श्रीशांतये तस्मै। विहितानत शांतये॥ ५॥ (ततः) श्रीशांति देवता निमित्तं करेमि०। अन्नत्थू० १ नव का०॥ श्रीशांतिजिन न्नक्ताय। न्न व्याय सुखसंपदं। श्री शांतिदेवता देया। दशांति मपनीयते॥ ६॥ (ततः) श्रीश्रुतदेवता नि०॥ सुवर्णशालनी देयात्। द्वादशांगी जिनोद्भवा। श्रुतदेवी सदामह्य। मशेष श्रुतसंपदं॥ ७॥ (ततः) श्रीन्नुवनदेवता नि०। चतुर्वर्णाय संघाय। देवीन्नुवन वासिनी। निहत्य दुरितान्येषा। करोतु सुखमक्षतं॥८॥ (ततः श्रीक्षेत्रदेवतानिमित्तं०) यासांक्षेत्रगतास्संति। साधवःश्रावकादयः जिनाग्यां साधयं तस्था। रक्षंतु क्षेत्र देवता॥ ९॥ (ततः श्रीअंबिका देवता निमित्तं क०) अंबानिहित म्भिमे। सिद्धबुद्ध समन्विता। सिते सिंहे स्थि

तागौरी । वितनोतु समीहितं॥१०॥( ततः श्रीपद्मावती देवता निमित्तं क० ) धराधिपतिपत्नीया । देवी पद्मावती सदा । क्षुद्रो पद्रवतःसामां । पातुफुल्लत्फ णावली ॥ ११ ॥ ( ततःश्रीचक्रेश्वरी देवता निमित्तं क० )। चंचश्चक्रधराचा रु । प्रवालदलसन्निभा । चिरंचक्रेश्वरीदेवी । नंदता निवताच्चमां ॥ १२ ॥ ( ततः श्रीअच्छुप्ता देवता निमित्तं० ) खड्गखेटक कोदंड । वाणपाणिस्तडित् द्युतिः । तुरंग गमना च्छुप्ता । कल्याणानि करोतुमे ॥ १३ ॥ ( ततः श्रीकुबेर देवतानिमित्तं० ) मथुरापुरी सुपार्श्वे । श्रीपार्श्व स्तूप रक्षिका । श्रीकुबेरा नग रारूढा । सुतांकावतुवोन्नयात् ॥ १४ ॥ ( ततः श्रीब्रह्मदेवता निमत्तं० ) ब्रह्म शांति समांपाया । दपाया द्वीरसेवकः।श्रीमत्सत्य पुरेसत्या । येनकीर्त्तिः कृता निजः ॥ १५ ॥ ( ततः श्रीगोत्र देवता नि० ) यागोत्रं पालयत्येव । सकला पायतःसदा । श्रीगोत्रदेवतारक्षां । शंकरोतु नतां गिरां ॥ १६ ॥ ( ततःश्री शक्रादि समस्त देवता नि० ) श्रीशक्रप्रमुखायक्षाः । जिनशासनसंस्थिताः । देवादेव्यस्तदन्येपि । संघरक्षंत्व पायतः ॥ १७॥ ( ततः श्रीसिद्धायिका श्री शासन देवता नि० )अन्नत्थू० चारलोगस्सकोका० स्तुति कहे । श्रीमद्विमान मारूढा । यक्ष मातंग सेविता । सामां सिद्धायिका पातु । चक्र चापेषु धारणी ॥ १८ ॥ लोगस्स० । कहके बैठे । चैत्यवंदन० । णमोत्थुणं० । जयवी यरायपर्यंत कहै ॥❋॥ इसी तरे १८ स्तुतीसें देववांदै ॥ ( पीछे )सुंदर अंगो पांगवाले।सुशीलस्त्री पुत्रादिक सहित । विवेक गुणधारक,आठ स्नात्रिया मुख कोश बांधके तीन तीन नवकार गुणें (जिसमें) दो स्नात्रिया दो नालीवाला कलश हाथमें लेके मटकाके दोनुं तरफ खडा रहे ॥ एक स्नात्रियो धूप खेतो रहे ॥ १ स्नात्रियो फूल, चंदन, वासक्षेप, चढातो रहै ॥ दो स्नात्रिया लोटामें जल भरके दोनुं तरफ धारा देनेंवाला कलशानें पूरता रहे । दोजणा दोनुंतरफ चामर ढालता रहै ॥ ( प्रथम ) गुरू आदि, सकलसंघ सात सात नवकार गुणें ॥ स्नात्रिया एकेक नवकार गुणके एकेक धारा देवे । ऐसें सात धारा दे चूके ( तब ) गुरू, मधुरस्वरें स्पष्ट अक्षरोंसें । नमो र्हत् सिद्धाचा र्यो० कहके ॥ अजितशांति प्रमुख साते स्मरण गुणें । ( पीछे ) भक्तामर बडीशांति, छोटी शांति, गुणें ॥ ( तथा सकलसंघमें जिसकों साते स्मरण

शांति शुद्ध आती होय। जब तो गुरूकेसाथे, अपनें मनमें साते स्मरण शांतिगुणें (ओर) नहि आवे सो सर्वसंघ नवकार मंत्र गुणता रहै ॥ साते स्मरण (तथा) शांति गुणें जहांतक अखंम ऊपरले ढोंटे कलशेमें धारा देता रहे। छींककोई न करे। कोई आपसमें अन्य संसारी कथा न करे ॥ साते स्मरणादि संपूर्ण सर्व गुणचूकें (पीछे) तीन तीन नवकार गुणके कलश धरे (पीछे) नीचेका कलशमेंमें। जिन प्रतिमाकों निकालके अछीतरे अंग लूणा करके केशर पुष्पादिकसें पूजा करे ॥ नगवानकी अछी अंगीरचना करावे। नानाप्रकारका नेवेद्यफल चढाके। आरती उतारै। मंगलदीप करे ॥ पीछे शांतिजल सर्वसंघ लगावे। घरमें लेजाके छांटे। शांतिपूजाकी मोली गुरूकेपास लेके राखमी बांधे ॥ (इससें) संपूर्ण संघमें नगरमें, देशमें, मरी आदिक सर्व रोग दोष दूर होके शांति होय। अनेक प्रकारसें रुद्धी वृद्धी सुख शौनाग्यकों प्राप्त होय ॥ (पीछे) जो आधा बलिवाकुल परातमें रखा हुवा है। सो लेके पूर्ववत् स्नात्रिया गुरूकेसाथ मंदरऊपर जाके दश दिग्पालकों विसर्जन करावे ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ दशदिग्पाल विसर्जन करनेकी विधि पूर्ववत् जाणनी इतना विशेष है (कि) आगछ २ के ठिकाणें गछ २ कहै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (यथा) ॐ नमो इंद्राय। पूर्वदिग् अधिष्टाय काय। ऐरावण वाहनाय। सहस्र नेत्राय। वज्रायुधाय। सपरिकराय। अस्मिन् जंबुद्वीपे असुक नगरे। असुक मंदरे। असुक महोछवे। सर्वोपद्रवाद्र्बलिरक्ष २ गछ गछ स्वाहा ॥ पूर्वदिशकीतरफ ॥ ॐ इंद्रायनमः ॥ १ ॥ (अग्निकूणे) ॥ ॐ नमो अग्निमूर्त्तये। शक्तिहस्ताय सायु०। सवा०। सप०। अस्मि० असु०। सर्वोपद्रवाद्बलिरक्ष २। गछ २ स्वाहाः ॥ इति ॥ (दक्षिणदिशे) ॥ ॐ नमो यमाय। दक्षिण दिगाधिष्टायकाय। महिपवाहनाय। दंम आयुधाय। कृष्ण मुर्त्तये। सायु०। सप०। अस्मिन्०। सर्वोपद्रवाद्बलिरक्ष २ गछ २ स्वाहाः ॥ ३ ॥ इति ॥ (नेरुतकूणे) ॥ ॐ नमो नैरुताय। खम्गहस्ताय। सायु० सवाहनाय। सप०। अस्मि०। असु०। सर्वोपद्रवाद्बलिरक्ष २ गछ २ स्वाहाः ॥ ४ ॥ इति ॥ (पश्चिमदिशे) ॥ ॐ नमो वरुणाय। पश्चिमदिगधिष्टा

यकाय । मकरवाहनाय । सायु० । सप० । अस्मिन्० । अमु० । सर्वोपद्रवा० । गछ २ स्वाहाः ॥ ५ ॥ ( वायवकूणे ) ॐ नमो वायवे । वायवाधिपतये । ध्वजहस्ताय । हरिणवाहनाय । सा० सप० । अस्मिन्० । अमु० । सर्वोपद्रवा० गछ २ स्वाहा ॥ ६ ॥ इति ॥ ( उत्तरदिशे ) ॐ नमो धनदाय । उत्तरदिगाधिष्टायकाय । नरवाहनाय । गदाहस्ताय । सप० । अस्मिन्० । अमु० । सर्वोपद्रवा० २ । गछ० २ स्वाहाः ॥ ८ ॥ इति ॥ ( ईशान कूणे ) ॥ ॐ नमो ईशानाय । त्रिशूल हस्ताय । ईशानाधिपतये । वृषभवाहनाय । सप० । अस्मि० । अमु० । सर्वोपद्रवाद्बलिरक्ष २ गछ २ ॥ स्वाहाः ॥ ८ ॥ इति ॥ ( ऊर्ध्वलोके ) ॥ ॐ नमो ब्रह्मणे । राजहंसवाहनाय । ऊर्ध्वलोकाधिष्टायकाय । सायु० । सप० । अस्मि० । अमु० । सर्वोपद्रवा० गछ० २ स्वाहाः ॥ ९ ॥ इति ॥ ( अधोलोके ) ॥ ॐ नमो नागाय । पातालनिवासाय । पद्मवाहनाय । सायु० । सप० । अस्मि० । अमु० । सर्वोपद्रवाद्बलिरक्ष २ गछ२ स्वाहा ॥ १० ॥ इसीतरें क्रमसें दशदिग्पाल विसर्जन करै ॥ ❋ ॥ ( पीछे ) नीचे आकर दिग्पाल नवग्रहादि सर्व देवताकों श्लोक पढके विशर्जन करै ॥ ( यथा ) शक्राद्या लोकपाला दिशि विदिशि गता, शुद्ध सद्धर्म्मसक्ताः । आयातास्नात्रकाले कलुषहतिकृते तीर्थनाथस्य भक्त्या । न्यस्ताशेषा पदाद्या विहित शिवसुखाः स्वास्पदं सांप्रतंते । स्नात्रे पूजामवाप्य स्वमतिकृत मुदो यांतु कल्याणभाजः ॥ १ ॥ आग्याहीनं क्रियाहीनं । मंत्रहीनंचयत्कृतं । तत्सर्वं क्षमृतंदेवः । प्रशीद परमेश्वरः ॥ १ ॥ आह्वानं नैवजानामि । नैवजानामि पूजनं ॥ विसर्जनं नैवजानामि । त्वमेव शरणं ममः ॥ ३ ॥ ( पीछे ) यथा शक्ति ग्यानपूजा, गुरूपूजा, साहमीवात्सल्य करै ॥ जैनयाचकानेंदानदेवै ॥ इति शांतिक स्नात्र पूजाविधिः ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ नवपद मंगल पूजा विधि लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ प्रथम सुंदर अंगोपांगवाले नवस्नात्रिया मंत्रितजलसें स्नान करे ॥ ( जलमंत्र ) ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षणी अमृतं श्रावय २ स्वाहा ( इसमंत्रसें ) जलमंत्रे ( पीछे ) ॐ ह्रीं अमले विमले विमलोद्भवे सर्वतीर्थ जलोपमें पांपां वांवा अशुचि शुचिभवामि स्वाहा ॥ ( इस मंत्रकों ) सात

वेर पढता हुवा स्नान करे ( पीछे ) ॥ ॐ ह्रीं श्रां क्रों नमः ॥ सातवेर इस मंत्रसें वस्त्र शुद्ध करके पहरे ( पीछे ) ॐ श्रां ह्रीं क्रों अर्हते नमः ॥ ( इस मंत्रसें ) सातवेर गुरूपासे केशर मंत्रायके तिलक करे ( पीछे ) ॐ ह्रीं अवतर २ । सोमे २ । कुरु २ । वल्गु २ । सुमणसे । सोमणसे । महु म हुरे । ॐ कवली कः क्षः स्वाहाः ॥ ( इस मंत्रसें ) मोली मेंढल मरोफ्ला फली मंत्रायके हाथके बांधे ॥ ( और ) जब मंडलजीके चारुं तरफ मोली मेंढल बांधे । सोभी, इसी मंत्रसें मंत्रके बांधे ॥ इसीतरे अपना अंग शुद्ध करके स्नात्रिया गुरूके सन्मुख हाथ जोडके वैठे ॥ ( जब गुरू ) ॐ पर मेष्टी० स्तोत्र पढके अंगरक्षा करै ॥ अंगरक्षा स्तोत्रः ॥ ॐ परमेष्टी नमस्कारं सारं नवपदात्मकं । आत्मरक्षा करंवज्र । पंजराभं स्मराम्यहं ॥ १ ॥ ॐ णमो अरिहंताणं ॥ शिरस्कं शिरसिस्थितं ॥ ॐ णमो सव्वसिद्धाणं । मुखे मुखपटंबरं ॥ २ ॥ ॐ णमो आयरियाणं । अंगरक्षा तिशायिनी । ॐ णमो उवझायाणं । आयुधं हस्तयो दृढं ॥ ३ ॥ ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं । मोच के पादयोशुभे । एसो पंचनमुक्कारो ॥ शिलावज्रमयीतले ॥ ४ ॥ सव्व पाव प्पणासणो । वप्रोवज्रमयोबहिः । मंगलाणंच सव्वेसिं । खादिरांगार खातिका ॥ ५ ॥ स्वाहांतंचपदंज्ञेयं । पढमं हवइमंगलं । वप्रो परिवज्रमयं । पिधानं देहरक्षणे ॥ ६ ॥ महाप्रभावा रक्षेयं । क्षुद्रोपद्रवनाशिनी । परमेष्टिपदोद्भूता कथिता पूर्वसूरिभिः ॥ ७ ॥ यश्चैवं कुरुते रक्षां । परमेष्टि पदैसदा ॥ तस्यनस्या द्भयंव्याधि । राधिश्चापि कदाचिनः ॥ ८ ॥ ❀ ॥ इति आत्म रक्षा वज्रापिंजर स्तोत्रं ॥ ❀ ॥ यह स्तोत्र तीनवार गुणके आत्मरक्षा करै ॥ ( पीछे ) तीन वेर नवकार मंत्रसें मंत्रके चोटीके गांठ देवे ॥ ( तथा ) तीन नवकार गुणके सर्व स्नात्रियांके कानांमें फुंक देवे ॥ ( इतनी विधीतो ) हरकोई पूजा प्रतिष्टा मंडलादिकमें स्नात्रियांको प्रथम अवश्य करणी करा णी चहियै ॥ ( पीछे मंदरजीमें अधिष्टायक देव देवी जो होय । उन सर्वकी पूजा करावे । अष्ट द्रव्य चढावे ॥ ( पीछे ) चंपेलीका तेलमें, हिं गलू ( वा ) सिंदूर मिलाके क्षेत्रपालजीकी पूजा करे । चांदीका वरग ( वा ) सालीपत्रामें अंग रचना करै । अत्तर चढावे । फूल, धूप, दीप नैवेद्य

फल, जल, रोकनाणो, इत्यादि सर्व द्रव्य ( ॐ क्षेत्रपालायनमः ) ऐसा बोल ता हुवा चढावे ॥ ( पीछे ) मंडलजीके दहिणेंपासें, १० दश दिग्पा लके पट्टेकी थापना करे । एकेक दिग्पालकी पूजा पढके, जल चंदनादि सर्व द्रव्य, नागरवेलके पानसुद्धा चढाता रहे ॥ दशुं दिग्पालकी पूजा हुए पीछे । ऊपर कसुंबल वस्त्र वांधे । आगे सर्व द्रव्य चढावे । दीपक करे ॥ ( पीछे ) वामपासे नवग्रहका पट्टकी थापना करके पूर्वोक्त प्रकार पूजा करै ॥ ( पीछे ) सर्व स्नात्रियांकुं १८ स्तुतीसें देव वंदन करावे ॥ ( इहां ) १० दिग्पाल, नवग्रहकी पूजाका मंत्र ( तथा ) देव वंदनकी विधि विस्तारके भयसेती न लिखी है ( सो ) पूर्वेशांति पूजामें लिख आए हैं ( उसी मुजब ) सर्व विधि करावे ( पीछे ) मंडलजीकी प्रतिष्ठा करे ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ मंडल प्रतिष्टा विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम दोनुंपासे मोली सुत्रकी वत्ती जगाके घृतका दीपक करै ॥ इन दोनुं दीपकको चार पहर अखंड रक्खे । ( पीछे ) सोनें, चांदी, आदिका कलशमें अबोट उत्तम जल भरके सोनावाणी करै । हाथमें कल श लेके । ७ सात नवकार गुणें ॥ ॐ ह्रीं जीरावला पार्श्वनाथ रक्षां कुरु २ स्वाहा ॥ इस मंत्रसें ७ वार जलको मंत्रके । मंडलजीके चारुं तरफ धारा देवे । ऊपर जरा छांटा देके पवित्र करै । धूप खेवै ( पीछे ) नवतारी मोली सुत्रका साढा तीन आंटा मंडलजीके बाहर कर देवे । पूर्वोक्त मंत्रसें मंत्रके मोली ( तथा ) मेंढल मरोडा फली चारुं तरफ वांधे ॥ ( पीछे ) केशरकी कटोरी हाथमें लेके ( ॐ आँ ह्रीं श्रीं अर्हतेनमः ) इस मंत्रसें मंत्र के मंडलके ऊपर केशरका छींटा देवे । ( ऊपर ) चावलको साथियो करै । टीकी देवे । मंडलके अगाडी चावलको साथियो ( वा ) नंद्यावर्त्त करके ऊपर नालेर रुपियो भेट धरे ॥ ( पीछे ) केशर, चंदन, कुंकम, लेकर मंडल जीके चारुं तरफ तीन रेखा आलेखन करै ॥ ( पीछे ) वाशक्षेप, पुष्प, हाथ में लेके ( ॐ भूरसी भूतधात्री विश्वाधारैनमः ॥ ) इस मंत्रसें सातवेर मंत्रके मंडलभूमि, तथा, पीठकी पूजा करै ॥ फेर, आचार्य गुरू वाशक्षेप हाथमें लेके ( ॐ ह्रीं श्रीं अर्हत्पीठायनम ) इस मंत्रसें ७ वेर मंत्रके मंडल पीठकी

पूजा करे ॥ ( पीछे ) स्नात्रिया, हाथमें पुष्प, चावल, लेलेके तीन वेर मंड लकों वधावे ॥ नीचे चावलको साथियो करके। रुपियो नालेर थापनाको धरे। ( पीछे ) स्नात्रिया मंदरके भीतरसें प्रतिमाजी लायके त्रिगडा ऊपर मंत्र पढके स्थापन करे ॥ ( स्थापन मंत्र ) ॥ ॐ नमो अर्हत् परमे श्वराय। चतुर्मुखाय परमेष्टिने दिग् कुमारी परिपूजिताय । चतुषष्टि सुरासु रेंद्र सेविताय। देवाधिदेवाय। त्रैलोक्य महिताय ।अत्र पीठे तिष्ट २ स्वा हा ॥ इस मंत्रकों ७ वेर पढके। नवप्रतिमा ( वा ) एकप्रतिमा स्थापन करै॥ ( इसीतिरे ) मंडल प्रतिष्ठा करके ( पीछे ) सिद्धचक्र पूजा सरू करे ॥ ❋ ॥ ( प्रथम ) एकरकेबीमें। सपेद गोलो, सपेद वस्त्र; सपेद धजा, ८ कर्केतन रत्न, ३४ हीरा, पुष्प अक्षत, फल, दीप, धूप, हाथमें लेके अरिहंत पद की पूजा पढै ॥ ( यथा ) अथाष्टदल मध्याब्ज । कर्णिकायां जिनेश्वरान्। आविर्भूतोज्वलज्ञोया। नाव्रतः स्थापयाम्यहं ॥ १ ॥ निःशेष दोषें धन धूम केतुः। नपार संसार समुद्र सेतून्। यजे समस्तातिशयैक हेतून् । श्रीमज्जि नानांबुज कर्णिकायां ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हद्भ्योनमः स्वाहा ॥ १ ॥ इस मंत्रसे अर्हंत पदकी थापना पूजा करै। सर्व द्रव्य चढावे ॥ ( पीछे ) रकेबीमें। लाल गोलो, लाल धजा, लाल वस्त्र, ८ माणक रत्न, ३१ मूंगा, जल पुष्पादि सर्व द्रव्य हाथमें लेके सिद्ध पूजा पढै ॥ ( यथा ) तस्य पूर्व दले सिद्धान्। सम्यक्तादि गुणात्मकान्। निःश्रेय संपदं प्राप्तान् । निदधे भक्ति निर्भरः ॥ ३ ॥ तत्पूर्व पत्रे परितः प्रणष्टः । दुष्टाष्ट कर्मा मधिगम्य शुद्धि। प्राप्तान्नरान्सिद्धि मनंतबोधान्। सिद्धान् यजे शांतिकरान्नराणां ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सिद्धेभ्योनमः स्वाहा ॥ पूर्व दिशकी तरफ सिद्ध पदकी स्थाप ना पूजा करै। सर्व द्रव्य चढावे ॥ ❋ ॥ इति ॥ ❋ ॥ ( पीछे ) रकेबीमें पीलो गोलो, पीली धजा, पीलो, वस्त्र, ५ गोमेदक रत्न, ३६ सोनेका फूल, जल, पुष्पादि सर्व पीत द्रव्य हाथमें लेके आचार्य पदकी पूजा पढे॥ (यथा) स्थापयामितनः सूरीन्। दाक्षिणेस्मिन् दले मले । चरतः पंचधाचारान्। षट्त्रिंशद्गुणैर्युतान् ॥ ५ ॥ सूरी सदाचार विचारसारा। नाचारयंतः स्वपरान यथेष्टं। न्योपमर्गक निवारणार्थः। मभ्यर्च्यया म्यक्षतगंधधूपैः ॥ ६ ॥ ॐ

ह्रीँ श्रीँ सूरीभ्योनमः स्वाहा ॥ ३ ॥ दक्षिणदिशकी तरफ आचार्य पदकी थापना पूजा करे ॥ इति ॥ ❋ ( पीछे ) हरितगोलो, हरितवस्त्र, हरामुंगकालड्डू, हरीधजा, ४ इंद्रनील, २५ मरकतरत्न पन्ना, जल पुष्पादि सर्व द्रव्य हाथमें लेके उपाध्याय पदकी पूजा पढै ॥ ( यथा ) द्वादशांग श्रुता धारान् ॥ शास्त्राध्ययन तत्परान् ! निवेशयाम्युपाध्यायान् । पवित्रे पश्चिमे दले ॥ ७ ॥ श्रीधर्मशास्त्राण्यनिशं प्रशांत्यै । पठंतियेन्यानपि पाठयंति । अध्यापकां स्तांनपराब्जपत्रे । स्थितान्यवित्रान् परिपूजयामि ॥ ८ ॥ उँ ह्रीँ श्री उपाध्यायेभ्योनमः स्वाहा ॥ पश्चिमदिशकीतरफ उपाध्याय पदकी स्थापना पूजा करे ॥ इति ॥ ❋ ॥ ( पीछे ) रकेबीमें स्यामगोलो, स्यामवस्त्र, स्यामधजा । उडदकालड्डू, ५ राजपट्ट, २७ अरिष्टरत्न, जल, पुष्पादि सर्व द्रव्य हाथमें लेके साधूपदकी पूजा पढै ॥ ( यथा ) व्याख्यादिकर्म कुर्वाणान् । सुत्रध्यानैक मानसान् । उदक पत्रगतान् बारान् । साधुवासीस सुव्रतान् ॥ ९ ॥ वैराग्यमंतर्वचासि प्रसिद्धं । सत्यं तपो द्वादशधा शरीरे । येषा सुदक्ष्यवगतान् सुकृतान् पवित्रान् । साधून्सदातान् परिपूजयामि ॥ १० ॥ उँ ह्रीँ श्री सर्व साधुभ्योनमः स्वाहा ॥ ५ ॥ उत्तरादिशकी तरफ साधुपदकी थापना पूजा करे ॥ इति ॥ ❋ ( पीछे ) रकेबीमें सपेदगोलो, सपेद धजा, सपेद वस्त्र, ६७ मोती आदि, श्वेतद्रव्य हाथमें लेके । दर्शन पदको श्लोक बोलके चढावे ॥ ( यथा श्लोकः ) जिनेंद्रोक्त मतश्रद्धा । लक्षणे दर्शनेयजे । मिथ्यात्व मथनं शुद्ध । नस्त मीशान् सद्दले ॥ ११ ॥ उँ ह्रीँ श्री सम्यग् दर्शनाय नमः स्वाहाः ॥ ६ ॥ ईशान कूणें दर्शनपदकी स्थापना पूजा करै ॥ इति ॥ ( पीछे ) रकेबीमें ५१ मोती, श्वेतगोलो, श्वेत धजा, चावलका लड्डू आदि श्वेतद्रव्य हाथमें लेके, ग्यानपदको श्लोक बोलके चढावे ॥ ( श्लोकः ) मशेष द्रव्यपर्याय । रूपमेवाव भासकं । ग्यानमाग्नेय पत्रस्थं । पूजयामि हितावहं ॥ १२ ॥ उँ ह्रीँ श्री सम्यग् ग्यानाय नमः स्वाहा ॥ ७ ॥ अग्निकूणकीतरफ ग्यानपदकी स्थापना पूजा करे ॥ इति ॥ ❋ ॥ ( फेर ) रकेबीमें सपेद गोलो, सपेद धजा, ७० मोती, श्वेतवस्त्र आदि श्वेत द्रव्य हाथमें लेके चारित्र पदको श्लोक बोलके चढावे ॥ ( श्लोकः ) सामायिकादि

जिनेंदे । श्चारित्रं चारु पंचधा । संस्थापयामि पूजार्थं । पत्रैह नैरुते क्रमात् ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीँ श्री सम्यग् चारित्राय नमः स्वाहा ॥ ८ ॥ नैरुत कूणकी तरफ चारित्र पदकी स्थापना पूजा करै ॥ इति ॥ ❀ ॥ ( पीछे ) रकेबीमें ५० मोती, श्वेतगोलो, श्वेत धजा आदि, सर्व सपेदद्रव्य हाथमें लेके तप पदको श्लोक बोलके चढावैं ॥ ( श्लोकः ) द्विधा द्वादशधाभिन्नं । पूतेपत्र तपःस्वयं । निधाययामि भक्त्यात्र । वायव्यां दिशि शर्मदं ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीँ श्री सम्यग् तपसे नमः स्वाहा ॥ ९ ॥ वायव कूणकी तरफ तप पदकी स्थापना पूजा करे ॥ इति ॥ ❀॥ ( अथ अर्घ ) ॥ निःस्वेदत्वादि दिव्यातिशय मयतनून् श्री जिनेंद्रान् सुसिद्धान् । सम्यक्त्वादि प्रकृष्टाष्टक गुणभृदाचार साराश्चसूरीन् । शास्त्राणि प्राणिरक्षा प्रवचन रचना सुंदराण्यादि गंड्रं । स्तात्सिद्ध्यै पाठकानां यतिपति सहिता नर्चयाम्यर्घदानै ॥ १५ ॥ इत्थमष्ट दलं पद्मं । पूरये दर्हदादिभिः । स्वाहांते प्रणवाद्यश्च । पदैर्विघ्न निवृत्तये ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हँ असिआउसा सम्यग् दर्शन ज्ञान चारित्र तपभ्यो ह्रीँ ·श्री अर्हं परमेष्टिन परमनाथ परमदेवाधिदेव परमार्हन् परमानंत चतुष्टय । परमात्मने तुभ्यं नमः ॥ ( इति मूलमंत्रः ) ॥ इति सिद्धचक्र प्रथमवलय मूलपूजा विधि ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ द्वितीय वलय पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम वलयमें एक मध्य, चार दिश, चार विदिश· एवं अष्टदल कमलके आकार नवकोठा मंडलके मध्यभागमें होय । तिनोंकी पूर्वोक्त प्रकार पूजा करै ॥ ( पीछे ) दूसरा वलयमें चूर्णके आकार १६ कोठा होय । ( जिसमें ) एकेक कोठाके अनंतर आठ कोठामें· अवर्गादि आठ वर्ग स्थापन करै । ( और ) एकेक कोठा वीचमें स्वाली रहा है ( तिसमें ) अनाहत पद ( ॐ ह्रीँ णमो अरिहंताणं ) ऐसा पदस्थापन करै ॥ ( पीछे ) एक रकेबीमें· मिश्री लवंग ( तथा ) एक रकेबीमें मोटा दाणा लेके रखना है । अनाहत पदमें मिश्री· लवंग· चढावे ॥ और आठ वर्गमें दाणा चढावे ॥ ( यथा ) ॐ ह्रीँ णमो अरिहंताणं ॥ मिश्री लवंग चढावे ॥ १ ॥ अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः ॐ ह्रीँ स्वर वर्गाय नमः ॥

(इहां) १६ दाख चढावै ॥ २ ॥ ॐ ह्रीँ णमो अरिहंताणं ॥ मिश्री लवंग ॥ ३ ॥ क ख ग घ ङ । ॐ ह्रीँ व्यंजन कवर्गायैनमः ॥ १६ ॥ दाखच० ॥ ४॥ ॐ ह्रीँ णमो अरिहंताणं ॥ ५ ॥ चछजझञ । ॐ ह्रीँ चवर्गायैनमः ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीँ णमो अरिहंताणं ॥ ७ ॥ टठडढण । ॐ ह्रीँ टवर्गायैनमः ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीँ णमो अरिहंताणं ॥ ९ ॥ तथदधन । ॐ ह्रीँ तवर्गायैनम ॥ १० ॥ ॐ ह्रीँ णमो अरिहंताणं ॥ ११ ॥ पफबभम । ॐ ह्रीँ पवर्गायैनमः ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीँ णमो अरिहंताणं ॥ १३ ॥ यरलव । ॐ ह्रीँ यवर्गायैनमः ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीँ णमो अरिहंताणं ॥ १५ ॥ शषसह । ॐ ह्रीँ शवर्गायैनमः ॥ १६ ॥ पहला अवर्गसें, पवर्गतक, वर्गदीठ १६ सोले दाख चढावे ॥ सब ९६ द्राख (और) यरलव १ । शषसह २ । यह दो वर्गमें ६४ द्राख चढावे ॥ ❀॥ इति दूसरा वलय पूजनविधिः ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अब ( तीसरा वलयमें ) चार दिश, चार विदिशमें आठ परमेष्टी, पद स्थापन निमत्त आठ कोठा करै ॥ इस आठ कोठाके वीच वीचमें वलाका तीन तीन देवे ॥ तीनुं वलाकामें २४ खाना हुवै ॥ एकेक खानेमें दो दोय लब्धि पद स्थापन करनेसें । चोवीस घरमें ४८ लब्धिपद स्थापन पूजन करना ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ लब्धिपद पूजन विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आठ परमेष्टी पदोंमें । ॐ ह्रीँ परमेष्टिने नमः स्वाहा ॥ ऐसा ८ वेर कहके ८बीजोरा चढावे ( और ) लब्धि पदका नाम बोलके, खारकां ४८ चढावे ॥ ( यथा ) ॥ ॐ ह्रीँ अर्हँ णमो जिणाणं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हँ णमो ओहि जिणाणं ॥ २ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हँ णमो परमोहि जिणाणं ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हँ णमो सव्वोहि जिणाणं ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हँ णमो अणंतोहि जिणाणं ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हँ णमो कुठ्ठवुद्धीणं ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हँ णमो वीयबुद्धीणं ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हँ णमो पयाणुसारीणं ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हँ णमो आसीविसाणं ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हँ णमो दिठ्ठी विसाणं ॥ १० ॥ ॐ ह्रीँ अर्हँ णमो संभिन्नसोयाणं ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हँ णमो सयंसंबुद्धाणं ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हँ णमो पत्तेय वुद्धाणं ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हँ णमो बोहि बुद्धाणं ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हँ णमो उज्जुमईणं ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हँ

णमो विउव्वमइणं ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो दसपुव्वीणं ॥ १७ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो चउदश पुव्वीणं ॥ १८ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो अठंग निमत्त कुशलाणं ॥ १९ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउव्वण इड्ढिपत्ताणं ॥ २० ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं ॥ २१ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारण लद्धीणं ॥ २२ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो पणासमणाणं ॥ २३ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगासगामीणं ॥ २४ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीरासवेणं ॥ २५ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पिया सवाणं ॥ २६ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुआसवाणं ॥ २७ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमियासवाणं ॥ २८ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो सिद्धायणाणं ॥ २९ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो भगवया महइ महावीर बद्धमाण बुद्धरिसीणं ॥ ३० ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्गतवाणं ॥ ३१ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीण महाणसियाणं ॥ ३२ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो वद्धमाणाणं ॥ ३३ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्ततवाणं ॥ ३४ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्ततवाणं ॥ ॥ ३५ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो महातवाणं ॥ ३६ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरतवाणं ॥ ३७ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर गुणाणं ॥ ३८ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर परिक्कमाणं ॥ ३९ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर गुण बंभयारीणं ॥ ॥ ४० ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमोसही पत्ताणं ॥ ४१ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो खेलोसही पत्ताणं ॥ ४२ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसही पत्ताणं ॥ ४३ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो विप्पोसही पत्ताणं ॥ ४४ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसही पत्ताणं ॥ ४५ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो मणवलीणं ॥ ४६ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो वयण वलीणं ॥ ४७ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो कायवलीणं॥४८॥ ॐ ह्रीं अर्हं अष्टचत्वारिंशल्लब्धि पदेभ्योनमः ॥ ❋ ॥ इसीतरे लब्धिपदका नाम बोल २ के तीजे चौथे पांचमें वलयमें खारकां सब ४८ चढावे ॥ ( पीछे ) मंडल जीके गलेके स्थानके ह्रीं कारजी स्थापन किया है ( जहांसें ) साढातीन वलाका. मंडलजीकै चौतरफ देके नीचे ( क्रों ) ऐसा अक्षर लिखा है (जिसके) प्रथम वलयमें. आठे दिशाये. आठ गुरु पाडुका स्थापन करके ८ दाडमफल चढावे ॥ ( यथा ) ॐ ह्रीं अर्हत् पाडुकाभ्योनमः ॥ १ ॥ ( दाडम चढावे ) ॥ ॐ ह्रीं सिद्ध पाडुकाभ्योनमः ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं आचार्य पाडुका

भ्योनमः ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीँ गुरुपादुकाभ्योनमः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीँ परमगुरु पादुकाभ्योनमः ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीँ अदृष्टगुरु पादुकाभ्योनमः ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीँ अनंत गुरुपादुकाभ्योनमः ॥७॥ ॐ ह्रीँ अनंतानंत गुरुपादुकाभ्योनमः ॥८॥ ॐ ह्रीँ श्रीअष्टगुरु पादुकाभ्योनमः स्वाहा ॥ इसीतरें छठावलयमे ८ दाडम चढावे ॥ ( पीछे ) सातमा वलयमें आठे दिशायें । जयादिक ८ देवीकों स्थापन करके ।८ नारंगी चढावै ॥ ( यथा ) ॐ ह्रीँ जयायैनमः स्वाहा ॥१॥ ॐ ह्रीँ जंभायैनमः स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ ह्रीँ विजयायैनमः स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीँ थंभायैनमः स्वाहा ॥४॥ ॐ ह्रीँ जयंत्यैनमः स्वाहा॥५॥ ॐ ह्रीँ मोहायै नमः स्वाहा ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीँ अपराजितायैनमःस्वाहा ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीँ अंधायै नमःस्वाहा ॥८॥ (ऐसें) सातमा वलयमें८ नारंगी चढावे ॥ ❀ ॥ (पीछे) आठमा वलयमें । १६ विद्या देव्याकों स्थापन करके चांदीका वरग लगाई भई १६ सुपार्यां चढावे ॥ ( यथा ) ॐ ह्रीँ रोहण्यैनमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ प्रज्ञप्तैनमः ॥ २ ॥ ॐ ह्रीँ वज्रशंखला यैनमः ॥ ३ ॐ ह्रीँ वज्रांकुशायैनमः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीँ चक्रेश्वर्यैनमः ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीँ पुरुष दत्तायैनमः ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीँ काल्यैनमः ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीँ महाकाल्यैनमः ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीँ गौर्यैनमः ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीँ गंधार्य्यैनमः ॥ १० ॥ ॐ ह्रीँ सर्वास्त्र महाज्वालायैनमः ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीँ मानव्यैनमः ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीँ वैरोट्यायैनमः ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीँ अछुप्तायैनमः ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीँ मानस्यैनमः ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीँ महामानस्यैनमः ॥ १६ ॥ ( इसीतरे ) आठमा वलयमें चारुं तरफ १६ विद्यादेवीकों १६ सुपारी चढावे ॥ ❀ ॥ ( पीछे ) नवमा वलयके वामवासे । २४ शाशनदेव्यांकों स्थापन करके २४ सुपार्यां चढावै॥ ( यथा ) ॥ ॐ चक्रेश्वर्यैनमः ॥ १ ॥ ॐ अजितबलायैनमः ॥ २ ॥ ॐ दुरितार्यैनमः ॥ ३ ॥ ॐ काल्यैनमः ॥ ४ ॥ ॐ महाकाल्यैनमः ॥ ५ ॥ ॐ श्यामायैनमः ॥ ६ ॥ ॐ शांतायैनमः ॥ ७ ॥ ॐ भृकुटियैनमः ॥ ८ ॥ ॐ सुतारकायनमः ॥ ९ ॥ ॐ अशोकायैनमः ॥ १० ॥ ॐ मानव्यैनमः ॥ ११ ॥ ॐ चंडायैनमः ॥ १२ ॥ ॐ विदितायैनमः ॥ १३ ॥ ॐ अंकुशायैनमः ॥ १४ ॥ ॐ कंदर्पायैनमः ॥ १५ ॥ ॐ निर्वाण्यैनमः ॥ १६ ॥ ॐ बलायैनमः ॥ १७ ॥ ॐ धारण्यैनमः ॥ १८ ॥ ॐ धरणप्रियायैनमः ॥ १९ ॥ ॐ नरदत्तायैनमः ॥२०॥

ॐ गांधार्यैनमः ॥ २१ ॥ ॐ अंबिकायैनमः॥ २२ ॥ ॐ पद्मावत्यैनमः ॥२३॥ ॐ सिद्धायिकायैनमः ॥ २४ ॥ इसीतरै वामपासे ॥ २४ देव्यांकी स्थापना करे॥ ( पीछे ) दक्षिणपासे, २४ यक्ष राजकी स्थापना करके २४ सुपारी चढावे ॥ ( यथा ) ॥ ॐ ब्रह्मशांतयेनमः ॥ २४ ॥ ॐ पार्श्वायैनमः ॥ २३ ॥ ॐ गोमेधायनमः ॥ २२ ॥ ॐ भृगुटयेनमः ॥ २१ ॥ ॐ वरुणायनमः ॥ २० ॥ ॐ कुबेरायनमः ॥ १२ ॥ ॐ यक्षराजायनमः ॥ १८ ॥ ॐ गंधर्वायनः ॥ १७ ॥ ॐ गरुमायनमः ॥ १६ ॥ ॐ किन्नरायनमः १५ ॥ ॐ पातालायनमः॥ ॥ १४ ॥ ॐ षएमुखायनमः ॥ १३ ॥ ॐ कुमारायनमः ॥ १२ ॥ ॐ यक्षराजायनमः ॥ ११ ॥ ॐ ब्रह्मणेनमः ॥ १० ॥ ॐ अजितायनमः ॥ ९ ॥ ॐ विजयायनमः ॥ ९ ॥ ॐ मातंगायनमः ॥ ७ ॥ ॐ कुसुमायनमः ॥ ६ ॥ ॐ तुंबुरवेनमः ॥ ५ ॥ ॐ यक्षनायकायनमः ॥ ४ ॥ ॐ त्रिमुखायनमः ॥ ३ ॥ ॐ महायक्षायनमः ॥ २ ॥ ॐ गोमुखायनमः ॥ १ ॥ इसी तरै नवमा वलयके दाहिणेंपासे २४ यक्षकी थापना करके २४ सुपारी चढावै ॥ ( पीछे ) चारे दिशायें ४ द्वारपालकी स्थापना करके । पीला वस्त्र वाकुल चढावै ॥ ( यथा ) ॐ कुमुदायनमः ॥ १ ॥ ( पूर्वदिशि ) ॥ ॐ अंजनायनमः ॥ दक्षिण० ॥ २ ॥ ॐ वामनायनमः ॥ ( पश्चिम ) ॥ ३ ॥ ॐ पुष्पदंतायनमः ॥ ४ ॥ उत्तरदिशि ॥ ❋ ॥ ( पीछे ) चार विदिशकीतरफ चार वीरपदे कृष्ण वस्त्रवाकुल चढावे ॥ ( यथा ) ॐ माणभद्राय नमः ॥ १ ॥ ॐ पूर्णभद्रायनमः ॥ २ ॥ ॐ कपिलायनमः ॥ ३ ॥ ॐ पिंगलायनमः ॥ ४ ॥ ॥ ❋ ॥ इसी तरै दशमा वलयमें आठुं दिशायें । ४ द्वारपाल । ४ वीर स्थापन करे ॥ ( पीछे ) पूर्ण कलशके आकार, ऊपरसें किया हुवा, सिद्धचक्रजीके गलेके स्थानक, नवनिधान पदे, नव सोनें चांदी आदिकका कलशामें यथशक्ति रोकनाणो घालके स्थापन करे ॥ ( यथा ) ॐ नैसर्प्पिकायनमः ॥ १ ॥ ॐ पांडुकायनमः ॥ २ ॥ ॐ पिंगलायनमः ॥ ३ ॥ ॐ सर्वरत्नायनमः ॥ ४ ॥ ॐ महापद्मायनमः ॥ ५ ॥ ॐ कालायनमः ॥ ६ ॥ ॐ महाकालायनमः ॥ ७ ॥ ॐ माणवायनमः ॥ ८ ॥ ॐ शंखायनमः ॥ ९ ॥ इसीतरै मुखस्थानके नवनिधानपदे ९ कलश स्थापन करे ॥ ❋ ॥ ( पीछे ) को

हलोफल हाथमें लेके। दक्षिण नेत्रके वरावर पासमें बंगलीका आकार किया है॥ (जहां) ॐ ह्रीं विमल स्वामिनेनमः॥ १ ॥ ऐसा कहके चढावे। (फेर) कोहलोफल हाथमें लेके वामनेत्रपासे वंगलीमें (ॐ क्षेत्रपालायनमः)॥ ऐसा वोलके चढावे॥ २ ॥ (पीछे) तीसरो कोह लोफल हाथमें लेके, अधःपींदीके दाहिणेंपासे वंगलीमें (ॐ चक्रेश्वर्यैन मः॥) ऐसा बोलके चढावे॥ ३ ॥ (पीछे) चोथो कोहलोफल हा थमें लेके नीचे पींदाके वामपासे वंगलीमें (ॐ अप्रसिद्ध सिद्धचक्राधिष्टाय कायनमः) ऐसा बोलके चढावे॥ ४ ॥ (पीछे) दशोदिशायें इंद्रादिक दशादिग्पालकों स्थापन करे (वनसकेतो) अपना २ वर्ण मुजब वस्त्र नैवे द्य पुष्पादि द्रव्य चढावे (अथवा) सर्वकों एक द्रव्य सर्व समान चढावे (यथा) ॐ इंद्रायनमः॥ १ ॥ कनकवर्ण। चंदन, केशर, चंपो, द्राख, पीलोवस्त्र, पान, सुपारी, रोकनाणो, आदि सर्व द्रव्य चढावे ❋॥ १ ॥ (अग्निकूणे) ॐ अग्नयेनमः॥ २॥ रक्तवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावे॥ २ ॥ (दाक्षिणदिशि) ॐ यमायनमः॥ ३॥ कालेवर्णका वस्त्रादि द्रव्य चढावै॥ ३ ॥ (नेरुतकूणे) ॐ नैरुतायनमः॥ ४ ॥ धूसरवर्णका वस्त्रा दिक द्रव्य चढावे॥ (पश्चिमदिशि) ॐ वरुणायनमः॥ धूसरवर्णका सब द्रव्य चढावे॥ ५॥ (वायवकूणे) ॐ वायवेनमः॥ ६॥ नीलवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावे॥ ६ ॥ (उत्तरदिशि) ॐ कुबेरायनमः॥ ७॥ सपेद वर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावे॥ ७॥ (ईशानकूणे) ॐ ईशानायनमः॥ ८॥ सपेद वर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावे॥ ८॥ (अधोदिशिः) ॐ नागायन मः॥ ९॥ सपेदवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावे॥ ९ ॥ (ऊर्ध्वदिशि) मस्तके। ॐ ब्रह्मणेनमः॥ १०॥ सपेदवर्णका वस्त्रादि सर्व द्रव्य चढावे॥ इसीतरे दशदिग्पालको स्थापन पूजन करै॥ ❋॥ (पीछे) नीचे पींदी स्थानकके बीचमें ९ कोठा किया हुवा है (जहां) नवग्रहकी स्थापना पूजा करे॥ (यथा) ॐ सूर्यायनमः॥ १॥ लालवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावे॥ १ ॥ ॐ सोमायनमः॥ सपेदवर्ण वस्त्रादिक द्रव्य चढावे॥ २॥ ॐ भोमायनमः॥ लाल रंग वस्त्रादिक द्रव्य०॥ ३ ॥ ॐ बुधायनमः॥ ४ ॥

मुंगे रंगका वस्त्रादि द्रव्य चढावे ॥ ७ ॥ ॐ बृहस्पतयेनमः॥ पीलेवर्णका वस्त्रा दिक द्रव्य चढावे ॥ ५ ॥ ॐ शुक्रायनमः ॥ सपेदवर्ण नांदोल वस्त्रादि द्रव्य चढावे ॥ ६ ॥ ॐ शनिश्चरायनमः नीलेरंगका वस्त्रादि द्रव्य चढावे ॥ ८ ॥ ॐ राहवेनमः ॥ काले रंगका वस्त्रादि द्रव्य चढावे ॥ ८ ॥ ॐ केतवेनमः ॥ ऊंट रंग वस्त्रादि द्रव्य चढावे ॥ ९ ॥ इसीतरै नीचै नवग्रहकी स्थापना करे ( पीछे ) स्नात्र, नवपदजीकी पूजा करायके। आरती नवपदजीकी करै पीछे नवपदको चैत्यवंदन करै ॥ उप्पन्नसन्नाण० ( तथा ) जोधुरि श्रीअरिहंत मूलदढ पीठपइठियो। सिद्ध सूरि उवझाय साहु चिहुं साह गरठिउ। दंश ण नाण चरित्त तव पडिशाहे सुंदरू ॥ तत्तक्खर सिरि वग्ग लद्धि गुरु पयद लसंवरू। दिशिवाल जक्ख जक्खणीपमुह सुरकुशमेहि अलंकियो । सो सिद्धिचक्क गुरु कप्पतरु अह्ममन वंछिय दियउ ॥ १ ॥ ( पीछे ) । जंकिंचि णमोत्थुणं० । नमोर्हत सिद्धा० कहके । नवपदजीको स्तवन ॥ उप्पन्न सन्नाण महोमयाणं० आदिस्तवन कहके । जयवीयराय अनत्थू कहके १ नव० कावसग्ग करे ॥ नवपद स्तुति कहे ॥ ( पीछे ) गुरूकेपास आयके वाशक्षेप लेके ग्यानपूजा, गुरूपूजा करै ॥ धूप खेवै । रोकनाणो चढावे ॥ ( पीछे ) यथाशक्ति साधर्मीवात्सल्य करै॥इति नवपद मंगल पूजन विधिः॥ ॥ अब जाणना चाहियै ( कि ) जब कोई श्रीमंत ओलीकी तपस्या करै तब तो छए महिने मंगल पूजा विस्तार विधीसाथ कराता रहै ॥ और तपस्या ४ ॥ साढाचार वरसमें पूरण होय ( तब ) बडाउछवकेसाथ मंगल रच ना पूजा करै ॥ उद्यापन करै ॥ संपूर्ण देवखाते, ग्यानखाते, गुरुखातैका उपगरण नव नव करायके। प्रथम धर्मशालामें सुशोभित करै । दशपनरेदिन जलजात्रादि अनेक तरैका उछव करै ॥ ( पीछे ) देवका देवखाते देवै । ग्यानका ग्यानखाते । गुरूका गुरूखातै । उपगरणादि द्रव्य देवे ॥ ( और ) ओलीरहित किया भावसें संपूर्ण करै। द्रव्यपूजा अपनी शक्ति मुजब करै ॥ ( और ) पंचायती संघ तरफसें मंगलीक अर्थ छए महिने मंगल रचना नवपद पूजा अवस्य पूर्वोक्त विधिसहित करता रहे ॥ ओली करनेका विधि ( तथा ) नवपद पूजा, स्तवन, थूई, संपूर्ण, रत्नसागरका प्रथम भागमें

लिखा हुवा है ( इससें ) इहां न लिखा है । उसमुजब करै, करावै ॥
॥ ❋ ॥ इति विशेष विधिः ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ भगवंतके ( ९ ) अंग पूजन दूहा ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ जलभरी संपुट पत्रनां । युगलक नरपूजंत । रिषभ चरण अंगूठमे । दायक भवजल अंत ॥ १ ॥ जानुं बलें कानसग रह्या । विचरया देश विदेश । खमा खडा केवल लह्या । पूजो जानु नरेश ॥ २ ॥ लोकांतिक बचनें करी । वरस्या वरशी दान । करकंमे प्रभु पूजनां । पूजो भवि बहु मांन ॥ ३ ॥ मानगयुं दोअंशथी । देखी वीर्य अनन्त । भुजाबलें भवजल तरया । पूजो खंध महन्त ॥ ४ ॥ रत्नत्रय गुण ऊजली । सकल सुगुण विशराम । नाभि कमलनी पूजना । करतां अविचल धाम ॥ ५ ॥ हृदय कमल उपशम बलें । बाल्यो रागनें रोष । हेम दहै वन खंमनें । हृदय तिलक संतोष ॥ ६ ॥ सोल पहर देई देशना । कंठ विबर वर तूल । मधुर धुनी सुर नर सुणें । तिम गले तिलक अमूल ॥ ७ ॥ तीर्थंकर पद पुन्य थी । त्रिभुवन जन सेवंत । त्रिभुवन तिलक समा प्रभु । भाल तिलक जयवंत ॥ ८ ॥ सिद्ध शिला गुण ऊजली । लोकांतिक भगवंत । वसियातिण कारण सही । शिर संख्या पूजंत ॥ ९ ॥ उपदेशक नव तत्वना । तिम नव अंग जिणंद । पूजो बहुविध भाव थी । कहे सहु वीर मुणिंद ॥ १० ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ शिक्षाकारक दूहा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ जीवमा जिनवर पूजिइं । पूजाना फल जोय । राज नमें परजा नमें । आंण न लोपे कोय ॥ १ ॥ कुंभे बांध्यो जल रहे । जल विना कुंभ न होय । ज्ञानें बांध्यो मन रहे । गुरु विना ज्ञान न होय ॥ १ ॥ गुरु दीपक गुरु देवता । गुरु विन घोर अंधार । जे गुरु वांणी वेगला । रुरु वमिया संसार । ॥ १ ॥ भावे जिनवर पूजियें । भावे दीजै दान । भावे भावना भाविये । भावे केवल न्यान ॥ १ ॥ प्रभू नामकी उषधी । शुद्ध चित्तसें खाय । रोग पीमा व्यापे नही । महा दोष मिट जाय ॥ १ ॥ पांच कोमीनें फूलमे । पाम्या देश अढार । कुमार पाल राजा थयो । वरत्यो जैजैकार ॥ १ ॥ मनमोहन पारस मिल्यो । मोहन गुण सुखकंद । मोहनी मू

न देखके । मोहन चित आनन्द ॥ १ ॥ पारश प्रभुके नामसें । सहु सं कटमिटजाय । ईत उपद्रव जय टलै । मोहन गुण प्रगटाय ॥२॥ इति दूहा ॥❀॥

## ॥ ❀ ॥ अथ नवपद पूजा लि० ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ प्रथम अरिहंत पदपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ परम मंत्र प्रणमी करी । तास धरी उर ध्यान ॥ अरिहंत पदपूजा करो । निज निज शक्ति प्रमाण ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ काव्य ॥ जियंतरंगारिजणे सु नाणे। सप्पाडि हेराइ सयप्पहाणे । संदेह संदोह रयं हरंते । जाएहनिच्चंपि जिणे रिहंते ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ उप्पन्न सन्नाणमहोमयाणं । सप्पाडिहेरासण संठिआणं ॥ सद्देस णाणं दियसज्जणाणं । णमो णमो होउ सया जिणाणं ॥ १ ॥ नमोनंत संत प्रमोद प्रधानं। प्रधानाय भव्यात्मने भास्वताय ॥ थया जेहना ध्यानथी सौख्यभाजा । सदा सिद्ध चक्राय श्रीपाल राजा ॥ २ ॥ कर्या कर्म्म दुर्मर्म्म चकचूर जेणें । भला भव्य नवपद ध्यानेन तेणें ॥ करी पूजना भव्य भावें त्रिकालें । सदा वासियो आतमा तेण कालें ॥ ३ ॥ जिके तीर्थकर कर्म उदयें करीनें । दिये देशना भव्यनें हित धरीनें ॥ सदा आठ महापाडिहारे समेता। सुरेशें नरेशें स्तव्या ब्रह्मपूता ॥ ४ ॥ कर्या घातिया कर्म चारे अलग्गा । भवोपग्रही चार छे जे विलग्गा ॥ जगत् पंचकल्याणकें सौख्य पामें । नमो तेह तीर्थंकरा मोक्षकामें ॥ ५ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( ढाल ) ॥ त्रीजे भव विधिसें करी । वीश स्थानक तप करिनें रे ॥ गोत्र तीर्थंकर बांधियुं । समकित शुद्ध मन धरिनेंरे ॥ १ ॥ अरिहंत पद नित वंदियें । करम कठिन जिम छंमीये रे ॥ ( ए आंकणी ) ॥ जनम कल्याणक दिनें । नारकी सुखिया थावेरे ॥ मति श्रुत अवधि विराजता । जसु उपम कोइ नावे रे ॥ अ० ॥ २ ॥ दीक्षा लीधी शुभ मनें । मन पर्यव आदरियुं रे ॥ तप करि कर्म खपाइनें । ततखिण केवल वरियुं रे ॥ अ० ॥ ३ ॥ चउतीश अतिशय शोभता । वाणी गुण पेंतीशो रे ॥ अठदश दोष रहित थई, जे भवजगीसो रे ॥ अ० ॥ ४ ॥ तन मन वयण लगाइने । अरिहंत पद आराधे रे ॥ ते नर निश्चयथी सही । अरिहंत पदवी साधे रे ॥ अ० ॥ ५ ॥

॥ ❋ ॥ श्लोक ॥ अथाष्टदलमध्याब्ज । कर्णिकायां जिनेश्वरान् ॥ आवि र्भूत लसद्बोधा । नाहृतः स्थापयाम्यहम् ॥ १ ॥ निःशेष दोषेंधनधूमकेतु नपार संसार समुद्र सेतून् ॥ यजे समस्ता तिशयैक हेतून् । श्रीमज्जिनानं बुजकर्णिकायाम् ॥ २ ॥ ( ॐ ह्रीं अर्हद्भ्यो नमः ) ॥ इति ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ द्वितीय सिद्धपद पूजा ॥ ❋ ॥

॥ दोहा ॥ दूजी पूजा सिद्धकी । कीजें दिल खुशियाल ॥ अशुभ कर्म दूरें टले । फले मनोरथमाल ॥ १ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ दुठ्ठ कम्मावरण प्पमुक्के । अणंतनाणाइ सिरी चउक्के । समग्ग लोग ग्गपयप्पसिद्धे । झाएहनिच्चंपि मणं मि सिद्धे ॥ २ ॥❋॥ ॥❋॥

॥ ❋ ॥ सिद्धाणमाणंदरमालयाणं । णमो णमो णंत चउक्कयाणं ॥ सम्मग्ग कम्मक्खय कारयाणं । जम्मं जरा दुक्ख निवारयाणं ॥ १ ॥ करी आठ कर्म क्षयें पार पाम्या । जरा जन्म मरणादि भय जेण वाम्या ॥ निरावरण जे आत्मरूपें प्रसिद्धा । थया पार पामी सदा सिद्ध बुद्धा ॥ त्रिभा गोनदेहा वगाहात्मदेशा । रह्या ज्ञानमय जात वर्णादि लेशा ॥ सदानंद सौ ख्याश्रिता ज्योतिरूपा । अनाबाध अपुनर्भवादि स्वरूपा ॥ १ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ( ढाल ) ॥ सकल करमनो क्षय करी । सिद्ध अवस्था पाई रे ॥ गुण इगतीस विराजता । उपम जसनही कांई रे ॥ ६ ॥ मन शुद्ध सिद्ध पद वंदियें ( ए आंकणी ) जनम मरण दुःख निर्गम्या । शुद्धातम चिदरू पी रे ॥ अनंत चतुष्टय धारता । अव्याबाध अरूपी रे ॥ म० ॥ ७ ॥ जास ध्यान जोगीसरू । करे अजप्पा जापें रे ॥ भव भव संच्यां जीवने । कठिण करम तें कापें रे ॥ म० ॥ ८ ॥ ध्यान धरंतां सिद्धनुं । पूजंतां मन रागें रे ॥ अविचल पदवी पाईयें । कह्युं जिनवर वर भागें रे ॥ म० ॥ ९ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ श्लोक ॥ तस्य पूर्वदले सिद्धान् । सम्यक्त्वादि गुणात्मकान् ॥ निःश्रेयसपदं प्राप्तान् । बिदधे भक्ति निर्भरः ॥ १ ॥ तत्पूर्वपत्रे परितः प्रणष्ट दुष्टाष्टकर्मानधिगम्य शुद्धिम् ॥ प्राप्तान्नरान् सिद्धिमनंतबोधान् । सिद्धान्यजे शांति करा न्नराणाम् ॥ ( ॐ ह्रीं सिद्धेभ्योनमः ) ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ तृतीय आचार्यपद पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ ॥ हिव आचारज पद तणी । पूजा करो विशेष ॥ मोह तिमिर दूरें हरे । बूझे भाव अशेष ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ नतं सुहृद्देहि पिया न माया । जंदिति जीवाणिह सरि पाया । तुम्हा हु देवेव मया महेह । जंसुत्त सुरकाइं जहुं जहेह ॥ २ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सूरीण दूरीकय कुग्गहाणं । णमो णमो सूरसम प्पहाणं ॥ सगणा दाण समायराणं । अखंड छत्तीस गुणायराणं ॥ १ ॥ नतुं सूरिराजा सदा तत्त्वताजा । जिनेंद्रा गमें प्रौढ साम्राज्यभाजा । षड्वर्ग व र्गितगुणें शोभमाना । पंचाचारनें पालवे सावधाना ॥ भवि प्राणिनें देशना देशकाले । सदा अप्रमत्ता यथा सूत्र आले ॥ जिके शासनाधार दिग्दंति कल्पा । जगत्ते चिरंजीवजो शुद्धजल्पा ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( ढाल ) ॥ गुणछत्तीशे दीपता । पाले पंच आचारो रे ॥ जिन मारग साचो कहे । युगप्रधान जयकारो रे ॥ १० ॥ आचारिज पद वंदीयें । ( आंकणी ) ॥ सारण वारण चोयणा । पडिचोयण चो शिक्षो रे ॥ भव्यजीव समजावता । देवाने ने दिक्षा रे ॥ आ० ॥ ११ ॥ जिनवर सूरज आथ म्या । परतिक्ष दीपक जेहा रे ॥ सकल भाव परगट करे । ज्ञानसयी जगु देहा रे ॥ आ० ॥ १२ ॥ विधिशुं पूजा साचवे । ध्यावे निज हित जाणी रे ॥ गवे सद्गुरु कालमां । आचारज पद प्राणी रे ॥ १३ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( श्लोक ) ॥ स्थापयामि ततः सूरीन् । हृदि पौगलिकत्वे लक्षणं ॥ करतः पंचधाचारं । सन्निधिवत् महोत्सुतान् ॥ १ ॥ सूरीन् सदाचार सतांश्च मान्य । नाचारयंतः स्वपरान्यथेष्टम् ॥ उल्लोपसर्गक निवारणार्थे । सम्यर्चया म्यक्षत गंध पुष्पैः ॥ २ ॥ ( ॐ ह्रीं सूरिभ्योनमः ) ॥ इति ॥ ३ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ चतुर्थ उपाध्याय पद पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❋ ॥ छंद ॥ सुत्तत्थवित्थारण तप्पराणं । णमो णमो वायग कुंजराणं ॥ गणस्स संधारण सायराणं । सव्व प्पणा वज्जिय मछराणं ॥ १ ॥ नही सूरि पण सूरिगणनें सहाया, नमुं वाचका त्यक्त मदमोह माया ॥ वळी द्वादशांगादि सूत्रार्थ दानें, जिके सावधानें निरुद्धाभिमानें ॥ धरे पंचनें वर्ग वर्गित गुणौघाः । प्रवादि द्विपोच्छेदने तुल्य सिंघाः ॥ गुणी गछसंधारणे स्तंभभूता । उपाध्याय ते वंदियें चितप्रभूता ॥ १ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ( ढाल ) ॥ द्वादशांगी वाणी वदे । सूत्र अरथ विस्तारेरे ॥ पंचवरग गुण जेहना । सुमति गुपति नित धारेरे ॥ १४ ॥ श्रीउवझाया वंदियें ( ए आंकणी ) ॥ दायक आगम वाचना, भेद भाव युत सारीरे ॥ मूरखकूं पंडित करे, जगतजंतु हितकारीरे ॥ १५ ॥श्री०॥ शीतलचंद किरण समी, वाणी जेहनी कहियेंरे ॥ ते उवझाया पूजतां, अविचल सुखमा लहीयेंरे ॥ १६ ॥ इति ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ श्लोक ॥ द्वादशांगश्रुताधारान् ॥ शास्त्राध्ययन तत्परान् । निवेशयाम्युपाध्यायान् । पवित्रे पश्चिमे दले ॥ १ ॥ श्रीधर्मशास्त्राण्यनिशं प्रशांत्यै । पठंति येऽन्यानपि पाठयंति ॥ अध्यापकांस्तानपराब्जपत्रे । स्थितान्पवित्रान्परिपूजयामि ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं उपाध्यायेभ्योनमः ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ पंचम साधुपदपूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दोहा ॥ मोक्षमारग साधन भणी, सावधान थया जेह ॥ ते मुनिवरपद वंदतां । निर्मल थाये देह ॥ १ ॥ ❋ ॥

॥ खंतेय दंतेय सुगुत्ति गुत्ते । मुत्ते पसंते गुण जोग जुत्ते । गयप्पमाए हय मोह माए । झाएह निच्चं मणि राय पाए ॥ ५ ॥❋॥ ॥❋॥

॥ ❀ ॥ ( ढाल ) सकल विषय विष वारिनें, आतमध्यानें रातारे ॥
पशम रसमां झीलता । निज गुण ज्ञानें मातारे ॥ १७ ॥ हित धरि मुनि
द वंदियें ( ए आंकणी ) रतनत्रयी आराधतां । षट्काया प्रतिपालेरे ॥
चेंद्री जीपे सदा । जिन मारग अजुवालेरे ॥ हि० ॥ १८ ॥ गुण सत्तावी
। अलंकरद्या । पंच महाव्रत धारीरे ॥ द्वादशविध तप आदरे । चिदानंद
ुखकारीरे ॥ हि० ॥ १९ ॥ नवविध ब्रह्मचारिज धरे । करम महा भट जी
यारे ॥ एहवा मुनि ध्यावे सदा । ते नर जगत विदीतारे ॥ हि० ॥ २० ॥

॥ ❀ ॥ श्लोक ॥ व्याख्यादिकर्म कुर्वाणान् । शुभध्यानैक मानसान् ॥
दकपत्रगतान्नित्यं, साधून्वंदामि सुव्रतान् ॥ १ ॥ वैराग्यमंतर्वचसि प्रशिद्धं
त्यं तपो द्वादशधा शरीरे ॥ येषामुदकपत्र गतान् पवित्रान् । साधून् सदा
ान् परिपूजयामि ॥ ॐ ह्रीं सर्व साधुभ्योनमः ॥ ❀ ॥ ॥❀॥

## ॥ ❀ ॥ अथ षष्टमदर्शन पदपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ जिनवर भाषित शुद्धनय, तत्त्व तणी परतीत ॥ ते स
यग्दर्शन सदा । आदरियें शुभरीत ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जं दव्वछकाइ सु सद्दहाणं । तं दंसणं सव्व गुणप्पहाणं । कुग्गाहवाही
वयंति जेण । जहा विसुद्धेण रसायणेण ॥ ६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ छंद ॥ जिणुत्ततत्ते रुइ लक्खणस्स । णमो णमो निम्मल दंसण
स ॥ मिछत्त नासाइ समुग्गमस्स । मूलस्स सद्धम्म महादुमस्स ॥ १ ॥
ेपरियासहो वासनारूप मिथ्या । टले जे अनादी अछे जे कुपथ्या ॥
जेनोक्ते हुवे सहजथी सुद्धध्यानं । कहियें दर्शनं तेह परमं निधानं ॥ विना
ेहथी ज्ञानमज्ञानरूपं । चरित्रं विचित्रं भवारण्य कूपं ॥ प्रकृति सात उपश
क्षयें तेह होवे । तिहां आपरूपें सदा आप जोवे ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ सुगुरु सुदेव सुधर्मनी । सद्दहणा चित्त धरियेंरें ॥ सात
कृतिनो क्षय करी । क्षायिक समकित वरियेंरे ॥ २१ ॥ दरशण पद नित
ादियें ( ए आंकणी ) इण विण ज्ञान निःफल कह्युं । चारित्र निःफल जा
रे ॥ शिव सुख ए विण नां मीले; बहु संसारी थायेरे ॥ द० ॥ २ ॥ सतसहि

भेदें शोभतुं । अजरामर फल दातारे ॥ जे नर पूजे भावशुं । ते पामें सुख शातारे । दरशण पद० ॥ २३ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ श्लोक ॥ जिनेंद्रोक्तमतं श्रद्धा । लक्षणं दर्शनंयजे ॥ मिथ्यात्वमथनं शुद्धं । न्यस्तमीशानसद्दले ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनाय नमः ॥ इति ॥६॥

## ॥ ❋ ॥ अथ सप्तम ज्ञान पद पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दोहा ॥ सप्तम पद श्री ज्ञाननो । सिद्धचक्रतप मांहि ॥ आराधीजें शुभ मनें । दिन दिन अधिक उछाहि ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ नाणं पहाणं नय सिद्ध चक्कं । तत्तावबोहिक्क मयं पसिद्धं । धरेह चित्तावसहे फुरंतं । माणक्क दीवुव्व तमो हरंतं ॥ ७ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ छंद ॥ अन्नाण संमोह तमोहरस्स । णमो णमो नाण दिवायरस्स ॥ पंचप्पयाररस्सु वगारगस्स । सत्ताण सव्वत्थ पया सगस्स ॥ १ ॥ हुवे जेहथी ज्ञान शुद्ध प्रबोधं । यथा वरण नाशे विचित्रं विबोधं ॥ तिणें जाणीयें वस्तु षडद्रव्य भावा । न होवे वितछा निजेछा स्वभावा ॥ हुवे पंच मत्यादि सुज्ञान भेदें । गुरूपासथी योग्यता तेह वेदे ॥ वली ज्ञेय हेया उपादेय रूपें । लहे चित्तमां जेम ध्वांतप्रदीपें ॥ १ ॥

॥ ❋ ॥ ( ढाल ) भक्ष अभक्ष विचारणा । पेय अपेय निर्धारोरे ॥ कृत्य अकृत्य नें जाणियें । ज्ञान महा जयकारोरे ॥ २४ ॥ ज्ञान निरंतर वंदियें ॥ (ए आंकणी) ॥ ज्ञान विना जयणा नही । जयणा विण नही धर्मोरे ॥ धर्म विना शिव सुख नही । ते विण न मिटे भर्मोरे ॥ ज्ञा० ॥ २५ ॥ पांच प्रकार छे जेहना, भेद इकावन तासोरे ॥ जाणीनें पूजे सदा । ते लहे केवल खासोरे ॥ २६ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ श्लोक ॥ अशेषद्रव्यपर्याय । रूपमेवावभासकम् ॥ ज्ञानमाग्नेयपत्रस्थं । पूजयामि हितावहम् ॥ इति ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ अष्टम चारित्र पद पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दोहा ॥ अष्टमपद चारित्रनुं । पूजो धरी उमेद ॥ पूजत अनुभव रस मिले । पातक होय उछेद ॥ १ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ सुसंवरं मोह निरोह सारं। पंचप्पयारं विगयाइ यारं। मूलोत्तराणेग गुणं पवित्तं । पालेह निचंपिहु सच्चरित्तं ॥ ८ ॥❀॥ ॥❀॥

॥❀॥ छंद ॥ आराहियाखंभिय सक्कियस्स। णमो णमो संयम वीरियस्स ॥ सझावणा संग बिवड्ढियस्स। निव्वाणदाणाइ समुज्जयस्स ॥ १ ॥
वली ज्ञानफल चरण धरियें सुरंगें। निराशंसता द्वाररोध प्रसंगें ॥ भवांभोधिसंतारणे यानतुल्यं। धरुं तेह चारित्र अप्राप्तमूल्यं ॥ १ ॥ हुवे जास महिमाथकी रंक राजा। वली द्वादशांगी भणी होय ताजा ॥ वली पाप रूपोपि निःपाप थाये। थई सिद्ध ते कर्मनें पार जाये ॥ २ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल) सर्व विरति देशविरतिथी। अणागार सागारी रे ॥ जयवंतो थावो सदा । ते चारित्र गुण धारी रे॥ २७ ॥ चारित्रपद नित वंदीयें ॥ (ए आंकणी) षट्खंड सुख तजि आदरे। संयमशिव सुखदायी रे ॥ सत्तर भेदें जिन कह्यो। ते आदरियें भाईरे ॥ चा० ॥ २८ ॥ तत्त्वरमण तसु मूल छे। सकल आश्रवनो त्यागी रे ॥ विधिसेती पूजन करे । भाव धरी वडभागी रे ॥ चा० ॥ २९ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥श्लोक ॥ सामायिकादिभिर्भेदै। श्चारित्रं चारुपंचधा ॥ संस्थापयामि पूजार्थं। पत्रे हि नैरुते क्रमात् ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ सम्यग्चारित्राय नमः॥८॥

## ॥ ❀ ॥ अथ नवम तपपद पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ दोहा ॥ कर्मकाष्ट प्रति जालवा। परतिख अगनिसमान ॥ ते तप पद पूजो सदा। निर्मल धरियें ध्यान ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ वझं तहाभिंतर भेयमेयं। कयाइ दुभेय कुकम्मभेयं। दुक्खक्खयत्थं कयपावनासं। तवं तवेहा गमियं निरासं॥ ९ ॥ एयाइं जेकेवि नवप्पयाइं। आराहियंतिष्ठफल प्पयाइं। लहंति ते सुरक परंपराणं। सिरि सिरीपाल नरेसरुव्व ॥ १० ॥❀॥ ॥❀॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कम्मदुमोनमूलण कुंजरस्स। णमो णमो तिव्वतवोभरस्स ॥ अणेग लद्धीण निबंधणस्स । दुस्सज्ज अत्थाणय साहणस्स ॥ १ ॥ त्रिकालिकपणें कर्म कषाय टाले। निकाचितपणें बांधियां तेह बाले॥ कह्युं तेह तप बाह्य अभ्यंतर दुभेदें। क्षमा युक्त निर्हेतु दुर्ध्यान छेदे॥ हुवे जास महि

माथकी लब्धि सिद्धि। अवांछकपणे कर्म आवरण शुद्धि। तपो तेह तप जे महानंद हेतें। हुवे सिद्धि सीमंतिनी निज संकेतें ॥ १ ॥ ❋ ॥ ॥❋॥

॥ ❋ ॥ ( ढाल ) निज इछा अवरोधीयें। तेहिज तप जिन भाख्युंरे ॥ बाह्य अभ्यंतर भेदथी। द्वादशभेदें दाख्युंरे ॥ ३० ॥ अनुपम तप पद वंदियें ( ए आंकणी ) तदभव मोक्ष गामीपणुं। जाणे पण जिन रायारे ॥ तप कीधा अति आकरा। कुत्सित करम खपायारे ॥ अ० ॥ ३१ ॥ करम निकाचित क्षय हुवे। ते तपनें परभावेंरे॥ लब्धि अठावीश ऊपजे। अष्ट महासिद्धि पावेरे ॥ अ० ३२ ॥ एहवुं तपपद ध्यावतां। पूजंतां चित्त चाहेरे ॥ अक्षयगति निर्मल लहे। सहु योगिंद सराहे रे ॥ अ० ॥ ३३ ॥

॥ ❋ ॥ श्लोक ॥ द्विधा द्वादशधा भिन्नं। पूते पत्रे तपश्चयं॥ संस्थापयामि भक्त्यात्र। वायव्यां दिशि शर्मदम् ॥ ॐ ह्रीँ सम्यग्तपसे नमः इति ॥ ९ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ कलश ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ इम नवपद ध्यावे, पर्म आनंद पावे। नव भव शिव जावे, देव नर भव पावे ॥ ज्ञान विमल गुण गावे, सिद्ध चक्र प्रभावे। सहु दुरित शमावे, विश्व जयकार पावे ॥ १ ॥ ❋ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अरिहंत सिद्ध आचार्य उवझाय, साधु दंसण नाण ए ॥ चारित्र तप नवपद थकी, इहां सिद्धचक्र प्रमाण ए ॥ १ ॥ श्रीपाल राजा सुक्ख ताजा, लह्या सिद्धचक्र ध्यानसों ॥ भविजन भजो जिन लाभ जाणी, हिये आणी भाव सों ॥ २ ॥ इय नवपय सिद्धिं, लद्धि विज्जा समिद्धं। पयडिय सरवग्गं, ह्रीँ तिरेहासमग्गं॥ दिसिवइ सुरसारं, खोणिपीढावयारं। तिजय विजयचक्कं सिद्धचक्कं नमामि ॥३॥ निःस्वेदत्वादि दिव्या तिशयमयतनून् श्री जिनेंद्रान्सुसिद्धान्। सम्यक्त्वादि प्रकृष्टाष्टगुणगणभृदा, चार सारांश्च सूरीन् ॥ शास्त्राणि प्राणिरक्षा प्रवचनरचना सुंदराण्यादिशंत। स्तत्सिद्ध्यै पाठकानां यतिपति सहितानर्चया म्यर्घदानैः ॥१॥इत्थमष्टदलं पद्मं। पूरयेदर्हदादिभिः॥ स्वाहांतैः प्रणवाद्यैश्च। पदैर्विघ्न निवृत्तये ॥ २ ॥ ॐ ह्रीँ पंचपरमेष्ठिने सम्यग्ज्ञानादिचतुरन्वितेभ्यो नमः ॥ ❋ ॥ इति श्री नवपदस्तुतिः ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ नवपद आरती ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ए नवपद प्राणी नित ध्यावो । पंचम गत सासय सुख पावो ॥ ( ए आंकणी ) धुरथी अरिहंतपद ध्याईजें । थिरतायें श्री सिद्ध थुणीजें ॥ ए० ॥ १ ॥ आचारज तीजें आराधो । सूधे मन जिन कारिज साधो ॥ ए० ॥ २ ॥ उवझाया पंचम अणगारा । प्रणमंतां पामें भवपारा ॥ ए० ॥ ॥ ३ ॥ दंसण नाण चरण भल दीपे । तप तपतां कम अरिनें जीपे ॥ ए० ॥ ४ ॥ ए नवपद प्राणी नित थुणतां । गिरुवा नरभव सफल गिणंता ॥ ए० ॥ ५ ॥ सिद्धचक्रनी कीजें सेवा । मनवंछित लहियें नित मेवा ॥ ए० ॥ ६ ॥ अजर अमर सुखदायक साचो । रूप्चे मनसें नित प्रति राचो ॥ ए० ॥ ७ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ पंचपरमेष्टी पूजा ॥ ❋ ॥

### ॥ ❋ ॥ प्रथम अरिहंत पद पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दूहा ॥ ऊँकारबीज आदे नमुं ॥ गीर्वाणी सुखदाय । तुं तू ठी पंम्तिकरे ॥ पूजे सुर नर राय ॥ १ ॥ ऊँ नमो गुरु देवकुं । भाषासरस बनाय ॥ पाहणथी पल्लवकरे । उपगारी सिरराय ॥ २ ॥ प्रथम नमुं अरिहंतजी ॥ दूजा सिद्ध अनंत । तीजा सूरि सदानमुं । उपगारी भगवंत ॥ ३ ॥ वलि उव झाया वंदिये ॥ गुण पचवीस प्रधांन । द्वादश अंग प्ररूपता ॥ नही विकथा नाहिमांन ॥ ४ ॥ पंचम पद मुनि राजनो । वंदो भवि इकतार ॥ गुण सत्तावी-स सोभता । करुणारस भंमार ॥ ५ ॥ पांचो पद सेवेनहीं । मूरख लोक अजाण । ए पांचूं परमेष्टिहै ॥ अनुपम सुखकीखाण ॥ ६ ॥ उज्जल वरण विरा-जता ॥ कुमति हरण सुभलेश ॥ अरिहंत पद पूजा करो । सेवन सदा सुरेस ॥ ॥ ७ ॥ अष्ट द्रव्य लेईकरी । पूजो अरिहंत देव । पूजत अनुभव रसमिले । पावो सुख नितमेव ॥ ८ ॥ प्रथम पद श्रीकारहै । अतिसय जास अनंत । तीनलो-कना राजवी । सेवे सुर नर संत ॥ ९ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ चाल होलीरी ॥ वलिहारी सुखकर जिनवरकी । सबदेवनमें देव नगीनो । महिमा अधिकी मुनिवरकी ॥ व० ॥ कोईध्यावे हरि हर ब्रह्मा । कोई कहे मेरे बालाकी ॥ व० ॥ १ ॥ कोई नरसिंह देवकुं ध्यावे । कोई कहै मेरे भ्वालाजी ॥ व० ॥ मेरे परसन तुमही आए । वीतराग गुण वालाजी ॥

ब० ॥ २ ॥ अवरदेव सब काच कथीरा । तुमहो अमोलक हीराजी ॥ ब० ॥ राग द्वेष तुम पास नहीं हैं । वाईस परीसह धीराजी ॥ ब० ॥ ३ ॥ तेरी सूरत की वलिहारी । क्याकहुं अजब अमीराजी ॥ ब० ॥ कोड देवता हाजर रहता अणहुंते वडवीराजी ॥ ब० ॥ ४ ॥ जगजीवन जगलोचन कहियें । तुमसम अवरन धीराजी ॥ ब० ॥ तेरे गुणको पारन पायो । सुरनर राय वजीराजी ॥ ब० ॥ ५ ॥ बारे गुणो प्रभू ऊपर सोहै ॥ वृक्ष अशोक उदाराजी ॥ ब० ॥ तीनछत्र भामंडल पूठे । ध्वजा फुरक रही साराजी ॥ ब० ॥ ६ ॥ पृथ्वीपीठ सिंहासन ऊपर । राजत हो बडवीराजी ॥ ब० ॥ पान फूल करके बहु सो भत । राजतहो गुणपूराजी ॥ ब० ॥ ७ ॥ सहस जोजननो इंद्रध्वज प्रभु आगे चालत सारा जी ॥ ब० ॥ महागोप महामाहण कहिये । निर्यामिक सत्थ वाराजी ॥ ब० ॥ ८ ॥ ऐसे अरिहंत पदकी महिमा । सुणियो तुम सब प्यारा जी ॥ ब० ॥ तीन लोकमें इनका झंडा । पूजतहै इकताराजी ॥ ब० ॥ ९ ॥ अष्ट द्रव्यसें पूजा करतां । सदा हुवै जयकाराजी ॥ ब ॥ धर्म विशाल दयाल पसायै । सुमति कहै गुणसाराजी ॥ ब० ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने पंचपरमेष्ठी महामंत्र राजाय अरिहंत पदे अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति अरिहंत पद पूजा ॥ १ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ दूजी सिद्धपूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दूहा ॥ दूजी पूजा सिद्धकी । करो भविक गुणवंत । धजा चढावो भावसुं । लालवरण मतिवंत ॥ १ ॥ गुण इकतीस विराजता । तीनलोक सिरछत्र । अनंतचतुष्टय धारता । जगजीवन जगमित्र ॥ २ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ढाल ॥ भविपनरमपदगुणगानाहो ॥ भ० ॥ एचाल ॥ भविसिद्ध पदके गुणगानाहो ॥ भ० सि० ॥ पनरेभेदे सिद्ध विराजे । भवितुम चितमें लानाहो ॥ भ० सि० ॥ जिना जिन तीरथा तीरथ कहियें । अन्य सलिंग कहानाहो । ॥ भ० सि० ॥ १ ॥ स्त्री पुरुषादिक लिंगें जाये । कृत्य नपुंसक गानाहो ॥ ॥ भ० ॥ प्रत्येकबुद्ध नें सहसंबुद्धा । बुद्धबोधित सुप्रमानाहो ॥ भ० सि० २ ॥ एक अनेक और एकसमयें। गुरुमुखथी सुध पानाहो ॥ भ० सि० ॥ अष्ट सिद्धि नव निधिके दाता । तुमहो देव निधानाहो ॥ भ० सि० ॥ ३ ॥ सादी अनंत

तुम सुखके भोगी। जोगीसर लयलानाहो ॥ भ० सि० ॥ शब्दरूप रस गंध फरसकुं। जीतभए मुनि भाना हो ॥ भ० सि० ॥ ४ ॥ अव्याबाध सुखके तुम रसिये। भव्य सकल सुख दानाहो ॥ भ० सि० ॥ घाति अघाति दूर करीनें। जोतमेंजोत समानाहो ॥ भ० सि० ॥ ५ ॥ पेंतालीसलख जोजन सिला। उज्जलवरण कहानाहो ॥ भ० सि० ॥ ऊपर जोजन भागचोइसमें। सिद्धप्रभु ठहरानाहो ॥ भ० सि० ॥ ६ ॥ तिहां श्रीसिद्ध सदा जयवंता। परमगुरु परधानाहो ॥ भ० सि० ॥ अनंतगुणाकर ज्ञान दिवाकर। इनके गुण नितगानाहो ॥ भ० सि० ॥ ७ ॥ लबधि रिद्धि सब सिद्धिके दाता। परम इष्ट सुखदानाहो ॥ भ० सि० ॥ धरमविशाल दयाल पसायें। सुमति कहै बुधवानाहो ॥ भ० सि० ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सिद्धपरमात्मने अष्ट द्रव्यं यजामहेस्वाहा ॥ इति सिद्धपद पूजा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ तीजी आचार्यपद पूजा ॥ ❀ ॥

॥ दूहा ॥ तीजेपदकूं नितनमूं। आचारज गुणवान। गुणछत्तीस वीराजता। जिनवरके परधान ॥ १ ॥ प्रतिरूपादिक गुणकरी। राजेसूर समान। जातिवंत कुलवंतहै। नहीविकथा नहीमांन ॥ २ ॥ भव्य सकलकूं तारवा। देसाचो उपदेश। कुमति सदादूरे करै। सुमती पाले हमेश ॥ ३ ॥ ऋद्धि सिद्धि कारण पूजियै। पीलेरंग प्रधांन। गणधारक गुरु गच्छपती। युगपरधान सुजान।

॥ ढाल ॥ मल्लीजिनंद सुखकारी रेवाला ॥ एचाल ॥ आचारज सुखकारी रे वाला ॥ आं० ॥ पंचाचार विराजत जगमणि। सहस किरण अवतारी रे वाला ॥ आ० ॥ प्रतिरूपादिक गुण जसु लाजे। मोह माया परिहारी रे वाला ॥ आ० ॥ १ ॥ रागद्वेषकुं दूर निवारे। सुमतारस भंडारीरे वाला ॥ आ० ॥ क्रोध मान माया नहि जिनके। विकथा दूर निवारीरे वाला ॥ आ० ॥ २ ॥ तेजकरी सूरज सम सोभित। मिथ्यातमके वारीरे वाला ॥ आ० ॥ क्षमा अधिक जगमें जसुराजे। विषयविकार निवारीरे वाला ॥ आ० ॥ ३ ॥ हृदय गंभीर महायश निर्मल। रूपादिक मनुहारी रे वाला ॥ आ० ॥ देश जात कुल उत्तम जिनके। मोह्या सब नर नारीरे वाला ॥ आ० ॥ ४ ॥ सुरवर नरवर सेव करतहै। जय २ तुम सुखकारीरे वाला ॥ आ० ॥ मीठी

अमृत वाणी बोलै । सुणतां हरख अपारीरे वाला ॥ आ० ॥ ५ ॥ पूर्वचवद नएया श्रुतसागर । लबधि अठाईस धारी रे वाला० ॥ द्रव्यानुजोगी चरणानुजोगी । करणजोगके धारी रे वाला ॥ आ० ॥ ६ ॥ गणतानुजोगरू धरमानुजोगी । जाणें आगमसारारे वाला० । धर्मप्रवाहक एह कहीजे । सूरि मंत्रके धारी रे ॥ वाला० आ० ॥ ७ ॥ गणधारी गछभार धुरंधर । सारण बारण कारी रे ॥ वाला ॥ आ०॥ ज्ञान उजागर विद्या सागर । वारीजाऊं वार हजारी रे ॥वाला०॥आ०॥८॥ धरम विशाल दयाल पसाये। सुमति कहे जय कारीरे॥वाला०॥आ०॥एसै गौतमस्वामी कहिये।पूजोकर इकतारी रे॥वाला। आ० ॥ ९ ॥ इति ॐ ह्रीँ श्रीपरमात्मने० स्वाहाः ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ चोथी श्रीउवझाय पद पूजा ॥ ❋ ॥

॥ दूहा ॥ श्रीउवझाया वंदिये । प्रेमधरी मनरंग ॥ चोथे पदमें सोभता । पूजो धर उछरंग ॥ १ ॥ नीलवरण ध्वज सुंदरू । धरलावो सुभथाल । अष्टद्रव्य लेईकरी । सेवो दीनदयाल ॥ २ ॥ ढाल ॥ जिनगुणगानं श्रुतऽमृतं ॥ ए चाल॥श्रीउवझाया भयहरणं । भयहरणं रे देवा भयहरणं ॥श्री॥ परिहर विषय विकार प्रकारं । ए गुरु है असरण सरणं ॥श्री ॥१॥ गुण पचवीस विराजत सुंदर । देखत सबको मनहरणं ॥ श्री० । तेजपुंज रवि शशि समदीपत । मिथ्या तम दूरेकरणं ॥ श्री० ॥ २ ॥ सूत्र अर्थ दाता जगमां है । मुनि मानसमें जय करणं । सारण वायण चोयण करता । पडिचोयण वलि आचरणं ॥ श्री ॥ ३ ॥ द्वादश अंग पढ्या श्रुतसागर । सुमती धर कुमती हरणं ॥ श्री ॥ अतिशय विद्याचूरण योगे । जिनसासन उन्नतिकरणं ॥ श्री ॥ ४ ॥ धरम प्रभाविक है उपगारी । ऐसे गुरु तारण तरणं ॥ श्री० ॥ तप जप आदिकनी खप करता भव्य सकलकुं निसतरणं ॥ श्री ॥ ५ ॥ नवविध ब्रह्मचर्यके धारक । दशविधि विनय सदाकरणं ॥ श्री ॥ ॥ माया ममता दूर निवारी । द्वादश भेदे तपधरणं श्री ॥ ६ ॥ शिष्य वरगकूं ज्ञानदानदे । मूरखथी पंडित करणं ॥ श्री ॥ जग जीवनके हो प्रतिपालक । तुमविन अवरन आभरणं ॥ श्री ७ ॥ विनकारण जगमें उपगारी । धन २ तुमरी आचरणं ॥ श्री० ॥ पंचपरमेष्टी महामंत्रको । इष्ट सदा दिलमें धरणं ॥ श्री ॥ ८ ॥ धरम विशाल दयाल पसाये । सुमति

करे तुम्ह नितवरणं ॥ श्री० ॥ नवनिध अडसिध मंगलमाला। पूजत जगमें जस वरणं ॥ श्री० ॥ ९ ॥ ॥ ॐ ह्रीँ परमात्म० शक्रजपाठक राजाय ऽष्ट द्रव्यं य० ॥ इति पाठक पदपूजा ॥ ४ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ पंचमी साधु पदपूजा ॥ ❀ ॥

॥ दूहा ॥ पंचमपदमें सोभता। साधु सकल गुणवंत। गुण सतवीस विराजता। महिमावंत महंत ॥ १ ॥ स्यामबरण मुनिवर कह्या। तप करवा अति सूरि। भविक कमल प्रतिबोधता। धरता निरमल नूर ॥ २ ॥ ॥❀॥

॥❀॥ ढाल ॥ सदा सहाई कुसल सू०॥एचाल॥सदा सहाई वीर पटोधर। सुणियो भविक उदार ॥ भलाजी ॥ सु० ॥ सुधर्म स्वामी अंतरजामी। तसु नंदन सुखकार ॥ भ० ॥ जंबूआदिक गुणके सागर। तेप्रणसुं हितकार ॥ भ० स० ॥१॥ प्रभवादिकसय पांच उदारा। प्रतिबोध्या सुखकार। भ०। सिज्जंभव आदिक जे सूरि। तेहना शिष्य सुविचार ॥ भ० । स० २ ॥ थूलभद्र मोटो ब्रह्मचारी। दुकरदुकरकार। भ०। सिंहगुफावासी जेमुनिवर। भाषे दुक्कर कार ॥ भ० स० ३ ॥ वज्र कुमार बहु उपगारी। प्रतिबोध्या नर नार। भ०। श्रीसिद्धसेन दिवाकर स्वामी। राखी जगमें कार ॥ भ० स०४ ॥ विक्रम आदिक नृप अढारे। प्रतिबोध्या सुखकार। भ० । एकतीरथकुं परगट करके। गुरुचरणां व्रतधार। भ०॥स० ॥ ५ ॥ देवर्द्धिगणी ए सबमें मोटा। राख्यो ज्ञानज सार॥ भ०॥सूत्र ताडपत्रे लिखराख्या। जेशलमेर मझार।भ०स०॥६॥अभयदेव सूरी उपगारी। नव अंग टीका कार। भ०। हेमाचारज है बहुभागी जिणकीनो हेमभंडार। भ०। ७॥ कुमार पालनें जिण प्रति बोध्यो। साखीधरमनो राख।भ०। श्रीजिनदत्त सूरीसर मोटा। श्रावक किया सवा लाख भ० स०८ ॥ रतन प्रभु सूरी उपगारी। ओस्यानगर मझार। भ०। ओसवंसकी थापनाकरके। मोटो कियो उपगार। भ० स०॥ ९ ॥ इत्यादिक गुण गणके दरिया। सेवो भविक उदार ॥ भ० ॥ ढंढणआदिक महातपसूरा। नांमलियां जयकार। भ० स० ॥ १० ॥ गजसुकुमाल महामुनिवंदुं। भावकरी इकतार। भ०। धन धन्ना अरु शालभद्रजी। कीनीकरणीसार। भ० स० ॥ ११ ॥ खंधकसूरिना शिष्य पांचसे। सूरवीर व्रतधार

। ज०। पंचमपदमें ए मुनिपूजो । सदाहुवै सुखकार । ज० स० ॥ १२ ॥ पंच मआरे छेहरू होसी । डुपसहसूरि दयाल । ज० । इत्यादिक एद्वीप अढीमें । वंदु साधु कृपाल ॥ ज० स० ॥ १३ ॥ धरमविशाल दयाल पसाये । पूज रची सुखदाय । ज० । सुमतिकहै एपंचपरमेष्टी। कामधेनु कहवाय ज० स० ॥

## ॥ ❀ ॥ ढाल दूजी ॥ चालपाणिहारीकी ॥ ❀ ॥

॥ सुणप्याराजी। सुणतांआसीस्वाद प्याराजी । धरम सनेही साधुजी ॥ सु० ॥ करता परउपगार प्या० ॥ लालच लोभ न जेहनें । सु० । नहिरा खे द्धेषलगार प्या० । ममता माया छोरूनें ॥ सु० ॥ धारै व्रत सुखकार प्या० ॥ १ ॥ गाम नगर पुर पाटणें सु०। करता धर्म व्यापार।प्या० ॥ राग द्वेष मुनिराजनें ॥ सु० ॥ नहीकोई विषय विकार प्या० ॥ २ ॥ उपगारी सिरसेह रो । सु० । कुमतिकरे परिहार प्या० । विनकारण मुनिराजजी ॥ सु० ॥ भव्य जीव हितकार प्या० ॥ ३ ॥ ग्यानी ध्यानी सूरमा । सु० । महमा करत नरेस प्या० ॥ वाणी अमृत सारसी । सु० । सुणतां हरख हमेस प्या० ॥ ४ ॥ अनेक जीवप्रतिबूझिया । सु० । धरमतणा परधान । प्या० । मायानकरे साधुजी सु० नहिविकथा नहीमांन प्या० ॥ ५ ॥ पंचमहाव्रत धारता । सु०॥ ऐसे दीनदया ल । प्या० । सुमति धारक पांचछे । सु० । गुपतीना रखवाल प्या० ॥ ६ ॥ उद्देसक आदेकरी । सु० । कृतकरूनें बलिदूत । प्या० । सिज्यातर रायपिंरूकू । सु० । नाहिंधारै अवधूत प्या० ॥ ७ ॥ कुवचन केहनो सांभली । सु० । न धरै मनमें क्रोध । प्या०। मधुकरनीपरै मालता।सु०। उंचनींच कुलसोध प्या० ॥ ८ ॥ लाधेलाभौ देहनै । सु० । अणलाधै तपधार । प्या० । ओसरमोसर देखनें । सु० । रसलंपट नहींहोय । प्या० ॥ ९ ॥ किरियां करतां साधुजी।सु० आलस नकरे कोय ॥ प्या० ॥ परिसहजीते आकरा । सु० । कर्मकरे सबदूर प्या० । मुनिवर मधुकर समकह्या । सु० । दिन २ वधते नूर । प्या० ॥ १० ॥ जंगम तीरथ सारषा ॥ सु० ॥ धरमतणा आधार । प्या० । एहवा मुनिवर पूज तां । सु० । पावै वंछित सार ॥ प्या० ॥ ११ ॥ धरमविसाल दयालनो । सु० सुमति कहै करजोरू । प्या० । एहवा श्रीमुनिराजजी । सु० । मुझ माथेका मोरू । प्या० ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीँ परमात्म० सर्वसाधुभ्योऽष्ट द्रव्यंयजामहे० ॥ इति

## ॥ ❀ ॥ अथ कलसकी पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ अब पूजा हे कलसकी । सुणियो तुम नर नार । सांभलतां सुख पामसो । सफल हुसी अवतार ॥ १ ॥ ऐसी म्हारुं मोहनी । सभा सहू हरखाय । सेवो जगतकी मोहनी । ए जग सार कहाय ॥ २ ॥ मंत्रमांह सिरदारहै । पंच परमेष्ठी एह । सरवारथ सिधी कह्यौ । गणधर गौतम जेह ॥ ३ ॥ जेहनें एहनी आसता । तेहनें एह सहाय । भागहीन नर मूढकुं । होत नहीं फलदाय ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ ढाल प्रश्न तथा उत्तर ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चंगीमें चंगी कोन जगतकी मोहनी । चंगीमेंचंगी जान जिणंद पद मोहनी ॥ १ ॥ सुखी जगतमें कोन कहो मन भावना । सुखी वोही संसार परम पद भावना ॥ २ ॥ सब देवनमें देव कहो कुण जाणना । सब देवनमें देव वडो जिन जांणना ॥ ३ ॥ सबमें मोटो ध्यांन कहो कुण साजना । सबमें मोटो ध्यान सुकल तुम जाणनां ॥ ४ ॥ धरम वमो जगमांहि कहो कुण साजना । दया धर्म जगमांह वडो है साजना ॥ ५ ॥ शिव रमणीको नाथ कहो कुण साजना । शिव रमणीको नाथ सर्व सिद्ध जाणना ॥ ६ ॥ धरममें मोटो कोण कहो मेरे साजना । धरममांहि सुभभाव सुणो मेरे सा० ॥ ७ ॥ दाता कहियै कोन कहो मन भावना । गुरू बडे दातार धरम धन पावना ॥ ८ ॥ मीठी जगमें कोन कहो मन भावना । मीठी जिनकी वाणि धरो चित चाहना ॥ ९ ॥ मीठी दाख खजूरके मीठी चाहनी । जिणसें अधिकी होय वाणी जिनरायनी ॥ १० ॥ सव व्रतमें कुण सार कहो मेरे साजना । सब व्रतमें व्रतसार चोथो व्रत जाणना ॥ ११ ॥ खरतर गछपति चंदसूरीश्वर सोहता । सकल विमल गुणगेह भविक मन मोहता ॥ १२ ॥ प्रीतसागरगणि सीम सकल गुण राजता । अमृत धर्म उदार वाचक पद गाजता ॥ १३ ॥ पाठकमें परधांन क्षमा गुण सारता । तसु शिष्य धर्म विशाल सुनीव्रत धारता ॥ १४ ॥ सुमति कहै गुणसार भविक मन मोहता । बीकानेर मझार सकल मन मोहता ॥ १५ ॥ संघ सकल सुखदाय सेवो प्रभु भावसुं । पूजरची चितलाय अधिक वलदावसुं ॥ १६ ॥ संवत सय उगणीसके

तेपन जाणीयै। माह सुद चवदश बार मंगल मन आणीये ॥ १७ ॥ जणतां गुणतां एह सदा सुख पामसै। घर घर मंगल माल हुवै जिननामसैं० ॥१८॥ ॥ इति श्रीसुमति मंडणजीकृत पंचपरमेष्ठी पूजा संपूर्ण ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥अथ श्री सिद्ध गिरि निनाणुं प्रकारी पूजा लि० ॥❀॥

### ॥ ❀ ॥ प्रथम ध्वज पूजा ॥ ❀ ॥

॥ श्रीऋषभायनमः ॥ दूहा ॥ ऋषभादिक जिनवरनमी । प्रणमी सद्गुरुपाय । पुंडरीक गिररायनी। पूजकरुं सुखदाय ॥ १ ॥ सजल शिखर गिरवर सरस। फरस्यां पाप पुलाय। कनकाचल सहुशिरतिलो। वंद्यां सहु दुःखजाय ॥२॥ नाम लियां सुख संपजे। घर बैठां सुभ भाव। सफल जन्म जात्रा करै। भव जल तारन नाव ॥ ३ ॥ भव भव भमता मानवी। पामे दुःख अनंत। पुंडगिर भेटे तिके। तुरत लहै भव अंत ॥ ४ ॥ कल्पवृक्ष चिंतामणी। जंत्रमंत्र जग जोय। ए महिमा सहुकारमी। गिरवर सम नहिंकोय ॥ ५ ॥ प्रथम ध्वजा लेईकरी। चाढो गिरवर श्रृंग। विजय सदा जगमें हुवै। दिन दिन अधिक सुरंग ॥ ६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ढाल ॥ चित हरखधरी। अनुभवरंगे बीसपरमपदसेविये ॥ ॥ एचाल ॥ गिरराज जयो श्रीसिद्धाचल तीरथ रयणे पूजियै। महाराज जयो श्रीरिसहेसर भविजन भावे पूजीयै ॥ वर मोहन ध्वज पूजा करियै। चितचोखे जगमे जसचरियै। जिनराज सरण भवि अनुसरियै ॥ गि० १ ॥ इहां पुंडरीक गण धर आया छे । तिणपुंडरीक नाम कहाया छै । सिद्धक्षेत्र नमी सुख पायाछै ॥ गि० ॥ २ ॥ विमलाचल गुण मणि दरियोछै । सुरगिर महागिरि गुण भरियोछै। वलि पुन्यरासि मन धरियोछै ॥ गि० ॥ ३ ॥ वलि श्रीपत परवत सुखकारी । वलि इंद्र प्रकास ते चितधारी। सास्वत ए गिरवर बलिहारी ॥ गि० ॥ ४ ॥ दृढसाक्ति मुक्तिनिलो कहियै। अरु पुष्पदंत मन सरदहियै। महापद्म सुठाम सदा कहियै ॥ गि० ॥ ५ ॥ वलि पृथ्वीपीठ सुभद्र वारु। कैलास गिरि कहियै सुखकारु। पातालमूल भविहेतारु ॥ गि० ॥ ६ ॥ वलि अकरम नामें एह जाणो । सर्व कांमद वलि मनमें आणो। गिर गुण गातां मन हुल साणो ॥ गि० ॥ ७ ॥ ए इकवीस गिरंद नामा। ध्यावो भवि

जन तुमे सुखकामा । कहै सुमति सदा ए अभिरामा॥गि०॥८॥इति॥काव्यं॥ देवा सुरेंद्र नर नागर मर्चितेभ्यः । पापः प्रणासकर भव्य मनोहरेभ्यः । घंटा ध्वजादि परिवार विभूषितेभ्य ॥ नित्यंनमो सिद्ध गिरींद्र जिनालयेभ्यः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने अनंतानंत ज्ञानसक्तये जन्म जरामृत्यु निवारणाय श्री विमलाचल तीर्थ स्थित जिनेंद्राय ध्वजां यजा महे स्वाहा ॥ पचरंगी धजा चढावै ॥ इति ध्वज पूजा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ दूसरी जल पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ निर्मल जल कलसा भरी । पूजो श्रीजिनराय । पूजत अनुभव गुणलहै । पाप पंक मल जाय ॥ १ ॥ ॥ ढाल ॥ आज आयोरे उछाह जीवडा नाच जिणंद आगे ॥ ❀ ॥ आज हरख धरी गिरवर पूजन करियैरे॥ आ० ॥ कलस अठोत्तर सो मनरंग।निरमल जल भरियै अतिचंग ॥ आ० ॥ गंगादिक तीरथना जाण । अवर सुजल पूजो जग भाण ॥ आ० ॥ इणपर न्हवण करो जिनराज । भवियण सारो वंछित काज ॥ आ० ॥ इणगिर ऊपर ऋषभ जिणंद । समवसरया भवियण सुखकंद ॥ आ० ॥ २ ॥ महियल मोटो ए गिरि जाण । भवियण भेटो सुखनी खाण ॥ आ० ॥ कंकर २ साधु अनंत सिद्ध थया भाष्यो भगवंत ॥ आ० ॥ ३ ॥ हिव सुणज्यो सगलो अधिकार । चित थिर राखी करो गुण धार ॥ आ० ॥ मन तन उलसै सुणतां एह । तत खिणपावै करमनो छेह ॥ आ० ॥ पातिक टाली पूजो देव । जिम सुख पावो नित्य अछेह ॥ आ० ॥ महियल मोटो ए गिरराय । श्री मुख भाखे श्री जिन राय ॥ आ० ॥ ५ ॥ प्रथम अजित सोलम प्रभु ध्यांन । करके पूजो गिरराजा न ॥ आ० ॥ इणपर सुमति कहै हित आण । जिनपद सेव्यां कोड कल्याण ॥ आ० ॥ ६ ॥ काव्यं ॥ देवा सुरेंद्र नर नागर मर्चितेभ्यः; पापः प्रणा सकर भव्य मनो हरेभ्यः । घंटाध्वजादि परिवार विभूषितेभ्यः । नित्यं नमोसिद्ध गिरींद्र जिनालयेभ्यः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मने अनंतानंत ज्ञानशक्तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्री विमलाचल तीर्थाय जलं यजा महे स्वाहा॥ इति जल पूजा ॥ २ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ तीसरी चंदन पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दूहा ॥ निर्मल केसर चंदनें । पूजो श्रीजगदीस । प्रेम धरी पूजा करो । सुखपावो निस दीस ॥ १ ॥ नगर अजोध्यानो धणी । श्रीजितशत्रु नरेस । विजयाराणी शीलनी । सोभाकरै सुरेस ॥ २ ॥ जिण जायो सुत जग धणी । जीत्या रिपु दल जास ॥ अजित कुंवर राजा कियो । नाम जिसो परकास ॥ ३ ॥ ढाल ॥ श्रीचंद्राप्रभू जिनवर साहिब, ( इस चालमें ) अजित जिनेसर जग परमेसर । तुमहो पर उपगारा ॥ मेंवारीजाऊं तु० ॥ बावनाचंदन केसर घोली । कस्तूरी घनसारा ॥ में० ॥ भाव भगतसुं प्रभु गुण गावो । पूजो जग भरतारा ॥ में० अ० ॥ १ ॥ मिथ्यातम भर दूर निवारी । सेवो प्रभु अविकारा ॥ में० ॥ राज राजेसर जगपति जिनवर । चक्री अजित उदारा ॥ में० अ० ॥ २ ॥ परउपगारी तुं परमेसर । भेट्यां जय जय कारा ॥ में० ॥ जिम २ परमल पसरै तेहथी । सोभा अधिक उदारा ॥ में० अ० ॥ ३ ॥ भूमंडल विचरंता प्रभूजी । बहु चेतन सुखकारा ॥ में० ॥ पुंडरीक पर अजित जिनेसर । चौमासोतिहां धारा ॥ में० अ० ॥ ४ ॥ सिंहसेनादिक गणधरथापी । पंचाणू हितकारा ॥ में० ॥ एक लाख मुनि मुद्रा धारी । भरिया गुण मणि धारा ॥ में० अ० ॥ ५ ॥ चौथा आरानें मध्यज भागै । अजित हुवा अविकारा ॥ में० ॥ बोहत्तरलख पूरबनो आऊ । कीधा जग जयकारा ॥ में० अ० ॥ ६ ॥ सोलम जिनवर शांतिजिनेसर । अचिरा नंद उदारा ॥ में० ॥ विमलगिरिंद पर कर चौमासो । करम कलंक निवारा ॥ में० अ० ॥ ७ ॥ विश्वसेन कुलआंगण विराजै । जगजीवन हित कारा ॥ में० ॥ श्रीहथणापुर मंडण स्वामी । सुमति सदा दातारा ॥ में० अ० ॥ ८ ॥ काव्यं ॥ देवा सुरेंद्र० पूर्वलीपरैं संपूर्ण कहीजे ॥ ॐ ह्रीं श्रीपरमात्म० ॥ इति चंदन पूजा ॥ ३ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ चौथी पुष्प पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दूहा ॥ पूज चतुर्थी इणपरैं । कुसुम सुगंध सुजोय । भव्य मनोरथ पूरवै । घर घर मंगल होय ॥ १ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ढाल ॥ जिनराज नाम तेरा । हो महाराज नाम तेरा ॥ हो०

॥ ❀ ॥ विमलगिरि नाम तेरा । हो कनकगिरि नाम तेरा ॥ हो सेवोरे उज्जलगिरि रसमें ॥ हो० उ० ॥ मचकुंद कुंद जाणो । चंपो गुलाब आणो । पूजो जिनंद भाणो ॥ हो० उ० ॥ १ ॥ कर्मावसी जुराजै । जिनबिंब बहोत छाजै । जोतां मिथ्यात भाजै ॥ हो० उ० ॥ २ ॥ मोतीवसी जुहारो मनकामना जु सारो । दिलमां हैं एहि धारो ॥ हो० उ० ॥ ३ ॥ बालावसी जिणंदा । निरख्यांहि सुक्ख कंदा । अठारे चैत्य बंदा ॥ हो० उ० ॥ ४ ॥ पेमावसीजु प्यारा । भेटो जिनंद सारा । वंद्यांथी सुख्ख कारा ॥ हो० उ० ॥ ५ ॥ हेमावसी जु वंदो । अजितादि सुख्ख कंदो । सेवो जिनंद चंदो ॥ हो० उ० ॥ ६ ॥ उजमवसी जु राजै । नंदीश्वर भाव छाजै । सेवोथे सुख्ख काजे ॥ हो० उ० ॥ ७ ॥ साकरवसी जु भावे । भेट्यांसुं पाप जावे । देख्यासुं सुख्ख थावे ॥ हो० उ० ॥ ८ ॥ छींपावसी जु ध्यावो । वंछित सुख्ख पावो । मनमांहि भावलावो ॥ हो० उ० ॥ ९ ॥ खरतरवसी जु सोहै । जिनराज मन्न मोहै । निरख्यांसुं सुख्खहोवै ॥ हो० उ० ॥ १० ॥ इत्यादि भावजाणो । गुरुयांन मन्न आणो । संकादिचित्त नांणो ॥ हो० उ० ॥ ११ ॥ सुमतादि ध्यानध्यावो । गुण नाथनाजु गावो । मन भाव एहि भावो ॥ हो० उ०॥१२॥ ॥ काव्यपूर्वनीपरें ॥ ॐ ह्रीँ श्रीपरत्मा० ॥ इति पुष्प पूजा ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ पांचमी धूप पूजा ॥ ❀ ॥

( दूहा ) धूपपूज ए पांचमी । करता भवि सुखदाय । धूपघटी जिम मह महे ॥ तिम तिम पातिक जाय ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥❀॥यात्रानिनाणुं करिये विमलगिरि यात्रा० ॥ए चाल॥❀॥

॥ ❀ ॥ इण विधि पूजन करियै विमलगिरि ॥ इ० ॥ कृष्णागरनें मृगमद अंबर । गंधवटी अनुसरियै ॥ वि० इ० ॥ १ ॥ चीरूसेल्हारस तुरक भलेरो । इणविध पूजन करियै ॥ वि० इ० ॥ केसर चंदन मृगमद कुंकुम । भाव भलै अनुसरियै ॥ वि० इ० ॥ २ ॥ उजल अमल अखंडित तंडुल । दीप अखंड जु धरियै ॥ वि० इ० ॥ पुष्प सुगंध गुलावना लेइ । पूजो इणगिरिवरियै ॥ वि० इ० ॥ ३ ॥ साधू साहमी भगति करीनें । आतम निरमल करियै ॥ वि० इ० ॥ पांचे पांडव इणगिर पूजो । नवनारद मुनि वरियै ॥ वि० इ० ॥ ४ ॥

गिरवर ऊपर पांचे ठामें। पूजकरी अघ हरियै॥ वि० इ०॥ कलस अठोत्तर सो लेईनें। न्हवण भली विध करियै॥ वि० इ०॥५॥ मूलनायक श्री आदि जिनेसर। इण गिरिपर समोसरियै॥ वि० इ०॥ भाव भगतसुं जिननी पूजा। करतां सहु सुख वरियें॥ वि० इ०॥६॥ जहि अवतार ए गिर नहीं फरसे। तो किम भवजल तरियै॥ वि० इ०॥ पुंडरगिरिनो ध्यान धरीनें पुन्य खजानो भरियै॥ वि० इ०॥७॥ ए गिरनी आसातना टाली। जात्र करी निसतरियै॥ वि० इ०॥ भगतभतां जो संघ लेईनें। आवे इण गिर वरियें० इ०॥८॥ द्रव्य भावसुं पूजन करिनें। पाप पंक अपहरियै॥ वि० इ०॥ सुमतिकहै धन २ ए गिरवर। पूजो भवि सुख करियै॥ वि० इ०॥९॥॥ काव्य पूर्ववत्॥ ॐ ह्रीं श्रीपरत्मा०॥ इति धूपपूजा॥ ❀॥

## ॥ ❀॥ अथ छठी दीपपूजा॥ ❀॥

(दूहा) छठी पूजा दीपनी॥ करो भविक सुखकार। विमलबोध पावो तुमे। ज्ञानदीप सुविचार॥१॥ ❀॥ ॥ ❀॥

॥ ❀॥ पासजिनंदा प्रभु मेरे मनवसिया॥ पा०॥ एचाल॥ आदि जिणंदा प्रभु सेवो सुखकारी॥आ०॥ निरमलबोध विकासक दीपक। दिन २ जोत अधिक सुखकारी॥ आ०॥१॥ अनुभवदीपक प्रगट भयोहै। सकल चराचर भाव विचारी॥ आ०॥ केवल ज्ञानी प्रथम तीर्थंकर। समोवसरया भवियण हितकारी॥ आ०॥२॥ फागुण सुद आठमनें दिवसै। रुषभदेव आया सुविचारी॥ आ०॥ भरथपुत्र चैत्रीपूनमदिन। इणगिर आया भवि मनधारी॥ आ०॥३॥ नमि विनमी राजा विद्याधर। पुंडर गिर सेवै इकतारी॥ आ०॥ पोतरा प्रथम तीर्थंकर केरा। द्रावडनें वारखिल्ल विचारी॥ आ०॥४॥ कातीसुदपूनम दिन सीधा। दसकोडी मुनि साथ उदारी॥ आ०॥ पांचे पांडव इणगिर सीधा। नव नारद निज काज सुधारी॥ आ०॥५॥ संब प्रद्युम्न गया इहां मुगतै। आठ करम दल दूर निवारी॥ आ०॥ नेमि विना तेवीस तीर्थंकर। समवसरिया भवियण उपगारी॥ आ०॥६॥ ए गिरराजना गुणगणगातां। सफल हूवे आतम सुविचारी॥ आ०। ए गिरराजनी पूजा जगमें। भवजल पार उतारण हारी॥ आ०॥७॥ द्रव्य

भाव सुं पूजन करियें । कुमति कुटलता दूर निवारी ॥ आ० ॥ कहै सुमति भवो इकतारी । इण तीरथनी जावूं बलिहारी ॥ आ० ८ ॥ ❋ ॥

इति ॥ काव्यपूर्ववत् ॥ ॐ ह्रीँ श्रीपरत्मा० ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ सातमी अक्षतपूजा ॥ ❋ ॥

॥( दूहा ) उजल तंदुल लेयनैं । पूजो दीन दयाल । स्वस्तिक करतां विस्तरे । घर २ मंगल माल ॥ १ ॥ तुमविन दिनानाथ दया निध कौंन खबरले मेरीरे ॥ एचाल ॥ गिरिवर भेटण भविजन आवे । मनवंछित फल पावेंरे । उजल तंदुल थाल भरीनें । वधावो गिरिरायारे । अष्टमंगल प्रनु आगल धरियै । निरमल सुद्ध सुहायारे ॥ नि० ॥ २ ॥ ए गिरिमहिमा जिनमुख सुणके । चक्री मन हुलसावैंरे । भरथराय षट्खंडको नायक । संघ लेई इहां आवैंरे ॥ गि० ॥ २ ॥ सोनानो प्रसाद करावै । रयणनी मूरती ठावेंरे । भाव भगतिसुं पूजा रचावे । प्रभु चरणे चितलावैंरे ॥ गि० ॥ ३ ॥ भरततणें अष्टम पट्टसोहैं । दंडवीरज महाराजारे । संघलेई उद्धार करावें । संचे सुभ फल ताजारे ॥ गि० ॥ ४ ॥ ईशानेंद्र करायो तीजो । चोथो माहेंद्र करावैंरे । पांचमो उद्धार ब्रह्मइंद्रनो । सुर नर मिल जस गावैंरे ॥ गि० ॥ ५ ॥ छठो उधार भुवनपतीनो । सातमो सगरनो जाणोरे । आठमो व्यंतर इंद्र करावे ! भविजन मनमें आणोरे ॥ गि० ६ ॥ चंद्रजसराय उधार करावे । नवमो भविसुख कंदारे । शांतिनाथ सुत दशमो भावै । उद्धार करे आनंदारे ॥ गि० ॥ ७ ॥ दशरथराय सुतन गुण आगर । रामचंद्र भल भावैंरे । उद्धार इग्यारमो एह करायो । बारमो पांडु करायोरे ॥ गि० ॥ ८ ॥ तेरमोउद्धार जावडशाहनो । चवदमो वाहडदेह नोरे समरेसाह करायो भावै । पनरमो सहुसुखदैनोरे ॥ गि० ॥ ९ ॥ संवतसत रैसै मित्यासे । वैशाखवदि सुभवारोरे । करमेंसोसी करायो भावे । एसोलमउद्धारोरे ॥ गि० ॥ १० ॥ तिणकारण ए तीरथ मोटो । सहुतीरथ सिर राजारे ॥ कहै सुमति पूजो भलभावे । पावोज्यूं सुखपाजारे ॥ गि० ॥ ११ ॥ इति ॥ काव्यपूर्ववत् ॐ ह्रीँ श्रीपरत्मा० ॥ इतिअक्षतपूजा ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ आठमी नैवेद्यपूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दूहा ॥ मोदक मोतीचूरना । सींहकेसरिया सार । इत्यादिक नैवेद्यले । पूजकरो सुखकार ॥ १ ॥ ॥ सिद्धचक्रपदवंदोरे । भविका ॥ ॥ एचाल ॥ श्री सिद्धाचल पूजोरे । भविका । इणसम गिरिनहीं दूजोरे भविका ॥ श्री० ॥ मोदक मोतीचूरना लेई । नैवेद्यपूजा करियेरे ॥ भ० ॥ सिंहकेसरिया दालिया केई । मोदक इण विध धरियेरे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ १ ॥ ललितसरोवर पेखो भावें । वलि सत्तानीवावरे ॥ भ ॥ तिहां विसरामो भविजन लेवें । वरुनें चोतरे आवरे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ २ ॥ सेत्रुं जानीपाजे चढतां । आणंद अंग नमावेरे ॥ भ० ॥ दूरथकी सेत्रुंजो दीसे । सुंदर रूप सुहावेरे ॥ भ० श्री ॥ ३ ॥ हिंगुलाजहरूे चढके पूजो । कलि कुंरु पासकुमाररे ॥ भ० ॥ बारी मांहेपेसी भविजन । भेटो आदि दीदाररे ॥ भ०श्री ० ४ ॥ मरुदेवीटुंक मनोहर दीसे । गजपर बैठा सोहेरे ॥ भ० ॥ शांतिनाथ सोलम उपगारी । भविजनना मन मोहेरे ॥ भ० श्री० ५ ॥ वंस पोरवारू जगत वदीतो । सोमजी साह मल्हाररे ॥ भ० ॥ रूपजी साह करायो भावें । चौमुख मूल उद्धाररे ॥ भ० श्री० ॥ ६ ॥ नेमनाथ चवरीदेखीने । देखो धरमदुवाररे । भ० ॥ आदीसरना चरण पखाली । पूजो विविध प्रकाररे ॥ भ० श्री० ॥ ७ ॥ भमतीमांहे बिंब विराजे । कहतांनावे पाररे ॥ भ० ॥ पुंरु रीकगणधर गुरु पूजो । शांतिनाथ सुखकाररे ॥ श्री० ८ ॥ चेलणात लाई सिद्धसिलानें । सिद्धवरुजूनो कहियेरे ॥ भ० ॥ पुंरुरगिरनी भमतीमांहे एहसहुसरदहियेरे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ९ ॥ उलकाझोलनें भाडवडूंगर । हस्तागि रीफिरनमियैरे ॥ भ० ॥ कदमगिरीपरचरणजिनेश्वर । भेट्यांसहुसुखलहियेरे ॥ भ० ॥ १० ॥ घरवैठां जो भावकरीनें । मनशुद्ध भावनाभावेरे ॥ भ० ॥ सुमतिकहे ते धनधन कहिये । जात्रानो फल पावेरे ॥ भ० श्री० ॥ ११ ॥ काव्य पूर्ववत् ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने० ॥ इति नैवेद्यपूजा ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ नवमी फलपूजा ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दूहा ॥ निर्मल फलपूजा करो । उत्तमफल सुखकाज । भविजन पूजो भावसुं । सरे सहुसुभकाज ॥ १ ॥ ढाल ॥ रामतरमवामें गइथी । मोरी

हीयरके० ॥ एचाल ॥ आदीसर पूजाकरो । एतो सिद्ध गिरीनो रायो हेमाय
दगुरुनें परसादथी । एतो दरसणदेवनो पायो हेमाय ॥ आ० ॥ १ ॥ आंबा
ादिम लेयनें । एतोफलपूजा इमकीजेहै माय । श्रीफल पूंगीफल भला ।
तोंभेटकरी फललीजे हे माय ॥ आ० ॥ २ ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मनी । एतो
वाथी चितलायो हे माय । मिथ्यामत राचै थकै । एतो काल अनंत गमायो
माय ॥ आ० ३ ॥ हिवसेवा प्रभु ताहरी । एतो चाहुं देव सवायोहे माय ।
सेद्धाचल गिरिरायनो । एतो मरूण आदि कहायो हे माय ॥ आ० ॥ ४ ॥
न्य दिवस धन्यते घमी । एतो धन मरुदेवी जायो हेमाय ॥ पूरबनिनाणूं
मोसरया । एतो आदीसर महारायोहेमाय ॥ आ० ॥ ५ ॥ अष्टोत्तर
त नामछे । एतो शास्त्रथकी तेजाणो हेमाय । एसहु नामजप्यां थकां । एतो
गट्यो परम कल्याण हेमाय ॥आ०॥६॥ सुकराजा इहां आयनें । एतो ध्यान
रे षट्मासी हे माय । चंद नृपति गिरि भेटतो । एतो पाम्यो सुखनीरासी हे
ाय ॥आ० ७॥ अनंतजीव मुगतेगया । में तो नमणकरुं चित धारीहे माय
गेरवर दरसण देखतां । एतो मोहे सहु नर नारी हे माय ॥ आ० ८ ॥ धन २
गिरिरायना । एतो गुणगायो सुखदायो हे माय । सुमतिकहे जिन राजनी
तो सेवाथी सुखपायो हे माय ॥ आ० ॥ ९ ॥ काव्यपूर्ववत ॥ ॐ ह्रीं
श्री परमातम० ॥ इति फलपूजा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ गुलाब जल पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ निर्मल जल कुसुमै करी । वासित सरस सुगंध ॥ पूजो
जिनवर जग धणी । दूरकरो दुख धंध ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥
॥ ❀ ॥ सिद्धचक्रपद वंदोरे भविका ॥ एचाल ॥ श्रीविमलाचल
पूजोरे ॥ भविका । तीरथ एहवोन दूजोरे । भविका ॥ श्री ॥ सुरभि गंधोदक
लेई भावे । भिम्को जिनवर अंगरे ॥ भ० ॥ कुसुमेंवासित उत्तम जलनी ।
वृष्टिकरो मनरंगरे । भ० । श्री० १ ॥ आदीसरना चरण पखाली । पूजो उठ पर
मानरे ॥ भ०॥ गुणनो लख नवकार गुणीजे । दोय अठम छठ सातरे । भ०।
श्री० २ ॥ रथजात्रा परदक्षिणादीजे । पूजा विविध प्रकाररे । भ० । धूप दीप
फल नैवेद्य मुंकी । नमिये नामहजाररे । भ० । श्री० ३ ॥ आठ अधिक शत

टुंक नजेरी । मोटी तिहां इकवीसरे ॥ न०॥ सेत्रुंजय गिरि टुंक ए पहिलुं । नाम नमो निसदीसरे ॥ न०। श्री०४ ॥ सहस अधिक अठ मुनिवर साथे । बाहुबली शिवठामरे ॥ न०। तिणकारण ए गिरवर कहियै । त्रीजो मरुदेवीनामरे । न० श्री० ५ ॥ पुंमरीक गिरि नाम एचोथुं । पांचकोमि मुनि सिद्धरे । न० । पांचमी टूंक रेवतगिरि कहियै । तिण ए नाम प्रसिद्धरे ॥ न०॥ श्री०६ ॥ विमलाचल सिद्धराज नागीरथ । प्रणमीजै सिद्धक्षेत्ररे ।न०। ढरीपाली इणगिर नेटो । करियै जन्म पवित्ररे । न०। श्री०॥ ७॥ पूजाकरी प्रनुना गुणगावो । साधोकाम अनेकरे न०। पुंमर गिरना गुणगण गातां । निरमल आतम विवेकरे । न०। श्री० ८ ॥ देवकीनंदन पूजो नावै । थूलनद्र मुनिरायरे । न०। सुमतिमंमण जिनराज पसायैं । दिन २ आणंद थायरे ॥ न०। श्री० ९ ॥ इति काव्य पूर्ववत् ॥ ॐ ह्रीँ श्रीपरमात्म० ॥ इति गुलाब जल पूजा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ इग्यारमी वस्त्र युगल पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ प्रनु पूजो इग्यारमी । क्षोमयुगल लेई सार । निरमल गुण धारी करी । पूजो जगनरतार ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग घाटो ॥ मेरोमन वसकरलीनो । जिनवर प्रनुपास ॥ मे० ॥ गिरवर मंमणआदि । मुजमनथांसुंलागो ॥ मु० ॥ विमलाचल तीरथराजे । तीननुवन आल्हाद ॥ मु० ॥ १ ॥ सूरत मोहनीलागे । जागै प्रीत अनाद ॥ मु०॥ सुरनर वंदन आवै । पावै प्रनू परसाद ॥ मु० ॥ २ ॥ देश देशका जात्री आवै । पावे हरख अपार ॥ मु० ॥ मरु देवी नंदन वंदो । गावो गुण गण सार मु० ॥३ ॥ हेमनी चोरी कीनी । ए आलोयण तास ॥ मु० ॥ चढ चैत्री पूनम नावै । करै इक नपवास ॥ मु०४॥ वस्त्रनीचोरी रे जेणें । कीनी नोलै नाव ॥ मु०॥ वारसात आंबिल करियै । नवियण सुन मन नाव ॥मु० ॥५॥ रतननी चोरी कीनी । तेजन सुद्ध इमहोय ॥ मु० ॥ गिरिपर तपस्या कीजै ॥ आतम निरमल होय ॥मु० ॥६ ॥ पित्तलादि चोरी कीनी । ते सुध थायेकेम ॥मु०॥ पुरमड्डसातज्ञु करियै । धरियै मनमें प्रेम ॥ मु० ॥७॥ मोतीनीचोरी जुकीनी । आंबिल कर नवितीन ॥मु०॥ धानादि चोरी कीनी । दैते वस्तु प्रवीण ॥८ ॥ दैवादिधन जो वांछै । तो सुधथाये एम ॥मु०॥ अधिको वित्तजोखरचै । मुनि

पिवहुप्रेम ॥ मु०॥९॥ चौपद चौरीकीनी । दैते वस्तुनोदान ॥मु०॥ सरधासुं पस्या कीजे ॥ दीजै मुनि सनमान ॥ मु० ॥ १० ॥ पुस्तक पारका देखी । लखे जो आपणो नाम ॥ मु०॥ षट्‌मासी तपस्या कीजै । सामायक तिणठाम मु० ॥ ११ ॥ कन्या परिव्राजका जाणो । सधव अधव गुरुनार ॥ मु० ॥ तिन संग व्रत जो भाजै । छम्मासी तपसार । मु० ॥ १२ ॥ गो स्त्री बालक ऋषिनी । आसातनाजेकीन ॥ मु० ॥ वस्त्र पात्र मुनिने जे । भावधरी लय लीन ॥ मु० ॥ १३ ॥ श्रीजिन पूजन कीजै । क्षोम गुगल अतिचंग ॥ मु ॥ इशविध पूज रचावो । सुमतिक है मनरंग ॥ मु० ॥ १४ ॥ इति ॥ काव्यं ॥ देवा सुरेंद्र नरनागरमार्चितेभ्यः । पापः प्रणासकर नव्यमनोहरेभ्यः । घंटा ध्वजा दिपरिवार विभूषितेभ्यः । नित्यंनमो सिद्धगि द्र जिना लयेभ्यः ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने नंतानंत ज्ञान शक्तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिनेंद्राय वस्त्रं यजामहे स्वाहाः ॥ ११ ॥

## ॥ ❁ ॥ अथ कलश ॥ ❁ ॥

॥ रागधन्यासिरी ॥ तेज तरण मुख राजे ॥ एचाल ॥

॥ प्रभुजीकी पूजरची सुखकाजे । हांओ सुख काजे ॥ श्रीसिद्धाचल गिरवर ऊपर । मंमण आदि विराजे । नाभनृपति मरुदेवीके नंदन । दरशण सुं दुःख भाजे ॥ हां० प्र० ॥ १ ॥ वीकानेर नगर अतिसुंदर । मरुधर देश विराजे । श्रीजिन सौभाग्य सूरि पटोधर । सकल गुणौंकरी गाजै ॥ हां० प्र० ॥ २ ॥ श्रीजिन हंससूरि खरतरपति । गुण गिरुवा गुरुराजे । प्रीत सागर गणि सिष्य सुवाचक । अमृत धर्म सुगाजे । हां० प्र० ॥ ३ ॥ तसु सेवक पाठक पदसोहे । क्षमा कल्याण गणि राजै । तसु चरणांबुज सेवक अहनि स । धर्मविसाल विराजै ॥ हां० प्र० ॥ ४ ॥ सुमति मंमण ए गिरनी पूजा । रचिय संघ सुखकाजे । कुशल करण सहु मुनिवरकी । प्रेरणाया सुखका जे ॥ हां० प्र० ॥ ५ ॥ चूंपधरी चोखै चितचाहे । लिखी सकल सुभकाजै संवतनय उगणीस तीममें । पूजरची हितकाजे । हां० प्र० ॥ ६ ॥ जेठसुदी तेरस रविवारे । सुणनां सहु दुःखभाजे।भावधरी गिरनां गुणगाय॥

दिन २ अधिक दिवाजै ॥ हां० प्र० ॥७॥ इति श्रीपाठक सुमति मंडणजी कृत सिद्धगिरीपूजा संपूर्णम् ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ श्रीआबूजी पूजा लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ ॥ श्रीजिनवर आराधियै । धरियै हियमे ध्यांन । रुषभ जिणंद दिणंद सम । दिन दिन चढते वांन ॥ १ ॥ आबू गिर पूजन रचुं । महियल मोटो ठाम । देस देसका संघवी । आवी करे प्रणाम ॥ २ ॥ आबू अचल गढ दीपतो । महियल जाण सुमेर । देवलवासो अति दीपतो । महिमा थई चिहुं फेर ॥ ३ ॥ विमलसाह मंत्री थयो । मोटो पुन्य पसाय । पातसाह बारे भणी । वस करिया सुखदाय ॥ ४ ॥ तिणए तीरथ थापियो । आबूगिर सिरदार । चैत्य कराया भावसुं । खरची द्रव्य अपार ॥ ५ ॥ सुद्धोदक लेईकरी । पूजो आदि जिणंद । स्नात्रकरी जिनराजनी । पावो परमानंद ॥ ६ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ प्रथम जलपूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ इक सुणजै नाथ अरज मेरी० ॥ एचाल ॥ बलिहारी आबू गिरवरकी ॥ ब० ॥ आबू गिरिपर अदभुत सोहै । मूरत आदि जिनेसरकी ॥ ब० ॥ आस पास बहु झाडी झंगी । मांहि गुफा जोगीसरकी ॥ बलि० ॥ १ ॥ देश देशके जात्री आवै । पूजरचै परमेश्वरकी ॥ ब० ॥ विमलै मंत्री वस करलीनी । पातसाही बारे घरकी ॥ ब० २ ॥ तिणए बिंब भराया भावे । महिमा आदि जिनेसरकी ॥ ब० ॥ आठसै बहुत्तर जिनवर छाजै । न दियां नीर सजल भरकी ॥ ब० ३ ॥ कोरणी खूबबणी अति सुंदर । दिल भर दरसण सुखकरकी ॥ ब० ॥ देराणी जेठाणीरा आला । कोरणि करी हदवेसरकी ॥ ब० ॥ ४ ॥ अंगी चंगी अजब बणी है । सोवन वरण रतन वरकी ॥ ब० ॥ सुमति कहै एतीरथ उत्तम । इनकुं उपम सुरगिरकी ॥ ब० ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं आबूगिरेंद्राय तीरथ सीरोमणाय । श्रीआदिस्वराय जलं ॥ १ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ दूसरी चंदन पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दूहा ॥ केशर चंदन लेयके । पूजो श्री गिरराज ॥ पूजत अनुभव गुणलहै । तारण तरण जिहाज ॥ अचल गढै जिनराजनो ॥ अति उत्तंग

प्रमाद । देख भविक हर्खितहुवै ॥ पावै परम आल्हाद ॥ २ ॥ राग सोरठ ॥ कुंद किरण शशि ऊजलोरे देवा ॥ एचाल ॥ आबू तीरथ पूजीयैरे ॥ वाल्हा ॥ तीरथ महिमा वंतोरे ॥ आछो जिनवर सहूभवि सेवियैरे ॥ वाल्हा ॥ आणी भाव अनंतोरे ॥ १ ॥ आछो ॥ वस्तपाल तेजपालजीरे ॥ वा० ॥ लीनो लक्ष्मी लाहोरे ॥ आ० ॥ मुद्रा बहु खरची करीरे ॥ वा० ॥ जसलीनो जगमांहोरे ॥२॥ आछो ॥ कोरणी जीणी सुंदरूरे । वा० । कीधी धर मन रंगेरे ॥ आ० ॥ सुरगुरु पिणनहि कहीसकैरे ॥ वा० ॥ महिमा अधिक सुरंगे रे ॥ ३ ॥ आछो ॥ बारैकोरू ऊपर सहीरे ॥ वा० ॥ लागा तेपन लाखोरे ॥ आ० इतनो धन खरच्यो सहीरे ॥ वाला ॥ श्री संघकैरी साखोरे ॥ ४ ॥ आछो ॥ मूलनायक नेमी सरूरे ॥ वा० ॥ ब्रम्हचारी सिरदारोरे ॥ आछो ॥ च्यारसै अरूसठ सुंदरूरे ॥ वा० ॥ जिनवर बिंब उदारोरे ॥ ५ ॥ आ० ॥ सुमति सदा उमवीनवैरे ॥ वा० ॥ तीरथनी बलिहारीरे ॥ आ० ॥ मन वंछित सगला फलैरे ॥ वा० ॥ पूजत गिर सिरदारीरे ॥ ६ ॥ आ० ॥ ॐ ह्रीँ आबू गिरिंद्राय तीर्थेसि० श्री आदीस्वराय चंदनं यजा महे ॥ २ ॥ ❋ ॥ ॥❋॥

## ॥ ❋ ॥ अथ तीसरी फूल पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दूहा ॥ ब्रह्मचारी जोगीसरू । जगपति नेम जिनंद ॥ बावीसम जिन पूजतां । नितप्रति होत आनंद ॥ १ ॥ चंपक केतकि केवड़ो । विउल सिरी मचकुंद ॥ मोगर मालति कुशमसें । पूजो भवि सुख कंद ॥ २ ॥ सेत्रुंजानो वासी प्यारो लागे म्हांरा राजिंदा ॥ से० ॥ एचाल ॥ आबू तीरथ भेटो म्हांरा राजिंदा ॥ भेटो ह्मांराराजिंदा भे० ॥ आ० ॥ इण सम तीरथ ओरन कोई । मिथ्यातम सब मेटो । म्हां० । अर्बीदगो महाराज कहावे । देख्यां अति सुखपावे । म्हां० आ० १ । मनसुधजात्र करो भविप्राणी । सुर नर मुनि गुणगावे । म्हां । सुंदर सूरत मूरति सोहे । देख्यां मीन लगावे । म्हां० आ० २ । अवर अनेक जिन बिंब कहावे । दरस करत दुख जावे । म्हां० । एगिर मह सिरदार कहावे । जोगीसर बहुध्यावे । म्हां० । आ० ३ ॥ दूरथकी एगिरवर निरखी । मोनियन थाल भरावे । म्हां० । दांन मांन मनमान कीनें । तीरथ महमा गावे । म्हां० आ० ४। विधमेती गिरवर

नितपूजै । लाभ अनंत उपावै । म्हां० । संघपती संघ लेके जावै । धन २ तेह कहावै । म्हां० आ० ५ । पुष्पमाल गुंथी भविभावै । जिनवर पूज रचावै म्हां० । सुमतिकहै गिरराजकुं ध्यावै । वंछित सफल लहावै । म्हां० आ० ६ ॥ ॐ ह्रीँ आबूगिरेंद्राय तीर्थसिरोम० श्रीआदीश्वराय पुष्पंयजामहे ॥ ३ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ चौथी धूप पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दूहा ॥ धूप दशांग लेई करी । पूजो तीरथ राय । सुरभि सुगंधी महमहैं । इमभाखै जिनराय ॥ १ ॥ विमल अश्व वाहन धरी । सेवकरै जिनराज । अंबादेवी पूजतां । सफलकरै सबकाज ॥ २ ॥ मैं निरख्या गुरुमहाराज भतिआं हरखभरी मैं० ॥ ए चाल ॥ दिल मैं हरखधरी भविपूजो गिरवर सार ॥ दिल० ॥ धूप दशांग लेई करीरे । पूजो जग भरतार । बोधबीज निरमल करोरे । सफलकरो अवतार ॥दि०॥ संघकरी संघ वीघणारे । भेटै श्री गिरसार। अष्टद्रव्य लेई करीरे। पूजै जिन इकतार।दिल० भ० २ ॥ अचलगढे जिनराजनारे । मोहन मंदिर च्यार । विमलै साह कराविया रे । धन धन तसु अवतार ॥दि० भ० ३॥ सुंदर सूरत गुण भरीरे। चौमुख प्रतिमा च्यार । साजन म्हारा थे सुणोरे । भाखुं गिरि गुणधार ।दिल०भ०४॥ चवदैसै चौमालनीरे । सूरत गुण भंडार । हेममई जिनराज नीरे । सोभे अधिक दीदार ॥दिल०भ०५॥ धन जेहनी माता पितारे । धन जेहना कुलसार द्रव्य प्रबल खरची करीरे । लीनो लाभ अपार ॥ दि० भ० ६ ॥ इणपर ए गिर रायनीरे । महिमा अधिक अपार । सुमतिसदा कर जोडिनेंरे । प्रणमें वारंवार । दिल० भ० ॥ ॐ ह्रीँ आबूगिरेंद्राय तीर्थसिरोमणाय श्रीआदीश्वराय धूपं यजामहे ॥ ४ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ पांचमी दीपक पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दीपक पूजा पंचमी । करो भविक गुणवंत । दीपक सम गुण पांमिये । केवल ज्ञान अनंत ॥ १ ॥ तीरथनी महिमा करो । भाव धरी मतिवंत । द्रव्य भाव विहुं भेदसुं । पूजो भवि विकसंत ॥ २ ॥ तुमविन दीनानाथ दयानिधि कोन खबर ले मेरीरे । भ० ॥ एचाल ॥ आबू गिरपर आदि जिनेसर । दरसणकी बलिहारीरे । आ० । नगरसीरोही

नांम कहावे । जिनवर बिंब जुहारीरे। तिहांथी द्वादस गाऊ निरखो । द्दणादरो सुख कारीरे ॥ आबू० १ ॥ आबूगिरकी पाजे चढतां । पाप सकल परिहारीरे। ए गिर देखी सुर नर मोहै। महिमा अधिक उदारीरे ॥ आ०२ ॥ आम पास बहु जाली सोहे । बिच मंदिर मनुहारीरे । नाभिरायके नंदन क हिये । मरुदेवी मात मल्हारीरे ॥ आ० ३ ॥ जुगला धरम निवारण स्वामी त्रिभुवन जन हितकारीरे। नगर अजोध्या आप विराजो। आदिनाथ उप गारीरे ॥ आ० ४ ॥ आदीसर अलबेसर कहियै। सबको तुं अवतारीरे। सब जोगीसर तुमकुं ध्यावे। अद्भुत कीरत थारीरे ॥आ०५॥ तुं भय भंजन तुंहि निरंजन। लोकालोक विहारीरे । जोगीसर जिनराज जगतगुरु। नेमीसर ब्रह्मचारीरे ॥ आ० ६ ॥ तारण तरण दयानिध स्वामी। सेवकजन साधारीरे। सुमति कहे भवि निरमल भावे। सेवो प्रभु सुखकारीरे ॥ आ० ७ ॥ ॐ ह्रीं आबूगिरेंद्राय तिर्थसिरोमणाय श्रीआदीश्वराय दीपं यजामहे ॥ ५ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ अक्षत पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ अक्षत पूजा साचवे । भविजन मंगल काज । तीन पुंज प्रभु आगले । करो भविक सुखसाज ॥ १ ॥ मंगल आठ करोसही। प्रभुआगें धरप्रेम । अष्टसिद्धि नवनिध संपजे। सुजस हुवे नितनेम ॥ २ ॥ ढाल तुमतो भलेविराजोजी सांवलिया माहाराज सिखरपर भलेविरा जोजी॥तु० ॥ ए चाल ॥ तुमतो भले विराजोजी। आबूके सिरदार सिखरपर भले विराजोजी ॥ तु०॥ नाभिरायके नंदन कहिये। तीन भवन विसरांमी। केसर चंदन मृगमद घोली। पूजो अंतर जामी ॥ तुम० ॥१॥ विखम पहाड़ां बिचमें राजै । साहिबतुं सिरनामी । आदीसर जोगीसर पूजी । वंछित मंगल पामी ॥ तु० ॥ २ ॥ द्रव्य भावमें पूज रचावो। मनमें आणंद पावो भर मुगताफल थाल वधावो। तीरथ महिमा गावो ॥ तु० ३ ॥ आबू गिरको ध्यान धरावो । तपस्यासुं फलपावो । चम्मालु बलिदान दिरावो संघभगत करवावो ॥ तु०४॥ अचलगढ़े जिनदरसण करवा। संवमफल मिल भावे। आदीसर नेमीसर पूजी। मनवंछित सवपावे ॥तु० ॥५॥ तीरथ महिमा भविजन करिये। दिलमें भावजधरिये। सुमतिकहे तन मन कर उज्जल ।

पुन्य खजानो भरियै ॥ तुम० ६ ॥ ॐ ह्रीं आबूगिरेंद्राय तीर्थसिरोमणाय श्री आदीस्वराय अक्षतं यजामहे ॥ ६ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ नैवेद्यपूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ॥ दूहा ॥ मोदक मोतीचूरना । ओर सुगंध रसाल । पूजो तीरथ रायनै । भावकरी गुण माल ॥ १ ॥ नैवेद्य पूजा सातमी ॥ करो भविक धरप्रेम । तीरथनी महिमा करी । गुणगावो धरनेम ॥ २ ॥ ॥ ❋ ॥ श्रीचंद्राप्रभु जिनवर साहिब सुणियो अरज हमारी ॥ मैं० एचाल ॥ ❋ ॥

॥ श्रीआदीसर जिनवरसाहिब । तुमपर जाउं बलिहारा । मैं वारिजाउं ॥ ॥ तु० ॥ आबू गिरपर आप विरा जो । साहिब पर उपगारा । मैं० श्री० ॥ तूं हिं जिनेसर तूं परमेसर । अंतरप्राण आधारा । मैं० । जोगीसर तेरी लयजांणें । परमातम अविकारा । मैं० ॥ श्री० २ ॥ मनमोहन तुं नाथ निरंजन । जगजीवन हितकारा । मैं० । सुर नर किन्नर सेवकरतहैं । जय २ जग भरतारा॥मैं०श्री०३ ॥ तेरीमहिमा अधिक विराजै । सबजीवन सुखकारा ॥मैं० ॥ अनंतज्ञांन दरसणको स्वामी । मनमोहन सबप्यारा ॥ मैं० श्री० ॥ ४ ॥ लोकउचित व्यवहार प्रवर्त्यो । बोधबीज दातारा । मैं० । तुमकुं जो तन मनसैंध्यावै । पावै वंछित सारा ॥ मैं० श्री० ५ ॥ भविकलोकको तुं उपगारी । मिथ्यातम घनवारा ॥ मैं० ॥ सुमति कहै गिरपूज रचावो । एगिरसबसिरदारा ॥ मैं० ॥ श्री० ६ ॥ ॐ ह्रीं आबूगिरेंद्राय तीर्थसिरोमणाय श्रीआदी श्वराय नैवेद्यं यजामहे ॥ ७ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ आठमीधजा तथा फलपूजा ॥ ❋ ॥

॥ दूहा॥प्रभुपूजा एआठमी । मंगल आठ कराय । पंचवरण ध्वज मोहनी । पूजकरो सुखदाय॥१॥आंबा दाडम आददे । विवध भांत मनरंग । प्रभु आगल ढोवो सही । भावधरी उछरंग ॥ २ ॥ सब सुंदर आवो सही । सजसोलै सिण गार । रतन जडत कंचुक धरी । पहरी नवसरहार॥ ३ ॥ ढाल ॥ पनरमपदगुण गानाहो भविप० ॥ ए चाल ॥ भवि जिनगुण मंगल गानाहो ॥ भवि० ॥ फलपूजा ए गिरकी करकै । जगमैं सुजस वधानाहो । भ० । मंगल आठ

प्रभु आगल । चंदमुखी मनभानांहो ॥ भवि० ॥ १ ॥ पंचवर णकी ध्वजवर कहिये । हित चितसैं करवानाहो । सुंदरनारी सब सि णगारी । प्रेमधरी सबआनाहो ॥ भवि० ॥ २ ॥ कंचू कसिआ हरख उल्ल सिआ । आभूखण पहरानाहो । भ० । रतनजडित सब सुंदरचूडी । हाथे बाहु सोभानाहो । भ० । भवि० ॥ ३ ॥ थेई थेई तानकरै प्रभू आगल । मधुर सुरे गुणगानाहो । भ० । इंद्राणी मिल मंगल गावे । तिम तुमे भगत करानाहो ॥ भ० ॥ ४ ॥ इत्यादिक गुण जिनके गावत । बोधबीज उपजा नाहो । भ० । सुमतिकहे भवि पूजन करियै । मनवंछित फल दानाहो ॥ भवि० ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं आबूगिरेंद्राय तीर्थ सिरोमणाय श्रीआदीस्वराय फलं ध्वजं अष्टमंगलं यजामहे ॥ ८ ॥ ❁ ॥ ॥ ❁ ॥ ॥ ❁ ॥

## ॥ ❁ ॥ अथ नवमी वस्त्र पूजा ॥ ❁ ॥

॥❁॥दूहा॥वस्त्र जुगल लेईकरी। पूजो दीनदयाल॥ सुजश सुगंधी विस तरे। बोधबीज गुणमाल॥१॥ रथयात्रा प्रभुनी करो। महिमा भगत कराय॥ लाभ अनंतो ऊपजे। समकित निरमल थाय॥ २॥ ढाल॥ दरशणके लोभी नेना। होदर० ॥ ए चाल ॥ हो पूजनके लोभी सेणा ॥ लोभी० हो पू० । पूजनकुं जिया नित नितचाहे। कुगुरु वचन नजदेना। हो पू० लो० ॥ १ ॥ यापूजा समकितकी करणी। सुगुरु वचन सुणलेना। हो पू०। गिरवर गढ गिरनार विराजे। नेमकुमर सुखदेना ॥ हो० ॥ २ ॥ वस्त्रजुगलकी पूजन करियै । तन मन उज्जल वेना ॥ हो० ॥ मिथ्यातम सब दूर निवारी। सुमति रमण संगरेना॥ हो पू० ॥ ३॥ मरधा केसर रंग घोलके। निजआतम रंगलेना। हो०। विमलगिरि अष्टापद पूजो। आदीसर सुख देना । हो पू० ॥ ४ ॥ शिखरसमेत वसो जगमांहे । वीसप्रभु हितदेना ॥ हो पू० ॥ आबू गिरकी महिमा अद्भुत । मानो हमारा कहना ॥ हो पू० ॥ ५ ॥ रथजात्रा जिनवरकी करके । पाप पंक हरलेना । हो० । कुगुरु कुमतिको संगछो डके । जिनगुणमें चितदेना ॥ हो पू० ॥ ६ ॥ आदीसर अलवेसर कहीये । जगतारक जगसेना । हो पू० । सुमति सदा प्रभुके गुण गावत ।

बोधबीज सुखदैना ॥ हो पू० ७ ॥ ॐ ह्रीं आबूगिरेंद्राय तीर्थ सीरोमणाय श्री आदीस्व० वस्त्रं यजामहेः ॥ ९ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ गुलाब जल ॥ ❋ ॥

॥❋॥(दूहा)समकित निरमल कारणें। सुरभि सुगंधी लेह। भिरको श्रीगिर राजकुं। भावधरी गुणगेह ॥१॥ गिरवर भावें भेटिये। दीजे वंछित दांन। गीतगान भलगाइयैं। ज्युंपावो बहुमान ॥ २ ॥ ढाल ॥ थारीगईरे अनादिनीं द जरा टुकजोवोतो सही ॥ जोवो० ॥ एचाल ॥ तुमकरोरे सुमतिको संग रंगीला सेवोतो सही । सेवोतो सहीरे म्हांराचेतन सेवोतो सही । तुम० ॥ मुनिवरकी वरणी हितकरणी। लेखोतो सही । मिथ्यातम करदूर हियामैं देखोतो सही ॥ दे० म्हां० तु० ॥ १ ॥ आतम करणी निजगुण धरणी देवोतो सही। तुं कह्यौरे हमारो मांन सुग्यानी वेवोतो सही॥ बे० म्हां० तुम० ॥ २ ॥ समकित करणी भव भय हरणी लेवोतो सही । द्रोपदि जिम जिनराज भगतकर सेवोतो सही ॥ से० म्हां० तुम० ३ ॥ रागकतरणी जग जस भरणी जोवोतोसही। अकलंकित गुणहोय भरमसब धोवोतो सही ॥ धो० म्हां० तुम० ॥ ४ ॥ सबमन हरणी गुणमणि धरणी पावोतो सही । कूड कपट कर दूर हीयामें लावोतो सही ॥ ला० म्हां० तुम० ॥ ५ ॥ आबूगिरनी पूजन करणी ध्यावोतोसही। तन मन प्रीतलगाय जिणंदगुण गावो तो सही। गा० म्हां० तुम० ॥ ६ ॥ अनुपम करणी पापभधरणी भावोतो सही। तुम करोरे सुगंधी पूज भविक सुख पावोतो सही ॥ पा० म्हां० तुम० ॥ ७ ॥ इम गुणवरणी पूजनकरणी गावोतो सही। सुमति रंगीला सैण हीयामें लावोतो सही ॥ ला० म्हां० तुम० ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं आबूगिरेंद्राय तीर्थसिरो० श्रीआदीश्वराय सुगंधि द्रव्यं यजामहेः ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ वाजित्रपूजा ॥ ❋ ॥

॥❋॥(दूहाः)नंदी घोख बजावतां। थाये लाभ अनंत। विविध प्रकारें पूजतां। बोधबीज विकसंत ॥ १ ॥ ढाल ॥ पूज पूज जिनराज काजसारतुं का० ॥ सार सार जिनराज तार तार तुं ॥ ता० भलांहे ता० ॥ सा० ॥ जग जश धार सार जय कारतुं । सरणाई मिरदंग चंग सार सार तुं ॥

मा० ज० सा० सार० ॥ तुंही है जिनंद चंद आदि कार तुं । जगत उधार सार अविकारतुं ॥ अ० ज० ॥सार० ॥ १ ॥ समकित धारसार सुक्खकारतुं । मनमथ जीतकार राग वारतुं । रा० ज० । सा० । तुंहीं है मुनिंद इंद हितकारतुं । गुणको निधांन सार भरतारतुं । ज०ज० ॥सारसार० ॥ २॥ सुर नर देव सार किरतारतुं । आबूके जिनंद चंद मुनिसारतुं ।मु०ज०सार० । परमआधार सार जिनतारतुं । सुमति विचार धार सुखकारतुं । सु० ज० सार० ॥३॥ ॐ ह्रीं आबूगिरेंद्राय तीर्थसि० श्रीआदीश्वराय वाजित्रगुणवरणन पूजा ॥ ११ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ नृत्य पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहाः ॥ सुरसुंदर हरखैकरी । सजसोलै सिणगार । ताल मृदंगहि जंयनें । भगतकरे वहुसार ॥ १ ॥ भावधरी प्रभु आगलै । अष्टापद गिरसार । रावणनें मंदोदरी । नृत्यकरे गुणधार ॥२॥ ढाल ॥ जिनगुणगावत सुरसुंदरी रे जि० ॥ ए चाल ॥ भगतिकरे सब सुरसुंदरी रे ॥ भ० ॥ सुरसुंदरीरेदेवा ॥ सु०भ० ॥ हीर चीर पाटंबर पहरी । रम झम घुग्घर नाद करीरे । भ०सु०॥१॥ चंदवदन मनमोहन गहरी । मृगनेनी शृंगारधरीरे॥ भ० ॥ बांह बाजूबंध कंचन चूरी । वेसर मोती लाल जरीरे ॥ भ० सु० ॥ २ ॥ अपछरवरणी सुर मन हरणी । मोहनी रूप अनूप धरीरे॥ भ० ॥ चंपकवरणी मनवस करणी । प्रभुआगे गुणगावे खरीरे ॥ भ० सु० ॥ ३ ॥ जिनगुण गावत हरख वधावत । थेई थेई नाचत भावधरीरे ॥ भ० ॥ अशरण शरण तुंही जगदीपक । तुंहि निरंजन सुख करीरे ॥ भ० सु० ॥ ४ ॥ भविजन ध्यावत हरख उपावत । गावत गुण सुभराग करीरे ॥ भ० ॥ गजगत गामनी सब मिल भामनी । ठम ठम नाचत सुर महरीरे ॥ भ० सु० ॥ ५ ॥ अष्टापद गिररावणराजा । मंदोदरि जिम भगतकरीरे ॥ भ० ॥ सुमति सदा जिनके गुणगावत । पुल २ जिनजीके पायपरीरे ॥ भ० सु० ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं आबूगिरेंद्राय तीर्थसिरोमणाय श्रीआदीश्वराय गीतनृत्यगुणवरणन पूजा ॥ १२ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ कलश रागरेखता ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जिनंदजश आजमें गायो ॥ ए चाल ॥ गिरंदजश आजमें

गायो । भेटतां हरख अतिपायो ॥ गि० ॥ आबूगिरिंद सुखदायो । सघन घन रूखसैं गायो । खरा जिनचंद सूरिराजा । तपै जग भानज्युं ताजा गि० ॥ १ ॥ क्षमा कल्यांणके पाजा ॥ बिविध गुण ज्ञांनके भाजा ॥ धरम विशाल तसुनंदा ॥ कहै युं सुमति सुख कंदा ॥ गि० ॥ २ ॥ संवत उगणीस चालीसै । प्रेमधर अधिक सुजगीसै ॥ भजो तुम देव जगदीसै । फलैसब आस निस दीसै ॥ गि० ३ ॥ देवांके देव मनभाया ॥ पूजतां संपदा पाया ॥ वीकाणें सहरमें राजै ॥ जगत जस ताहरो गाजै ॥ गि० ४ ॥ आदि जिन पूज सुख काजै ॥ नमत प्रभु पाप सहुभाजै ॥ सकल जन भावसैं ध्यावै ॥ मोहन मुनि प्रेमसैं गावै ॥ गि० ॥ ५ ॥ इति श्री आबू गिरि श्री आदीस्वर जिन गुण महिमा वर्णन सुमति मंडणजी पाठककृत पूजा संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ आबूजीको स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अर्हंत २ नाटक नाचै आदी सरकै आगैजो अ० ॥ एचाल ॥ पूजो पूजो तीरथ पूजो ॥ आबू तीरथ पूजोलो ॥ पूजो० ॥ इंद्र पूजै चंद्रपूजै इणसम औरन दूजोलो ॥ पू० ॥ अध्यातम जोगीसरध्यावै ॥ दरसण लागै मीठोलो ॥ पू० आ० १ ॥ सुर जन मोहै मुनिजन मोहै ॥ लागो रंग मजी ठोलो ॥ पू० ॥ तेजपाल वस्तपाल करायो ॥ मोहन मंदर दीठोलो ॥ पू० २॥ बारै कोडी मुद्रा ऊपर लागा तेपन लाखैलो ॥पू०॥ इतनो धन खरच्यौ भवि प्राणी ॥ संघ सकलनी साखेलो ॥ पू०३ ॥ च्यारसै अडसठ सुंदर सोहै । जिन वर बिंब उदारीलो ॥ पू० ॥ सुमतिसदा जिनवर जशगावै ॥ तीरथनी बलि-हारीलो ॥ पू० । आ० ४ ॥ इति आबू गिरपदं ॥ १ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ सहस्रकूटजी पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) ॥ श्री जिनवर प्रणमी करी । भावधरी भरपूर । अनु भव गुण निरमल करी । वंदुं जिनवर सूर ॥ १ ॥ उंघै श्री जिनराजनी । सं ख्या आगम जेह । गुरुमुख जे इमसांभली । ते सुंणजो धर नेह ॥ २ ॥ स हसकूटनी थापना । करियै विध विसतार । पूजरचावो नवनवी । अष्ट दि वस सुविचार ॥ ३ ॥ श्री सेत्रुंजा ऊपरै । सहसकूटनो भाव । ते देखी भ वि उरधरो । सेवो जिनवर पाव ॥ ४ ॥ अष्ट द्रव्य लेईकरी । तन मन उ

भावभाव । गीतनृत्य प्रभू आगले । कर पूजन गुणगाव ॥ ५ ॥ मधव सुहागण सुंदरी । सज्जसोले सिणगार । प्रभु आगे मंगल करे । पावे हर ख अपार ॥ ६ ॥ निरमल जल कलशा भरी । स्नात्र करे भविसार । सहस कूट जिनराजनी । महिमा अधिक उदार ॥ ७ ॥ ❀ ॥ ( ढाल ) ॥ ❀ ॥ आज आयोरे उछाह । जीवका नाच० ( ए चाल ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आज हरख अपार । जिनवर पूजन करियेरे ॥ आ० ॥ पंचभरत ललि ऐरवत पंच । इण दश खेत्रतणा जिणसंच ॥ आज० ॥ दक्षिण उत्तर रते जाण । अतीत अनागतनें वर्तमान ॥ १ ॥ आज० ॥ इणपर गिण तां जिनवर थाय । सातसे वीश अधिक कहवाय ॥ आ० ॥ तीश चोवीशी वंदु एह । तारण तरण भविक गुण गेह ॥ आ० ॥ २ ॥ परमातम परमे श्वर जांण । एहनी आणकरो परमांण ॥ आ० ॥ जिनसम अवरन दूजो देव । सुरवर मुनिवर करतासेव ॥ आ० ॥ ३ ॥ अतिशयवंत महंत उदार । सुर नर मोहै देख दीदार ॥ आ० ॥ वारिजाउं एहनी वार हजार । मुझ प्रीतम एही अवधार ॥ आ० ॥ ४ ॥ करता भूमंडल उपगार । जगनायक जिनवर जयकार ॥ आज० ॥ भावधरी वंदु जगसार । सुमति सदा दीजे किरतार ॥ आ० ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं परमा० । श्री सहस्रकूट जिनेंद्राय जलं यजा महे ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ द्वितीय चंदन पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) ॥ वर्त्तमान जिन वंदिये । तीन चोवीसी मांह । ऋष भादिक जिनपूजतो । दिन २ हरख उछाह ॥ १ ॥ कुंकम चंदन मृगमदे । अंबर सुगंध विशाल । श्री जिनवर पूजन करो । भावधरी गुणमाल ॥ २ ॥ ( ढाल ) ॥ ❀ ॥ अवतो उधारयो मोहि चहिये जिनंदराय (ए चाल) ॥ ❀ ॥ वर्त्तमांन जिनपूजन करके । तन मनको सब पाप हरोरे ॥ वर्त्त० ॥ ऋषभ अजित शंभव अभिनंदन । सुमति सदा जिनराज खरोरे ॥ वर्त्त० ॥ १ ॥ प द्म सुपास जिनंद सुसेवो । चंद्रप्रभु चित चाह धरोरे । सुविध शीतल जिन अंतर जांमी । श्री श्रेयांस जिनेंद्र वरो रे ॥ वर्त्त० ॥ २ ॥ वारमो वाशपूज्य जिन नमनें । मिथ्यातम सब दूर करो रे । विमल अनंत धरम जिन नमनां ।

रुद्ध सिद्धको भंमार भरोरे ॥ वर्त्त० ॥ ३ ॥ शांति कुंथु अर मल्लि जिनेसर । मुनिसुव्रत दिलध्यांन करोरे । नमि नेमी श्रीपाश जिनेसर । बीर सदा मुझ नाथ खरोरे ॥ व० ॥ ४ ॥ ए चौवीशे जिन गुण गावत । संपद सुखकी सेज वरोरे । सुमति कहै जिन पूजन करके । लुल २ जिनके पाय परोरे ॥ व० ॥ ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीँ परमा० । सहसकूट जिनेंद्राय चंदनं यजामहेः ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ ( ३ ) पुष्पमाल पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ( दूहाः ) ॥ पुष्पमाल गुंथी करी । कंठ ठवो जिनराज । सुमति सुगंधी विसतरे । लाभ अनंत समाज ॥ १ ॥ अतीत चौवीसी वंदिये । आंणी भाव प्रधान । मनवंछित पूरण सदा । परतिख कल्प समांन ॥ २ ॥ ( ढाल ) ॥❋॥ श्री चंद्राप्रभु जिनवर साहिब । सुणिये० मैंवारि० ( एचाल )॥

॥ ❋ ॥ केवल ज्ञांनीनै निरबांणी । सागर महा जशकारा ( मैं वारि जाउं सा० ) के० ॥ विमलनाथ निरमल गुणधारक । सर्वानुंभूति उदारा ॥ ( मैं० स० ) के० ॥ १ ॥ श्रीधर दत्त जिनवर उपगारी । दामोदर अविकारा ॥ मैं० दा० ॥ अधिक सुतेज जिनेसर सांमी । मुनि सुब्रत गुणकारा ॥ २ ॥ ( मैं० मु० ) के० ॥ २ ॥ श्री सुमती शिवगति जिनपूजो । अस्तंग नमी मुनि प्यारा ॥ ( मैं० अ० ) ॥ अनिल यशोधर जिनवर सेवो । किरतारघ मनुहारा ॥ ( मैं० कि० ) के० ॥ ३ ॥ श्री जिनराज जिनेसर वंदो । शुद्धमती शिवकारा ॥ ( मैं० सु० ) ॥ स्यंदन संप्रति जिन चौवीशे । सुमति सदा गुणकारा ॥ ( मैं० सु० ) के० ॥ ४ ॥ ❋ ॥ ॐ ह्रीँ परमा० श्री सहसकूट जिनेंद्राय पुष्पं यजामहेः ॥ ३ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ ( ४ ) धूप पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ( दूहा ) ॥ भावी जिनवर वंदियै । द्रव्य भाव सुविचार । पदमनाभ आदिक प्रभु । वंदूं वारं वार ॥ १ ॥ कृष्णागर मृगमद तगर । अंबर तुरक लोबांन । धूप करो जिन राजनें । पावो सुख असमांन ॥ २ ॥ ( ढाल ) ॥ संभव जिन सुखकारी रे । वाला संभ ( एचाल ) ॥ ❋ ॥

॥❋॥ पदमनाभ सुखकारी रे वाला ॥ प० ॥ ( हां रे हो रे वाला ) वारीजाउं वार हजारी रेवाला ॥ प० ॥ सूरदेव जिन वंदु भावे । सुपारस ब्रह्मचारी रे ।

वा० प० ॥ १ ॥ स्वयं प्रभु जिन अंतरजांमी। सर्वानुभूत उदारी । देवश्रुती जिनपर उपगारी। उदय पेढाल विचारीरे । वा० ॥ प० ॥ २ ॥ पोट्टल जिन शत किर्त्ती कहिये। सुव्रत जिन हितकारी । अमम जिनेसर बारमो कहियै। निकषाय गुणधारीरे। वा० प० ॥ ३ ॥ निप्पुलाक जिन पनरमो सेवो। महिमा अधिकतुमारी । सोलम निरमम जिनवर भावे । सेवकरो इकतारीरे। वा० ॥ प० ॥ ४ ॥ चित्र गुपति चितचाह धरीनें । समाधि सेवो सुविचारी। संबर जिनगुण मणिके आगर । जस्सोधर जशधारीरे । वा० ॥ प० ॥ ५ ॥ विजयमल्लि देवज जिन पूजो। अनंतवीरज शुभचारी भावकरी भद्रंकर सेवो। एहीज निजगुण धारीरे। वा० ॥ प० ॥ ६ ॥ भावी जिनवर उत्तम कहिये । चरण कमल बलिहारी । सुमति कहै तन मन कर उजल। सेवोजिन इकतारीरे। वा० ॥ प० ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीँ परमा० सहस कूटजिनेंद्राय धूपं० ॥ ४ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ (५) दीपक पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (दूहाः) दीपक कंचन मय करी । पूजो जग भरतार। धातकी पूरब खंरुमें। भरत तणा जिनसार ॥ १ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (ढाल) ॥ तुमविन दीनानाथ दयानिध कोन० ॥ (ए चाल)

॥ ❋ ॥ धातकी खंरु पूरब भरतै । अतीत चौवीसी वंदोरे। धा० । रतन प्रभूनें अमल प्रभूजी । असंभव जिन चंदोरे। धात० ॥ १ ॥ श्री अकलंक चंद्रा प्रभु प्रणमुं । सुभंकर सुखकंदोरे । सपत नाथ जिन सुंदर भावै। नाथ पुरंदर इंदोरे ॥ धा० ॥ २ ॥ श्रीस्वामी जिन देवदत्तजी । वासवदत्त सुनंदोरे । श्रीश्रेयांस जिनेसर वंदो । वीरस्वरूप आनंदोरे ॥ धा० ॥ ३ ॥ श्रीतप तेज दिवाकर सेवो। श्रीप्रतिबोध सुदेवोरे। श्रीसिद्धारथ जिनवर पूजो। स्यंदन जिणगुण देवोरे। धा० ॥ ४ ॥ अमल नाथ देवेंद्र सुपूजो। प्रवचन नाथ सुचंदोरे। विश्वानन जिनदेव सुवंदो। मेघ अधिक गुण वृंदोरे ॥ धा० ॥ ५ ॥ श्रीसर्वज्ञ जिनेसर वंदो। चौवीसम मुनिचंदोरे। धातकी खंरु पूरबभरते। अनागत जिनवृंदोरे ॥ धा० ॥ ६ ॥ इमहीज धातकी पूरब भरतै। वर्त्तमांन सुखकंदोरे। सुमतिसदा जिनराज

कृपासैं । लहै सदा आनंदोरे ॥ धा० ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं परमा० । सहसकूट जिनेंद्राय दीपं यजामहेः ॥ ❋ ॥ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ (६) अक्षत पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ( दूहा ) ॥ पश्चिम धातकीखंडमैं । भरतैं जिनवर सार । अतीत चौवीशी एकहुं । सांभलजो सुविचार ॥ १ ॥ उज्जल तंदुल लेयनैं । मंगलकर भविसार । निरमलगुण प्रगटैसही । पूजन जग भरतार ॥ २ ॥ ( ढाल ) पास जिणंदा प्रभु मेरे मनवसीआ ॥ पा० ॥ ( एचाल ) ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अतीत चौवीसी सेवो भवि रसिआ ॥ अ० । से० ॥ पश्चिम धातकी भरतै सोहै । एजिनराज सकल मन वसिआ ॥ स० । अ० ॥ वृषभनाथ महाराज विराजै । श्रीप्रियमित्र अधिकगुणं रसिआ । अ० ॥ अ० ॥ १ ॥ शांति जिनेसर जग उपगारी । समुद्रनाथ सेवो भविरसिआ । से० । अजित जिनेसर जग जयकारी । श्रीअव्यक्त सकल सुख रसिया । स० ॥ अ० ॥ २ ॥ कलासित जिनजनके दीपक । सरब जीत जिन अधिक दरासिआ ॥ अ० । प्रबुध जिनेसर नवमो कहियै । दशमो प्रव्राजित अधिक उलसिआ । अ० ॥ अ० ॥ ३ ॥ श्रीसोधरम जिनेसर वंदो । तमोधि दीपए नांम दरासिआ । नां० । वज्रशेन श्रीबुद्ध जिनेसर । प्रबंधनाथ जगके दुख घसिआ । ज० ॥ अ० ॥ ४ ॥ अजित प्रमुख पल्योपम वंदो । अकोप जिनंद सब पाप तरासिआ । स० निष्टित जिन मृगनाभ सुसेवो । देवेंद्रनाथ मुझमनमें वसिआ । म० । अ० । ॥ ५ ॥ प्रयछित जिन वंदुं उपगारी । चौवीशम शिवनाथछे रसिआ । ना० । पश्चिम भरते धातकी खंडै । वर्त्तमान अनागत रसिआ । अ० ॥ अ० ॥ ॥ ६ ॥ इण विधजो भविपूज करतहै । तसु मन वंछित मेघ वरसिआ । मे० । तीन चौवीशी एनितवंदो । सुमतिसदा ए ग्यांन दरासिआ । ग्यां० । अ० ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं परमा० सहस० अक्षतं यजामहेः ॥ ६ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ (७) नैवेद्य, फल पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ( दूहाः ) ॥ सातमी पूजा साचवै । फल नैवेद्य सुखकार । उत्तम फल पूजा करो । पावो सुक्ख अविकार ॥ १ ॥ पुरकरद्वीपै वंदियै । अतीत चौवीशी जेह । शाश्वथकी सुणजो सदा । अनुपम गुणके गेह

॥२॥( ढाल )॥ जात्रानिनाणुं करियै विमलगिरि जा० ( ए चाल )॥ पुक्खरद्वीप सुवंदोरे। भविजन॥ पु०॥ पूरबभरते अतीत चौवीशी। सेव तभवि चिरनंदोरे। भ०॥ पु०॥ पदमचंद्र रक्तांग अजोगिक। सरबा रथ सुख कंदोरे। भ०॥ पु०॥ १॥ रुखीनाथ हरिभद्र सुहंकर। गणा धिप सुनि इंदोरे। भ०॥ पु०॥ पारत्रक जिनकुं भविवंदो। ब्रह्मचारी सुखकंदोरे। भ०। पु०॥ २॥ दीपक जिन बलिराज रुखीसर। विशाख प्रभू जिनचंदोरे। भ०॥ पु०॥ अचितरवि श्रीसोम जिनेसर। जयश्री मो क्ष जिनंदोरे। भ०॥ पु०॥ ३॥ अग्नीभानुं धनुख सुवंदो। सेमांचित चि रनंदोरे। भ०॥ पु०॥ प्रसिद्धनाथ श्रीजिनवरइंदो। वंदी पाप निकंदोरे भ०। पु०॥ ४॥ इम हीज वर्त्तमान जिनपूजी। अनागत जिन वंदोरे। भ०। पु०। सुमतिकहै जो जिनवर पूजे। तेहीज जगमाणि चंदोरे। भ० पु०॥ ५॥ ॐ ह्रीँ परमात्मने। सहस कूट० नैवेद्यं, फलं यजामहे॥ ७॥❀॥

## ॥❀॥ अथ ( ८ ) वस्त्रपूजा॥❀॥

॥❀॥ ( दूहाः ) वस्त्रयुगल प्रभु आगलै। ढोवो भविक भदार। जंबू ऐरवत खेत्रमें। पूजो जिनवर सार॥ १॥ ( ढाल )॥ आज हुं ग ईथी समवसरणमें। ( ए चाल )॥ ❀॥ जंबूद्वीपे ऐरवरतमें। इमहीज जिनवर लाजैरी ( वारी इम० ) जं०॥ तीन चौवीशी गिणतां भविज न। बहुत्तर जिन पति राजैरी। वा० ब०॥ जं० १॥ गुरुमुखथी अ वधारो भविजन। परमातम गुण साजैरी। वा०। प०॥ जं०॥ भाव धरी पूजन भवि करतां। कुमति कुटलता लाजैरी। वा०। कु० जं०॥ २॥ इमहीज धातकी पूरब मांहे। ऐरवतखेत्र सुकाजैरी। तीन चौवीशी नित २ नमियै। बोधलता गुण बाजैरी। बा०। बो०॥ जं०॥ ३॥ इमहीज धा तकी पश्चिमसोहै। ऐरवतखेत्र सुलाजैरी। बा०। ऐ०॥ जं०॥ ४॥ ज गत जंतु करुणानिध स्वांमी। अमृत वाणि सुगाजैरी। वा०। अ०। जं०॥ सुमति कहै ए जिनवर पूजो। उपगारी सिरताजैरी। वा०। उ०। जं० ॥५॥ ॐ ह्रीँ परमा०। सहस कूट जिनेंद्राय। वस्त्रं यजामहेः॥ ८॥

## ॥ ❋ ॥ अथ (९) ध्वज पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (दूहाः) वीशजिनेसर शास्वता। पंचविदेह मझार। सीमंधर आदे करी। प्रणमुं वारहजार ॥ १ ॥ गगन वीच अदभुतवणी। पंचवरण विकसंत। नवमीध्वज पूजा करी। लेवो लाभअनंत ॥ २ ॥ (ढाल) ॥ सेत्रुंजानो वासी प्यारो लागे म्हांराराजिंदा (ए चाल०) ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ विहरमांन भवि ध्यावो म्हांराराजिंदा। ध्या० ॥ वि० ॥ सीमंधर जुगमंधर स्वांमी। बाहु सुबाहु सुहावे। म्हां० ॥ वि० ॥ श्रीसुजात स्वयंप्रभु सेवो। रुषभानन मनभावे। म्हां० ॥ वि० ॥१॥ अनंत वीरज सिरी सूरप्रभूजी। दशमो विशाल कहावे। म्हां० ॥ वज्रधर जिन भवि सेवो भुगते। बोधबीज उपजावे। म्हां। वि० ॥ २ ॥ चंद्रानन जिन चंद्रबाहूजी। भु जंग ईशर सुखपावे। म्हां०। नेमप्रभू जिन गुण मणि दरियो। वीरसेन मुनिरावे। म्हां ॥ वि० ॥ ६ ॥ अठारम महाभद्र सुशेवो। देवजशा नित ध्यावो ॥ म्हां० ॥ अजित वीरज जिनवीशमो ध्यावो। देख्यां हरख नमावे म्हां०। वि० ॥ ४ ॥ पंचविदेहे एजिनसोहे। सोवन वरण सुहावे ॥ म्हां०। चौरासीलख पूरब आयु। शाशता एहिजपावे। म्हां०। वि० ॥ ५ ॥ परमपु रख एवीश जिनेसर। ए जगसार कहावे ॥ म्हां० ॥ सुमति कहे ए जिनवर पूजो। निजगुण ज्युं भवि आवे। म्हां० वि० ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीँ परमा० सहस कूट० ध्वजं यजामहेः ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ अष्टमंगल पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (दूहा ॥ पंचविदेहे शासता। एकसो साठ जिनंद। कल्य एक जिनराजना। पूजो अधिक आनंद ॥ १ ॥ सधव मिली प्रभु आग लै। मंगल आठकरंत। तन मन उजल भावसुं। हृदयकमल विकसंत ॥ ॥ २ ॥ (ढाल) ॥ ❋ ॥ (हांहोरे देवा) बावना चंदन घस० (ए चाल)

॥ ❋ ॥ (हांहोरे देवा) पंचविदेह विराजता। उतकृष्टा सहु जिनराजए हांहो० ॥ एकसो साठ सुहंकरा। जगबंधव जग शिरताजए ॥ हां० ॥ जनमसमें त्रिहुं लोकमें। हरखित हुवै सहु सुरराजए ॥ हां० ॥ चौसठ सुरपति भावसुं। उछव करै हित सुख काजए ॥ २ ॥ हां० ॥ च्यवन जनम

दिख्या सही। केवल मोक्ष शुभराजए ॥ हां० ॥ चौवीशे जिनराजना। कल्याणक वलि सुसमाजए ॥ ३ ॥ हां० ॥ पंच पंच गिणती करयां। एक सोवीश शुभगाजए ॥ हां० ॥ च्यार जिनेसर शासता। ऋषभानन जिनगुण राजए ॥ ४ ॥ हां० ॥ चंद्रानन बीजोनमुं। वारखेण तीजो महाराजए ॥हां०॥ वरधमान नितवंदियै। ए च्यारे शुभगुण पाजए ॥ ५ ॥ हां० ॥ द्रव्य भाव पूजन करो। भव जलनिधि तारण ज्याजए ॥ हां० ॥ सुमति सदा जिनराजना। पदवंदे हित सुख काजए ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं परमा० सहसकूट० अष्ट मंगलं० यजामहेः ॥ १० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ गीत, नृत्य पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहाः ) ॥ गीत नृत्य गुणगावतां। थायै लाभ अनंत। भव्य सदा सेवन करै। हृदय कमल विकसंत ॥ १ ॥ ( ढाल ) ॥ ❀ ॥ अरे थारीगईरे अनादिनींद जरा टुकजोवोतो सही ॥ जो० ॥ ( ए चाल ) ॥ तनें देवैरे सुग्यांनीसीख जिनंद पद सेवोतो सही। सेवोतो सही मेराचेतन सेवो तोसही ॥ त० ॥ जिनवरकी वरणी दुखहरणी जोवोतो सही ॥ मे० जो० ॥ रायपसेणी मांहि हीयामें पोवोतो सही ॥ पो० मे०। त० ॥ १ ॥ भवदधिकी तरणी सुखकरणी लेवोतो सही ॥ मे० ले० ॥ तुंरुल्योरे अनंते काल अग्यांनी वेवोतो सही ॥ वे० मे० तनें० ॥ २ ॥ सम कितकी करणी मन हरणी सेवो तो सही ॥ ह्मां० से० ॥ परहरमान गुमांन जगत जश लेवो तो सही ॥ ले०। मे० ॥ तनें० ॥ ३ ॥ भविजनकी करणी जशभरणी वेवोतो सही ॥ मे० ॥ अजर अमर गुण होय करममल धोवोतो सही ॥ धो० मे० ॥ त० ॥ ४ ॥ इत्यादिक गुण गण जिन वरणी भावो तोसही ॥ मे० भा० ॥ गीत ग्यांन शुभ भाव हियामें ध्यावोतो सही ॥ ध्या०। मे० त० ॥ ५ ॥ मुनिवरकी करणी चितधरणी पावोतो सही ॥ मे० ॥ सुमति कहै गुग्यांन हियामें ल्यावोतो सही ॥ ल्या० मे० ॥ तनें० ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं परमा०। सहसकूट जिनेंद्राय गीत नृत्य पूजनं ॥ ११ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ वाजित्र गुणपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) ताल मृदंग सजी करी। प्रभू पूजो धरभाव। भ

गत करी जिन राजनी । समकित शुद्ध उपाय ॥ १ ॥ ( ढाल ) ॥ ❋ । जिन गुण गावत सुरसुंदरीरे ॥ जिन० सु० ॥ ( ए चाल ) ॥ निरत करै मिल सुरसुंदरीरे ॥ नि० सु० ॥ थेई २ तान करै प्रभु आगै । गावत देवी सुर मधुरीरे ॥ नि० ॥ कंचू कसिया हरख उल्लसिया । ठमठम नाचत कवल करीरे ॥ नि० ॥ १ ॥ ताल कंशाल विशाल अनोपम । गावत राग छत्तीस करीरे ॥ नि० ॥ जिनगुण गावत हरख वधावत । पावत निजगुण हरख भरीरे ॥ नि० ॥ २ ॥ तीन लोकको नाथ निरंजन धरम धुरंधर तुंजिनरीरे ॥ नि० ॥ भव दुःख भंजन जन मन रंजन । अशरण शरण आनंद करीरे ॥ नि० सु० ॥ ३ ॥ अनंत गुणाकर सब सुख सागर । सेवत आपद दूरटरीरे ॥ नि० ॥ जगदीपक जगलोचन तूंही । तुंही जगत पिया महरीरे ॥ नि० सु० ॥ ४ ॥ इण विध नृत्य करी प्रभूआगल समकित सुद्ध उपाय खरीरे ॥ नि० ॥ सुमति कहै भविजन जिन पूजो सफल जनम ए सफल घरीरे ॥ नि० सु० ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं परमा० सहस्रकूट जिनेंद्राय नाटक पूजा ॥ १२ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ गुलाब जल ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ( दूहा ) ॥ विविध सुगधं लेई करी । पूजन कर जिनराज । सुजश सुगंधी विस्तरै । प्रगटै पुन्यसमाज ॥ ( चाल अंगरेजीवाजेकी ) ॥ आनंद कंद पूजतां जिनंद चंदहुं ( ए चाल ) ॥ पूज पूज जिनराज काजसारतुं । का० ॥ पू० ॥ जग जश धार सार सुःखकारतुं । अनंत ज्ञांन तूंही भांन हितकारतुं । हि० ॥ पू० ॥ १ ॥ केतकी गुलाब फूल चाढसारतुं । मोगरो अबीरलाल अविकारतुं ॥ अ० पू० ॥ २ ॥ तुंही जगमात तात भरतारतुं । अत्तर सुगंध गंध भविढारतुं ॥ भ० पू० ॥ ३ ॥ केवरो चंपेल बेल अवधारतुं । परम आनंद चंद जिनसारतुं ॥ जि० पू० ॥ ४ ॥ भगत उधार सार किरतारतुं । मैंतोहुं आचारहीन मुनितारतुं ॥ मु० पू० ॥ ५ ॥ मुनिंद चंद पूजतां पाप टारतुं । एहीहै जिनंद देव भवि धारतुं ॥ भ० पू० ॥ ६ ॥ तुंही है मुनीश ईश गुणकारतुं । सुमति आधारसार जय

कारतुं ॥ ज० पू० ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीँ परमा० श्री सहसकूट जिनेंद्राय सुगंध जलं यजामहे: ॥ १२ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ कलश पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ( ढाल ) ॥ तेजरण मुखराजैहो प्रभू० ॥ ( ए चाल ) ॥ तेज अधिक जगगाजैहो । प्रभु थांरो ॥ ते० ॥ सहसकूट जिनवर सब पूजत । पुन्य अनंत सुकाजे । अतिशयवंत महंत जिनेसर । सुरतरु सम प्रभू गाजे हो ॥ ते० ॥ १ ॥ रूप अनूप करी सुर मोहै । देखत दुख सहु भाजे । खरतर गछपति चंदसूरीसर । तेज अधिक गुरु गाजैहो ॥ ते० ॥ २ ॥ प्रीतसागर गणी सिष्य सुवाचक । अमृत धरम सुराजे । शीश क्षमा कल्यांण सुपाठक । अमृत सम गुणराजैहो ॥ ते० ॥ ३ ॥ धरमविशाल मुनि गुरुदीवो तसुनंदन हितकाजे । सुमति कहै भवि भावधरीनें । पूजो श्री जिनराजैहो ते० ॥ ४ ॥ वीकानेर नगर अतिसुंदर । संघ सदा गुण राजे । प्रेमधरीपू जन एकरियै । वंछित हितसुख काजैहो ॥ ते० ॥ ५ ॥ नगणीसै चालीशै मिगसर । सुद पंचमी शुभराजै । सुगुण निधांन मोहन मुनीगावे । निजगु ण निरमल काजैहो ॥ ते० ॥ ६ ॥ इति सहस कूटजी पूजा संपूर्ण ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ सहसकूट स्तवन ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ( ढाल ) ॥ ❋ ॥ सहियांहे नेमीसर वनमैंनें गिरना० ॥ ॥ ❋ ॥ साहियांहे सहसकूट महाराज वंदो सब भावसुंहे माय ॥ वं दो० ॥ सहि० ॥ तीस चौवीशी पूजीयै हे माय ॥ स० ॥ विहरमांन भगवांन सेवो चित चाहसुं हेमाय ॥ से० ॥ स० ॥ १ ॥ एकसो साठ जिनेसरा हे माय । स० । उत्कृष्टा अवधार निरंजन ध्यावसुं हे माय नि० । स० ॥ २ ॥ एकसो वीश जिनंदना हे माय ॥ स० ॥ कल्यांणक सव होय । सेवो भवि दावसुं हे माय ॥ से० ॥ स० ॥ ३ ॥ च्यार जिनेसर शाशता हेमा य ॥ स० ॥ जयवंता जगदीश अधिक गुण गावसां हेमाय ॥ अ० । स० । ॥ ४ ॥ वहुत दिनांरो उमाहमो हे माय । स० । ते फलियो मुझ आज जि णंद पद सेवतां हे माय ॥ जि० ॥ स० ॥ ५ ॥ उछव अधिक सुहामणा हे मा य । स० । खूबथया रंगरोल अधिक मन रंगसुं हेमाय । अ० ॥ स० ॥ ६ ॥

उगणीसै चालीशमें हे माय । स० । पोश माश सुखकार उगत कर उ वसुं हे माय । उ० ॥ स० ॥ ७ ॥ संघ सहू हरषै करी हे माय । सं० । पूज रची चितचाह वंछित सब पांमिया हे माय । वं० ॥ स० ॥ ८ ॥ धरम विशाल दयालनो हे माय । स० । सुमति कहै मन रंग सकल गुण दी जीयै हे माय । स० ॥ स० ॥ ९ ॥ इति सहसकूट जिनस्तवनं ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ सहसकूट स्वरूप. विधिः ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ पांचभरत । ५ ऐरवत ॥ १० क्षेत्रोंमें । अतीत, अनागत, वर्तमान, तीनों कालकी अपेक्षायें ३० चौवीशी होय (अंके) ७२० हुवा । (तथा) ५ महाविदेहके एकसो आठ विजयमें १६० जिन होय (८८०) (तथा) २४ भगवानका १२० कल्याणक स्वरूप (अंके १०००) (तथा) ५ महाविदेहमें २० विहरमान ॥ ४ शाश्वता जिन (एवं सर्व १०२४ जिन स्वरूप) कों सहसकूट कहते हैं । सहसकूटजीको मंदर सिद्धगिरी तीर्थाधिराजके ऊपर, मूल नायकजीके पासमें अत्यंत मनोहरहै । (इसकी) उत्कृष्टभांगे प्रत्येक महाराजकी । प्रत्येक द्रव्यसें पूजन उछव करना होय (तो) आठदिन अठाई महोछव करै । रोकनाणो । नालेर, सुपारी विदाम, वस्त्र, दीपकादि, प्रत्येक द्रव्य १०२४ एकहजार चोवीश२ चढावे । इतनी शक्ति न होय तो यथाशक्ती महोछव साथ पूजा विधि गुरूके मुखसें जानके करे ॥ ❋ ॥ इति सहसकूट पूजन विधिः ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ पांचग्यान पूजा लिख्यते ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ( दूहा ) ॥ वर्द्धमान जिनचंदकुं । नमन करी मनरंग । पूज रचुं भवि प्रेमसुं । सांभलजो उछरंग ॥ १ ॥ पांचज्ञांन जिनवर कह्या । मति श्रुति अवधि प्रधान । मनपर्यव केवल बडो । दिनकर जोत समांन ॥ २ ॥ ज्ञांनबडो संसारमें । गुरु विन ज्ञांन न होय । ज्ञांनसहित गुरु वंदियै । सुचिकर तन मन होय ॥ ३ ॥ बीर जिणंद बखाणीयो । नंदीसूत्र मझार । भव्य सदा अनुभव धरो । पावो सुख श्रीकार ॥ ४ ॥ निरमल गंगोदक भरी । कंचन कलश उदार । श्रुतसागर पूजनकरो । भाव धरी भविसार ॥ ५ । चितहरखधरी अनुभवरंगै वीश परमपदसेवियै ( ए चाल ) मति अ

तिह भलो शकल विमल गुण आगर भविजन सेवियै । ( आंकणी ) एमति ज्ञांन सदा नमियै । निजपाप सकल दूरै गमियै । मनशुद्धकरी निज गुण रमियै ॥ मति० ॥ १ ॥ व्यंजनकर अवग्रह इमजांणो । चउभेदकरी मनमें आंणो । इमभाखै श्रीजिन जगभाणो ॥ मति० ॥ २ ॥ अरथेंकरी भेद जिणंद आखै । पणइंद्रिय मनकर प्रभुदाखै । मुनि मांनस ते दिलमें राखै ॥ मति० ॥ ३ ॥ बलि षटविध भेद ईहा कहियै । षटभेद अपाय करी लहियै । षटविध धारण भवि सरदहियै ॥ मति० ॥ ४ ॥ इमभेद अठाईस भविधारो । इमभाखे जिनवर सुखकारो । निश्चय व्यवहारते अवधारो ॥ मति० ॥ ५ ॥ बलिरतन जड्ति कंचन कलशै । भविपूजन कर तन मन उलसै । चिदरूप अनूप सदा विलसै ॥ मति० ॥ ६ ॥ एज्ञांन दिवाकर समकहियै । इम सुमति कहै दिलमें गहियै । एज्ञांनथी अनुपम सुख लहियै ॥ मति० ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने अनं० जन्म० श्रीम० ॥ श्रीमति ज्ञान धारकेभ्यः । जलंयजामहे स्वाहाः ॥ १ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ ( २ ) श्रुतज्ञान पूजा लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ( दूहा ) ॥ श्रुत धारक पूजा करो । भाव धरी मनरंग । उपगारी शिरसेहरो । भावो जिन उछरंग ॥ १ ॥ मृगमद चंदन वाससूं । जो पूजे श्रुतअंग । अनुभव सुध प्रगटे सही । पामें सुरक अभंग ॥ २ ॥ ( ढाल ) ॥ नाभजीके नंदाजीसें लग्यामेरा नेहरा । ( ना० ए चालमें ) ॥ श्रुतजाकी पूजा कर सीखो भवी सेहरा । श्रु० । विनय सहित गुरुवंदन करकै लुल२ पायनमें गुरुदेवरा ॥ श्रुत० ॥ १ ॥ तीन तीश आशातन टाली । भगतिकरै भवि गुण गण गेहरा ॥ श्रुत० ॥ श्रीगुरु ज्ञान अखंड्ति वरसै । ज्युं पावस रुत वरसै मेहरा ॥ श्रुत० ॥ २ ॥ दशाविध विनयकरै श्रुतगुरुको सेवेज्युं अलिफूलनें नेहरा ॥ श्रुत० ॥ गुण मणि रयण भरयो श्रुतसागर । देख दरश हरखावै मेरा जीवरा ॥ श्रुत० ॥ पृछन वायन बलि२ करियै । सीझै वंछित ज्युं मुनिसेवरा ॥ श्रुत० ॥ गुरुभगती जैसी गणधरकी । वीर कहै सुण गोतम सेहरा ॥ श्रुत० ॥ ऐसें गुरुभक्तीसें सीखो । ए श्रुतज्ञान सकल सुखदेहरा ॥ श्रुत० ॥ गुरुविन औरन को उपगारी । गुरु देव सदा

गुण माणिके जेवरा ॥ श्रुत० ॥ ऐसें गुरुकी कीरत करके । सुमति धरो दिलमें गुण गेहरा ॥ श्रु० ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ नितनमियै थिवर मुनीसरा नि० ( ए चालमें ) ॥ ❋ ॥ नितन मियै श्रुतधर मुनिवरा ॥ नि० ॥ अरथै श्री जिनराज वखाणें । सुत्रै श्री गुरु गणधरा ॥ नि० ॥ १ ॥ मेघधुनी जिम भविजन सुणके । हरखै ज्युं केकी वरा ॥ नि० ॥ अंग इग्यारै गुण मणि धारक । बारै उपांग उजाग रा ॥ नि० ॥ २ ॥ जगत उधारण तुंपरमेशर । सकल विमल गुण आगरा ॥ नि० ॥ छेद पयन्ना नंदी सेवो । मूलसूत्र भवि गुण करा ॥ नि० ॥ ३ ॥ श्रुतधारी गोतम गुण दीवो । पूरब चउद विद्याधरा ॥ नि० ॥ पहिलो आचारंग वखांणें । चरण करण गुण सुखकरा ॥ नि० ॥ ४ ॥ दूजो सुयग डांग सुणीजे । भेद तिशय तेसठखरा ॥ नि० ॥ तीजो ठांणांगसूत्र विराजे । सुणतां पापमिटैपरा ॥ नि० ॥ ५ ॥ चौथोसमवायांग सुहावै । अरथ अनेक करविरा ॥ नि० ॥ पंचमें भगवई महिमा करियै । सहसछत्तीश प्रशन धरा॥ नि० ॥ ६ ॥ छठो ज्ञाता अंग सु ध्यावो । धरमकथा कहै जिनवरा ॥ नि० ॥ सातमो अंग उपाशक कहियै । दशश्रावक प्रतिमा धरा ॥ नि० ॥ ७ ॥ आठ मअंगै जिनवरदाखै । अंतगरू केवलि मुनिवरा ॥ नि० ॥ नवमें अंगै भविसु नधारो । अनुत्तरवाई शुभकरा ॥ नि० ॥ ८ ॥ प्रश्णविचार कह्या जिन द शमें । अंगुष्टादिक शुभतरा ॥ नि० ॥ अंगइग्यारमें जिनवर दाखें । कर्मवि पाक विविध परा ॥ नि० ॥ ९ ॥ बारमोअंग जिणंद बखांणे । अतिशय गु ण विद्याधरा ॥ नि० अक्खरश्रुत वलिसन्नी कहियै । सम्यकभेद अधि कतरा ॥ नि० ॥ १० ॥ सादिभेद सपरजव लहियै । गम्यकभेद सुणोनरा ॥ नि० ॥ अंगप्रविष्ट कहै जिनवरजी । भेदचवद सुणजो खरा ॥ नि० ॥ ११ ॥ इमजो श्रीश्रुतज्ञांन आराधो । भाव भगत कर बहुपरा ॥ नि० ॥ सुमति कहै गुरु ज्ञांन आराधो । बंछित पूरण सुरतरा ॥ नि० ॥ १२ ॥ ॥ ❋ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० श्रीश्रुतज्ञांनधारकेभ्यः चंदनं यजामहेस्वाहाः ॥२॥ ॥❋॥

## ॥ ❋ ॥ अथ ( ३ ) अवधिज्ञान धूपपूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ( दूहा ) ॥ ❋ ॥ अगर सेल्हारस धूपसें । पूजो अवधि उदार ।

बोधबीज निरमलहुवै । प्रगटै सुक्ख अपार ॥ १ ॥ नवल नगीनैं सारिखो । ज्ञांनवभो संसार । सुरनर पूजै भावसुं । महियल ज्ञांनउदार ॥ २ ॥ ( ढाल ) ॥ निरमल हुय भजलै प्रभुप्यारा । सबसंसार० ( ए चाल ) ॥❀॥

॥ अवधिज्ञांनको पूजनकरलै । ज्युं पावै भवपार सलूणा ॥ अ० ॥ ज्ञांनबभो सुखदैन जगतमें । उपगारी सिरदार सलूणा ॥ अ० ॥ १ ॥ भेद असंखकहै जिनवरजी । मूलभेद षट् सार ॥ स० ॥ वद्धमान हीयमान वखांणें । सूत्रें श्री गणधार ॥ स० ॥ २ ॥ सुर नर तिरि सहु अवधि प्रमांणें । देखै द्रव्य उदार ॥ स० ॥ अवधि सहित जिनवर सहुआवै । थाये जग भरतार ॥ स० ॥ ३ ॥ ज्ञांन विना नर मूढ कहावै । ढोरसमो अवतार ॥ स० ॥ ज्ञानी दीपक सम जगमांहे । पूजै सहु नर नार ॥ स० ॥ ४ ॥ ज्ञांनतणी महिमा जग मांहै । दिन २ अधिकीसार ॥ स० ॥ मूलमंत्र जग वशकर वाको । एहीज परम आधार ॥ स० ॥ ५ ॥ ज्ञांननीपूजा अहनिशि करियै । लीजै बंछित सार ॥ स० ॥ ज्ञांननें वंदी बोध उपावो । करम कलंक निवार ॥ स० ॥ ६ ॥ इत्यादिक महिमा भविसुणकै । पूजो अवधि उदार ॥ स० ॥ सुमतिकहै भवि भाव धरीनें । सेवो ज्ञान अपार । सलूणा ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीपरमात्म० । श्रीअवधिज्ञांन धारकेभ्यः । धूपं यजामहे स्वाहा ॥ ३ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ ( ४ ) मनपर्यवज्ञान पुष्पपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ( दूहा ) ॥ ❀ ॥ केतकी दमणो मालती । अवर गुलाब सुगंध । भावधरी पूजन करो । हरै कुमति दुरगंध ॥ १ ॥ मनपर्यव पूजाकरो । विवध कुशम मनरंग । महिकै परमल चिहुं दिशै । पामै शुजश अभंग ॥ ७ ॥ ( ढाल ) ॥ सेत्रंजानेवासीप्यारो लागै० से० ॥ ( एचाल ) ॥

॥❀॥ जिनजीरो ज्ञांनसुहावै । म्हांराराजिंदा । ( जिनजीरो ज्ञान० )जिनजीरो ज्ञांन अनंतो सोहै । कहतां पारन आवै । म्हांराराजिंदा ॥ जि० ॥ ॥ १ ॥ सन्नी नर मनपरयव जांणै । तेमुनि ज्ञांन कहावै ॥ म्हांरा० ॥ जिन० विपुलमतीनें रुजुमति कहियै । ए दुयभेद लहावै ॥ म्हांरा० जि० ॥ २ ॥ अंगुलअढाए ऊणो देखै । तेरुजु नांम धरावै ॥ म्हांरा० ॥ जि० ॥ ३ ॥ मनगत भाव सकल ए भाखै । ते चोथो मनभावै ॥ म्हां० जि० ॥ एह

नी महिमा नित नित कीजें । तिमभवि नांमधरावै । म्हां० ॥ जि० ॥ ४ ॥ जगजीवन जगलोचन कहियै । मुनिजन ए नितध्यावें ॥ म्हां० ॥ जि० ॥ दिक्षाले जिनवर उपगारी । चोथो ज्ञान उपावै ॥ म्हां० जि० ॥ ५ ॥ मनका शंसा दूर करतहैं । सुणतां आंण मनावै ॥ म्हां० जि० ॥ तन मन शुचिकर पूजन करलै । जनम जनम सुखपावैं ॥ म्हां० जि० ॥ ६ ॥ विविध कुशमसें पूजा करतां । बोधलता उपजावै ॥ म्हां० जिन० ॥ सुमति कहै भवि ज्ञांन आराधो । श्री जिनदेव बतावै ॥ म्हां० जि० ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्म० श्री मनपर्यवज्ञानधारकेभ्यः पुष्पंयजामहे स्वाहाः ॥ ४ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ ( ५ ) केवल ज्ञानपूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ( दूहा ) ॥ प्रभुपूजा ए पंचमी । पंचम ज्ञांन प्रधांन । सकलभाव दीपक सदा । पूजो केवल ज्ञांन ॥ १ ॥ फल दीपक अक्षत धरी । नैवेद्य सुरभिउदार । भाव धरी पूजन करो । पावो ज्ञांन अपार ॥ २ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ( ढाल ) तुमविन दीनानाथ दयानिध तु० ॥ (ए चाल ) ॥❋॥

॥❋॥ तुंचिदरूप अनूप जिनेसर । दरशणकी बलिहारी रे । तुं० । ( आं० ) निरमल केवल पूरण प्रगट्यो। लोका लोक विहारी रे। केवलज्ञांन अनंत विराजै । क्षायक भाव विचारी रे ॥ तुंचिद० ॥ १ ॥ जोत सरूपी जगदानंदी । अनुपम शिवसुख धारी रे । जगत भाव परकाशक भानूं । निजगुण रूप सुधारी रे ॥ तुंचि० ॥ २ ॥ सकल विमलगुण धारक जगमें । सेवत सब नरनारी रे । आतम शुद्ध सरूपी भविजन । गुण मणि रयण भंडारी रे ॥ तुंचिद० ॥ ३ ॥ केवल केवल ज्ञांन विराजै । दूजो भेदन धारी रे । आतम भावै भवि जनसेवो । जगजीवन हितकारी रे ॥ तुंचि० ॥ ४ ॥ अवर ज्ञांन सब देश कहावै । केवल सरब विहारी रे । सरब प्रदेशी जिनवर भाखे । साखै श्रीगण धारी रे ॥ तुंचि० ॥ ५ ॥ भए अजोगी गुणके धारक । श्रेणचढी सुखकारी रे । अष्ट कर्म दल दूरकरीनें । परमातम पद धारी रे ॥ तुंचि० ॥ ६ ॥ असें ज्ञांनवस्यो जगमांहै । सेवोशुद्ध आचारी रे । सुमति कहै भविजन शुभ भावै । पूजो कर इकतारी रे ॥ तुंचि० ॥ ७ ॥ फल १ अक्षत २ दीपक ३ नेवद्यसें ४ । पूजो ज्ञांन उदारी रे । पूजत अनुभव सत्ताप्रगटै । विलशै सु

ख ब्रम्हचारी रे ॥ तुंचि० ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने श्रीकेवलज्ञांन धारकेभ्यः फलं १ अक्षतं २ दीपं ३ नैवेद्यं ४ यजामहे स्वाहाः ॥ ५ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ कलश पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ केशरियानें लाजको लोक तिरायो० ॥ ( ए चाल ) ॥ ❋ ॥

प्रभु थांरो ग्यांन अनंत सुहायो । प्रभु अशरण शरण कहायो ॥ प्रभु० ॥ मति श्रुति अवधि अनें मनपर्यव । केवल अधिक कहायो । भव्यसकल उपगार करतहै । श्रीजिनराज वतायो ॥ प्र० ॥ १ ॥ खरतरगछ पति चंद्र सूरीसर । राजत राज सवायो । तेजपुंज रवि शशि सम सोहै । देखत दिल हुलसायो ॥ २ ॥ प्रभु० ॥ प्रीत सागरगणि शिष्य सुबाचक । अमृतधर्म सुपायो शीश क्षमाकल्यांण सुपाठक । सदगुरु नाम धरायो ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥ धरम विशाल दयाल जगतमें । ज्ञांन दिवाकर ध्यायो । ज्ञांन क्रियानो मूलजे कहीये । तत्वरमण मनभायो ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥ वीकानेर नगर अति सुंदर । संघ सकल सुखदायो । सुमती जिन धर्म आराधक । भगतकरै मुनिरायो ॥ प्र० ॥ ५ ॥ उगणीसै चालीशै वरशै । आसूसुद वरदायो । ज्ञांन विजयकारक सब जगमें । नित प्रति होत सहायो ॥ प्र० ॥ ६ ॥ सुमति सदा जिनराज कृपासें । ज्ञांन अधिक जशगायो । तत्वदीपक मोहन मुनिभावै । ज्ञांनतणो गुणगायो ॥ प्रभु० ॥ ७ ॥ इति ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ पांचज्ञान आरती ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ जय जग सुखकारी । वारी जय शम पद धारी । आरती करूं सहु सारी ॥ जय० ॥ अष्टा विंशति भेद करीनें । मति ज्ञान राजे ॥ मति० ॥ ध्यावत पूजत भविजनकेरा । भव संकट भाजे ॥ जय० ॥ १ ॥ भेद चतुर्दश अथवा विंशति । प्रवचन पति दाखे ॥ प्र० ॥ श्री श्रुतज्ञानकी महिमा जिनवर । स्वमुखथी भाखे ॥ जय० ॥ २ ॥ रूपी द्रव्य विषयि मर्यादा । करि अवधी सोहे ॥ क० ॥ भेद षटक संख्याती तीवा । भविजन मनमोहे ॥ जय० ॥ ॥ ३ ॥ तुर्य ज्ञान मन पर्यव कहिये । भेद युगम लहिये ॥ भेद० ॥ रुजुमति विपुलमती सरदहियें । न्यूनाधिक गहियें ॥ जय० ॥ ४ ॥ लोका लोकांतर्गत वस्तु । गुण पर्यव भासी ॥ गु० ॥ केवल एक सहाय अनंते । भए

निर्वृतिवासी ॥ जय० ॥ ५ ॥ पंचज्ञानकी आरती करतां । नवआरती लीजे न० ॥ जिम वरदत्त कुमर गुण मंजरी । तिम नक्ती कीजे ॥ जय ॥ ६ ॥ वृह त् नट्टारक खरतर पति जिन । हंससूरि राया ॥ जि० ॥ तत् पद कज मधु कर कंचन निधि ॥ आनंद वरताया ॥ ज० ॥ ७ ॥ इति ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ मंगल दीवो ॥ ❋ ॥

॥❋॥ दीवो रे दीवो मंगलदीवो । नुवन प्रकाशक जिन चिरंजीवो ॥ दी० ॥ १ ॥ चंद्र सूर प्रनु तुम मुख केरा । लुंछण करता दे नित्यफेरा ॥ दी० ॥ ॥ २ ॥ जिन तुज आगल सुरनी अमरी । मंगल दीप करी दिये नमरी । दी० ॥ ३ ॥ जिम जिम धूपघटी प्रगटावे । तिम तिम नवनां दुरित दझावे दी० ॥ ४ ॥ नीर अक्षत कुसुमंजली चंदन । धूप दीप फल नैवेद्य वंदन । दी० ॥ ५ ॥ इणपरे अष्ट प्रकारी कीजे । पूजा स्नात्र महोत्सव पनणीजे ॥ दी०॥

## ॥ ❋ ॥ अथ मंगल आरती ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ नविजन मंगल आरती करियै ॥ जनम जनमकी आरति हरियै ॥ न० ॥ १ ॥ आरती प्रथम जिनेसरजीकी । दारुण विघन निवारण नीकी ॥ न० ॥ दूजेपद श्रीसिद्ध दिणंदा । आरती करत मिटत नवफंदा न० ॥ २ ॥ तीजे पद श्रीसूरि महंता । मारग शुद्ध प्रकाश करंता ॥ न० ॥ चौथे पद पाठक गुणवंता । आरती करत हरत नव चिंता ॥ न० ॥ ३ ॥ पंचमी आरती साधुन केरी । कुगति निवारण शुनगति शेरी ॥ न० ॥ शिव सुखकारण श्री जिनवांणी । छठी आरती ज्ञान वखांनी ॥ न० ॥ ४ ॥ सा तमी आरती आनंदकारी । समकित व्रत गृहि प्रतिमा धारी । न०॥ यह विध मंगल आरती गावै । शुद्ध क्षमा कल्यांण ते पावै ॥ न० ॥ ५ ॥ इ०

## ॥ ❋ ॥ अथ श्रीलक्ष्मी मोहन कृत स्तवन संग्रह ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अरिहंत नमो नगवंत नमो, । जिनराय आदीशर नित्य नमो ॥ नमो नानि मरुदेवानंदन, आदिनाथ जगनाथ नमो ॥ अरि० १ ॥ जग हितकारक वांछितदायक, ग्यान विमल गुणधार नमो ॥ नमो नमो अवि चल सुखदायक, शांतिसूरत जग तातनमो ॥ अरि० २ ॥ अतिशय धारक

सुर नर पूजित, सहुगुणधार सुदेवनमो ॥ जिनगुण ग्राहक श्रीवरपावत, मुक्तिमोहन जयकार नमो ॥ अरि० ३ ॥ इति श्री आदिजिन स्तवनम् ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ गजल ॥ ताल पंजाबी ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ जबसें चेतन पावत निजगुण, आतम ध्यान लगाते हें । आतम पेखत सहुसुख लेखत, सोहं ध्यान लगाते हें ॥ सोहं सोहं सोहं जपतां सहु अरि कर्म खपाते हें। सिद्धि अचल अविनाशी वसुगुण पुरुषोत्तम पद पाते हें॥१॥ निज घरमें बेठे अक्षय सुख पाते हें । जब जगमें रहे सहुजीव ध्याते हें । कर जोरी करके जिनगुण गाते हें । सहुभवि मिलके मस्तक नमाते हें ॥ २ ॥ देव सेतेहें, इंद्र सेतेहें, सार जगतका पाते हें, जब पार जगतका आते हें॥३॥ जेनप्रकाश, करत हुलाश, शिवश्रीपाश, मोहनआश, ॥ ४ ॥ जब० ॥ २ ॥

## ॥ ❋ ॥ रागकेरवो, अेजी साहब नतीजा० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ मेरे साहब जिनंदा दिलवसिया मे० ॥ सुनोरी समकितधर नर नारी, सेवो शिवश्रीनृप ॥ जिनं० टेक ॥ ध्यान दिलमें धारके सेवत बीशथानकों, जिननाम लपायके धारे अमर निधानकों ॥ उत्तम कुलमें आयके ज्ञान त्रिकले साथकों, जोगसुख पायके लीनो चरणपद हाथकों ॥ १ ॥ करम तपाई केवल जोपाए, सेवो शिव श्रीनृप ॥ जिनं० मेरे० ॥ २ ॥ केई अमर आयके, नमन करे सुलभावसें ॥ समवसरण रचनाकरी, चौमुख जिनदेखा बसें ॥ अतिशयगुण जिनधार, पर्षद बार प्रकारसें ॥ सोभित मधुर स्वरें, कहे धर्म विस्तारसें ॥ सहुभविसुनके व्रतगुणपाए, सेवो शिव श्रीनृप ॥ जिन०॥३॥ पारनही लेसके, सुरगुरू पिणकथनसें ॥ अरिहंतपद आदरी अनंतसिद्धवत नसें ॥ तीनभुवन प्रभुतणा, रहा चैत्य अनादिसें ॥ श्रीवर शिवसुखपाय ध्यानगुण प्रसादसें ॥ संघ चतुर्विध प्रभु मोहनकर, सेवो शिव श्रीनृप ॥ जिनं० ॥ ४ ॥ ❋ ॥ इति अरिहंतपद वर्णन स्तवनम् ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ जीया चतुर० । ताल पंजाबी ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ जीया इकसुनवात. जिनपदकों तूं ध्यायरे ॥ जी० टेक ॥ अष्टकरमके वसमें पड़ियो । भमियो भवसायर मांयरे ॥ जीया० ॥ १ ॥ पुन्यसंयोगे नरभवपायो । मिलियो उत्तमकुल आयरे ॥ जीया० २ ॥ जेनधरम जिन

दर्शन पायो । फिरतुं आलस क्युंखायरे ॥ जी० ३ ॥ परउपगारी अंतरजामी । तरण तारण महा रायरे ॥ जी० ४ ॥ इकचित प्रभुको समरण करले । ज्युं गुण परगट थायरे ॥ जी० ५ ॥ जोताहरा गुण प्रगट करै तो । शिवरमणीवरे जायरे ॥ जी० ६ ॥ तत्वदीपक प्रभु श्रीवर ध्यावे । मोहन वंछित पायरे ॥ जीया० ७ ॥ इति जिनपदस्तवनम् ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ तालपंजाबी ॥ राहचंपेली ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ सुनोमेरे पतियां दिलधर वतियां । निजगुण दरशन भाउं भाउं भाउं ॥ टेक ॥ जिन दरशनसें मोक्ष मिलै । इकचित प्रभुगुण गाउं गाउं गाउं ॥ सुनो० ॥ १ ॥ जंगम थावर तीर्थतणा । में तो नित सबगुण ध्याउं ध्याउं ध्याउं ॥ सुनो० ॥ जैन प्रभावक गुण प्रगटे । शिव मोहनपद पाउं पाउं पाउं ॥ सुनो० ॥ ३ ॥ ❋ ॥ इति जिनदर्शनस्तवनम् ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ झुकझुक परेरे० इस में ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ नितनित नमुं रे तुमजिनप्यारे । मोहि तार, अबतार, तार, तार, तार. अबतारेरे । नितनमुंरे० ॥ नितनित० । टेक ॥ तुमनाम जगमोहता । तुमकाम जगसोहता । तुमधर्म जगबोहता । भविजीव भवखोहता ॥ १ ॥ मनभावत, गुणगावत, शिवपावत, तुमकरो प्रकाशक जैन मोहन गुणसारे नित० ॥ २ ॥ इति पदम् ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ ऐसे धोका देनेवाले, ताल पंजाबी ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ऐसे पूजा करनेवाले मेनें विरले देखे भाले ॥ ऐसे० टेक ॥ ऐसे जिन आग्याकों पालनवाले, विधिसंयुतसें रहनेवाले, विनयादिगुण धरने वाले, भक्तिगुण दिखलानेवाले ॥ पूजा० ॥ १ ॥ ऐसे अपनेजीके सुखपानेंको, गुणगानेंको गुणपानेंको, इकचित जिनको ध्यातेहै सो, शिवकामेंको शिवपानेंको, छोडी छोडी भवनीबाते, त्यागीहे कुमतीकीवाते, धारीहे सुमतीकीवाते, पालीहे समकितकी वाते ॥ पूजा० २ ॥ ऐसे पूजन द्रव्ये भावे, फल शिवनगरी देताहे, ऐसे निजगुण प्रगटे सुंदर सहुदिल जाणें जगजाणें, सोभा सोभा भारी सोभा, जैसीहे सूरजकी सोभा, जैसी हे चं

द्रकी सोभा, जिससें अधकी निजगुणसोभा. जिससें अधकी जिनपद सोभा ॥ धारो गुण सम, जेथी दूर हुवे भ्रम, सहु दूर हुवे कम, जैनमंगल पावे धम, अजी सुनो सीखो धारो आगम श्रीवर मोहनभाले ॥ ऐसे० ॥ ३ ॥ इति श्रीजिनपूजा विधि स्तवनं ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ गजल ॥ क्या कहुं अबबेरबेर० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ या कहुं अब चेतजीव भोम्रे संसार सारा ॥ या० ॥ टेक ॥ बहुत क्रमसें ना मिले, अपनागुण एकीवखत, तबतो श्रद्धा धारके, गुण पाय दर्शन ग्यान सारा ॥ या० १ ॥ पंचकारण सब आमिले, दिलधरो संयमतरफ, संयमलीये भावसें. जब भोम्दे सहु कर्म प्यारा ॥ या० २ ॥ तीनरत्न जो तो मिले। दूर हुवे कुमती भरम, जिनमंगल गुणगाय के. शिवपाय मोहन ध्यान सारा ॥ या० ॥ ३ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ हंसारे राजा० एचाल ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ सुनो रे चेतन, अे जगजाल असारा। तुंतो भमियो अनंतभव प्यारारे ॥ सुनो० ॥ टेक ॥ क्रोध लोभ मोह मिथ्या कपटे। कीनोजालपसारारे ॥ सुनो० १ ॥ नवा नवारू पे चिहुंगतिमांहे। कुटुंब अनेक प्रकारारे॥ सुनो० ॥ २ ॥ झूठी काया झूठी माया। झूठा सबपरवारारे ॥ सुनो ॥ ० ३ ॥ धन जोवन मद मतकर प्यारे। एकदिन जंगल चारारे ॥ सुनो० ४ ॥ जिनध्रम सार दया दान निजगुण। सेवत गुण सुख कारारे॥ सुनो०५ ॥ जैनमंगलगुण श्रीवर पावत। मोहन ग्यान प्रकारारे ॥ सु० ६ ॥❋॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ रागचंपेली ॥ तालपंजाबी ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ आदिजिनवरजी सुनोमेरी अरजी। भवजलसें अब तार तार तार ॥ आ० ॥टेक ॥ मोह मिथ्यावस काल बहु। भमियो भव वन चार चार चार ॥ आदि० १ ॥ हिवपुन्यें दरशन गुणयोग, तुमगुण सुणिया सार सार सार ॥ आ० २ ॥ जिनगुण ग्राहक भविजहस्ये शिव मोहनपद धार धार धार ॥ आ० ३ ॥ ❋ ॥ इतिश्री आदिजिनस्तवनं ॥❋॥

॥ ❋ ॥ लावणीकी चाल ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ श्रवण अजिताजिन सद्गुण सुन कर सेवनका दिल चाहते हैं

सेवनकरना सुमतिआदरना चेतनगुण जबपाते हैं ॥ टेक ॥ मोहे अबतो छोमावो सहुकुमतिकाखेल । चिहुंगतिमांहे बहुत किया ठेल । पुन्ययोगे दरशन पाया । निजगुणसुमतिमहल ॥ मोहे० अब० १ ॥ मोहे अबतो देखावो सहुनिजगुणसेल । जेथीसहुजाणुं जगतकाखेल । करजोमीनें सेवा करुं तुंही चित्रावेल ॥ मो० अ० २ ॥ प्रजुअबतो उतारो जवजलसेपार । गावे जिनमंगल गुणसुखकार । सहुसंघ श्रीबर पावे मोहन मुक्तीसार ॥ प्र० अ० ॥ ३ ॥ इतिश्री अजित जिनस्तवनम् ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ वामछंद, ताल २ मात्रा ६ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अजितचरण, रहतशरण, कनकवरण, तेजतरण ॥ अजि० १ ॥ दिलविचार, तत्वसार, मदप्रकार, तजगमार ॥ अ० २ ॥ जव अनंत, जय सहंत, गुणधरंत, सुख करंत ॥ अ० ३ ॥ ज्ञानराय, लक्ष्मीपाय, मुक्ति जाय, सुक्खथाय ॥ अ० ४ ॥ इतिपदं ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ शिरपरयेबोफा० ॥ नाटक चाल ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ संजवजिन थांरी मूरतप्यारी अंगियां सारीरे ॥ सं० ॥ अंगियां तुममनजाई, सुंदर सब रत्नजमाई, मानुंदिनकारीरे, जाउं बलिहारीरे, ॥ सेवत नित तुम सुरसारा, तुम सहुजग मोहनगारा, जविपल पल तुमगुण धारे । शिवसुखलागत सहुप्यारे । श्रीबर हितकारी, मोहनधारी, गुणसुख कारीरे ॥ सं० ॥ १ ॥ इतिश्री संजव जिनस्तवनम् ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ आई सुंदर नार, करकर शृंगार० ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ ताल पंजाबी ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ जिनतत्वसार, सहुजग आधार, करिमोह जार, सुखशांतिसार, प्रजुगुण अपार दिलसमरणकीनो ॥ जि० १ ॥ जिनसुमति पाय दिलसुमति थाय । सहु कुमति जाय, मोह मद न साय ॥ गुण आतम पाय बंछितसुख लीनो ॥ जिन० २ ॥ जवजल प्रधान, प्रवहणसमान, सहुसुखनिधान, करि आतमध्यान, शिवश्री प्रधान, गुणमोहनलीनो ॥ जि० ३ ॥ इति श्री सुमति जिनस्तवनम् ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❀ ॥ नजर आई मुजकों० ताल दीपचंदी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ भजनकर अबतो जिनंदगुणका । सहु ग्रेरू मिथ्यात मतकाभ रम ॥ टेक ॥ भम्यो भवजलमें अनंतोकाल । कुमतीसंगचेतन असुभ करम ॥ भ० १ ॥ किया प्यारे चिहुंगति नाटक खेल, सह्या बहु दुःख नपायो धरम ॥ पायो अब दर्शन कोई पुन्ययोग, प्रभुगुण भजकर राख सरम ॥ भ० ॥ २ ॥ मिले वासु पुज्य जिनेसर राय, फले मन वंछित काजकरम ॥ गावें जिनमंग ल जैनप्रसाद, पावे सुख श्रीवर मोहन धरम ॥ भ० ३ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ तुंनकमलाजीयरवा इस० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तुं अवतार विमलवा ओप्रभुमोरा ॥ तुं० ॥ विमलजिनेसर जग परमेसर । करोमहर निजरवा ॥ करो महर निजरवा ॥ करो० ओ० १ ॥ तुं जगतारण विरुद श्रवणकर । रहुं तुमरे सरणवा॥र० ओ० २ ॥ तुमगुण सुरगुरु पारन पावत, किममें करुं बरणवा ॥ कि० ओ० ३ ॥ सुमतिसंग मुझ निजगु णपाउं । एती करोमहरवा । एती० ओ०४ ॥ तत्वदीपक शिव श्रीवर मोहन । गुणगायो तरणवा ॥ गुण० ओ० तुं० ५ ॥❀॥ इति श्रीविमल जिनस्तवनम्॥

## ॥ ❀ ॥ कंताछंद, ताल २ मात्रा ७ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रभुनमिनाथ· जोडूंहाथ, सहुजग नाथ, शिवपुरहाथ ॥ प्रभु० ॥ प्रभुपदलीन, थिरचितकीन· जिमजलमीन· अंतरपीन ॥ प्र० २ ॥ करुणासार, दिलगुणधार, अबमुझतार, कर भवपार· ॥ प्र० ३ ॥ मोह मिटाय, तत्वदीपाय निजगुणपाय· शिवसुखथाय ॥ प्र० ४ ॥ पाठक मान, लक्ष्मीप्रधान, मो हनज्ञान, आतमध्यान ॥ प्रभु० इति श्री नमिजिनपदम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ लादचला विणजारा इसचालमें ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रभु धर्मनाथ मुझप्यारा । जगजीवन मोहनगारा ॥ टेक ॥ तुम सेवा हितसुखकारी । सुरनर भवि दिलगुण धारीरे । निजगुण सुख मांगत गारा ॥ प्र० १॥ तुम अंगिया अजब सुहावे । भूषण सब रयण जमावेरे । दिन र समतेज अपारा ॥ प्रभु० २ ॥ शिवश्रीवर निजगुण पावे । गुण जैन प्रभा र गावेरे. नित मोहन सुख जयकारा ॥ प्र० ३ ॥इतिश्री धर्मजिनस्तवनम्॥

## ॥ ❋ ॥ दिलदारीकीनीरे० । इसमें ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दिलहर नाजावोरे, मेराओप्यारे, सुखकरियां, प्रीतमवरियां, दिलधरियां नजरियां, न्नरियां, हठकरके, फिरकर नाजावोरे ॥ दिल० टेक । मन अंदर रही शिववनिताजो । जानलेईमुझ घरकोंआकर । अबतो आजी सुनके गिरपर ना धावोरे ॥दि० १ ॥ बात नमानी यादवमुख जो । सथरहुंगी संयमपाकर । पल पल दरशन करके, शिवपुरकों पावोरे ॥ दि०२। जैन प्रज्ञाकर शिवश्रीबरजो । मोहनश्रेणी जिनगुण गाकर । उच्छव नाटव करकें प्रजुका तत्वदीपावोरे ॥ दिल० ३ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ।
इतिश्री नेमि जिनस्तवनम् ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ।

## ॥ ❋ ॥ तोरासच नहिंकहनारे; इसचालमें ॥ ❋ ॥

॥❋॥तोराकथन निज्ञानारे। प्यारेनेम, धरुंप्रेम, छतियां तरस मोहे रतियां सतावे ॥ तोरा० टेक ॥ सरस दरस तोरो वहुतसुहावे, देखीनयना दिलवरसें । साम साम साम, मेरे तुमसेतीकाम ,मेरे सिरपर तुंहे स्वामी, तुंहे अंतरजामी, ॥ तोरा० ॥ रथकों फिराय पिया गिरवरचाले । शिववनिता लजचानेंकों । प्यारी प्यारी प्यारी, तोहेदिल शिवप्यारी । में पिण दिक्षा लेसुंसारी । मोहुं शिवनारी ॥ तोरा० ॥ २ ॥ नेमराजुलदोनुं मोक्षसिधाए । जिनमंगल नित गुणगावे । ध्यान ध्यान ध्यान, तोरानितकरे ध्यान, पावे शिव लक्ष्मीप्रधान, थावे मोहनज्ञान ॥ तो० ॥ ३ ॥ इतिश्री नेमिजिनस्तवनम् ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ कोईरसीलाछबीला० इसचालमें ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ मेरे रंगीला चंगीला प्रजुपासजी । जैसा संगीला साथीला होयतासजी ॥ मेरे० टेक ॥ पलमेंरी छिनमें अहनिशिसमरुं । जिमहुय सुमता नारीहो सुंदरवानी, सहजसें पाया चेतन गुणज्ञानी । तन मन मोहन जाण सज्जन ॥ मेरे० १ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥
इतिश्री पार्श्वजिनस्तवनम् ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ ठुमरी ॥ गेरीब्राह्मणकी, इस० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ प्यारी पारशकी प्यारी पारशकी । सूरत अति मनज्ञावनकी ॥ प्यारी० ॥ टेक ॥ मुंबईसहर चिंतामणिपारस । आंगिया अजब सुहावनकी ॥

यारी०१॥ सरदइंदु जिम वदन मनोहर। आसपूरै नितध्यावनकी॥प्या०२॥
अश्वसेन वामाजीकेनंदन। तीन भुवन जसगावनकी॥ प्यारी० ३॥ भव
जलतारक सहुसुखकारक, नयनसुधावरसावनकी ॥ प्या० ४॥ ज्ञानसुधा
म श्रीवरधारक, मुक्ति मोहन जय पावनकी॥ प्या० ५॥ ❋॥
इतिश्री चिंतामणी पार्श्वजिनस्तवनम्॥ ❋॥ ॥ ❋॥

## ॥ ❋ ॥ ताल दादरा, हजूरियांगाढी ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अरज करुं गाढो, अरज करुं गाढो, मोहेतारो ॥ अर० ॥ टेक ॥
प्रभुजीथांको विरुद चितधारो । दुःखसहुटारो ॥ मोहे० १ ॥ प्रभुजी तुमे
तारण तारणगो । सुक्खकारण गो ॥ मोहे० २ ॥ प्रभुजी रिखभ जिनेसर
राचो। मोहन गुण राचो ॥ मोहे० ३ ॥ इतिश्री आदिजिनपदम्॥ ❋॥

## ॥ ❋ ॥ पुनः ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ शरणमें आयो शरणमें आयो। बीरतेरे शरणमें आयो ॥ बीर०
टेक ॥ प्रभुजी मेंतो कुमति संग रमियो । बहुत भवभमियो ॥ बीर० १ ॥
प्रभुजी मोकुं सुमति अवदीजे। जगत जश लीजे। बी०२॥ प्रभुजी शिवसुख
श्रीवर चाहुं ॥ मोहनगुण पानं ॥ बी० ३ ॥ इति श्रीबीरजिन स्तवनम्॥❋॥

## ॥ ❋ ॥ राग कल्याण, मानोप्यारा२० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ मोहे तारो मोहे तारो कुंथुजिनंद। मो० ॥ टेक ॥ कुंथुजिनेसर तुं
परमेशर। शांति सूरत सुखकारो ॥ मो० १ ॥ सूरपिता श्रीदेवी माता । तुम
तारक अवतारो ॥ मो० २ ॥ अतिशय सोभित अंगआभूषण, मोहनीमूरत
प्यारो ॥ मो० ३ ॥ अविनाशी अविकारी तुं प्रभु, शिववाशी जगप्यारो॥
मो० ४ ॥ बीकानेर नगर अतिसुंदर। चैत्यवन्यो हितकारो ॥ मो० ५ ॥ उग
णीसे इकतीस जेष्टसुद। दशमीदिन सुभवारो ॥ मो० ६ ॥ प्रभुथापनाकरि
रतनचैत्यें। श्रीवर संघ हजारो ॥मो०७॥लक्ष्मीप्रधान मोहन नित सेवे। जय
शिव पद दातारो ॥ मो० ८ ॥ इति श्रीकुंथुजिन चैत्य प्रतिष्ठा स्त० ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ गजल ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ गुणोंको धारले दिलदार हरदम। अगुणोंहै सब सुखकार हरदम

गु० टेक ॥ अपनें गुणोंकी पहचानक्याहे, वचन जिनराजका सत्यजाण हर दम ॥ गु० १ ॥ दरशन ज्ञान चारित्र गुणहै । रतन निजआत्मका पहचान हरदम ॥ गु० २ ॥ शाशनपति महावीर प्रभुहै । चरण नितध्यानका चितधार हरदम ॥ गु० ३ ॥ निजगुणजो सहु भविजनपावें । मोहन शिवराजका सुख पाय हरदम ॥ गु० ४ ॥ इति निजगुण वर्णन पदम् ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ लावणीकीचाल ॥ ❋ ॥

॥ नितध्यावो फलपावो सदा तुमशाश्वत गिरिवरहां ॥ टेक ॥ तीरथहैओ स हुजग मंरूण, सिद्धगिरी शिवपाज । जिसकेध्यानें भवि जनपामें, अरिहंतपद शिवराज । केइध्याया, केइ पाया, केइ पावे, केइपामसी शिवसुख ज्ञानसें भविजन अनंतकाल गतियां ॥ नित० १ ॥ पूरब निनाणों आया इनगिरि, रिखभजिनंद जिनराय । नववशिचेत्यसुहामणाजी । सहु जिनबिंबसुहाय । संवआवे, प्रभुध्यावे, सुखपावे । गुणग्यानसें श्रीवर जैनप्रकाशक मोहन जय वातियां ॥ नि० ३ ॥ इति सिद्धगिरी स्तवनम् ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ कोईहालकहोजाके० इसमें ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ मोरी बात सुनोसारे, प्रभु कुंथुनाथ प्यारे ॥ मो० टेक ॥ सूरपिता श्रीदेवीमाता, हथनापुरभारे, तुमजगतारक जन्मलईनें, बहु भविजन तारे ॥ तुमसुनोगरीबनिवाज, रखोमेरी लाज, करो सुभकाज ॥ मो० १ ॥ सुरनर सहु भवितुझनें नमतां, सुखपायाभरपूर, ग्यानध्यानसें दर्शनसाथें, कर्मकिया चकचूर ॥ प्रभुपाया शिवसुखआप, करे सहुजाप, छूटेसहुपाप ॥ मो० २ ॥ जगदीश्वर जगतारक तुमहो, मोहतारोदिलधार, पाठक श्रीवर विक्रमपुरमें, सेवेतुमसुखकार ॥ प्रभुआनंद अधिक अपार, मोहनपद धार, करो जयसार ॥ मो० ३ ॥ इतिपदम् ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ यारवहालखुलजावै ॥ इसमें ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ निजगुण आतमजबपावें, कुमतितिमरतबदूरेहोगा । सुमतिक थन नितभायतनमनसें । त्याग त्याग दुःखत्याग, पापछोरू मोहछोरू । आत्म० ॥ निज० टेक ॥ प्रभुनामि भजकर निजगुणसुधकर, चेतनकर्महटावे, ज्ञानरवी

प्रगटहोय तनमें । सहुजगजाणहोवे इकछिनमें ॥ ज्ञान ज्ञान निजज्ञान, शुक्लध्यान करध्यान ॥ आ० नि० १ ॥ दोष अष्टादश रहित केवलयुत, भविजन धर्मसुनावे । लक्ष्मीप्रधान मिले शिवसंपद, मोहन जय सु संपाय सहुजगमें ॥ गुणगान, स्वरजान. भरतान. लहेमान॥आत्म०।नि०॥ ३ ॥ इतिश्री नमिजिनस्तवनम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥सांवलियाजैसेंवनें तेसेंतारो॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आजमोरी अरज शीतलजिन धारो. मेरो जनम मरण दुःख-टारो ॥ आ० टेक ॥ कालअनादि भम्यो भव वनमें । कुमति नार मो हजारो । नरक निगोद देवनर भवकर । बहुविध नाटककारो ॥ आ० १ ॥ पुन्यसंयोग जैनागम वचनें । दरशनगुण हितकारो । गुरु मुख तारक ईश्वर तुमकों । जाणसरण सुखकारो ॥ आ० २ ॥ मित्र त्रुत तुं जग परमेसर । परमातम जगप्यारो । ब्रह्मा विष्णु महेश्वर तुमही । तुम प्रभु जगदाधारो ॥ आ० ३॥ दृढरथ नंदानंद जिनेश्वर । अतिशय बहुगुण प्यारो । शांतिसूरत प्रभुशीतल जिनवर । भविजन हित मुख कारो ।॥ आ० ४ ॥ इंद्रभुवन जिम चैत्य मनोहर । कलिकलाघुम्मारो । श्रावक फल वर्द्धा प्रभुपावे । मुक्ति. मोहन जयकारो ० ॥ आ० ५ ॥ इतिपदम् ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ श्रीजिनधर्ममहिमास्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आवो आवो नगरिया हमारी रे ॥ इस चालमें ॥ आवो आवो सज्जन मिल साराRे ॥ गुणगावो जिनंद सुखकारारे ॥ आ० ॥ टेक ॥ कोई हाथे वंशी धारो ॥ कोई हाथे बीणारे ॥ मृदंग वजावो गावो करी स्वरझीणा ॥ आ० ॥ १ ॥ ठम २ पायनाचो घुग्घरु वंधावोरे ॥ नर नारी सहु जोडे सुजश वधावो ॥ आवो० ॥ २ ॥ दान दया शील धारो । तप जप सारोरे ॥ भावसुद्ध धारकरो आतम निस्तारो ॥ आ० ॥ ३ ॥ पर पीडा दूर करी ॥ करो उपगारोरे । पर निंदा दूर छोडो । लेवोगुणसारो ॥ आ० ॥ ४ ॥ जीवकों वचायाचावो जिन धर्म धारोरे ॥ समकित सुद्ध धारी करोभवपारो ॥ आ० ॥ ५ ॥ ज्ञान गुणीसें सोबत रखतां ॥ होवैगी वडाईरे ॥ लक्ष्मी मोहन शिव सुख पावे । जय आनंद बधाई ॥ आ० ॥ ६ ॥ इति पदम् ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ चौवीशजिन नमस्कार स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नेमगयो गिरनाररे ॥ इस चालमें ॥ प्रभुजी मिल्या मोहे आजरे । मेरा सफल थया सहुकाजरे ॥ प्र० ॥ एतो तीन भुवन सिर ताजरे ॥ प्र० मैंतो रुषभ अजित संभव नमुं । अभिनंदन जिनराजरे । सुमति पदम प्रभु सेवतां धारुं सुपार्श्व सुकाजरे ॥ प्र० १ ॥ चंद्राप्रभु जिनवर नमुं । सुबिधि शीतल महाराजरे । श्रेयांस जिनकों नितनमुं । वासु पुज्य सुखकाजरे ॥ प्र० ॥ ॥ २ ॥ विमल अनंत प्रभु नमुं । धर्म शांति गुणराजरे । कुंथुनाथ अरिनाथकों । मल्लिनाथ सुभ काजरे ॥ प्र० ३ ॥ वीशमा मुनिसुव्रत नमुं । नमि नेमी पार्श्व महाराजरे । चौवीशमा महावीरजी । शाशनपति

गुरो अत्रावतरावतर स्वाहा ॥ इति आह्वानं ॥ ❀ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्री जिन कुशलसूरि गुरो अत्र तिष्ट २ ठः ठः स्वाहा॥❀॥इति प्रतिष्ठापनं ॥२॥ॐ ह्रीं श्रीं श्री जिनकुशल सूरिगुरो अत्र मम सन्निहितो भव वषट्‌ ॥ ❀ ॥ इति सन्निधी कारणं ॥ ३ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ अष्टप्रकारी पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) गंगाजल तिम भूवलवलि । तीर्थोदक भरपूर । कल शभरी गुरु चरणपर । ढाले तस दुःखदूर ॥ १ ॥ ❀ ॥ ( ढाल ) देशी सूर नी महीनांनी ॥ ❀ ॥ गंगाजल अति निरमल अमलसु कमलें पूर । खीरो दधि वरदधि ज्यों उज्जल जल भरपूर । तेह उदकवलि तीर्थ नीर भरि कलश सनूर । गुरुचरणे जे ढाले टाले दुकृतदूर ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिन कुशल सूरिगुरु चरणकमलेभ्यः जलं निर्व्वपामिते स्वाहा ॥ इति जलपूजा ॥

## ॥ ❀ ॥ चंदन पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ बावन्ना चंदन अगर । वस केसर घन सार । चरचै जे गुरु चरणनें । पांमें जे जेकार ॥ १ ॥ ( ढाल ) ॥ ❀ ॥ मलयागर तिम अगर चं दन वलिकेसर सार । कस्तूरी अतिगंधे पूरी बस घनसार । कुशल सूरि गुरुचरणे चरचे चढते भाव । सकल रोग तन सोग हरे वलि जरुता भाव ॥ २ ॥ ❀ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्री जिन कुशल सूरिगुरुः चरण कमलेभ्यः चंदनं निर्व्वपामिते स्वाहा ॥ ३ ॥ इति चंदन पूजा ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ पुष्प पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ केतकि चंपक फूलथी । पूजे जे गुरुपाय । तसु जशसूर उदे हुवै । अपजश तिमिर नसाय ॥ १ ॥ ( ढाल ) ॥ ❀ ॥ चंपक केतकि मरुवो दमन सेवंती फूल । जाई जूई मोगरो मालती नेम वडूल । कमल गुलाब चंपेली वेली परमलपूर । गुरुचरणे जे ढोवे होवे जश ज्युं सूर ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्री जिन कुशल सूरिगुरुः चरणकमलेभ्यः पुष्पं निर्व्वपामिते स्वाहा ॥ इति पुष्पपूजा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अक्षत पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ उज्जल ज्यों शशि अंकविण । खंडित नहीं विशाल । अक्षत गु

रुचरणे ठवै। तसु घर मंगल माल ॥ १ ॥ ( ढाल ) ॥ ❋ ॥ सरल सुगंधित तंडुल उज्जल जल उतपन्न। ज्यूंवर मोती आला हुंती उज्जलवन्न। जलधोई ससमोई सोई अक्षत नव्य। स्वस्तिक कुशल वधावै पावै मंगल भव्य ॥ २ ॥ ॥ ❋ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्री जिन कुशल सूरिगुरुः चरणकमलेभ्यः। अक्षतं निर्वपामि ते स्वाहा ॥ ❋ ॥ इति अक्षतपूजा ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ दीप पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ कंचन मणिमय रत्ननी। दीवी कर घृतपूर। वाती मौली सूत धर। करो प्रदीप सनूर ॥ १ ॥ (ढाल) ॥ ❋ ॥ कंचन घटित जटित गति नानाबिध नवरत्न। दीवी अतिकारीगर कीवी अधिकै यत्न। घृतपूरी ससनूरी मौली वाती जोय। दीप करै गुरु आगै ज्योत उद्योती होय ॥ २ ॥ ॥ ❋ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्री जिन कुशल सूरिगुरुः चरण कमलेभ्यः दीपं निर्वपामि ते स्वाहा ॥ ❋ ॥ इति दीपपूजा ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ धूप पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ बावन्ना चंदन अगर। सेल्लारस घनसार। धूपै जे गुरु धूपथी तस घर रिध विसतार ॥ १ ॥ (ढाल) ॥ ❋ ॥ अगर चंदन सेल्लारस लाम्ह उलीलो मेल। कपूर काचरी वलि घनसारै मृगमद भेल। धूप अडंग करी गुरु धूपै चढते चित्त। ते नरवित्त सुमारग पामैं नव नव नित्त ॥ २ ॥ ❋ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्री जिन कुशल सूरिगुरुः चरण कमलेभ्यः धूपं निर्वपामिते स्वाहा ॥ इति धूपपूजा ॥ ॥ ६ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ नैवेद्य पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ साल दाल पकवान घन। व्यंजन नव नव भांत। नेवज गुरु आगल ठवै। क्षुधा दोष उपसांत ॥ १ ॥ ( ढाल ) ॥ ❋ ॥ पेंडा मगद सेवइया लाडू मोतीचूर। खाजा ताजा लापसी दोठानें घृतपूर। पिस्ता दाख विदाम छुहारा पिंडखजूर। गुरुचरणे जे ढोवै भोग लहै भरपूर ॥ २ ॥ ॥ ❋ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्री जिन कुशल सूरिगुरुः चरण कमलेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामिते स्वाहा ॥ ❋ ॥ इति नैवेद्यपूजा ॥ ७ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❀ ॥ फल पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीफल शीताफल भला । फल पूंगीफल लेय । ढोवे जे गुरु चरणपर । तसु उत्तम फल देय ॥ १ ॥ ❀ ॥ ( ढाल ) ॥ ❀ ॥ श्रीफल शीताफल नारंगी दाडम दाख । खरबूजा तरबूज जंभेरी पाखी साख । करुणा श्रवला केला नींबू फलस मफार । गुरु चरणे फल ढोई फल पामें श्रीकार ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिन कुशल सूरि गुरुः चरण कमलेभ्यः । फलं निर्व्वपामिते स्वाहा ॥ ❀ ॥ इति फल पूजा ॥ ८ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अर्घ पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( अथ कलश ) दूहा ॥ ❀ ॥ इम जिन कुशल सुरिंदनें । पूजे अष्ट प्रकार । तसु घर नवनिधि संपजे । पुत्रादिक परिवार ॥ १ ॥ भट्टारक खरतर गछे । श्रीजिन लाभसुरिंद । रत्नराजमुनि भमरपर । सेवै पद अरविंद ॥ २ ॥ तासुचरण रजकणसमो । ग्यांन सार बुद्धिमंद । श्रीसदगुरु पूजा रची । सोधोकविजन वृंद ॥ ३ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

इति श्रीजिनकुशल सुगुरूणां अष्टप्रकारी पूजा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ लघु अष्ट प्रकारी पूजा लि॰ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुरनदी जल निर्मल धारया । प्रबल दुष्कृत दाघ निवारया । सकल मङ्गल वंछित दायकं । कुशल सूरि गुरोश्चरणांयजे ॥ ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिन कुशल सूरिः चरण कमलेभ्यो जलं॰ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ चंदन पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मलय चंदन केशर वारिणा । विमल जाड्यमला तप हारिणा । सकल॰ ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिन कुशल सूरि गुरुः चरण कमलेभ्यो चं॰

### ॥ ❀ ॥ अथ पुष्प पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कमल केतकि चंपक पुष्पकैः । परिमला हृत षट् पद वृंदकैः ॥ सकल॰ ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्री जिन कुशल सूरि गुरुः॰ ॥ पुष्पं यजा॰॥३॥

### ॥ ❀ ॥ अथ अक्षत पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सरल तंदुल कैरति निर्म्मलैः । प्रवर मौक्तिक पुंजवदुज्वलैः । सकल मङ्गल॰ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं॰ अक्षतं यजामहे स्वाहाः ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❋ ॥ अथ नैवेद्य पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ बहु बिधै श्ररुचि वेटकेयकैः । प्रवर मोदक पुंज सु खर्जकैः । सकल मङ्गल ० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं० । नैवेद्यं ययामहे स्वाहाः ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ दीप पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अति सुदीप्त मयै खलु दीपकै । विमल कंचन भाजन संस्थिते । सकल मंगल० ॐ ह्रीं श्रीं० । दीपं ययामहे स्वाहाः ॥ ॥ ❋॥

॥ ❋ ॥ अथ धूप पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अगर चंदन धूप दशांगजै । प्रसरिता खिल दिक्षु सुधुम्रकैः । सकल मंगल०॥ ॐ ह्रीं श्रीं० । धूपं ययामहे स्वाहाः ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ फल पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ पनशमोच सदा फलकर्कटै । सुसुखदैः किल श्रीफल चिर्भटै । सकल मङ्गल० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं० । फलं यया महे स्वाहाः ॥ ❋ ॥

॥❋॥ अथ अर्घ पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ जल सुगंध प्रसून सुतंदुलै । श्चरु प्रदीपक धूप फलादिभिः । सकल० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं० । श्रीजिन कुशल सूरि० । अर्घं० स्वाहा ॥ इति ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ दादा गुरु महाराज की पूजा लिख्यते ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ पहली थापना स्थापन करके आव्हान का श्लोक पढे ॥ काव्य ॥ सकल गुण गरिष्टान् सत्तपोभिर्वरिष्टान् । शम दमय मनुष्टांश्चारु चारित्रनिष्टान् । निखल जगति पीठे दर्शितात्म प्रभावान् । मुनिप कुशल सूरिन् स्थापया म्यत्रपीठे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्री जिन दत्त श्री जिन कुशल श्री जिन चंद्रसरि गुरौ अत्रावतरावतर स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्री जिन दत्त सूरिगुरौ अत्रतिष्ट २ ठः ठः ठः स्वाहा ॥ इति प्रतिष्टापनं ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनदत्तसूरिगुरौ अत्र मनसंनिहितो भव बषट् इति संनिधीकरणं ॥ ३ ॥ अथ जलका कलश लेके स्नात्रीया सुच होके खडा रहे ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ प्रथम जलपूजा ॥ ❋ ॥

॥ दोहा ॥ ईश्वर जग चिंतामणी । कर परमेष्टी ध्यान । गणधर पद गुण वर्णना । पूजन करो सुजाण १ ॥ सौ धर्मा मुनिपति प्रगट । वीर जिनेश्वर

पाट। मिथ्या मन तम हरणकूं । भव्य दिखावण वाट ॥ २ ॥ सुस्थितसुप्रति बद्ध गुरु। सूरि मंत्र को जाप । कोटि कीयो जब ध्यान धर । कोटिकगच्छ सुथाप ॥ ३ ॥ दश पूर्व्वी श्रुत केवली । भये वज्र धर स्वाम । तादिन तें गुरु गच्छको । वज्र शाख भयो नाम ॥ ४ ॥ चंद्रसूरि भये चंद्रशम। श्रुतहि बुद्धि निधान । चंद्रकुली सब जगत में । पसरयो बहु विज्ञान ॥ ५ ॥ वर्द्ध मान के पाट पद । सूरिजिनेश्वर भाश । चैत्य वाशि कूं जीत कर। सुविहित पद्द प्रकाश ॥ ६ ॥ अणहिलपुर पाटण सभा । लोक मिले तिहां लक्ष। खरतर विरुद सुधानिधि । दुर्लभ राजसमक्ष ॥ ७ ॥ अभय देव सूरि भये नव अंगटीका कार । थंभण पारस प्रगट कर । कुष्ट मिटावन हार ॥ ८ ॥ श्री जिन वल्लभ सुरि गुरु । रचना शास्त्र अनेक । प्रतिबोधे श्रावक बहुत। ताके पट्ट विशेष ॥ ९ ॥ हुंबड श्रावग वाधमी । अठारे हज्जार । जैन दया धर्म्म किये । वरते जैजैकार ॥ १० ॥ दादा नाम विख्यात जस । सुर नर शेवग जाश । दत्तसूरि गुरु पूजतां । आनंद हर्ष उल्लास ॥ ११ ॥ दिल्ली में पतसाहनो। हुकम उठाया शीश । मणिधारी जिन चंद गुरु । पूजो विस वावीस ॥ १२ ॥ ताके पट्ट परंपरा । श्री जिन कुशल सूरिंद। अकबर कूं परचा दीआ। दादा श्री जिनचंद ॥ १३ ॥ एसे दादाच्यार कूं । पूजो चित्त लगाय । जल चंदन कुशमादि कर। ध्वज सौगंध चढाय ॥ १४ ॥ ❀ ॥

॥❀॥ चाल दादा चिरंजीवो एदेशी ॥❀॥

॥ ❀ ॥ गुरुराज तर्णा पूजन कर भवि सुख कर मिलसी लछि घणी ॥ ए आंकणी ॥ गुरु दत्तसूरिंद जग सुखकारी । गुरु सेवगनें सानि धकारी । गुरु चरण कमलनी बलिहारी ॥ गु० १ ॥ शंवत इग्यारे बार शशी । बत्तीसे जनम्यां शुभ दिवशी । श्रावग कुल हुंबडनें हुलसी ॥ गु० ॥ ॥ २ ॥ जसु वाछगमा पितु नाम भणे । वाहडदे माता हर्ष वणें । इकता लीने दिक्षापभणे ॥ गु० ३ ॥ गुणहत्तरे वल्लभ पाटधरी । गुरु माया बीजनो जाप करी । गुरु जग में प्रगट्या तरणतरी ॥ गु० ४ ॥ मणिधारी जिन चंद उपगारी । जिन दत्त सूरिंद के पटधारी । भये दादा दूजा सुखकारी ॥ गु० ५ ॥ राशल पितु देल्हण दे माता । श्री माल गोत्र बोधनशाता । दिल्ली

पतसाह सु गुण गाता॥गु० ६ ॥ जसु चोथे पाट उद्योत करी। जिन कुशल सूरिंद अति हर्ख भरी । तेरेसे तीसे जनम घरी ॥ गु० ७॥ जसु जिह्वा जनक जगत्र जीयो । वर जैत सिरी शुभस्वपन लीयो । गुरु छाजेड गोत्र उद्धार कीयो ॥ गु० ८॥ धन सेंतालीसे दीक्षा धरी । जिन चंदसूरीश्वर पाटवरी। गुणहत्तरे सूरि मंत्र जाप करी ॥ गु० ९॥ सेवा में बावन बीर खरा। जोगणीया चोसठ हुकम धरा । गुरु जगमें केइ उपगार करा ॥ गु० १०॥ माणक सूरीश्वर पद छाजे । जिन चंदसूरि जगमें गाजे। भये दादा चोथा सुख काजे ॥ गु० ११॥ जिन चांद उगायो उजियालो । अम्मावश की पूनमवालो। सब श्रावग मिल पूजन चालो ॥ गु० १२॥ जिन अकबर कूं परचा दीना । काजीकी टोपी वश कीना । वकरीका भेद कह्या तीना। गु०१३॥ गंधोदक सुरभि सुकलश भरी। पक्षालन सद गुरु चरण परी। या पूजन कवि ऋद्धिसार करी। गु० १४॥ श्लोक॥ सुर नदी जल निर्म्मल धारयः। प्रबल दुष्कृत दाघ निवारयः । सकल मंगल वंछितदायकं। कुशल सूरि गुरोश्चरणायजे ॥ १॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम पुरषाय, परम गुरु देवाय, भगवते श्री जिनशाशनो द्दीपकाय, श्री जिन दत्त सूरिश्वराय । मंडित भाल स्थल श्री जिनचंद्र सूरीश्वराय । श्री जिन कुशल सूरीश्वराय । अकब्बर असुरत्राण प्रतिबोधकाय श्री जिन चंदसूरीश्वराय। जलं निर्व्विपामिते स्वाहाः॥१॥

## ॥ ❀ ॥ अथ दूजी केशर चंदन पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॥ दोहा॥ केशर चंदन मृग मदा । कर घनसार मिलाप । परचा जिन दत्तसूरि का। पूज्यां तूटे पाप ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ चाल वीण वाजे की ॥ दीन के दयाल राज सार२ तूं। आंकणी॥आये भरु अछेनग्र धाम धूम २ धुं। वाजते निशाण ठोर हर्ष रंग हूं। ह० दी० १ ॥ मूसलमांन मुगलपूत फोज मो जमूं । फोत मोत होगया हायकार सूं ॥ हां० दी० २ ॥ सघ्र विघ्न देख आप हुकम दीन यूं । लावो मेरे पास आस जीव दान दूं ॥ जीं० दी० ३॥ मृतक पूत मंत्र सें उठाय दीनतूं। देख के अचंभ रंग दास खासकूं ॥ दा० ४ दी०॥ करत सेव भाव पूर पूर राजजूं। ठोर के अभक्ष खाण हाजरी भरूं ॥ हा० ५ दी० ॥ वीजखीजके पमी प्रति

कमण के सूं । हाथमें उठाय पात्र ढांक दीन हूं ॥ ढां० ६ दी० ॥ दामनी असोल बोल सिद्ध राज तूं । देतं वरदान गोरु बंध कीन क्यूं । बं० ७ ॥ दत्त नाम जपत जाप करत नांह चूं । फेर में पडूंगी नांह गोरु दीनफूं ॥ गो० ८ दी० ॥ करोगे निहाल आप पाव पलकनूं । रामरुद्धिसार दास चरण गाहनूं ॥ च० १० दी० ॥ श्लोक ॥ मलय चंदन केशर वारिणा । निखिल जाड्य कजातप हारणा । शकल० । ॐ ह्रीं श्रीं श्री जिन दत्त सूरी गुरो के श्रग चंदनं निर्व्विपामिते स्वाहा ॥ २ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ तीसरी पुष्प पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ चंपा चमेली मालती । मरुवा अरु मचकूंद । जो चाढे गुरु चरण पर । तिन घर होय आनंद ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नींद तो गई वादीला मारी० । ए चाल ॥ राग मांरु ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ गुरु पर तिख सुर तरु रूप सुगरु शम दूजौं तो नही । दूजो तो नही रे सुमति जन दूजो तो नही । गुरु परतिख सुर तरु रूप सु गुरुनें पूजो तो सही ॥ ए आंकणी ॥ चितोरु नगरी वज्र थंभ मे । विद्या पोथी रही रे ॥ सु० ॥ हेजी मंत्र जंत्र विद्या सें पूरी गुरु निज । हाथ ग्रही ॥ गु० गुरुपर० ॥ १ ॥ पुरउज्जेणी महाकाल के । मंदिर थंभ कहीरे सुम० । हेजी शिद्धशेन दिन करकी पोथी । विद्या सरब लही रे सु० वि० गुरुप० ॥ २ ॥ उज्जेणी व्याख्यान वीच मे । श्राविका रुप ग्रहीरे । सु० श्रा० ॥ हेजी जोगणीयां उजणे कुं आई, सब कूं खील दई । सु० गु ३ ॥ दीन होय जोगणीयां चोसठ । गुरु की दाश भई रे । सु० गु० ॥ हेजीशात दीया वरदान हरख सें. पमरया सुजस मही ॥ प०गु० ४ ॥ पुष्पमाल गुरु गुण की गूंथी । चाढो चित्त चहीरे । सु०चा० । हेजी कहे रामऋद्धिशार सुजश की बूंटी आप दई । बूं० गु० ५ । श्लोक । कमल चंपक केतकी पुष्प के । परि मलाप्त षट पद वृंद के । शकल० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्री जिन दत्त० पुष्पं निर्व्विपामिने स्वाहाः । ३ । ॥❀॥

## ॥ ❋ ॥ अथ चोथी धूप पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दोहा ॥ धूप पूज कर सुगुरु की । पसरे परमल पूर । जस सुगंध जगमें वधे । चढे सवाया नूर ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ राग सोरठ ॥ कुवजा ने जादू मारा ॥ ए चाल ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अंबिका विरुद बखाणे गुरु तेरो ॥ अं० ॥ तुम युग प्रधान नही छाने॥गु० ए आंकणी ॥ गढ गिरनारपें अंबड श्रावक । एसो नियम चित ठाणे। युग प्रधान इस जुग में कोई । देखूं जन्म प्रमाणे ॥ गु०अं० १ ॥ कर उपवाश तीन दिन बीते । प्रगटी अंबा ज्ञाने ॥ गु० ॥ प्रगट होय कर में लिख दीना । सुवरन अक्षर दाने ॥ गु० अं० २ ॥ या गुण संयुत अक्षर वांचे । ताकूं युग वर जाने ॥ गु० ॥ अंबड मुलक २ में फिरता । सूरि शकल पतवाने ॥ गु० ३ ॥ आया पाश तुमारे सद्गुरु । कर पसार दिखलाने ॥ गु० ॥ वास क्षेप उन ऊपर नाला । चेला वांच सुणानें ॥ गु० अं० ४ ॥ सर्व देव हे दाश जिनोके । मरु धर कल्प प्रमाणे ॥ युग प्रधान जिन दत्त सूरीश्वर । अंबरु शीश झुकाने ॥ गु० ५ ॥ उद्योतन सूरीनें निज हथ । चोरासी गछ ठाने । सो शब तुमरी शेवा सारे । चौरासी गछ मानें ॥ गु० ६ ॥ जो मिथ्यात्वी तुमकूं न पूजे । सो नही तत्व पिछाने । भद्र बाहु स्वामी तुम कीर्त्तन । कीनी ग्रंथ प्रमाणे ॥ गु० ७ ॥ युग प्रधान परि कीए गंडिका । गण धर पद वृत्ति म्याने । कहे रामऋद्धिशार गुरुकूं । पूजा धूप कराने ॥ गु० ८ ॥ श्लोक ॥ अगर चंदन धूप दशांगजैः । प्रशरिता खिल दिक्षु सु धुम्रकै ॥ शकल मं० ४ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीपर० धूपं निर्व्विपामिते स्वाहाः ॥ ४ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ पांचमी दीपपूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दोहा ॥ दीप पूज कर सुगण नर । नित २ मंगल होत । उजियालो जगमें जुगत । रहे अखंम्त जोत ॥ १ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ चाल ख्याल की ॥ पूजन कीज्योजी नर नारी गुरु महाराज का ॥ हो पू० ॥ सिंधु देशमें पंच नदी पर । साधे पांचु पीर । जोई ऊपर पुरष तिराये । ऐसे गुरू सधीर ॥ पू० ॥ २ ॥ प्रगट होयके पांच पीरने । सात दीया वरदांन । सिंधु देश में खर तर श्रावग । होवेगा धनवान ॥ पू० ॥ २ ॥ सिंधु

देश मुलतान नगरमें । बडा महोछव देख । अंबड और गछ का श्रावग । गुरु सें कीना द्वेष ॥ पू० ॥ ३ ॥ अण हिलपुर पत्तन में आवो ॥ तो में जाणुं सच्चा । वसो महोछव आवेंगे तूं । निर्धन होगा कच्चा ॥ पू० ॥ ४ ॥ पत्तन बीच पधारे दादा । सनमुख निर्धन आया । गुरु बतलाया क्यूं रे अंबड । अहंकार फल पाया ॥ पू० ॥ ५ ॥ मनमें कपट कीया अंबडने । खरतर महिमा धारी । जहर दीया उन अशन पांनमें । गुरु विध जाणी सारी ॥ पू० ६ ॥ भण शाली सुखवर श्रावगसें । निर्विष मुद्री मंगाई । जहर उतारा तब लोकोंमें । अंबड निंद्या पाई ॥ पू० ॥ ७ ॥ मरके विंतर हुवा वो अंबड । रजो हरण हर लीना । भणसाली विंतर वचनोंसें । गोत्र उतारा कीना ॥ पू० ॥ ८ ॥ सज्ज होय गुरु ओघालेके । गोत्र बचाया सारा । ऋद्धिशार महिमा सद गुरुकी । दीपकका उजयारा ॥ पू० ॥ ९ ॥ श्लोक ॥ अति सुदिसमयैं खलु दीपकैः । विमल कंचन भाजन शंस्थितैं ॥ सकल० ॥ ॐ ह्रीँ पर० दीपं निर्व्विपामिते स्वाहाः ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ अक्षत पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ अक्षत पूजा गुरु तणी । करो महाशय रंग । क्षती न होवे अंग मे । जीते रण मे जंग । १ । राग आसावरी ॥ अवधू सो जोगी गुरु मेरा ॥ ए चाल ॥ रतन अमोलख पायो सु गुरु शम । रतन अमोलख पायो । गुरु शंकट सवही मिटायो । सु० ॥ ए आंकणी ॥ विक्रमपुर नगरी लोकन कूं । हेजा रोग संतायो । बहोत उपाय कीया शांतिक का । जरा फरक नही आयो । सु० र० १ । जोगी जंगम ब्रह्म शंन्यासी । देवी देव मनायो । फरक नहीं किनही ने कीना । हाहाकार मचायो । सु० र० २ ॥ रतन चिंतामणि सरिषो साहिव । विक्रमपुर में आयो । जेन संघ को कष्ट दूर कर जेजेकार वरतायो ॥ सु० र० ३ ॥ महिमा सुण माहेश्वर ब्राह्मण । सवही शीश नमायो । जीवत दांन करो महाराजा । गुरु तब यूं फुरमायो । सु० र० ४॥ जो तुम समकित व्रत कों धारो । अबही करदूं उपायो । तहत वचन कर रोग मिटायो । आनंद हर्ष वधायो । सु० र० ५। जो कोई श्रावग व्रत नही धारयो पुत्री पुत्र चढायो । साधु पांच से दीक्षत कीना । साध वीयां समुदायो ।

। सु० र० ६ । मंत्र कला गुरु अतिशय धारी । ऐसो धर्म दीपायो ॥ रुद्धिसार पर किरपा कीनी । साचो इलम बतलायो ॥ सु० र० ७ ॥ श्लोक ॥ सरल तंडुल कै रति निर्मलै ॥ प्रवर मौक्तिक पुंज वदूज्वलैः सकल० ॥ ॐ ह्रीँ श्रीं प० अक्षतं निर्व्विपामिते स्वाहाः ॥ ६ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ नैवेद्य पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दूहा ॥ नैवद्य पूजा सातमी । करो भविक चित चाव ॥ गुरु गुण अगणित कुण गिणे । गुरु भव तारण नाव ॥ १ ॥ राग कल्याण । तेरी पूजा वणी हे रसमे ॥ ए चाल ॥ हो गुरु किया असुर कुं वश में । ए आंकणी । वरू नगरी मे आप पधारे । सांभेला धसमस में । ब्राह्मन लोक बरू अभिमानी । मिलकर आया सुसमे ॥ हो गु० १ ॥ महिमा देख सक्या नही गुरु की भरे मिथ्यात्वी गुस में । मृतक गऊ जिन मंदिर आगे । रखदी सनमुख चसमे । हो गु० २ ॥ श्रावग देख भये आकुलता । कहे गुरु से कसमें । चिंता दूर करी हे संघ की । गऊ उठ चाली रुसमे ॥ हो गुरु० ६ ॥ मरी गऊ कूं जीती कीनी । लोक रह्या सब हसमे । जाके गाय पमी रुद्रालय । संघ भया सब खुसमे । हो गु० ४ । ब्राह्मण पांव पम्या सब गुरुके । देख तमासा इसमे । हुकुम उठावेंगे शिर ऊपर । तुम शंतति की दिशमे ॥ हो गु० ५ ॥ नमस्कार हे चमत्कार कूं । कीनी पूजा रसमें । कहे राम रुद्धिसार गुरु की । आनंद मंगल जस में ॥ हो गु० ६ ॥ श्लोक ॥ बहु विधे श्चरुभिर्वटकैर्यकैः ॥ प्रचुरसर्प्पि पिपक्क सुखज्ज कै । शकल० । ॐ ह्रीँ श्रीं प० नैवद्यंनिर्व्विपामिते स्वाहाः ॥ ७ ॥

## ॥ ❋ ॥ अथ फल पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दोहा ॥ फल पूजा सें फल मिले । प्रगटे नवे निधान ॥ चिहुंदिश कीरत विस्तरे । पूजन करो सुजान ॥ १ ॥ रथ चढ जादुनंदन आवत हे ॥ ए चाल ॥ चालो संघ सब पूजनकूं । गुरु शमरयां सनसुख आवत हेरे, चा० ५ ॥ ए आंकणी ॥ आनंदपुर पट्टन को राजा । गुरु शोभा सुण पावत हेरे ॥ चा० ॥ भेज्या निज परधान बुलानें । नृप अरदास सुणावत हेरे । चा० । लाभ जांण गुरु नगर पधारे । भूपत आय वधावत हेरे । चा० । राज कुमर को कुष्ट मिटायो । अचरज तुरत दिखावत

हेरे । चा० २ । दश हजार कुटंब संग नृप कूं । श्रावग धर्म धरावत हेरे । चा० ३ ॥ दया मूल आज्ञा जिनवर की । वारे व्रत उचरावत हेरे ॥ चा० ॥ एसे च्यार राज समकित धर । खर तर संघ वणावत हेरे । चा० ४ । कुष्ट जलंधर क्षैण जगंदर । केइयक लोक जीवावत हेरे । चा० । ब्राह्मन क्षत्री अरु माहेश्वर । ओश वंश पसरावत हेरे । चा० ५ ॥ तीस हजार एक लख श्रावग । महिमा अधिक रचावत हेरे ॥ चा० ॥ कहत राम ऋद्धिसार गुरु कूं । फल पूजा फल पावत हेरे ॥ चा० ६ ॥ श्लोक ॥ फनसमोचसदाफल कर्कटै । सुसुखदै किल श्रीफल चिर्भटै । शकल० ॥ ॐ ह्रीं प० फलं निर्व्वि पामिते स्वाहाः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ वस्त्र सुगंधी पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ वस्त्र अत्तर गुरु पूजना । चोवा चंदन चंपेल । दुस्मन सब सज्जन हुवे । करे सुरंगा खेल ॥ १ ॥ मनड़ो किमही न बाजे हो कुंथु जिन ॥ ए चाल ॥ लखमी लीला पावेरे सुंदर । लखमी लीला पावे । जे गुरु वस्त्र चढावे रे । सुं० । सुजस अत्तर महकावेरे ॥ सुं० ॥ दुरजन शीश नमावेरे । सुं० । ए आंकणी ॥ दरिया वीच जीहाज श्रावग की । डूबण खतरे आवे । साचे मन समरे सद गुरु कूं । दुख की टेर सुणावेरे ॥ सुं० । १ ॥ वाचं ताव्याख्यानसूरीश्वर । पंखी रूपे थावे । जाय समंद में ज्याज तिराई । फिर पीछा जब आवेरे ॥ सुं० २ ॥ पूछे संघ अचरज में भरीया । गुरु सब बात सुणावे ॥ एसें दादा दत्त कुशल गुरु । परचा प्रगट दिखावेरे । सुं० ३ । बोथर गूजरमल श्रावग की । दादा कुशल तिरावे । सुक्खसूरि गुरु शमय सुंदर की । ज्याज अलोप दिखावेरे ॥ सुं०४ल० ॥ वारे से इग्यारे दत्तसूरि । अजमेर अण शण ठावे । उपज्या सोधर्मा देवलोके । सीमंधर फुरमावेरे सुं० ५ ॥ इक अवतारी कारज सारी । मुक्ति नगर में जावे । कुशल सूरि देराउर नगरे । भुवनपति सुरथावेरे ॥ सुं० ६ ॥ फागुण वदि अम्मा वश सीधा । पूनम दरश दिखावे । मणिधारी दिल्ली मे पूज्यां । शंकट सुपने नावेरे । सु० ७ । रथी उठी नही देख वादशा । वांही चरण पधरावे । वस्त्र अतर पूजा सद गुरु की । ऋद्धिशार मन भावेरे । सुं० ।

॥ श्लोक ॥ अखिल हीर शुचि नव चीर कै। प्रवर प्रावरणै खलुगंधतः। शकल० ॥ ॐ ह्रीं श्रीप० वस्त्रं चोवा चंदन पुष्पसारं निर्व्विपामिते स्वाहाः॥

## ॥ ❀ ॥ अथ धजा पूजा ॥ ❀ ॥

॥ दोहा ॥ ध्वज पूजा गुर राज की। लहके पवन प्रचार। तीन लोकके शिखर पर। पोहचे सो नर नार ॥ १ ॥ चाल। जिन गुण गावत सुर सुंदरी रे। ए चाल ॥ ध्वज पूजन कर हरख भरी रे॥ ध० ॥ सज सोले शिणगार सहेल्यां। श्री सदगुर के द्वार खरीरे। ध०। अप छर रूप सुतन सुक लीनी। ठम २ पग झणकार करीरे॥ ध० १ ॥ गावत मंगल देत प्रदक्षणा। धन २ आनंद आज घरीरे। ध० ॥ निर्धन कूं लखमी वगसावत। पुत्र विना जाके पुत्र करीरे॥ ध० २ ॥ जो जो पर तिख परचा देख्या। सुणो भविक दिल वीच धरीरे। ध० ॥ फतेमल्ल भरुगतीया श्रावग। पहली शंका जोर करीरे ध० ३। परतिख देखूं जब में जाणूं। प्रगट्या ततखिण तरण तरीरे॥ ध० ॥ पुष्प माल शिर केशर टीका। अधर श्वेत पोशाख करीरे ॥ ध० ४ ॥ मांग २ बर बोले बाणी॥ फरक वतावो गुरु मेघ झरीरे। ध० ॥ फरक भगायो दोय लाख पर। तेरी महिमा नित्त हरीरे॥ ध० ५ ॥ गैनचंद गोलेछा कूं ते। परतिख दीना दरस फरीरे॥ ध० ॥ विक्रमपुर में थुंभ तुमारा। चित्र करावत सुर सुंदरीरे ॥ ध० ६ ॥ थांनमल्ल लूणयां पर किरपा। लखमी लीला सहज वरीरे। लखमी पति दूगरु की साहिब। हुंमी की भुगताण करीरे। ध० ७ ॥ जो भुपगार करया तें मेरा। दीनी सनमुख अमृत जरीरे॥ ध०। तेरी कृपा सें सिध्धी पाई। जागे जस अरु भागे भरीरे। ध० ८ ॥ भूखा भोजन तिसिया पाणी। भरत हाजरी देव परीरे॥ ॥ ध० ॥ विमुख वखत पर सहाय हमारे। ऋध्धिसारकी गरज सरीरे। ध० ९ ॥ श्लोक ॥ मृदु मधुरध्वनि खिंखणी नाद कै। ध्वजविचित्रित विसृतवासकै। शकल०। शिखरो परि ध्वजां आरोपयामि स्वाहाः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ अर्घ पूजा कलस ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ भट्टारक पदवी मिली। जीते वादी वृंद। कंठ विराजत सरस्वती। जग में श्री जिन चंद ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ राग आसावरी ॥ अथवा धन्या श्री ॥ पूजन जग सुखकारी । सुगुरु तेरी पूज० । तेरे चरण कमल बलिहारी । सु० । साह सलेम दिल्लीको बादस्या सुण के शोभ तिहारी । भट्ट हरायो चरचा करके । भट्टारक पद धारी । सु०१॥ अम्मावश की पूनम कीनी । चंद उगायो भारी । चढके गगन करी हे चरचा । सूरज से तप धारी । सु० ॥ चौदेसे उगणीस शाल में । लखनेउ नगर मझारी गोरा फिरंगी टोपीवाला । दिलमें यह बात विचारी । सु० ३ । जैन सितंवर देव जो सच्चा । पूरे मनसा हमारी । वाणी निकसी राज्य तुमारा । होवेगा इधकारी ॥ सु० ४ ॥ अंधेकी खोली आंख सूरत में । पूजे सब नर नारी । कह जग गुण बरणूं मे तेरा । तूं ईश्वर जयकारी ॥ सु० ५ ॥ उगणीसे संवत्सर तेपन । मिगसर माश मझारी । शुकल दूज जिन चंद सूरीशर । खर तर गछ आचारी सु० ६ कुशल सूरि के निज संतानी । क्षेम कीर्त्ति मनुहारी । प्रति बोध्या जिन क्षत्री पांचसे । जांन सहित अणगारी ॥ सु० ७ ॥ क्षेम धारु शाखा जब प्रगटी । जग में आनंदकारी । धर्मशील साधू गुण पूरे । कुशल निधान उदारी ॥ सु० ८ ॥ या पूजन करतां सुख आनंद । अन धन लखमी सारी । कहत राम रुधिशार गुरूकी । जय २ शव्द उचारी । सु०९ ॥ इति श्री समस्त दादा गुरु पूजा संपूर्ण ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ सद्गुरूणां आरती लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पहली आरती दादाजीकी कीजे । दुःखदोहग सब दूर हरीजे । (जैजै सद्गुरु आरती कीजे ) श्रीजिन दत्त सूरि समरीजे । ( जै जै० ) ॥ १ ॥ बीजी बीज पमंती धारा । भयवारण तूंही सुखकारा ( जै० ) ॥ २ ॥ तीजी परचा पूरक तेरी । दूर हरो सब दुर्मति मेरी ( जै )॥ ३ ॥ चौथी सुगलपूत जिय दायक । सुरवर हुकम धरे ज्युं पायक ॥ ( जै० ) ॥ ४ ॥ पांचमी पांच नदी जिण तारी । संव सकलनो संकट वारी ॥ ( जै० ) ॥ ५ ॥ छठी थांभो वज्र विदारी । विद्या पोथी परगट कारी ॥ ( जै० ) ॥ ६ ॥ सातमी चौसठ जोगण साधी । सूरिमंत्र सुरनें आराधी ॥ ( जै० ) ॥ ७ ॥ इण विध सात आरती कीजे । मनवंछित संपति फल लीजे ॥ ( जै० )

॥ ८ ॥ जैन लाज खरतर गणधारी । सदगुरु चरण कमल बलिहारी ॥ ( जै० ) ॥ ९ ॥ इति श्री दादाजीकी आरती संपूर्णम् ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ श्रीदादाजीको वृद्ध स्तवन लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ विलशे ऋद्धि समृद्धि मिली । शुभयोगें पुण्यदशा सफली । जिन कुशलसूरि गुरु अतुल वली । मनवंछित आपै दादो रङ्गरली ॥१॥ मङ्गल लील समें विपुला । नव नवय महोछव राजयला । सुपसायें गुरु चढतीकला । सुकलीणी पुत्रवती महिला ॥ २ ॥ सबही दिन थायै सबला । सद वास कपूर तणा कुरला । हय गय रथ पायक बहुला । किल्लोल करै मंदिर कमला ॥ ३ ॥ बींझै चमर निसाण घुरै । नरवै दरवार खमा पुहरै । जय जय करजोमी उचरै । सांनिध्य गुरु सब काज सरै ॥ ४ ॥ सरसा भोजन पांन सदा । दुखरोग दुकाल न होय कदा । अविचल ऊलट अंग मुदा । गुरु कूरम दृष्टि प्रसन्न सदा ॥ ५ ॥ घम घम माद्दल नाद घुमें । बत्तीसे नाटक रङ्ग रमें । प्रगट्यो पुण्य प्रताप हमैं । सबला अरियण ते आय नमें ॥ ६ ॥ तन सुख मन सुख चीर तनें । पहिरे वेलाउल होय रनें । ध्यावो कुसल गुरु एक मनैं । । जृंभक सुरमंदिर भरै धनें ॥ ७ ॥ ततखिण घण खंच्यो आवै । करि स्यामघटा मेह वरसावै । तिसियां तोय तुरत पावै । जलदाता त्रिजग सुजस गावै ॥ ८ ॥ लहिरयां जल कल्लोल करै । प्रवहण भवसायर मझिमरै । बूडंता वाहण जे समरै । ते आपद निश्चै सुं उवरै ॥ ९ ॥ खम खमग प्रहार वहै । सोदामनि जिम सम सेल सहे । कुशल २ गुरुनाम कहै । ते खेम कुशल रिणमझ लहै ॥ १० ॥ थुंभ सकल परचापूरै । श्री नागपूरे संकट चूरै । मंगलोर अधिकै नूरै । देरावर भय टालै दूरै ॥ ११ ॥ वीरमपुर वानैं सुधरै । खंभाइतपुर विक्रम नयरै । जिणचंद सूरि पाटै पवरे । जसु कीरति महिमंमल पसरै ॥ ॥ १२ ॥ पूरब पश्चिम दक्षिण आगैं । उत्तर गुरु दीपै सौभागें । दह दिशि जन सेवा मांगे । श्रीखरतर गछनी महिमा जागै ॥ १३ ॥ पुर पट्टण जनपद गामै । गाईजै कुशल नयर गामै । पूजै जे नर हितकामैं । ते चक्रवर्त्ति पदवीपामैं ॥ १४ ॥ श्रीजिनकुशलसूरि

साखै । सेवकजननें सुखिया राखै । समरयां गुरुदरसण दाखै । श्रीसाधु कीर त पाठक भाखै ॥ वि०॥ १५ ॥ इति ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ श्री जिन दत्तसूरिजी उत्पत्ति स्तोत्र लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ सिरि सुयदेव पसाय करे । गुरु श्री जिन दत्तसूरी । वंदिसु खर तर गछरयण । सूरि जेम गुण पूरि ॥ १ ॥ संवत् इग्यारे वरसै । वत्तीसे जसु जम्म । वाछिग मंत्रि पिता जणणी । बाहडि देव सुरम्म ॥ २ ॥ इकताळै जिणवइ गहिय । गुणहत्तरै जसु पाट । वइसाखां वदि छठि दिन । पइ प्रणमें सुरथाट ॥ ३ ॥ अबंड सावय कर लिहिय । सोवन अक्षर अंब । जुगप्रधान जग पयडियोए । सिरि सोहै पडि बिंब ॥ ४ ॥ जिण चउसठि जोगिण जणिय । खित्तपाल बावन्न । साइण डाइण विज्जुलिय । पुहविह नामनयन्न ॥ ५ ॥ सूरिमंत बलकर सहिय । साहिय जिम धरणिंद । सावइ साविय लक्ख इग । पडि बोहिय जिण बिंब ॥ ६ ॥ अरि करि केसरि दुठदल । चउविह देव निकाय । आंण नलोपै कोई जुगे । जसु प्रणमें नर राय ॥ ७ ॥ संवत बार इग्यारसमें । अजयमेर पुर ठाण । इग्यारस आसा ढ सुदि । सगपत्तन सुह जांण ॥ ८ ॥ श्री जिनवल्लह सूरि पए । श्रीजिन दत्त मुणिंद । विघ्नहरण मंगल करण । करो पुण्य आणंद ॥ ९ ॥ ❋ ॥ इति श्री जिनदत्त सूरि ज्यष्टकं ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

## ॥ ❋ ॥ श्रीजिन कुशल सूरजी उत्पत्ति स्तोत्र लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ रिसह जिणेसर सोजयो । मंगलकेलि निवास । वासव वंदिय पय कमल । जगसहु पूरै आस ॥ १ ॥ ❋ ॥ ( चौपाई ) ॥ ❋ ॥ चंदकुलं वर पूनिम चंद । वंदो श्री जिन कुशल मुणिंद । नाम मंत्र जसु महिम नि वास । जो समरै तसुपूरै आस ॥ २ ॥ मरुमंडल समियाणो गांम । धण कण कंचण अति अभिराम । जिहां बसै जिल्हागर मंत्रि । जैतसिरी तसु घरणी कलत्र ॥ ३ ॥ जसु तेरसै तीसै जम्म । सैंताळै सिर संयम रम्म । पाटण सतहत्तरै जसु पाट । निव्यासिये तसु सुरगैवाट ॥ ४ ॥ भूमंडल सरगै पा याल । अचिराचिर जुग इण कलिकाल । प्रभु प्रताप नविमांनै सोय । मैं नविनयणे दीठो जोय ॥ ५ ॥ निरधन लहै धन धन्न सुवन्न । पुन्नहीण पामें

बहु पुन्न । असुखी पामें सुखसंतान । एकमना करतां गुरु ध्यांन ॥ ६ ॥ प्रभु समरण आपद सहु टलै । सयल सांति सुखसंपति मिलै । आधि व्याधि चिंता संताप । ते छंमी नवि मंभै व्याप ॥ ७ ॥ पाप दोष नवि लागै तिहां । प्रभु दरसण उत्कंठा जिहां । सेवंतां सुरतरुनी छांहि । निश्चै दालिद्र मेटै बांहि ॥ ८ ॥ विस हर विस नर विस नरनाह । भूत प्रेत ग्रह व्यंतर राह । प्रभु नांमें जे नकरै पीरु । भाजे भावठ भव भय भीरु ॥ ९ ॥ रोग सोग सवि नासै दूर । अंधकार जिम ऊगै सूर । मूरख फीटी पंमित थाय । प्रभुपसाय दुख दुरिय पुलाय ॥ १० ॥ दिन दिन जिन सासन उद्योत । तिहां अछै भव सायर पोत । सो सदगुरु में भेट्यौ आज । रलीय रंग सीधा सवि काज ॥ ११ ॥ ( ढाल ) आज घर अंगण सुरतरु फलियो । चिंतामणि कर कमलै मिलियो । उदयो परमाणंद घरे ॥ १२ ॥ आज दीहमें धन्ने गिणियौ । जुगपवरागम जोमें थुणियौ । चंद्रगच्छ महिमा निलोए ॥ १३ ॥ कांई करो पृथिवी पतिसेवा । कांई मनावो देवी देवा । चिंता आंणो कांई मने ॥ १४ ॥ वार वार ए कवत भणीजे । श्रीजिन कुशलसूरि समरीजे । सरै काज आयास विणे ॥ १५ ॥ संवत चवद इक्यासी वरसै । मुलक वाहणपुरमें मन हरसै ॥ अजिय जिणेसर वरभवणें ॥ १६ ॥ कीयो कवित ए मंगल कारण । विघन हरण सहु पाप निवारण । कोई मत संसो धरो मने ॥ १७ ॥ जिम २ सेवै सुर नर राया । श्रीजिन कुशल मुनीसर पाया । जयसागर उवझाय थुणे ॥ १८ ॥ इम जो सदगुरु गुण अभिनंदै । रुद्धि समृद्धै सो चिरनंदै । मन वंछित फलमुझ हुवो ए ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

दादाजी श्रीजिन कुशल सूरजी उत्पत्ति विचारगर्भित स्तो० ॥ ❋ ॥

